

कैलासआगमन ॥

——000——

श्लोक ॥

गणेशंश्रीहरिंदुर्गांरविंशम्भुसरस्वतीम् ।
विधातारमहंवन्देसुरेशप्रमुखान्सुरान् ॥

कवित्त ॥

जैतिगणनायकविनायक सुजान सुठिशम्भुकेतुप्राणअरुगौरिकेतुजीवहौ । हाथीकैसोभालतहांसिंदुरहैलालअरुउदरविशालसुखशोभाकेतुसीवहौ ॥ देवनमेंपरमबवीरनमेंशूरबरदानिनमेंभूरशिवभक्तिमेंअतीवहौ । वोरीहैशरणतेरीताहिदेवफलढेरी औरभक्तिशम्भुकेरीतूतोसिद्धिपीवहौ १ ॥

दो० बन्दि गणेशहि प्रीति सों बन्दौं षड्मुख पाय ।
विघ्न हरैं संशै दलैं करैं सु मोरि सहाय ॥
विधि हरि चरणसरोज रज बन्दौंयुगकर जोरि ।
शम्भुचरण रतिदेहिं मोहिं मांगौं यहै निहोरि ॥
रमा चरण बन्दनकरौं पुनि बन्दौं विधि नारि ।
जासुकृपा लहिशम्भु यश वर्णहुं प्रेम सम्हारि ॥
सो० बन्दौं पुनि जगमात शिवा चरण पर शीश धरि ।

करहिं कृपा वेहसात शिव यश मोहिं बतावहीं ॥
बन्दौं निज गुरु पांव पुनिबन्दौं पितु मातु पद ।
जेहि की कृपा प्रभाव शंकर यश वर्णत बनै ॥
मुनि मन मानस हंस बन्दौं शिवके चरण युग ।
ध्यावहिं जेहि निसिश हरि विधि ध्यान लगायके ॥

चौपाई ॥

एक समय मन में रुचि आई । कछु भाषौं शंकर प्रभुताई ॥
निज मनमें अनुमान करी तब । शंकर यशको ध्यानकरी सब ॥
तब अथाह देखा यश सागर । जहँ न पारपावत बुध नागर ॥
गनतीकवनि तहां ममबुधिकी । खगपतिचालचलैकिमिफुदकी ॥
समुझि बहोरि महेश प्रभावा । दृढ़ भरोस मेरे मन आवा ॥
जोगुणनिधिहिकीनअलकापति । कसनकरीसोइममभाषासति ॥
यहिचिन्ततमतिकहा बिसूरी । शिव प्रताप कछु कठिननदूरी ॥
बार बार चित को हरषावो । गिरि आगमन शम्भुको गावो ॥

दो० शिव प्रताप उर आनि दृढ़ गुरुहि गणेश मनाय ।
शिव कैलासागमन यश कहौं सविस्तर लाय ॥
बन्दौं सूरज चन्द्रमा मंगल बुध गुरु शुक्र ।
विघ्न निवारैं सकल मिलि राहु केतु रवि पुत्र ॥
बुद्धिमान जे जगतमें मम कृत लखि न पराहिं ।
ईश्वर यशपढ़ि आदरहिं हरि हरयशयहि माहिं ॥

सो० मधुमाखी ते होय पावन लोकहु वेद महँ ।
शिव यश भाषै कोय कबहूं कृति न ह्वैसकै ॥
बोरीलाल है नाम कायथ हौं श्री वास्तम ।
ऊंडउ में मम धाम रक्षक जहँ श्री चतुर्भुज ॥
जो मम ग्रामाधीश बन्दि चतुर्भुज देव को ।
होय न कृतमें खीस जेहि की कृपा कटाक्षसे ॥

पुनि बन्दौं श्री पवनकुमारा । राम सहायक शिव अवतारा ॥
नमः सवँलिया पीतम को है । मम कुल इष्ट सदाको जोहै ॥
दुर्वासादिक जेते शैव बर । बन्दौं तिन्हैं जोरि दूनौं कर ॥

करहिंमोरि सबलहित सहाई। शुभगग्रन्थजिमियहबनिजाई॥
नहिंभरोसमोहिं निजबुधिमतिकहँ। ताते विनयकरौंसबहीपहँ॥
जो दश धनी करै करुणाई। यक निर्द्धनी धनी ह्वै जाई॥
कार्त्तिककृष्णत्रयोदशिभौमा। सम्बतकरशुचिअंकहुसोमा१६३२॥
सुमिरि गणेशहि भयो अरम्भू। पूरण करहिं सदा शिवशम्भू॥

दो० नीमषार मिश्रित विषे शौनकादि मुनि वृन्द।
कथा सुनत श्री सूत सन मनमें महा अनन्द॥

सो० एक समय श्रीसूत कथाकहत नभ गोलकी।
सुन्दरसुखद सुपूत ईश्वरयशमिश्रितकिये॥

कह्यो खगोल केर विस्तारा। सब पर सत्यलोक निर्धारा॥
सत्यलोक ब्रह्माण्ड को शीशा। तहांबसत श्रीविधि जगदीशा॥
संख्या अण्ड तहैं लगि गाई। तेहि ऊपर बैकुण्ठ बताई॥
तहां बसत श्रीपति बनवारी। जग पालक भगवान मुरारी॥
वैठि तहां जगपालन करहीं। निशिदिन ध्यान शंभुको धरहीं॥
शंख चक्र सब आयुध धारी। जनकी करत सदा रखवारी॥
तेहि ऊपर श्रीषड्मुख लोका। सुमिरि जाहि जनहोत अशोका॥
शक्ति लोक तेहि ऊपर गाई। बसत जहां गिरिजा जगमाई॥

दो० तेहि ऊपर गोलोक कह बसत जहां गोपाल।
कृष्ण राधिका गोपयुत क्रीड़ा करत कृपाल॥

सो० हरिको रूप अभेद द्विभुज रूपह्वै तहँ लसैं।
जेहि गुणगावतवेद मथुरामें सोइ औतर्‌यो॥

शिवपुर के सोइ निकट बतावा। शिव गोशाला गोपुर गावा॥
गोरक्षक श्रीकृष्ण सराधा। जेहिसुमिरे कछुरहत न बाधा॥
तेहि ऊपर शिवलोक बैतयऊ। जहँ निर्गुण शिव सगुणभयऊ॥
जपतजाहि हरिविधि दिनराती। मुनिवरध्यान धरत बहुभांती॥
सुयश जासु निगमागम गावत। शेष गणेशहु पार न पावत॥
नेतिनेतिकहि निगम बखानत। तासुकृपालहि अधमहुजानत॥
जासु नाम जपि विधिभवकारी। विष्णुभयो जगपाल विहारी॥
जासु नाम जपि तपत दिनेशा। करतकाजनिजसकलदिनेशा॥

दो० बरणि इमिहि नभगोलको कहन लग्यो भूगोल ।
सूत महामति हर्षयुत सुन्दर सुखद सुबोल ॥
सो० सकल खंडयुत द्वीप गिरि सागर बन वर्णहू ।
अलकापुरी समीप गिरि कैलासहि भाषेहू ॥
जब वर्णहु शुभ गिरि कैलासा । कह्यो तहां शंकरकर बासा ॥
जब वर्णहु गिरि पर शिव गेहू । सकल ऋषिण मनभा संदेहू ॥
पूंछेहु सूतहि देत अशीसा । जियहुसूत तुम लाखबरीसा ॥
मम मन मोह भयो यहिवारी । सो छूटहि तुम्हरे निर्धारी ॥
प्रथम कह्यो जब नभ विस्तारा । सर्वोपरि शिवलोक पुकारा ॥
भूमि कथा अब कह्यो सनेहा । गिरि कैलास कह्यो शिवगेहा ॥
एकहि शंभु कि पर कोउ शंभू । नाथ दयाकरि कहौ अदंभू ॥
हमहिं अज्ञ लखि दीजे बोधा । मोहित जानिनकीजे क्रोधा ॥
दो० हँस्यो सूत तब धन्य कहि धन्य धन्य मुनिराज ।
अज्ञ बन्यो संसारहित तुमहिं न व्यापत आज ॥
सो० संतन की यहबानि शिव यश सुनत अघातनहिं ।
ताते बनत अयानि बारबार पूंछत सोई ॥
तात शंभु अहै जगमाहीं । तेहिकी समकोउ दूसरनाहीं ॥
अलख निरीह निरंजन देवा । हरिविधिआदिकरतजेहिसेवा ॥
दुइ गृह सुनत किहेव सन्देहू । गन्तो रहित शंभुके गेहू ॥
घट घट बसत चराचर केरे । असन ठौर जहँ शंभु न नेरे ॥
यह सुनि तात न संशय करहू । यह विचार निज मनमें धरहू ॥
जिमि शशि एककोटि घटछाया । तिमिशिवकोजानहुमुनिराया ॥
यहहि प्रश्न नारद यकवारी । विधिसोंकीन्ह रवचतविचारी ॥
हे पितु धात जनक भवकारी । मम उर यक संशय है भारी ॥
दो० बहुतक मुंहसों यह कथा सुन्यो सविस्तर छाय ।
शिव निर्गुण सगुण भयो सो शिवलोक लसाय ॥
सो० बहुतक मुंह इतिहास सुन्यो तात सोइ भाषहू ।
गिरि कैलास सकास मुख्य वास त्रिपुरारिको ॥
यहै भरम मोरे मन भारी । एकहि शंभु कि दुइ मदनारी ॥

तुम सब लायकहौ जगकारी। हरहु मोर यह संशय भारी॥
तब विधिधरि शंकर को ध्याना। बार बार नारदहि बखाना॥
तुम सुपूत मम कुलमें भयऊ। जोतुम्हरेमनशिवरतिजयऊ॥
हरि दासन कर यहै स्वभाऊ। बिनछल भजहिं शंभुकेपाऊ॥
करि हरि भक्ति न शंकर जापी। हरिहिसोहाहिँनतेबड़पापी॥
आपन भक्त न ताहि विचारी। शापदेत तेहिको बनवारी॥
मम इष्टहि निन्दा जो करहू। कल्प कोटि रौरव में परहू॥
दो० नारद समुझो सत्य यह इष्टहि निन्दत जोय।
तेहि किमि निजसेवक लखैं सतवैरी समहोय॥
सो० शैव प्रवर भगवान जिमि सुमेर माला विषे।
तासु दास अज्ञान निन्दहि इष्टके इष्टको॥
नारद सुनहु एक इतिहासा। कहहुं तुम्हैंलखि हरिहरदासा॥
जब निर्गुण शिवसगुण भयऊ। लीला रुचि मनमें उपजयऊ॥
वाम अंगते हरि प्रकटायो। दक्षिण से मम रूप बनायो॥
सर्गकार मोहिं कियो पुरारी। जगपालक तब भये मुरारी॥
सो मुरारि को सुनिये रूपा। ज्यों सनीर घनश्याम अनूपा॥
रतनजटित शिर मुकुटविराजै। काननमें कुण्डल छबि छाजै॥
जलज नैन सुन्दर रतनारे। भस्म त्रिपुंड ललाट सँवारे॥
बैजन्ती बनमाल सोहाई। कुसुममालअतिशयसुखदाई॥
दो० शंखादिक आयुध सजे चारि भुजा आजान।
तेहिसों पालतसकलजग मारतरिपु बलवान॥
सो० पीत जज्ञउपवीत मोहनमाला शुभग उर।
विप्र चरणपर प्रीत हृदय मध्य शोभित सोई॥
अंगद वलय सोह भुज करमा। पीतजलजजिमिनीलकशरमा॥
शुक नाशा शोभितअतिसुन्दर। बांकी मोछ कपोलन ऊपर॥
त्रिवलित उदर सुनाभिगँभीरा। पहिरे अहत पीत पटचीरा॥
पग शोभा नहिंजात बताई। जेहिध्यावत सुरमुनिसमुदाई॥
पगतल अरुण जलजसमताई। मनिमन मधुप रहै जहँछाई॥
नख द्युति बालशशीछबिहारी। होतमदितजनताहि निहारी॥

हरिहिदीख जबशिवसबलायक । कीन्हींसकल चराचरनायक ॥
हमैं कादि अरुतृण परयंता । विष्णुहि कीन्ह सकल जगकंता ॥
दो० सब अधिकारी हरिभयो निजसमान शिवकीन ।
सृष्टि अवन संहार की त्रयी समर्था दीन ॥
सो० अर्थ धर्म अरु काम तीनिउँ को हरिदै सकैं ।
चौथ मुक्तिकोधाम सो महेश निजसौंरख्यो ॥
जबशिवमुक्तिनिजहिसोंराख्यो । तबकरजोरिविष्णुअसभाख्यो ॥
मोपर नाथ कीन जस दाया । कोटि ल्पनसों जात न गाया ॥
सकलपदारथदा मोहिंकीन्हा । मुक्ति देन की शक्ति न दीन्हा ॥
मुक्ति छांड़ि जे और न जानी । मोरि भक्ति करिहैं किमिज्ञानी ॥
तब शिवकहा सुनो भगवाना । जन प्रणपाल हवै ममबाना ॥
तुमहौ भक्त अनन्य हमारे । तोरभक्त मोहिं बहुत पियारे ॥
जो मम सेवककी सेवकाई । करहिस्वजनमोहिं बहुतसोहाई ॥
प्रथम मुक्ति तुव भक्तन देवै । तब निज दासनकी सुधि लेवै ॥
दो० जो करिहै तुव भक्ति हरि ताहि देब निर्बाण ।
यामें संशय नेक नहि कह्यो शम्भु भगवान ॥
सो० जो तुव बाना धारि छलहु करी संसार महँ ।
देवै मुक्ति सिहारि सकल चूक तेहि मेटिकै ॥
राम कृष्ण जो तुव अवतारा । तासु नाम लेतै यक बारा ॥
पाप काटि करिकै दाया हम । मुक्तिदेवतेहिनिजसेवकसम ॥
अस बर सुनत विष्णतब बोले । धन्य धन्य हम भये अमोले ॥
जो अस प्रभु करुणातुम कीन्हा । दासमोर आपनकरि चीन्हा ॥
तहां तात यक कारण आही । सोसबखोलिकहौंतुवपाही ॥
कलिमें कल्पित पन्थ बनाई । द्रव्य हेत मम दास कहाई ॥
जीतहि बनहिं प्रेत तनु जागे । कामर्थी घृत खाँड़ अहारी ॥
चारि वेद जो विधि प्रकटोई । चारिसे भिन्न नामतेहि होई ॥
दो० निन्दा करिहैं तोरि प्रभु मन महँ अति हर्षाय ।
भय नहिं मनिहैं मोरिकछु मम प्रभु निंदागाय ॥
सो० तिनहिं देब हम शाप बैर मानि तेहि दासते ।

ग्रसैं तोहिं त्रैताप नर्क बसै शत कोटि सम ॥
नाथ यहै वर तुम सन मांगो । उनपर नाथ दया तुम त्यागो ॥
मम जन ह्वै तुव निंदा करहीं । कोटि कल्प रौरव में परहीं ॥
निज दासन के लक्षण कहहूं । नाथ दयाकरि चित में गहहू ॥
सर सुर भजै धारि मम बाना । पर उपकार करै विधिनाना ॥
तुव पद प्रीति करै निर्दंभू । भक्त मोर तेहि जानव शंभू ॥
तिनहिं देब निर्वाण प्रचारी । नाथ यहै वर दीजे भारी ॥
एवमस्तु तब कह्यो पुरारी । पुष्प वृष्टि अति भै तहँ भारी ॥
तव बोले मिलि हमहु मुरारी । नाथ होहु तुमहूं अवतारी ॥
दो० मोहिंकीन तुम सतगुणी रजगुण विधिहिबनाय ।
धारि तमोगुण नाथ तुम कीजै सकल सहाय ॥
सो० त्रिसुर मध्य में आय नाथ सकल लीला करो ।
तासों तनु प्रकटाय करो सहाय दिशेश की ॥
परब्रह्म यहि तनुते रहहू । लीला हेतु अपर तनु गहहू ॥
एवमस्तु तब कह्यो पुरारी । मन हर्षे अति हमहुं मुरारी ॥
तब शिव कहा सुनो बनवारी । विधिसों होव हमहु तनुधारी ॥
विधि भृकुटी से प्रकटव आई । तेहि मोहिं भेद वेद नाहिंगाई ॥
नामरूप यहि कछुक न भेदा । भेद करत जन पाइहि खेदा ॥
विधिकर्तव्यमहँयकगिरिसुन्दर । बनो महा भूधर पति भूधर ॥
तेहिकर नाम होय कैलासू । काल पाय तहँ करब निवासू ॥
तव हमहूं हरि कहा बहोरी । नाथ एक वर देव निहोरी ॥
दो० प्रभु तव माया प्रबल अति करत सकल मति खीस ।
हमैं न व्यापै जिमि लखैं सदा तुम्हैं जगदीश ॥
सो० तुम स्वामी हम दास यहै भाव नित नित बढ़ै ।
घटहि न कबहूं प्यास तुव चर्णन रति वारि की ॥
एवमस्तु कहि शंकर तबहीं । अंतर्द्धान भये मुनि जबहीं ॥
तब हम हरि दूनौं करजोरी । तेहिदिशिलखिनुतिकीनबहोरी ॥
यह इतिहास महा सुखदाई । शिव हरि गीता तुमहि सुनाई ॥
परहु सुनीजो मुनि चितधरके । सुखीहोय सुतवितधन भरिके ॥

तब नारद दूनहु कर जोरी । विधि के कीन प्रणाम बहोरी ॥
नाथ मोहिंयह कथा सुनायहु । परम ज्ञान ममवन उपजायहु ॥
तात किहेउ करुणा नहिं थोरी । शंकर चरण बढ़ो रति मोरी ॥
दो० हरि जन ह्वै निंदहि शिवहि देततहि हमशाप ।
करहु मोर वचतात फरि एवमस्तु कहि आप ॥
सो० हरिजन ह्वै शिवकाहि जो निंदहि संसार महँ ।
दुखितरहैं जगमाहिं कोटिकल्प भोगै निरय ॥

सूतोवाच ॥

एवमस्तु हर्षित विधि कहेहू । तब नारद विधि के पद गहेहू ॥
तात अपर कहु कथा सोहाई । जिमि शिव भये तोर सुत आई ॥
पुनि कैलास बसे किमि शंभू । सोउ कथा कह तात अदंभू ॥
तबविधिध्यान शिवापतिकरिकै । कहनलगे निजमतिअनुसरिकै ॥
जबहिं कथाचित भीतरआई । मगन भयो तनु सुधि बिसराई ॥
कछु विलंभि तनुकी सुधिआई । बारंबार शिवहि शिर नाई ॥
कहन लगे तब कथा रसाला । कहि जैजैतिशिवा विधुभाला ॥
जब वरदे शिव गयेउ बिलाई । तब हम हरिसों कहा बुझाई ॥
दो० नाथ सकल पतितुमभये करुणा लहिविधु माथ
अज्ञा दीजे दास को कीजे मोहिं सनाथ ॥
सो० रचहु सृष्टितुमधात कह्यो विष्णु हर्षित हिये ।
हमहैं तुम्हरो पात अभय रचो संसार तुम ॥
सृष्टिबनी नहिं जबअति प्यारी । तबमोहिं क्रोधभयोमुनिभारी ॥
क्रोध गयेपुनि असिमति आई । जो शिव ह्वै मम तनय सुहाई ॥
जग रचनासब मोहिं सिखावै । तौ यह सृष्टि सर्ग बनि आवै ॥
अस मति जबमोरे मन आई । तुरतहि कीन कृपा शिवसांई ॥
मम भृकुटी सों रुद्र स्वरूपा । प्रकटि देखायो रूप अनूपा ॥
सो वर्णहुनारद निजमति सम । जेहिवर्णतकोउ पारलहतकम॥
शारद शेष न पावत पारा । नेति नेति कहि निगम पुकारा ॥
शीष जटा जहँ सुरसरि बसई । बालचंद्र माथे पर लसई ॥
दो० त्रैलोचन शोभा अधिक भस्मयक्त रतनार ।

चितवनि भक्त कलेशहर दुष्टनको क्षयकार॥
सो० सोहललाट त्रिपुंड्र श्वेतभस्म शोभा अधिक।
गलमें माला मुंड विष शोभा नहिं जातकहि॥
काननमें अहि कुण्डल राजै। गोल कपोल महा छवि छाजै॥
सोह अजान भजा षट चारी। शूलादिक तहँ आयुध भारी॥
समणि व्याल तहँ अंगद कंकन। सकलरतनलाजततेहिदमकन॥
केहरि कटिके हरिपट भावै। जंघा छवि केदलिहि लजावै॥
जलज चरण शोभा किमि गाई। मुनिमनमधुप रहत जहँछाई॥
धरतध्यान जेहिहमहुं मुरारी। पगतल अरुण जलज छविहारी॥
जलज सकंटक लखिवर कावा। विद्रुम खानताहि मुनि गावा॥
तेहिकठोरलखि मति सकुचाई। भाषेहु बाल दिनेश ललाई॥
दो० बालि रविहि आदर्श लखि उपमा मनहिंनमानि।
दामिनिराशि बखानितेहि तज्यौसु चंचलजानि॥
सो० उपमालगति न नीक शिव पगतल लाली यथा।
मन मैं दै तबठीकभक्त हृदय अहि मणि कह्यो॥
यहि विधि जब प्रकट मदनारी। भये कृतारथ मुनि हम भारी॥
तब हमतिन्हैं कीन्ह तजिदंभू। भये प्रसन्न महा प्रभु शंभू॥
शर्ग शक्ति मोहिं दै करुणा कर। अंतर्द्धान भये तब शंकर॥
शिवअवतार कह्योइमि मुनिवर। अब सुनिये कैलास गमनहर॥
मुनि पलस्त्यमम सुतगुणधामा। तेहिसुत सुभग विश्रवा नामा॥
तिहिके भई तीन मुनि नारी। सुभग सुलक्षण गुण अधिकारी॥
जो लहुरी तिनमांहै मुनिवर। तेहि सुतभयो विभीषणनिश्वर॥
परम भागवत सोसुत भयऊ। तासु सुयश सब जगमहँछयऊ॥
दो० मझिली के दुइ सुतभये तिनके सुनिये नाम।
रावण निशिचर राजभो कुंभकर्ण बलधाम॥
सो० तेहि रावणको रूप अद्भुतभयो मुनीश सुनु।
दशशिर परम अनूप बीस बांह विजयी भये॥
रत्न जटित दशमुकुट विराजत।तेहिद्युतिदेखिभानुद्युतिलाजत॥
प्रतिशिर शुभग त्रिपुंड्र विराजै। काननमें कुण्डल छवि छाजै॥

कण्ठस मणि रुद्राक्षक माला । भुजनमध्य अंगद मणिजाला ॥
बड़ोवीर आयुध सब धारी । बड़ो भक्त शिवको अधिकारी ॥
भक्ति अनन्य तासु उर आई । शिवतजिपरहि न माथनवाई ॥
लंका मध्य बसै अभिमानी । शिवतजिनिजपरपरहिनजानी॥
शिवहि सेय सो अलबरलयऊ । लोकपाल सबतेहिवश भयऊ ॥
इन्द्रहिजीतिलियो मुनिरावन । लग्यो अग्निपकवान बनावन ॥
दो० यमहिं कीन कोतवाल पुर शशिकर छत्रहि दीन ।
मेघा माली बाग के पवन विजन करलीन ॥
सो० इमिहिं सकल सुर तात आज्ञाकारी तेहि भयो ।
वर्णत मति सकुचात तासु विभो अधिकार को ॥
रावण चरित सकल जगजाना । ताते मैं संक्षेप बखाना ॥
अबसुनियेमुनिकथहिसव्यासा । जेहि हित शंभु बसे कैलासा ॥
मनिके रही जेठ तिय जोई । तेहिसम भाग्यवती नहिंकोई ॥
तेहि सुत भो वैश्रवण मुनीना । परम भक्ति शंकर कै कीना ॥
धनपतिताहि शंभु मुनिकीन्हा । अलकापुरी राज्य तेहि दीन्हा ॥
सप्तम दिग्पति सोम दिशेशा । ताहि कीन करिकृपा महेशा ॥
कछुदिन इमिहि गये मुनिराई । पुनि कुवेरतप रुचिहिबढ़ाई ॥
काशीजाय कीन तपभारी । बहुदिन लगि बिनुभोजनवारी ॥
दो० तीन जन्मकी कृत प्रकटि आय भई यक ठौर ।
तबदृढ़मन शिवपदलग्योशिवतजिलख्योनऔर॥
सो० कह विधि सुनु मनिनाथ शिवपद मन लागब कठिन ।
होय पुण्य यक साथ कइउ जन्म की तब रुचै ॥
सुनहु मुनी हम झूठन कहहीं । वेद धर्म सब जानत अहहीं ॥
जिनको रहत पाप तन घेरे । शिवपदप्रीतिते रुचिरहैफेरे ॥
सहस जन्मलगि ममपद ध्यावै । तब हरिभक्त पदारथ पावै ॥
सहस जन्म हरिको गुणगावै । तबमुनिशंभु भजनतेहिभावै ॥
जे हरि भक्त होहिं निर्दंभू । तेसब छांड़िभजहिं पदशंभू ॥
जे हरिभक्त सकल अघहारी । तेनिन्दहिं अतिशयमदनारी ॥
यह मुनि वेदतत्त्व हम भाषा । तुमसे कछुक गोयनहिंराखा ॥

जो सपनेहुं चिंतै मदमारी। करतल होहिं पदारथचारी॥
दो० कनक कसे पुरुष बसे पारिख मिलत मुनीश।
तुमसेहरिहि न अपरप्रिय तुचितथितगौरीश॥
सो० सुनहु तात अब गाथ कहौं अपर शंकर चरित।
प्रकटभये विधुमाथ देखि तपस्या धनद की॥
तब शिव प्रकटि कहा बरमांगो। तातध्यानतजिके तुमजागो॥
तब कुबेर निज नयन उघारी। देखा पुरहि ठाढ़ मदनारी॥
पाहि पाहि कहि पाहि उमेशा। पर्यौ लकुटइव भूमिधनेशा॥
नाथ निरीछित मैं अब भयऊं। दर्शनपाय कहा नहिं लहेऊं॥
हरिविधि ध्यानधरत जेहिध्याई। ध्यानहुमें नहिं परतलखाई॥
जाहि लागि मुनि होत विरागी। सो लहिनाथ औरका मांगी॥
दर्शनको फल होय सो दीजै। मोहिं अज्ञलखि करुणाकीजै॥
तब शिव कह्यौ सुनो धनराई। तोरि चतुरता हमलखिपाई॥
दो० चाहत तुम मम निकटता सोइफल दर्शनकेर।
सोलीजै फल विहँसि मनतू ढिग बसव कुवेर॥
सो० गिरि कैलास पवित्र अलकापुर के निकट है।
बसि तहँ तोहिंकरि मित्र सुखदैहै निजदर्शफल॥
असकहि शिवभये अंतर्द्धाना। तबकुबेरनुतितेहिदिशिठाना॥
करि नुति धनद निजहिं घरआई। परखत रहे शंभु करुणाई॥
तब शिव मनमहँ कीन विचारा। हरिसों यहै करार हमारा॥
अवशि बात फुरि चाहौं कीन्हा। जोवरहरिहि कुबेरहिंदीन्हा॥
जेहितनसों पुरयों विधि आसा। सो तनजाय बसौं कैलासा॥
लीला तहां बहुत अनुसारों। निजदासन हरिदासनतारौं॥
असकहि डमरू दीन बजाई। तासु नाद तिहुंपुररहि छाई॥
डमरूनाद सुना जोइ जोई। शिवबोलावजानासोइसोई॥
दो० तुरत चले तेहि औरको सब निज साज सजाय।
तुरत शंभु ढिग पहुंचिके नुति कीन्हो हर्षाय॥
सो० सकल सुरा सुर नाग जायभये यक ठौर सब।
मानि प्रबल निजभाग शिवआवब लखिजक्तमें॥

हरि पुरते तब गयो रमेशा । गरुड़चढ़े निजगणलियेबेसा ॥
किये बनाव साज सब भारी । शंखादिक सब आयुध धारी ॥
भूषण सकल श्याम तनमाहीं । जनुदामिनिदमकतघनमाहीं ॥
हमहुं गये सब साज सजाई । हंस चढ़े शोभा अधिकाई ॥
लीन्हे सकल वेद मुनि साथा । शंभु दरश करिभये सनाथा ॥
गे सुरेश निज साज सजाये । गजपर चढ़े देव सँगलाये ॥
सनकादिक तहँ गये हुलासे । जिमिसरनिरखिजाहिंगजप्यासे ॥
दिगपति सकलगये मुनि तहँवां । उमानाथ शंकर रहैं जहँवां ॥

दो० जब सब सुर यकठेभये तब हम हरि हर्षाय ।
शिव सों कह करजोरि कै दीजै नाथ रजाय ॥

सो० तब शिव कह विहँसात सुनहु रमापति मम वचन ।
मोहिं रुचि उपजी तात करहु बास कैलास में ॥

तब करजोरि कह्यो जगपाता । नाथविचारकीन्ह भलिबाता ॥
यहि तन रहहु त्रिसुर के मेले । परब्रह्म शिव रूप अकेले ॥
तहौं नाथ दीजै मोहिं यहवर । जिमिनकरैंतुम्हरीकहुँ सरवर ॥
हमसेवक तुम स्वामि गोसांई । यहै रहै मति सदा अमाई ॥
एवमस्तु कहि तब गौरीशा । विप्रदान दे उठे मुनीशा ॥
वृषभ चढ़े शिव कीन पयाना । जय जय शब्द सुरासुर ठाना ॥
चले शम्भु गण करि सुबनावा । बिस्तर भै तेहि रूप न गावा ॥
हरि हम दक्षिण बाम विराजा । पुर पाछे सब देव समाजा ॥

दो० शक्ति लोक शंकर गये उमा सो अर्चा पाय ।
स्कँदपुर में भेटले हरि पुर गे नियराय ॥

सो० कह मुरारि कर जोरि आगे ह्वै मैं जातहौं ।
सामा करि यक ठौर पूजन करब तुम्हार प्रभु ॥

अस कहि हरि बैकुण्ठहिं आये । लक्ष्मी सों सबबात जनाये ॥
उठहु रमा जोरहु सब सामा । शिवहिंअर्चिशोभित करुधामा ॥
भाग्य धन्य मम धन्य तुम्हारी । जहँ आये करि कृपा पुरारी ॥
धन्य भाग्य यहि पुरके बासी । जहँवां चरणधरचो अविनासी ॥
अस कहि साज सजावन लागे । फूल बिल्व दल अक्षत मांगे ॥

चंदन धूप दीप फल नाना। विबिधमिठाईघृत पकवाना॥
करि संचय आगे युत नारी। शिव कहँ लेन चले बनवारी॥
करि दण्डवत भेंट धरि आगू। बोले वचन सहित अनुरागू॥
दो० पावन कीजै मम भवन पगु धरिये विधु माथ।
अस कहि शिव कहँ लै चले कटक सहित मानाथ॥
सो० निज बेदी लिपवाय तापर सिंहासन धर्‌यो।
तापर शिव बैठाय कीन दण्डवत तिय सहित॥
पंचामृत स्नान कराई। गन्ध पुष्प दल बिल्व चढ़ाई॥
धूप दीप नैवेद्य लगाई। अचमनकरि ताम्बूल खवाई॥
पुनि कर जोरि करननुति लागे। रमासहित अतिशय अनुरागे॥
जय जय कृपासिंधु वृष केतू। जयतु नाम भव सागर सेतू॥
जय जय उमा नाथ त्रिपुरारी। जयमहेश सब जगहितकारी॥
जय जगकारक पारक हारक। जयतुनाम तवभवकधि तारक॥
जयजग पावनसकलसोहावन। जयति दासको कष्ट नशावन॥
जय जय ईश अनीश गिरीशा। जयतिशम्भु जयशिवजगदीशा॥

छं०॥

नमामीनमामीनमःबिर्षगामी।सदासच्चिदानन्दत्रयलोकस्वामी॥
नमामीनमामी नमःगौरि कंतं। सदादीनपाली दया उरबसंतं॥
नमामीनमामी नमःमुण्डमाली। सदाभक्तके हेतहौ दुष्टघाली॥
नमामीनमामीनमः देव केतू। सदानामतव सिन्धु संसारसेतू॥
नमः वेद रूपं सदा वेद गीतं। प्रसीद प्रसीद प्रभो सर्व जीतं॥
अजंअव्ययं आदि मध्यं न अंतं। प्रसीद प्रसीद सदा प्रीय संतं॥
सदा सेव्यमानं हरि ब्रह्म शक्रं। त्रिनेत्रं सचंद्रं सदा पंच वक्रं॥
न जानाभियोगंजपन्नैवजामी। प्रभो पाहिमामंमहेशं नमामी॥
दो० सुनि नुति महा प्रसन्न ह्वै तब बोले विधु भाल।
नहिं अदेय तुम कहँ कछू वर मांगो जगपाल॥
सो० बोले तबहिं रमेश भक्ति देहु अनपावनी।
माया तोरि महेश मोहिं सतावै नहिं कबौं।
एवमस्तु कहि तब गौरीशा। चढ़ि वृषचले सकल जगईशा॥

हरिहुचले चढ़ि गरुड़सवारी । मनमहँ अति हर्षित बनवारी ॥
सत्यलोक ममपुर नियराये । हमहूं बिदा मांगि घर आये ॥
अर्चन सामा सकल बटोरी । शिव ढिगगये सतियकरजोरी ॥
नजरिगुजारि शिवहिं धरल्याये । अर्चनकरि अतिअस्तुति गाये ॥
जै जै शिवानाथ जग नायक । जैतिकृपाल स्वजनसुखदायक ॥
जै ममनाथ सनाथ करैया । जैति जैति जन पीर हरैया ॥
जैति अनाथन के तुम नाथू । जैति जैति जै जै विधुमाथू ॥
क० सेवक हेत कियो विषपान स्वरूपधरयो निज बंदरकेरो ।
पातित गंधहिमानि स्वअर्पदियो कि तबैपद इंदरकेरो ॥
काशीसे औरनठौरप्रिया तजिताहि रख्योमनमंदरकेरो ।
ओरी चहै तसहीकरुणा शिव बांछितपूरु ममंदरकेरो ॥
दो० सुनि नुति महा प्रसन्न है दियो भक्ति वरदान ।
आगे को वृष हांकेहू पहुंच्यो इंद्र मकान ॥
इंद्रहु अर्चेहु भेंट दै शची सहित हर्षाय ।
नतिकीन्ह्यों. करजोरिके अस्तुति किहेउ सुनाय ॥
सो० जै जै जै विधु माथ सेवक के सुखदायकह ।
कीन्ह्यो हमहिं सनाथ मम पुरमें पगुधारिकै ॥
जै जै जै सकलेश सकलद सकलप सकल पर ।
कीन्ह्यो हमैं सुरेश दीन जानि अपनायकै ॥
सुनि सुरेशकी विनय अतोवा । अतिप्रसन्न शिवभे सुखसीवा ॥
कहेउ सुरेश मांगु वरदाना । मोहिंप्रसन्नलखिनिजमनमाना॥
मांगेउ भक्ति सुरेश अदंभू । एवमस्तु तब भाषेहु शंभू ॥
चले बहुरि शुचि पुरमहँ आये । भेंट समर्चन तहँ प्रभु पाये ॥
वह्निकीन अति अस्तुतिभारी । जै जै उमा नाथ त्रिपुरारी ॥
जै त्र्यम्बक जै जै सर्भेशा । जै सकलद. जै जै सर्वेशा ॥
होयप्रसन्न तेहिको सनमानी । दिहेउ भक्तिवर तेहिमनमानी ॥
धर्मराज पुर तहँ ते आई । तहँहू भेंट समर्चन पाई ॥
दो० धर्मकीन नति नुति बहुत हाथजोरि शिरनाय ।
जै जै दीनानाथ प्रभु जै जै दीन सहाय ॥

सो० सुनि विनती वृष केरि भये प्रसन्न उमेश बहु।
दीन्ह्यो भक्ति घनेरि पुनि आगे वृष हांकेहू॥
नैऋत पतिपहँ तब शिव आये। तेहिसों भेंट समर्चन पाये॥
सुनि नुतितासु बिमलबरदीना। आगे गमन महा प्रभुकीना॥
वरुण पवन सों पूजा लैके। भये प्रसन्न भक्ति वर दैके॥
अलकापुरी जाय नियराने। तब कुबेर ह्वै बिदा पराने॥
निजपुर आय जोरि सब सामा। आगे लेनचल्यो युत बामा॥
त्राहित्राहि पुनि त्राहि पुकारी। भूतल करौ तपस्यौ सनारी॥
करिदण्डवत भेंट धरि आगे। प्रभुहिं लेवाय चले अनुरागे॥
हरि हमहूं कहँ कीन प्रणामा। सबविधि प्रेमप्रचारि सबामा॥
दो० गृह लैगयो सप्रेम सों सिंहासन रचवाय।
श्वेत पुष्प बिछवाय के तापर शिव बैठाय॥
सो० दक्षिण हरि बैठाय हम शिव के बांयें लसे।
सामा सकल मँगाय पूजनलाग दिशेश तब॥
पंचामृत अस्नान कराई। चंदन सहित कपूर चढ़ाई॥
अर्पेउ पुष्प कंज कर वीरा। पाती बिल्व अक्षिदल कीरा॥
धूप दीप नैवेद्य लगाई। दै ताम्बूल सुघंट बजाई॥
आरत हर की आरत साजे। शंख मृदंग महाध्वनि बाजे॥
तब करजोरि बहोरि दिशेशा। करि दण्डवत रिझायमहेशा॥
तब तिय सहित खड़े ह्वै आगे। अस्तुति करन प्रेमसोंलागे॥
जय जय उमानाथ त्रिपुरारी। जयमहेशनिजजनदुखहारी॥
जय जय सकल लोक अवतंसा। जय रमेश मन मानसहंसा॥
क० लायकहौ जगनायकहौ, सुखदायकहौ वरदा तुमहींहौ।
भोजनदा जलदा तुमहीं शिववस्त्रहु सुंदरदा तुमहींहौ॥
दासनको पतिदा तुमहीं अरु दुष्टनको करदा तुमहींहौ।
औरीकोतोपतिदासुखदादिनसांझसबोफरदातुमहींहौ॥
दो० सुनि विनती निधिनाथ की भये प्रसन्न महेश।
वर मांगो जो भावई सो हम देव निधेश॥
सो० नहिंमोहिंकछुअबचाह हाथजोरि निधिपतिकह्यो।

रह्यो शेष अब काह चारि पदारथ मिलन में ॥
हरिविधिजिनहिं ध्यानधरिध्यावैं । ध्यानहुंमें नहिं दर्शन पावैं ॥
जन्म जन्म मुनितनतप कसहीं । सुतगृहछांड़िमहाबनबसहीं ॥
योगी धरत ध्यान जेहि लागी । भूप राज तजि होहिं विरागी ॥
सो सदेह मम भवन बिराजा । अबवग्लेब कवन ममकाजा ॥
करतल भयो पदारथ चारी । यहिसे बस्तु कवनिहै भारी ॥
तदपि नाथ बर मांगौं येहू । सो करि कृपानाथ मोहिं देहू ॥
माया तोरि बहुत बलवाना । जेहिबशभूलतविधि भगवाना ॥
सो न नाथ मोहिंकबो सतावै । भक्तिज्ञानप्रति दिनहिं बढ़ावै ॥
दो० एवमस्तु शंकर कह्या शिर ऊपर कर फेरि ।
अब तुम मित्र हमारभो माया डर न कुवेर ॥
सो० ज्योतिष मुनिदै मान पूछि मुहूरत शुभघरी ।
विसुकर्म्महिंसनमानि कह्यो।शिवालयममरचो ॥
गिरि कैलास सुसुन्दर भारी । तामें बासा रचो हमारी ॥
ममगृहसहितशक्ति अरुगणवर । पृथकपृथकसबरचोमुदिततर ॥
हरिविधिआस बनावहु सुन्दर । रचहुमुनिनके भवनरुचिरबर ॥
सुनि आयसु विसुकर्मा तबहीं । माथ नवायचलो पुनि सबहीं ॥
प्रथम बनायो शहर पनाहा । चांदीमें सब काम निबाहा ॥
अष्ट पहल तेहि रची स्वहावा । उभय बुर्ज प्रति पहलबनावा ॥
चांदी भीत बुर्ज सोने के । विद्रुम जाल रचेहु कोनेके ॥
बज्र केवाँर लगायो फाटक । कारी गरी कीन सब ठाटक ॥
दो० उत्तरदिशि दरवाजकरि तेहि पुर रच्यो बजार ।
जहँ बिन मोल बिकातहै चारु पदारथ चार ॥
सो० पूरबदिशि रचि ताल मणिसोपानविचित्ररचि ।
फूले कँज बहु लाल नील पीत उज्ज्वल हरे ॥
जल पक्षी तहँ भये अनेका । हंसादिक शुभ एकते एका ॥
उत्तर दिशि रचि बाग मनोहर । बेल जम्बु मंदार अम्र बर ॥
पश्चिमदिशिबनशुभगरुवहावा । कुसुमादिक तहँफूल फलावा ॥
मध्य भवन तहँ रच्यो अनेका । सुन्दर सुखद एकते एका ॥

चटापटी तहँ भूमि बनावा । सेत असेत दृषद तहँ लावा ॥
बीच बीच मणि लाल पियारी । रच्यो जाल सब मीनाकारी ॥
मध्य सुभग शिवका गृह सोहै । कच्छा सप्त देखि मन मोहै ॥
सत महला तहँ बनी अँटारी । छुवत मनो नभ बांह पसारी ॥
दो० दोहरे घर प्रति दिशि रचे तेहि आगे खमसार ।
जोड़ी खम्भा कनक के बीचम विद्रुम जार ॥
सो० मणिन सों कीन्ह्यो काम जाल बेलि बूटा तहां ।
चमकत आठो याम उदय मनो कोटिन मिहर ॥
चित्र बिचित्र वसन छत लाई । मणि झाड़ैं तहँ बहु लटकाई ॥
मुकुर आदि तहँ लगे अनेका । रंग रंगके सहित विवेका ॥
विजन आदि तहँ बहुत सँवारी । जेहिसोंनिकरतत्रिविधबयारी ॥
चित्र विचित्र पताका केतू । प्रति गृह रच्यो चिन्ह के हेतू ॥
रचि रसाल पल्लव मणि केरे । बन्दनवार कियो चहुं फेरे ॥
रचि रेशम डोरी बँधवावा । मनहुं मुक्तिको फन्दलगावा ॥
प्रति गृह दीन्ह्यो घंट लगाई । तेहि झनकार अकाश समाई ॥
घंटा रव अति प्रिय शिवकाहीं । यह मुनीश समझो मनमाहीं ॥
दो० घण्टा नाद पियारि अति शिव कहँ है मुनिनाथ ।
जो जगमाहिं बजावई तेहि शिव करत सनाथ ॥
सो० अपनी मति सम तात कह्यो बननि कैलासकी ।
वेदौमति सकुचात गिरिबनाव नहिंकहिसकहि ॥
मुक्ता झालरि सकल सँवारी । प्रति दरवाज जरी चिकडारी ॥
प्रतिमा तहां रची बहुतेरी । देव अदेव जीव गण केरी ॥
निज स्वरूप विसुकर्मा देखा । हमकि सदृशयहकरतसुलेखा ॥
मणिमय वेदी बीच सुहावा । तहां सर्वतोभद्र बनावा ॥
सिंहासन तहँ श्वेत बनावा । हीरा खान तहां बहु लावा ॥
बेलि बनायो अहि मणि केरी । जगमग ज्योति उठतचहुंफेरी ॥
इमि रचि सुभग शैल कैलासा । आये लौटि शम्भु के पासा ॥
नाथ शैल रचि हम फिरि आये । अब शासनका होत सुहाये ॥
दो० सुनत उठे शंकर तबै हरि विधि सुर गण साथ ।

जाय देखि रचना सकल भे प्रसन्न विधु माथ॥
सो० हरिपद जोरिके हाथ सकल सुरनकह मुदितमन।
करो यतन इमि नाथ जिमि होवै अभिषकशिव॥
तब शिवसों कर जोरि रमेशा। कीन्ह्योविनयसुनो सकलेशा॥
सकल सुरन मन इच्छा भारी। नाथ करैं अभिषेक तुम्हारी॥
भरि नयनन देखैं उत्साहा। जन्मसुफलकरि लेवहिंलाहा॥
तब शिव कहा सुनो बनवारी। जस कछु इच्छाहोय तुम्हारी॥
करहु सोई नहिं बार लगावो। करिउत्सव जगको हुलसावो॥
अस सुनि सकलदेवमुनि हर्षे। करि उत्साह फूल तिन बर्षे॥
सकल सुरासुरशिवरति पागे। सामा सकल बटोरन लागे॥
चौकें चारु सुभग पुरवाई। तीरथ जल सब लीन मँगाई॥
दो० नरियर पुंगी दुर्ब दधि कँदयल कंज धतूर।
गोरोचन केसरि मलय मृगमद अगर कपूर॥
सो० सप्त धान्य मँगवाय बेलपत्र तुलसी दलहि।
करि सामा यकठाय तब रमेश शिवसों कह्यो॥
नाथ उठहु करिये अस्नाना। दीजै हमैं नयन फल नाना॥
यह सुनिउठे सकलजगस्वामी। सकलकह्यो जयजयवृषगामी॥
चौकी रतन जटित धरि दीन्हो। तेहि ऊपरशिव आसनकीन्हो॥
करन लगे अस्नान पुरारी। मींजत तन तहँ हमहुमुरारी॥
इन्द्र लिये कर सुबरण झारी। भरि भरि देत सुतीरथ बारी॥
करि अस्नान बाघ पट धारे। श्वेत भस्म त्रयपुण्ड्र सँवारे॥
जटा मुकुट अहि मौर बनाये। अहि भूषण सब अंग सजाये॥
मणि पट सोनस जब नरखेला। तेहिते शंभु न निजतनमेला॥
दो० भस्म श्वेत धूलित किये मुण्ड माल गल माहिं।
कंठा गहि रुद्राक्षको विष छबि अधिक सोहाहिं॥
सो० शूलादिक हथियार अति सोहत दश हाथमें।
सोहत चंद्र लिलार सजि बैठे सिंहासनै॥
कनक थार आरती सँवारी। प्रथम रमायुत कीन्ह मुरारी॥
अर्चन सामा ते करि अर्चा। भवकथितरतकिहे जेहिचर्चा॥

देव बधू सब नाचन लागी । गंधर्व गावहिं अधिक सुरागी ॥
बाजक सकल बजावहिं बाजा । जेहिसुनिहर्षित देव समाजा ॥
ढोल निशान शंख सहनाई । घंटा रव तहँ अधिक सुहाई ॥
झांझ सितार मृदंग मजीरा । सकल बजावहिं पुलकशरीरा ॥
सुरासहित हम कीन्ह्यो पूजा । निजसमलख्योभागिनहिंदूजा ॥
पुनि पूज्यो हर्षित असुरारी । शची समेत प्रीतिकरि भारी ॥
दो० पूज्यो बहुरि दिगीश सब प्रेम सहित युत नारि ।
देवजाति पूजे सकल त्रिय युत प्रेम सम्हारि ॥
सो० सनकादिक तहँ आय पूजा कीन्ही वेद विधि ।
निगमन तन प्रकटाय पूजा भाव बतावहीं ॥
मुनिन आय पूजा तहँ कीन्हा । प्रीतिसहितचितशिवपददीन्हा ॥
दैत्यादिक सब दानव राई । पूजाकीन्ह सहित सेवकाई ॥
शैलादिक धरिधरि निज रूपा । पूजेउ आय चराचर भूपा ॥
सबगिरिमिलि पूजहिंकैलासा । तात वंश तुम कौन प्रकासा ॥
आय सुमेरहु तेहि शिरनाई । गिरि कुलभूषणभयो सुहाई ॥
तुमते अधिक न वेदन गावा । परब्रह्म जेहि भवन बनावा ॥
तब शिवगणपूजेहु शिवकाहीं । लिहे आरती दुहुं करमाहीं ॥
नाच गवनई चहुं दिशि होई । जयजय शब्द कहै सबकोई ॥
दो० जहँ लगरहे मुनीश तहँ पूजेउ सकल महेश ।
वाञ्छित फलसबही लह्यो रह्यो न दुखलवलेश ॥
सो० करि पूजा मनलाय हाथजोरि ठाढ़े भये ।
पृथक पृथक शिरनाय लागे अस्तुतिकरन सब ॥

विष्णुर्वाच-छन्द ॥

जय शंकर शंभु उमा रमनं । त्रैताप नशावन पाहिजनं ॥
जेहि भूलेहु नाम तुम्हार कहै । तेहिको दुखलेश कबौनरहै ॥
जनदोष विभंजन सुःख करं । शिव शंकर शंभु पुरारि हरं ॥
तुवभाव कहां लगि गाय कहौं । अतिसिंधुअगाध न पारलहौं ॥
दिन राति दिनेश गणेश बकैं । अरु शारद नारद शेष थकैं ॥
गुण अंत न पावत तोर कोई । करुणालहि नीचहु पावसोई ॥

निजदास विलोकि दया करिये । दुखदारिद दोष सबै हरिये ॥
भले आय हियां गिरि वासकरे । जयजयति शिवापतिशंभुहरे ॥

विष्णुर्वाच-सवैया ॥

सिंधु मथ्यो जबहीं सुरदैत्य तबै लखि लीन प्रभुत्व तुम्हारी ।
विषआंचमेंकोऊ न बांचसकयोतबहीं सबहीं तुमकाहिंपुकारी ॥
सुनिआरतआय लियो विषखाय तोलीन्होबचाय सुरासुरझारी ।
नाथअनाथ सनाथकियो भलेआय इहां गिरिमें पगुधारी ॥ १ ॥

सुरेशउचु:--छन्द ॥

जय नाथ अनाथ सनाथ करं । दुख दोष विभंजन तापहरं ॥
मदनारि पुरारि महेश प्रभो । गुण मंदिर सुंदर नाथ विभो ॥
नहिंआदि न मध्य न अंतकबौ । नहिंवैर न नेह समान सबौ ॥
पर भक्त को आदर नाथ सदा । यह गावत वेद पुराण मुदा ॥
भलेआय इहां गिरि वासकिये । निजदासनको सुखपुंजदिये ॥
हम हैं अज्ञान कृपा ठनिये । निजदासन मध्यहमैं गनिये ॥

वेदाउचु: ॥

जय ईश अनीश अनंत कदा । जय सेवकके सुखदात सदा ॥
निर्द्वन्द अखंड अमान हवो । तुवसेवकको नहिं दुःखकवो ॥
तुमहीं विधिको भवकार करी । तुम्हरे बल पालनहार हरी ॥
तुमहीं दिहो राज पुरंदर को । तुम माथधरो शिशु चंदरको ॥
निज भूषणमें तुम व्याल लई । निजदासनकोमणि मालदई ॥
तुम आपुहि आपु निशंक भये । निज दासनको चतुरंग दये ॥
हम तो गुणतोर हमेश बकैं । शतमें यक अंशन गायसकैं ॥
तुमहीं हमका प्रभु सत्यकरी । अबत्राहिपुकारिकेपाहिपरी ॥

सर्वेउचु: ॥

जयजय जयति जयाके कंता । जयजयजयति जलंधरहंता ॥
जयजय जयति सर्व हितकारी । जयजय सकलाधीश पुरारी ॥
बम् बम् बम् बम् बम् वृषकेतू । बम्बम्बम् बम्भवकधिसेतू ॥
बम् बम् बम् बम् बम् वृषधारी । बम्बम्बम्बम्बम् मदनारी ॥
नमो नमो विधि रूप सँवारी । सृष्टिकरौ सब जगकी झारी ॥

नमो नमो हरि रूप बनाई। पालौ सकल जक्त सुरसाई॥
नमो नमो निजरूप सम्हारी। प्रलयकालमहँ बनत सँहारी॥
नमो नमो धरि सूर्य सरूपा। हरौ सकलजगको तमधूपा॥
दो० नमोनमोजयजयतिजय बम् बम् बम् त्रिपुरारि।
दया करो सब दुख हरो ओरो ओर निहारि॥
सो० नुति सुनि सबकी तात भे प्रसन्न शंकर बहुत।
बोले अति हर्षात बर मांगो सोइ मन रुचै॥
सब सुर बोलि उठे हरि आदी। सुनहुसकलपतिशंभुअनादी॥
यहिते अधिक कवनबड़ लाहा। देखत चरण सहित उत्साहा॥
जेहिचरणनमुनिध्यान लगावत। ध्यानहुमें नहिं दर्शन पावत॥
तासु प्रत्यक्ष रूप हम देखैं। यहितेअधिक कवन बर लेखैं॥
जाको चरित वेद नित गावैं। नेति नेति कहि पार न पावैं॥
ताकी करत प्रत्यक्षहि पूजा। यहितेअधिक कवन बर दूजा॥
तजत राजनृप जेहि पद लागी। बसि उद्यान होत अनुरागी॥
तेहि प्रभु संग खेल हम राचहिं। यहितेअधिककवनवरयाचहिं॥
दो० तदपि नाथ शासन समुझि मांगित यह वरदान।
देहु भक्ति निज चरणकी कृपा सिंधु भगवान॥
सो० दूसर यह वरदान देहु नाथ करुणा सहित।
तव माया बलवान तेहि वश कबहुं न भूलहीं॥
एवमस्तु तब शंकर कहेऊ। सकलसवजीवनकोसुखलहेऊ॥
तब बोले शिवसब सुर राऊ। निजनिज लोकनकोसबजाऊ॥
जाहु भवनमोहिंसुमिरहु जाई। हमहैं तुम्हरे सदा सहाई॥
चले सकल तब माथ नवाई। शिवशासन निजभवनसिधाई॥
तबहरिहमैंबोलिशिव लीन्हा। चितै कृपा करि आदर दीन्हा॥
जाहु सुखेन रहहु घर माहीं। सुमिरहु मोहिंसदा मनमाहीं॥
तुम मम अंग भेद नहिं नेका। करहु काजजग सहितविवेका॥
माथ नाय हरि हमहुं सबामा। चले जपत मनमहँ शिवनामा॥
दो० तब अक्लेश बोलायके बिदा कीन त्रिपुरारि।
जाय भवन सुखसेरहहु ममरति करहु सम्हारि॥

सो० तब शिवलीन बोलाय बाजक नाटक गायकन ।
बरजरदीन अघाय कोन अयाची करि विदा ॥
सकल विदाकरि शिव मदनारी । सगण रहे कैलास बिहारी ॥
कछुदिन शंभु रहे बिननारी । निजस्वरूपकोध्यानसम्हारी ॥
गये कछुकदिन असमन बीतेउ । प्रगट्योशक्तिनबहुदिनबीतेउ ॥
चिंततही शिव के जगमाई । दक्षसुता ह्वै प्रकट जनाई ॥
सतीनाम तहँ भयो सुहाई । बरी शंभु कछु तप करवाई ॥
बहुत विहार कीन शिव संगा । लीला हेतु कीन तनभंगा ॥
शिव अपमान दक्ष जब कीन्हा । दक्षजतनलखिसोतजिदीन्हा ॥
तब प्रकटी हिमगिरि गृह आई । गौरिनामतहँ अधिकसोहाई ॥
दो० सो अविनाशी तनभयो कछुदिन तपकरवाय ।
शंभुबरी तब गौरिका हर्षित भये बनाय ॥
सो० करत विहार अनेक शक्ति सहित कैलास में ।
पालत जन सविवेक भक्तन को सुखदै रहे ॥
इमि कैलास बसे गौरीशा । सो हमतुमसे कहा मुनीशा ॥
शिव कैलास कहत यक बारा । कटतपापसब मिटतबिकारा ॥
शिव कैलास कहत दुसराई । कोटि यज्ञ फल सो नरपाई ॥
तिसरे कहत जो शिव कैलासा । तेहिकोतेहिगिरिहोतनिवासा ॥
मुक्ति होत तेहिकै मुनि दासी । यथा फलदहै अभिधा काशी ॥
जो यहकथा महा सुखदाई । आपुपढ़हि असुरहिसुनाई ॥
सो इत सुख सुत धनते पैहै । अंतशंभु के भवन सिधैहै ॥
जो यह कथा सुनी चितलाई । इहांभोगिसुख परगतिपाई ॥
दो० तब नारद विधिसों कह्यो हाथजोरि नय माथ ।
जस कछु करुणा बापकी सुतपर चाहो नाथ ॥
सो० तस तुम कीनो तात शिव यश मोहिं सुनायहू ।
तृष्णा पै अधिकात जिमि लोभी धन पायकै ॥
नाथ एक संशय मन मेरे । मिटिहै तात सुकरुणा तेरे ॥
जब कुबेर तप कीन बखानी । कह्योजन्म शुचिकृतप्रकटानी ॥
सो कृत नाथ कहौ बिस्तारी । मम रुचिदेखि शंभुपद भारी ॥

जप तप ध्यान योग मख पूजा । कीन्ह्यो यहै कि पर कछु दूजा ॥
तब विधि दै नारदै बड़ाई । कहन लगे शिव कथा सुहाई ॥
द्रुपद पुरी यक नग्र मनोहर । यज्ञदत्त तहँ बसत बिप्रवर ॥
दीक्षितपदवी सबकोउ कहई । नृप दर्बार मान बड़ रहई ॥
धनीभयो नृपसों धन पाई । पंडित बड़ा रहै द्विजराई ॥

दो० अति सुशील तेहि नारि मुनि पतिब्रता सुप्रवीन ।
काळपाय यक सुत लहेउ अतिशय उत्सवकीन ॥

सो० जातिकर्म सब कीन विप्रहि दीन्ह्यो दान बहु ।
याचकको धनदीन गुणनिधि राखेउ नाम तेहि ॥

दो० मूड़न औ कनछेदनो यज्ञोपवीत बिवाह ।
समयसमयमहँसबभयो तहँतसभयोउछाह ॥

सो० गुरु घर सौंपेहु ताहि पढ़न हेत विद्या पिता ।
खलतातेहिमनमाहिं बसीभाग्यबश मुनिसुनो ॥

पाय कुसंगति भयो जुआरी । पितुको धनसब दीननिकारी ॥
चोरी करत छलत पर नारी । निजतियसों अति बैरसिहारी ॥
पिता तासु गुण जान न एका । जानत विद्या पढ़त सटेका ॥
जननी तासु सकल गुण जानै । पूछहु पतिसों नाहिं बखानै ॥
जबहिं तासुबत पूछत द्विजवर । कहतगयो भोजनकरिगुरुघर ॥
एक समय जननी लै ताही । सिखवन लगी यकंते माही ॥
तात तजो यह चाल कुचालू । बायस बनो न बंश मरालू ॥
तू पितु की निन्दा सब करिहैं । पाप भार मोपर बहु धरिहैं ॥

दो० दुहु कुलमोर कुलीन अति तेहिमहँ लगिहैदाग ।
तात चलहु शुभ चाल तुम कुकरम कोजैत्याग ॥

सो० मूर्खहि होय न ज्ञान चहै विरंचि पाठक बनै ।
फल नहिं बेतमें मान यद्पि अमीकी झरिलगै ॥

गुणनिधि मनहिं न एकौभावा । यद्यपि जननी बहुत सिखावा ॥
ईश्वर योग पाय यक दाई । निज मुंदरी देख्यो द्विजराई ॥
पहिरे एक जुवारी जाता । तिहिसोंहँसिपूछेउ द्विजबाता ॥
यह मुंदरी कहँ पायो भाई । हमसे सत्यहि देहु बताई ॥

तब वह द्यूतकार हँसि बोला । तेहिवृत्तांत सत्यसब खोला ॥
सुनहु विप्र वरणहिं हम चोरा । जुआखेलि हारचो सुततोरा ॥
केवल यहै न मुंदरी हारी । सकलद्रव्यतवलह्यो जुआरी ॥
केवल जुआ न तव सुत खेलत । चोरी करत परस्वहि हेरत ॥
दो० तुमहिं नसुतकेगुणबिदित तुवसुतअतिखल तात ।
करत दुष्टता रैन दिन पढ़न न कबहूं जात ॥
सो० द्विज वर भयो अचेत सुनतकथा निज तनयकी ।
श्वास मृत्युकी लेत बसन मूंदिमुख घर गयो ॥
मांगेउ तब मुंदरी द्विज राई । तेहित्रियकह्योसहितचतुराई ॥
करत टहल कतहूं घर माहीं । राखिदिहेउँअबहींसुधिनाहीं ॥
तुमहिं जेवाय जेय मैं लेऊं । तब मुद्रिका काढ़िकै देऊं ॥
तबकहदिक्षितवचनभरिश्वासा । अबलगितोरकिहेउँविश्वासा ॥
अबलाचरितनअबलगि जानेउँ । वचनतोरसबसत्यहि मानेउँ ॥
सुत वृत्तांत न मोहिं बतायो । पूछेहुपर तुमबहुत छिपायो ॥
कवनि खोरि अब देहिं तुम्हारी । ऐसेन इच्छा रहै पुरारी ॥
अब हम कहैं करो तुम सोई । कुसुत त्याग कीन्हे भलहोई ॥
दो० सुतहि त्यागु संकल्पकरि कुसुत तजे भल होय ।
भोजन हम तबहीं करब देब तिलांजुलि सोय ॥
सो० अस सुनि सत बिचार हाथ जोरि चरणन परी ।
करहु क्षमायहिबार अस न करीसुत अब कबौं ॥
होय चहै सुत बहु अपकारी । कबहुं न दया तजत महतारी ॥
ऐसहि शम्भु सुनहु मुनिराजा । शठ सेवक कर करत नेवाजा ॥
क्षमितभयोद्विजसुनित्रियबानी । अपरकथा सुनिये मुनिज्ञानी ॥
दूरिहितेगुणनिधिसुनिपितुरिस । नगरछांड़िभाग्योतब परदिस ॥
सुमिरत मातुदुलार मनहिंमन । भागो चलोजात व्याकुलतन ॥
तेहि दिन मिल्यो अन्ननहिं बारी । बार बार हा मातु पुकारी ॥
सो दिन असित फाल्गुन भूता । बर्त राज शिवराति सुपूता ॥
महा बर्त शिव को अति भावे । भाग्यवंत तेहि महँमनलावे ॥
सो० ओरी हवै शिवराति महा ब्रत बर्तनमें यह राज रजाहै ।

जो कोउ बर्ती करै यहि बर्तको ताको दुहूं दिशि वेशमजा है॥
यहां करि भोग ससंपति संतत अंतमें होत स्वदेव ध्वजा है॥
जो न करै यहि बर्तको पामर ताको यमालै में खूब सजा है॥

दो० वर्णनमें जिमि विप्र वर वेदन में जिमि साम।
सरितन में गंगा यथा शैवन में श्रीराम॥

सो० तियमें शैलकुमारि मंत्रनमें षट वर्ण जिमि।
नारद लेहु विचारि वर्तविषे शिवराति तिमि॥

अबगुणनिधिकेसुनो हवाला। क्षुधित तृषित अतिभयोबिहाला॥
मगमहँ परयोसांझ नियराई। महाथकित पगचलि नहिंजाई॥
तहां शिवालय इक रहख्याता। शैवलोग तहँ पूजन जाता॥
कीन्हे बर्त वेद मत सांचा। हिलिमिलि चलेजातदशपांचा॥
पूजन सामा सकल जुहाये। महा मधुर पकवान बनाये॥
सो सुगंध गुणनिधि जबपावा। क्षुधावंत तेहि पाछे धावा॥
शिवहि चढ़ाय ताहिं जबसोई। तब सब वस्तु लेब हम गोई॥
खाब पेट भरि मधुर अनाजू। बड़ो कलेश लह्यो हम आजू॥

दो० क्षुधासे और कलेश नहिं अन्न से और न दान।
क्षुधितहिभोजन देतजोइ पुण्य नताहिसमान॥

सो० लालच बहु मनमाहिं गुणनिधि तेहि पाछेचल्यो।
बीतेउ यकक्षण नाहिं पहुंचिशिवालय ढिगगयो॥

सकल ब्रतीमिलि भीतरपैठे। गुणनिधि आपु दुआरे बैठे॥
पूजनकरन लागि सबकोई। गुणनिधि यकटक चितवतसोई॥
भाग्यवंत तेहि समनहिंदूजा। करि उपवास लखत शिवपूजा॥
द्विपहर पूजा तिनसबकरिकै। सोय गये तन आलस भरिकै॥
यदिजागरणचहिय सबयामा। रहे सकलअति गुण बुधि धामा॥
तद्पि शंभु लीला मुनि राई। सोयगये अति आलस पाई॥
गुणनिधि तबहिं सुअवसर पाई। मंदिर भीतर गयो समाई॥
झुलमुल बातीतिमिर समाना। देखि न परतसकल पकवाना॥

दो० निज तन बस्त्रहि फारिकै बाती बारयो सोय।
शिव समुझ्यो निज आरती अर्द्ध निशामेंहोय॥

सो० जाग्यो चोरी चेत बिन पायेको ब्रत कियो।
दीपक देखन हेत लालच बश पूजा लख्यो॥
सकल शंभु मान्यो ब्रत भावा। गुणनिधिको तबहीं अपनावा॥
सकल पाप तेहि कीन्ह्यो दूरी। सब विधि भयो धर्म भरिपूरी॥
असको दीनदयाल मुनीशा। औघर दानी पर जगदीशा॥
भजै और जो तजि अस ईशा। पशुसमानतेहि जानु मुनीशा॥
शिवहित्यागि जे औरहि यांची। कबहुं न पेटभरी ते सांची॥
जब गुणनिधि पकवान बटोरी। हर्षित बाहर चल्यो बहोरी॥
लग्योचरण यकभक्त चरणमहँ। जागिपर्‌योसोइचौंकितमनमहँ॥
चोर चोर करि कीन पुकारा। पुर रक्षक सुनतहि शरमारा॥
दो० लगतबाण गुणनिधि मर्‌यो सुनो महामुनिराय।
लखिपापी तेहि जन्मको यमगण पहुंचे आय॥
सो० बांध्यो लोह जँजीर तब दंड मारन लग्यो।
अतिशय दीन्हीपीर किहेउ पाप सोइ लेहुफल॥
उहां शंभु अस करुणा ठानी। स्वगणबुलाय कहा मृदुबानी॥
बड़ोब्रती गुणनिधि द्विजवारा। यमगणसों दुख सहतअपारा॥
करहु न बेर वेगि तुम जावो। ताहि छुड़ाय निकटममलावो॥
दर्शन देव बर्त फल मानी। नृपति बनाउब दर्शकी कानी॥
शिवगण तुरत तहां चलिगयऊ। यमगणको अतिहटकतभयऊ॥
यहिक्योंकरतदुखित असतापी। नहिंचीन्हत तुमपापिअपापी॥
यमगण कह्यो मष्टकरि रहहू। शिवगणहै नहिंअनुचितकहहू॥
तजि अधर्म कब कीन्ह्यो धर्मा। नान्हेनसे यह कीन कुकर्मा॥
दो० शिवगण कह्यो रिसायके यहिसम नहिं शिवदास।
किहेउ बर्त शिव राति में जाग्यो सहित हुलास॥
सो० शिव के बैठि समीप पूजन यकटक से लख्यो।
शिव ढिग बारेउ दीप अर्द्धराति निजचैलहति॥
बड़े अयान हवो यम दूता। चीन्हत नहिं तुमपूत अपूता॥
शिव ब्रतकरि फिरि पापकहांहै। शिव पूजक पर ताप कहां है॥
असकहिगुणनिधि लीनछुड़ाई। लौटिगये यमगण खिसिआई॥

जाय शमन ढिग रोदन ठाना । शिवगण बड़ोकीन अपमाना ॥
जन्मक पापी लीन छुड़ाई । सकलपाप तेहि दीन मिटाई ॥
धरिशिवध्यान दीखयमजबहीं । ब्रतकी बर्तलखा सबतबहीं ॥
निज दासनको शासन दीन्हा । सुनहु अनुगममसुमतिप्रबीना ॥
करै जो शिव तिथिमें उपवासा । कबहुं न जाहु तासुके पासा ॥

दो० जो पूजा शिव की लखै की पूजै मन लाय ।
अवर पाप कैसेउ करै तेहि मग चलौ बचाय ॥

सो० भस्म त्रिपुण्ड्र ललाट जेहिके देखौ हे अनुग ।
छांड़ौ तेहिकी बाट चहै पाप केतनौं करै ॥

जेहि गलमें रुद्राक्ष लसाई । तेहिकी गली चलौ बरकाई ॥
सांझ समय शिव दर्शन करई । तेहि मग कबहुं नतू पगुधरई ॥
जो शिव मंदिर कबहु बहारै । तासु ओर तुम नाहिं निहारै ॥
शिव शिव कहै सोय जब जागै । तेहिकी गली छांड़ि तुमभागै ॥
लोभ प्रेम रिस छल डर सानी । शिवसों नेह करै जो प्रानी ॥
करि दण्डवत ताहि बरकायो । भूल्योसे तेहिनिकट न जायो ॥
इमिनिजगणन शमनसमुझाई । बार बार शिव पद शिरनाई ॥
जो मम गणन कीन अपराधा । सो क्षमिये करिकृपा अगाधा ॥

दो० अब सुनिये मुनि शिवकृपा गुणनिधि परभैजोय ।
इंद्रसिहायक कछुक दिन शिवपुर राख्योसोय ॥

सो० कछु दिन बीते ताहि कीन कलिंगप बाल मुनि ।
करु बिचार मनमाहिं को कृपाल शंकरसरिस ॥

बारें से शिव पद रति गह्यहू । पूर्व जन्मकी सब सुधि रह्यहू ॥
सकल लेपतजि भस्मलगावत । सकलनामतजिशिवशिवगावत॥
भूषणतजत कनक मणि केरे । बरु रुद्राक्ष सजत चहुं फेरे ॥
बनवायहु शिवके बहु मंदिर । दीपदान तहँ करतअधिकतर ॥
ग्रामाधीश सकल निज देशू । सबन बुलाय सिखायहुवेशू ॥
रचहु शिवालय सब प्रतिग्रामा । दीपदान तहँ करहु ससामा ॥
जबलगिजियोकियोइमिकामा । मरि पुनि गयो शंभके धामा ॥
रहिकछु दिवस तहां यहिभांती । भयो आय पुनि मोरपनाती ॥

दो० तहाँ शंभु पद प्रीति करि पदवी लई कुबेर।
करै मेरु शिव सेर सम सेरहि करै सुमेर॥
सो० तीन जन्म कृत आनि यकठे भई कुबेर की।
तब शिव रतिप्रकटानि जासुकथा सबहमकहा॥

बिन जाने ब्रत कियो मुनीशा। ताकोफल यह दियो गिरीशा॥
जो सनेम ब्रत धर्म बढ़ाई। करहि शंभुब्रत मनचितलाई॥
शेश थकत तेहिमहिमा गावत। वेद पुराण पार नहिं पावत॥
शंभु थकत तेहि ब्रत फलदेता। जो शिवराति रहै करि चेता॥
देखहु गुणनिधि पातक खानी। यक शिवरातिरह्योबिनजानी॥
तेहि फल भयो कलिंग नरेशा। तेहिकोअतिलघुमानिमहेशा॥
कीन्ह्यो तुरत सौम दिग्पाला। ताहूको कमलख्यो मभाला॥
तब कीन्ह्यो तेहिको धनराजा। तबहुं नशंभुलख्योकछुकाजा॥

दो० तब निज मित्र बनायके दिहेउ बड़ाई ताहि।
को अस दीन दयाल मुनि करु बिचारमनमाहि॥
सो० जो नर अस प्रभुत्यागि करत औरमें प्रीतिमुनि।
ताकी बड़ो अभागि गहत रेंड़ तजि कल्पतरु॥

अस सुनि कथा महाअघहारी। भे मुनि बारम्बार सुखारी॥
पिता चरण में दोउ कर जोरी। कीन प्रणाम बहोरि बहोरी॥
भयों कृतारथ मैं अबताता। तुम्हरी कृपा भयो अघघाता॥
बिगत पाप निर्मल मैं भयऊ। विष्णु निरादरको अघ गयऊ॥
शिव शतनाम कहो जगकारी। जेहिजपिहोहुं सकलअघहारी॥
तबविधि कहेउ शंभुशत नामा। सो गहि नारद कीन प्रणामा॥
कहिजयजय शिव बीन बजाई। नारदमुनि निजभवन सिधाई॥
जपत सदा शिवको शतनामा। रहत सदा परिपूरण कामा॥

दो० तबहिंऋषिन मिलिसूतसन प्रश्न कियोअकुलाय।
नाथ एक संशयरही सो मन नाहिं अँबाय॥
सो० नारद हरिको भक्त परम भागवत ज्ञान घर।
कबहिं भयो आसक्त हरिहि निरादर जबकरी॥

सूतउचुः ॥

कहेउ सूत सुनिये ऋषि नाना । शिवमायाअतिशय बलवाना ॥
कठपुतरी सम सुनु मुनि राया । सबहि नचावतिशिवकीमाया ॥
एक समय नारद मुनि ज्ञानी । हिमगिरिजाय विष्णुतपठानी ॥
अतिदारुणतप लखितहँमेघवा । कामहिंविघ्न करनकहँपठवा ॥
काम जाय तहँ कीन उपाया । नेकु न लाग्योमुनिपर माया ॥
तब खिसिआइ लौटिगा मारू । नारद निजमनकीन बिचारू ॥
मोहिं समऔर न हरितपठाना । लीन्ह्योजीति काम बलवाना ॥
अहंकार बश भयो मुनीशा । हरषितचल्योजहँलसतश्रीशा ॥

दो० जाय दण्डवतकीन मुनि हरि उठि आसन दीन ।
अहंकार युत देखि हरि रमा ओर चित कीन ॥
सो० हाथ जोरि जगदीश नारद सों पूछत भयो ।
बहुदिनभये मुनीश दीन्ह्योनहिं निज दरशको ॥

तब नारद अहमित मन लाई । कामजीत सब कथा सुनाई ॥
यद्यपि प्रथमबर्जि शिव दीन्हा । शंभुअनुग्रह नहिंमुनि चीन्हा ॥
अहंकार हरि हरको भोजन । तेहिते ताहिबचावत सज्जन ॥
मद सूदन मदकदन मदारी । तेहिते नाम भयो मदहारी ॥
तब बोल्यो हँसिकै बनवारी । कवनि बात तुमका यहभारी ॥
जड़हुसुमिरिमुनिवर तवनामा । जीतत क्रोध लोभ मद कामा ॥
तबमुनिबोल्योयुत अभिमाना । कृपा तुम्हारिसकल भगवाना ॥
असकहि हाथजोरिछचिमाथा । विदा भये हरिसों मुनि नाथा ॥

दो० तब हरि कीन विचारमन अबहिं मदांकुर छोट ।
जमतहिलेउँ उखारिमैं नहिं फिरि होइहै मोट ॥
सो० शिशु तनमें रुज देखि मातु पियावत नींबतेहि ।
असुजहोबतेहिलेखि शिशु पीड़ाकोनहिं गनति ॥

ऐसहि नारद मोहिं अतिप्यारा । शिव मायाबश ज्ञान बिसारा ॥
मम प्रणहै सेवक हितकारी । गर्व तासु मैं देउँ निकारी ॥
शिवहिसुमिरिमन रच्यो उपाई । जेहिमगु चलेजात मुनिराई ॥
आगे रच्यो एक पुर नीका । जेहिलखिलगतदेवपुर फीका ॥

भूपतितहांशीलनिधि राजत। तेहिसमाजलखिसुरपतिलाजत॥
रमा भई तेहि कन्या जाई। तासुस्वयम्बरसुनि मुनिराई॥
नृपगृह गयेउसोऊमुनि चीन्हा। करिप्रणामशुभआसन दीन्हा॥
चरण धोय जल माथ चढ़ाई। सुता बुलाय प्रणाम कराई॥
दो० कन्याको कर देखि मुनि लक्षण लख्यो बनाय।
जो यहि ब्याहै तासुघर सकल सम्पदा भाय॥
सो० अजर अमर सो होय जग पालक घालक दनुज।
तेहि नहिं जीतै कोय सदा होय त्रयलोक पति॥
इमिलक्षणलखिअरुतेहिशोभा। नारदमन तेहिपरबहु लोभा॥
अति सुन्दरि बहु रूप सँवारे। रतिलाजति तेहिओर निहारे॥
नारद मनमहँ भयो बिहाला। कवनिप्रकार मिलै यहबाला॥
तिय रीझत बरु रूपहि देखी। हरिको सुन्दर रूप बिशेखी॥
जो हरि देहिं रूप मोहिं मांगे। तौ ममकारज सधहिसुभागे॥
अस कहिसुमिरिचरण हरिकेरे। लागे बिनती करन घनेरे॥
जय जगदीश प्रणत अनुरागी। प्रकटहोहु मम स्वारथ लागी॥
जिमि गज टेर सुनत प्रभु धाई। लीन्ह्यो गजको तुरत छुड़ाई॥
दो० दीन वचन प्रभ सुनतही पहुंच्यो द्रुपदी पास।
तिमि यहि बेरिया आयके पूर करो मम आस॥
सो० लीलाकर घनश्याम तुरतहि प्रकट्यो आय तहँ।
नारद कीन प्रणाम भे हर्षित हरि देखिकै॥
कहभगवान सुनहु मुनि राया। कवनकाजलगिमोहिं बुलाया॥
नृप तनया यह सुन्दरि भारी। यहि मैं चहत होय ममनारी॥
देश देशके नृप सुत आये। तासु स्वयम्बर होत सुहाये॥
आपन रूप देहु मोहिं स्वामी। मोहिं जानि आपन अनुगामी॥
जिमिमोहिं सुन्दररूप निहारै। फिरि जयमाल न पाउरडारै॥
सुनहु मुनीश कहा बनवारी। प्रण हमार सेवक हितकारी॥
हित तुम्हार होइहैजेहिमाहीं। करब सोई तहँ संशय नाहीं॥
रोगी रुचि नहिं बैद सुहाई। देत सोई जेहि मारुज जाई॥
दो० अस कहि अंतर्द्धानभे मुनिमन हर्ष घनेर।

निज स्वरूप सब तन कियो आनन बन्दर केर ॥
सो० गये तहां हर्षाय जहां स्वयम्बर भूमि मुनि।
राज सभामें जाय बैठे अति उत्सुक हिये ॥
मुनिहिंजानिसबकीन प्रणामा। लखानकोउ करतबघनश्यामा ॥
निकरीकुवँरि लिये जयमाला। निजसमखोजतपुरुषविशाला ॥
निजस्वरूपहरिसममुनिदेखी। जानत यहमोहिं बरी बिशेखी ॥
मरकट बदन दीखसोइ नारी। धोखेहुतेहि दिशिनहिंपगु धारी ॥
भूप रूप तहँ गे बनवारी। हरषि रमा जयमाला डारी ॥
चले हरषि लै ताहि रमेशा। भये निराश सकल भुवनेशा ॥
नारद विकल भये अधिकाई। मनहु रंक धन चोर उठाई ॥
दुइशिवगणतहँ विप्र स्वरूपा। लखत रहे यह चरित अनूपा ॥
दो० प्रथमहुं तिन मुनिदेखिकै कूटि करत वहि ठौर।
मुनिहिंमिल्योहरिरूपबर मुनि तजिबरै न और ॥
सो० मुनिहर्षतमनमाहिं कूटि न समुझत मोहबश।
अर्थ गूढ़ तेहिमाहिं हरि बानर को कहतहैं ॥
विकलदेखिमुनिकाहि अथोरे। बोले शिवगण दुइकर जोरे ॥
होहुबिकलनहिं अस मुनिराई। बदन विलोकि करो क्षमताई ॥
तबमुनिजाय विलोक्यो बारी। लखावदनकपिअति भयकारी ॥
फिरिहुबारिदेख्यो मुनि जाई। पुरवत यथा रूप निज पाई ॥
तबहिंक्रोधकीन्ह्योमुनिअतिही। हरिपहँचल्योत्यागिनिजगतिही॥
मारहु देहु कि शाप अतीवा। भले कराइसि मोरि असीवा ॥
अस शिवगणन शापमुनिदीना। लेहु कूटि फल जस तुमकीना ॥
फिरिविप्रहि नहिं हँसीभुलाई। होहु निशाचर तुम दोउजाई ॥
दो० अस कहि मुनि आगे चले मगहि मिले भगवान।
सोइ नृप तनया साथ में चले जात हर्षान ॥
सो० सोइतनयायुत देखि मुनि शीघ्रहि पहुंच्योतहां।
कीन्ह्यो क्रोध विशेषि क्रोध भये बुधि नहिं रहै ॥
मुनिहिं देखि हरिकीन प्रणामा। मुनिनहिं नयो क्रोधकोधामा ॥
तब हरिकह्यो सुनहुमुनि ताता। चल्योकहांअतिशयबिकलाता॥

तब मुनि कह्यो क्रोध मनलाई। देखि न सम्पति सकहुपराई॥
शंखचूड़ अतिशय तुवदासा। निशिदिनराखत तुम्हरीआसा॥
तेहि त्रियको पतिबर्त छुड़ायो। पूजि महेश ताहि मरवायो॥
कपट जलंधर तियसों साजा। परतियभोगत तुम्हैं न लाजा॥
चौदह रत्न सिंधु जब दीन्हा। कपटी पारुस तुमतहँकीन्हा॥
जो न हलाहल पीतो शंभू। तब सब देखिपरत तुवदंभू॥

दो० बुझियत नहिं अस शंभुको तुम्हैं कीन जगदीश।
गुण अवगुण समुझ्यो नहीं अवघर दानी ईश॥

सो० अब ह्वै तुमनिजतंत्र शिवहु अदब मानतनहीं।
पहिरे छलको वस्त्र छलत फिरत संसार को॥

हमहुं कीन विश्वास तुम्हारा। करि विश्वासघात मोहिंमारा॥
ह्वै निजरूप किहेउ बनचारी। छलकरि छिहेजात ममनारी॥
एक बात भल कीन्ह्यो शंकर। सबपर तुमतुमहूं परद्विजवर॥
अबलगमिल्योनहींकोउद्विजसे। किह्योनीकजोइलाग्योनिजसे॥
आजु दिहेउ बायन घर नीके। लेहु तुरत फल निजकरनीके॥
ह्वै शिशुभूप हर्यो ममजाया। जगमें जाय धरौ सोइ काया॥
किह्योदुखितमोहिं कारणनारी। नारिविरह वनफिरहु दुखारी॥
कपि आनन तुम मोर बनाई। निज सहाय हितकरहुमिताई॥

दो० कछु रु क्रोध नहिं कीन हरि शाप शीश धरि लीन।
निजमाया तब दूरिकरि पुरवत मुनि कहँ कीन॥

सो० शौनक करौ बिचार शिव माया अतिशय प्रबल।
परम भक्त बिधि बार सो हरि निन्देउज्ञानतजि॥

हरेहु जबहिं माया श्रीकंता। नारद चौंधा खुल्यो तुरंता॥
मनमहँ शोच न निकरत बाचा। हे विधिस्वप्न किसांचेहुसांचा॥
रमा समेत रमापति देखी। निजकहँ मान्यो मूढ़विशेखी॥
त्राहित्राहिकहि पाहि रमेशा। पर्यो लकुट इव भूमिऋषेशा॥
नाथ तोरि माया अति भारी। कवनि चूक मम ज्ञान बिसारी॥
निजजनजानिकरहुप्रभु दाया। मिथ्या शाप होय सुर राया॥
तब हँसिकै बोल्यो बनवारी। शिव इच्छानहिं चूक तुम्हारी॥

शिवमायामुनिअतिहिबलीना। सबुध अबुधकरै अबुध मतीना॥

दो० नारदशोच न करहु मोहि तुमसम और न प्यार।
गर्व जानि हम दीन सिख गर्व अहार हमार॥

सो० सुनि नारद प्रभु बैन हाथ जोरि सकुचत हिये।
बोल्यो जलमशनैन नाथ पाप मम किमि कटै॥

बहु दुर्वचन कह्यों प्रभु तोहीं। है उद्धार कवनि विधि मोहीं॥
कह हरि सुनु नारद विज्ञानी। आसतोष शंकर बरदानी॥
शिव शतनाम जपहुमुनिजाई। और सुनहु शिवकथा सुहाई॥
मुनिवर तुरत होय बिश्रामा। महा घोर अघहर शिव नामा॥
पर निन्दज अघसुनु मुनिराई। मोहिं जपिमहापाप कटि जाई॥
ममनिंदजअघ सुनु मुनिराया। शिवजपिजाय न और उपाया॥
परशिव निंदजसुनु मुनिराई। कटत नहीं करि कोटि उपाई॥
जिमिपथरीहियअनलकुवासा। जलहुमैं बोरे तजत न पासा॥

दो० तिमिशिवनिंदज पापमुनि दिनप्रतिबाढ़त जाय।
कोटि जन्म लगि नहिं मिटै कीन्हे कोटिउपाय॥

सो० शिव अरु द्विजकर द्रोह कुंभज पुण्य समुद्रको।
तुम्हैं कहौं करि छोह बचे रहौ यहिसों सदा॥

द्विज ममअंग शंभुमम स्वामी। निंदत इन्हैं कुमारग गामी॥
होय चहहिकैसेहु मम ध्यानी। शत्रु समान तिन्हैं हम जानी॥
अब तुम जाहु ब्रह्मके धामा। विधिसोंसिखहु शंभु शतनामा॥
जपहु करत शिवपर जलधारा। तुरत पाप होइहै जरि क्षारा॥
औरहु जपो जो जगमहँ याको। तुरत पाप सब काटौं ताको॥
तब नारद हरिपद उर राखी। हरिसों बिदा भये जय भाखी॥
पितुपहँगे करिपितहि प्रणामा। सीखत भये शंभु शत नामा॥
लिंग थापि तहँ करतक धारा। जपन लगे तेहिको त्रय बारा॥

दो० महा पाप जरि क्षारभो नारद भयो अमैल।
जो न भजै नर शंभको सो बिन शृंग क बैल॥

सो० शिव पदकरि दृढ़ प्रीति नारद पितुसों हर कथा।
अपर सुनी जगरीति लोभ लाभ से बढ़त है॥

सूत उवाच ॥

मोह विवश जिमिभे मुनिराई । सो हमतुमकहँसकलसुनाई ॥

शौनकोवाच ॥

बोल्यो शौनक तब करजोरी । जियहु सूत तुम वर्ष करोरी ॥
महापाप नाशिनि यह गाथा । कीन्ह्यो हमैं सुनाय सनाथा ॥
हरि हर की प्रभुता सुखदाई । हमैं सुनायहु करि करुणाई ॥
अब मुनि कहो शंभु शतनामा । जेहि सुनि नशै पापकोधामा ॥
जो हरि द्रोहज अघको खोई । नाथ कृपा करि भाषहु सोई ॥
तबहिं सूतकरि हरिहरध्याना । शंभु नाम शत उरमें आना ॥
सामवेद को है सोइ सारा । मुक्ति भुक्ति को है सोइ द्वारा ॥

दो० गणपति अरु शिव शाम्भ के षटमुख हरि विधिपाद ।
सकल सुमिरि शिवनाम शत वर्णहुं मिटै बिषाद ॥

सो० शिव शिव लोकमें वास निर्गुण से सगुण भये ।
पुनिकैलास निवास शिवविधि भृकुटिजरूपधरि ॥

तेहि अवतार नाम शतकहहूं । जेहिजपिदुहुंदिशिआनँदलहहूं ॥
सद्योजात भयो सुख दयऊ । वामदेव तत पूरुष भयऊ ॥
पुनि अघोर ईशान कहावा । पंच ब्रह्म इमि जग हर्षावा ॥
भयो अष्टमूरति तब स्वामी । शर्व नाम पृथवी थल गामी ॥
भव जल रुद्र अग्नि में वासा । उग्र पवन भीमष परकासा ॥
पशुपति भयो क्षेत्र के वासी । ईशानहु तब सूर्य निवासी ॥
महादेव शशिधर में वासा । यहि प्रकार वसुमूर्त्ति प्रकासा ॥
शंभु चरित अब आगे कहहूं । जेहिप्रकार शिव करुणा लहहूं ॥

दो० धरि अर्धंगी रूप प्रभु ब्रह्मै कीन निहाल ।
औरो पुनि वर्णनकरो जिमिप्रकटेउशशिभाल ॥

सो० महाबीज ये नाम सुनहु ऋषीश्वर चित्त दै ।
सबके करहुं प्रणाम भयो नाम अवतारप्रति ॥

वसुकर रूप पृथक द्वापर मह । तिनकेनाम सविस्तर हमकह ॥
व्यासहितद ह्वै मत फैलावा । लीला आपनि सबहिं देखावा ॥
सेत सुतार दमन पुनि भयऊ । चौथसहोतर बहुसुख दयऊ ॥

कांक नाम लोकाक्ष कहावा । जैगीषव्य योग निष्ठावा ॥
दधिवाहनअरुऋषभ भृंगतप । अत्रि बाल गौतम चौदह जप ॥
वेदसिरह गोकर्ण कहायो । गुहवासी ह्वै जग हर्षायो ॥
भयोशिखण्डी अरुजटिमाली । अट्टहास दारुक जगपाली ॥
लांगलीय महकाय कहायो । शूली मुण्डीश्वर ह्वै धायो ॥
दो० भयो सहिष्णू सोमशर्म लकुलीतन त्रिपुरारि ।
ये अट्ठाइस रूपधरि गौरिहि लियो उबारि ॥
सो० अष्टाविन्शत रूप प्रति द्वापर ये शंभु के ।
लीला करत अनूप व्यास कृत्य फैलाय जग ॥
नन्देश्वर भैरव वर रूपा । वीरभद्र पुनि भे सुर भूपा ॥
सर्बेश्वर यक्षेश्वर भयऊ । पुनिदश विधिरूपहि प्रभुलयऊ ॥
तिनके नाम सुनो युतशक्ती । सुत धन बढ़ै किहे जेहि भक्ती ॥
महाकाल शिव भो जगपाली । तेहिकी शक्ति भई महकाली ॥
तार रूप शिव भो निर्वानी । तारा नाम भयो शिवरानी ॥
भो भुवनेश बाल शिव ताता । भुवनेशी बाला जगमाता ॥
श्री विद्येश शिवशङ्कर रूपा । श्री विद्या जग मातु अनूपा ॥
भैरव स्वामि भैरवी स्वामिनि । पंचमरूपभयो इमि नामिनि ॥
दो० छिन्नमस्तक छिन्नमस्तका रूप शिवा शिव लीन ।
धूमावत धूमावती गोरी को सुख दीन ॥
सो० मातंगी मातंग बगला मुख बगला मुखी ।
यह दश रूप ससंग कमलशंभु कमला शिवा ॥
कहौं रुद्र एकादश नामा । जो पूरै सब विधि मम कामा ॥
हैकपाल पिंगल भिमतीसर । अरु विरूपाक्ष विलोहितसरुतर ॥
पुनिअजपादभयोपुनिआश्रम । अहिर्वुधन ह्वै शंभु हरयो श्रम ॥
भवह्वै भयो सकल भवरक्षक । हैं गेरहौ प्रभु सब दुख भक्षक ॥
पुनि दुर्वासा हैं जगपाली । बालरूप गृह पथ्य सुचाली ॥
ह्वै वृषेश हरिको दुख नासा । पिप्पलाद पीपर तर वासा ॥
ह्वै महेशद्विजकुलहिनिहाला । पुनि अच्यूत इन्द्र को पाला ॥
हनुमत रूप रामहित भयऊ । वैद्यनाथ ह्वै लीला ठयऊ ॥

दो० भयो द्विजेश यतीश प्रभु हंस रूप त्रिपुरारि।
अलीरूप हियँतक भयो औरी को हितकारि॥
सो० इमिहि सूत महराज जिमिजिमि वर्णत नाम सब।
पुलकत ऋषै समाज सुनि अभिधा शिव शंभु के॥
भयो कृष्ण दर्शन अभिधाना। भिक्षुनाथ पुनि भे भगवाना॥
इन्द्रेश्वर पुनि रूप धरायो। फेरि जटीलेश्वर कहवायो॥
नृतकेश्वर साधू द्विजनामा। भयो फेरि प्रभु अश्वस्थामा॥
भयो किरातेश्वर पुनि स्वामी। ज्योति रूप द्वादश भे नामी॥
सोमनाथ अरु मल्लिकाअर्जुन। महाकाल परमेश प्रणव पुन॥
भयो केदार भथँ वयँशा। पुनः भीमशंकर विश्वेशा॥
त्र्यम्बक वैद्यनाथ नागेशा। रामेश्वर घुस्मेश्वर येशा॥
ये बारह ज्योतिर्लिंग नामी। देतजनहिंअभिमतफलस्वामी॥
दो० इमि जो गावै नाम शत शत अवतारन केर।
पावै फल अभिमत तुरत औरी प्रमुद घनेर॥
सो० शिवपर ढारै जोय यह पढ़ि धारा नीर की।
पूरण सब विधि होय तासु मनोरथ तुरतहीं॥
सुनत ऋषिन सबभयोअनन्दा। कहेउ सूतको धनि सुखकंदा॥
सब ऋषि यह शतनाम सहेता। निज उर राखेउ यतनसमेता॥
भये सुखित यहिसर्वसलखिकै। लगे पियाससुधाजिमिचखिकै॥
पदवी विप्रमिल्योजिमिशुद्रहि। कनकढेर जिमिलह्योदरिद्रहि॥
करतऋषिनशतनामकीजापहि। मानहु देत चुनौटी पापहि॥
करिहि जोनरशतनामहिजापा। ताहि विलोकि भगोअतिपापा॥
जो नहिं यहिपर करौसनेहा। जानहु ताहि पाप को गेहा॥
जापर हरिहर होयँ सहाई। ताको यह शतनाम सुहाई॥
दो० सुनि सोहाय शत नाम जेहि बड़ो भाग्यकर पूर।
जेहि नहिं प्रिय शिव जक्तमें तेहिसम और न कूर॥
सो० शिव सम और न देव भुक्ति मुक्ति दायक महा।
जो न करै शिव सेव तेहिते श्वान शृगाल भल॥
शिव भक्तनसों बिनवत औरी। माथ नवाय दुहू करजोरी॥

सेवक जानि करहु करुणाई। लखिकुकाव्यनहिंहँसौरिसाई॥
यदपिभणितममअतिहिभदेशा। तदपि अर्थ तेहि सुयशमहेशा॥
भलसँग नीचहु पाव बड़ाई। जिमि मिसिरीसँगबांसबिकाई॥
काव्यभाव नहिं जानहुं एकू। नहिं कछुविद्या विरतविवेकू॥
लहिपर पुस्तक कीबर आसा। कहेउंजिमिहिं शिवगेकैलासा॥
तुलसीदास रामयश गावा। महानन्द शिव सुयशबनावा॥
ताकीआशय कछु निज उरगुनि। दंतकथा कछु संतसभासुनि॥

दो० लहि कछु शारदकी कृपा कहेउं शंभु यश गाइ।
जो नर आदर सों पढ़ै तापर शंभु सहाय॥

सो० जो सुनिहै चितलाय परहिं सुनावहि प्रीतिसों।
यहिजग सुतवितपाय अंतलहै शिवलोकसोइ॥

दो० कलिमें तुलसीदास सम भयो न दूजो संत।
संत शिरोमणि ज्ञानघर कवितन मांझ अनन्त॥
ज्ञाता वेद पुराण को राम उपासक सोय।
रामायण भाषाकियो सकल बुद्धि प्रकटोय॥
रामहिं सर्वोपरि कह्यो इष्ट पक्ष दर्शाय।
तद्यपि शंकरभावको भाष्यो अवसर पाय॥
वेद तत्त्व छांड़्यो नहीं कतहुं गुप्त कहुं खोलि।
इष्ट पक्षको प्रबल करि और कह्यो सब गोलि॥
गोलमें अर्थ अमोल है समुझि परत सबभाव।
ताहि मूढ़ समुझत नहीं झूठहि करहिं चवाव॥
ताकी आशयपाय मैं शिव यश कीन बखान।
मूरुख चेतन होनहित ताको देत प्रमान॥

अथमुक्तदभाव॥

आरण्यकाण्ड श्रीरामचन्द्रोवाच॥

दो० मायाईश न आपुकह जानिकहै सो जीव।
बन्ध मोक्षप्रद सर्वपर माया प्रेरक शीव॥

विनयपत्रिका॥

कोटि यतन करि जो गति हरिसों मुनि मांगत सकुचाहीं।

वेद विदित सोइगति पुरारि पुर कीट पतंग समाहीं ॥
ईशउदार उमापति परिहरि अन्त जो यांचन जाहीं ।
तुलसीदास ते मूढ़ मांगने कबहुं न पेट अघाहीं ॥ २ ॥

अथफलदभाव दोहावली ॥

दो० तुलसी रेखा कर्मकी मेटि सकैं नहिं राम ।
मेटैं तौ अचरज नहीं समुझि कीनहै काम ॥

बालकाण्ड ॥

करहुजाय तप शैल कुमारी । भावी मेटिसकैं , त्रिपुरारी ॥

अथस्वामीसेवकभाव बालकाण्ड॥

सब सुर विष्णु विरंचि समेता । गये जहां शिव कृपानिकेता ॥
पृथक पृथक तिनकीन प्रशंसा । भये प्रसन्न चन्द्र अवतंसा ॥
बोले कृपासिंधु वृषकेतू । कहौ अमर आयो केहिहेतू ॥
कहहरि तुम प्रभु अंतर्यामी । तदपिभक्तिवशबिनवौंस्वामी॥
दो० सकल सुरनके हृदयअस शंकर परम उछाह ।
निज नैनन देखाचहैं नाथ तुम्हार बिवाह ॥

अथईश्वरभाव ॥

अयोध्याकाण्ड ॥ श्रीरामचंद्र ॥

तातसमुझि अस तजौ गलानी । ईश अधीन जीवगति जानी ॥
सत्यकहौं दे शंकर साखी । भरत भूमि रहै राउर राखी ॥

राजादशरथ ॥

दो० तुमप्रेरक सबके हृदय सोमति रामहिं देहु ।
बचन मोरतजि रहहिंघर परिहरि शीलसनेहु ॥

रानीकौशल्या ॥

दो० वेगि पांव धारिय थलहि कह सनेह सतिभाय ।
हमरे तो अब ईशगति की मिथिलेश सहाय ॥

रानी सुनयना ॥

सेवक राउ कर्म मन बानी । सदा सहाय महेश भवानी ॥

श्रीलक्ष्मण ॥

जो सहाय करैं शंकर आई । तदपिहतौं रण रामदुहाई ॥

अथइष्टभाव ॥

बालकाण्ड ॥ श्रीविष्णु ॥

जपहु जाय शंकर शतनामा । मुनिवर तुरतहोय बिश्रामा ॥

लंकाकाण्ड ॥ श्रीराम ॥

करिहैं इहां शम्भु अस्थपना । मोरे हृदय परम कल्पना ॥

अथलक्षणभाव ॥

बालकाण्ड ॥

बिन छल विश्वनाथ पदनेहू । राम भक्तकर लक्षण येहू ॥

अथशापभाव ॥

शिवसे द्रोह भक्ति चह मोरी । सो नर मूढ़ तासु मतिथोरी ॥
शिवद्रोही ममदास कहावै । सोनरमोहिं सपनेहुनहिंपावै ॥

इतिप्रमाणः ॥

दो० प्रवर वैष्णवकी भनित याको लेहु विचारि ।
अपर एकदृष्टान्तको देखहु नयन पसारि ॥ १ ॥
हरि थापित शिवलिंगको जगमें लखत अनेक ।
शिवअस्थापितरूपहरिनजरिपरतनहिंएक ॥ २ ॥
मूरुख चेतन होनहित असकछु कीन्ह्यो भेद ॥
हरि हरमें कछु भेद नहिं एकहि गावत वेद ॥

इतिश्रीशिवचरित्रेशिवकैलासागमन
सम्पूर्णम् शुभमस्तु ॥

————

श्रीगणेशायनमः

काशिका आगमन ॥

—000—

दोहा

गौरीपतिको ध्यान करि उमा चरण शिर नाय ।
जाकीकृपा कटाक्षसे सुभगग्रन्थ बनि जाय ॥
गौरी पति से जोरि कर मांगहुं उमहिं मनाय ।
जोकछु भाषौं प्रेमसे सो सबफुरि ह्वै जाय ॥

सो० गजमुखके परि पांय करत जोसिद्धि प्रसिद्धही ।
बिनती मोरि बनाय शिवयश ममउरमें धरैं ॥
बन्दि षड़ानन पांय कृतमुख पद बन्दन करौं ।
करहिंसुमोरिसहाय शिवयश मोहिंबतावहीं ॥

विधि हरि सुरा रमाके पांऊ । सहित प्रेम बन्दौं सति भाऊ ॥
जासु कृपा बिन लहे कदाई । मिलतिनशम्भुभक्ति अधिकाई ॥
सीता राम बन्दि शिर नाऊं । जासु कृपा शंकर यश गाऊं ॥
बन्दौं पुनिहुं कृष्ण अरु राधा । जासुनामजपि रहत न बाधा ॥
पुनि पुनि परशुराम पद बंदो । जो शिव भक्ति करी निद्वंदी ॥
पुनि दधीच दुर्वासा गौतम । बंदौं तिन्हैं मानि हरिहरसम ॥
वीरभद्र भैरव हनुमाना । नंदी क्षेत्रपाल बलवाना ॥
बंदि तिन्हैं मांगौं कर जोरी । शिवयश ममउर देहिं बटोरी ॥

छं० जो देवि है मम भवन भीतर नीम तरकी नामिका ।
तेहि बंदि बारम्बार प्रणऊं पांय परि बसु यामिका ॥
सो करति रक्षा सुतन धनकी हवै दुर्जन घालिका ।
जयमातुजगकीपालिका जयकालिका शशिभालिका ॥
जय मेरुजा हिमवान तनया जयति दुर्गा नामिनी ।

जेहि अंशजा बहुदेवि होहीं रमा अरु विधि भामिनी ॥
जोइकरतिरक्षामोरिनिशिदिन हवैसोइममस्वामिनी।
जय अन्नपूर्णेश्वरी देवी जयतिजय शिव कामिनी ॥
दो० गुरुहिंबन्दिअति प्रेमसों बंदौंनिजपितु मात।
जासु कृपालहि शंभु यश गाऊं अति हर्षात ॥
नर्वदादि तीरथ जिते जोहैं पुरय प्रकास।
गंगा यमुना आदि दै बंदौं सहित हुलास ॥
सो० विघ्ननिवारण हेतुरविशशिकुज बुधगुरुभृगुहि।
रविजराहु अरु केतुबंदहु सबहि प्रणामकरि ॥
वंदि शारदा मात हाथ जोरि विनती करौं।
करहिं कृपाबिहँसात शिव यश मम उरमें धरैं ॥
बंदि शिवा शिव चरण बहोरी। कहौंकथा शिवसबहिंनिहोरी ॥
प्रथम कथा भाषेउँ सुखदाई। जिमि कैलास बसेशिव साँई ॥
तासु नाम कैलासागमनू। सकल शोचहरअरु दुखदमनू ॥
तब रुचि भई कथा पर पूरी। लाभ से लोभ होयजिमि भूरी ॥
जिमिहिं काशिका भूपर आई। सोइकथा पर रुचि अधिकाई ॥
पुनिनिजभनितहि समुझिभदेशू। वरणजाति लखिभयोअँदेशू ॥
कैथहि वरण शूद्रसब कहहीं। तासुभनित द्विज कैसेगहहीं ॥
जासु वचन द्विजनहिं आदरहीं। तासुप्रमाण संतकिमि करहीं ॥
दो० बैठेउँ याही शोचमें लिखनी ओंठ लगाय।
तबहिं शारदा करिकृपा ममउर बैठेउ आय ॥
कह्योवत्स जनि शोचकर वृथा शोचहै तोर।
शिवयश भाषिजोइ नर होय सकलशिरमौर ॥
सो० सुनीसहित अनुराग हरिहर यशभाषै कोई।
जाय निहोर्‌यो काग देखोगरुड़ विहंग पति ॥
श्वपचभनित यशईश बुद्धिमान सादरगहहिं।
धरतसकल सुरशीश यमनबागकोफूलजिमि ॥
सुयश महात्म इमिमत मेरो। अब संशय तव करत निवेरो ॥
कायथ होय बरण नहिं शुद्रा। कहैशूद्र तेहि मति है क्षुद्रा ॥

मुखसों विप्र रची जब धाता। भुजसों भूप वैश्य उरु जाता ॥
पदसों शूद्र करी हित मानी। चारिउ वर्ण कहतइमि ज्ञानी ॥
तब शिरसों कायस्थ बनाई। चितमें गुप्त राखि प्रकटाई ॥
कोशमें देखु नामका शिरको। यस्थक्रिया है ता इस्थिरको ॥
यदपि शीश सब ऊपर भावा। तदपिमुख्य मुखहीको गावा ॥
तेहि कारण द्विजको बड़मानो। ईश्वररूप विप्र पहिचानो ॥

दो० यदपिविप्र अरु भुजज्ञ सब ज्ञानीहैंअति तात।
लिखब पढ़ब कायथकरम तदपिबनायो धात ॥
देखो बसुबसु सहसऋषि नीमषार बनमाहिं।
कथा सुनत श्रीसूतसन सो कायथसुत आहिं ॥

सो० भाषेउ जिते पुरान व्यास महा मुनि विप्र बर।
ता मुखकेर बयान ऋषिन प्रश्न अतिह्वैविनित ॥
इमि निजमन अनुमानि देखि सरस्वतिकोकृपा।
शंकर करुणा जानि ममसन अति हर्षान है ॥

हर्ष्यौ मन बीत्यो सब शंका। पारस पाय सुखी जिमि रंका ॥
बारम्बार शारदहि ध्याई। शम्भु कथा पर रुचि अधिकाई ॥
ऊंडव ग्राम बासमम ख्याता। जहँ हरि रूप चतुर्भुज पाता ॥
ताहि दण्डवतकरि शिर नाई। बरणौं शम्भु चरित सुखदाई ॥
बसततहांद्विजकुल बहुभांती। तिन्हैं प्रणाम करौं दिनराती ॥
बंदौं चरण सँवलिया पीतम। जो कुल इष्ट सदाको है मम ॥
सम्बत उनइससै तेंतीसा। भयो अरंभ सुमिरि गौरीशा ॥
श्रावण मास पक्ष उजियारा। मघा दुइज अरु आदित वारा ॥

दो० तेहिदिनहरिहरपदसुमिरि कीन्ह्योकथाअरम्भु।
पुरहिं साधगणेश हरि दिनपति गौरी शम्भु ॥
बंदि बहुरि विधि नारिको निज सहायके हेत।
जोइबतावत शम्भयश करिसम हृदय निकेत ॥

सो० ओरी है मम नाम कायथहौं शिवदीन सुत।
शिवरति आठौयाम लालचबश पाखण्डयुत ॥
काशी पांय मनाय कहौं काशिका आगमन।

जहँसबपापबिलाय मिलतिमुक्ति बिनयुक्तिकछु ॥
नीमषार मिश्रिष बन ख्याता। तप अस्थान महा बिलसाता ॥
सूत व्यासको शिष्य सुजाना। तहँ बसिकरत शम्भुगुणगाना ॥
तासुप्रभाव जानितरमुनिवर। निज गुरु रह्योकिह्योतेहिशङ्कर ॥
याको अर्थ निगम जो भाखा। सकल प्रबंध तासुको राखा ॥
एकसमयमिलिसकलऋषीशा। जाय सूत ढिग दीन अशीशा ॥
तुम बड़शिष्य महामुनि केरे। संशय एक हवै मन मेरे ॥
सो छुटिहै तुम्हरे निरधारे। परम शैव तुम व्यास दुलारे ॥
सतयुग रह्यो ब्रह्म अवराधन। त्रेता आय भयो तप साधन ॥

दो० द्वापर में मख बल रह्यो सकल जगत उद्धार।
अबडरलगत बिशेषिकै सुनिकलियुग पैठार ॥
कलियुगमें नर आयुलघु काम क्रोध अधिकार।
लोभ मोहमें ग्रसित सब कैसे होय उबार ॥

सो० होय शास्त्र सब लुप्त विप्र अपढ़ खेती करैं।
गुप्त चलहिं सब गुप्त शूद्र पढ़हिं वेदान्तको ॥
भूप धर्म सब त्यागि बिप्र संत मानैं नहीं।
आवैं रणतेभागि द्विजहि लूटि निजकोश भर ॥

गुरु लघुभाव न कोऊ मानी। जे दुसाधु ते बड़े गुमानी ॥
भाट सकल द्विजराज कहावैं। द्विजसमता करिपांय पुजावैं ॥
शूद्र सकल बनिकै बैरागी। विप्रन देहिं अशीश अभागी ॥
द्विजहु तासु पदमें शिरनावैं। अपनहु जाय तासुको ख्वावैं ॥
यमनसे नहिं कोउ करी बरावा। मानि परस्पर बंधुको भावा ॥
नेकु भेद नहिं उरमें मानी। जेहि मानी तेहिलगै देवानी ॥
कलिमें कल्पित पंथ अनेका। जानि सिद्ध तेहि गहहिं सटेका ॥
चारिवेद अरु आश्रम चारी। त्यागि तासु मत बनहिं अचारी ॥
तहँप्रमाण तुलसीमनभावा। उत्तर कांड विषे सो गावा ॥
कलिमहँकल्पितकरहिंअचारा। वरणि न जाय अनीतिअपारा ॥

दो० बनैं अचारी चारि तजि हेत दूध घृत खाँड़।
परमधर्मसंन्यास तजि जारहिं तन जिमिसाँड़ ॥

जगदीश्वर के भजन में कबहूं करत न चेत।
द्रव्यमान ढूंढ़त फिरत खान पानके हेत॥
सो० अति प्रचंडतहँ नारि पातिब्रत त्यागहिं सकल।
कुलकी कानिबिसारि पुरुषहु नारी ब्रततजहिं॥
असकलिहोयकराल धर्म सकलविपरीत करि।
तेहिते होतबिहाल नाथकहौउद्धार जिमि॥
शिव पूजनते सब उद्धारा। सो न करन देहै मद मारा॥
अर्चन विष्णु तहां दुख हारी। दंभ लोभ तेहि देय बिगारी॥
सहज उपायकहौ कछु जांची। जो फल देवै सांच असांची॥
असउपाय कछु कहौ बिचारी। भक्ति अभक्तिहोय नहिं न्यारी॥
पापिहु मुक्ति लहै बिन सेवा। होय पार खेये बिन खेवा॥
जिमि न होयं अघपुण्य विवेका। सो उपायकहिये करिटेका॥
जेहिउपाय यम कला न व्यापै। नहीं सताय सकै अघतापै॥
जरैं पाप होवैं सब क्षारे। सो उपाय कहु व्यासदुलारे॥
दो० हँस्यो सूत कहिधन्य अति धन्य धन्य कृतरास।
जगहितपूंछब अज्ञइव तुम्हैं न कलिकोत्रास॥
सकलविदितहै तुम्हनकहँ हौबुधिविद्या खेत।
अज्ञ बनत संसार हित हमैं बड़ाई देत॥
सो० संतकचित्तकपास विमलविशदकोमलअतिहि।
स्वापि प्राण नहिं त्रास परस्वारथ के काजमैं॥
सुनोमुनीश उपाय जो पूंछेउ तुम पाप हर।
सोसब देउँबताय काशीपतिकी लहि कृपा॥
काशी पुरी जो है विख्याता। शिव नगरी सेवक सुख दाता॥
तहां मरे बिन जप तप युक्ती। अनघी अघी लहैं सब मुक्ती॥
यमकर तहां न होय प्रकासा। अघी हेत सो हवै मवासा॥
परमरम्य सुन्दरि अतिपावनि। सबप्रकार अघपुंज नशावनि॥
कितनौ पाप करै अधिकारा। काशी गये होत जरि क्षारा॥
कहँ लग कहौं तासु प्रभुताई। कोटिलपन सों गाय नजाई॥
शौनक कह्यो सुनौ हो सूता। कह्यो उपायमहाअति पूता॥

पर यक संशय हरौ हमारी। ब्रह्म सृष्टि अति विस्तर भारी॥

दो० विधिकीसृष्टिविशालअति सकलकाशिकामाहिं।
मरणसमय करिकोटिविधि पहुंचिसकैगोनाहिं॥
यद्यपि कह्यो उपाय यह आश्रमहै सबकाहिं।
तदपिकठिनसब जगतको पहुंचबकाशीमाहिं॥

सो० तेहितेकहौउपाय होयमुक्तिबिन श्रमहिजिमि।
काशीजाय न जाय पर वासीसे मृतु समय॥
बोल्यो हँसितब्रसूत सुनहु महामुनि चित्तदै।
तजिश्रयहोवैपूत काशीबसिलखिजपिसुमिरि॥

यहै दूरि कितनौ नर रहई। तीनिबार शिव काशी कहई॥
काशी बसे सरिस फल पावै। तेहिदिन मरे शंभु पुर जावै॥
मंत्राधीश हवै शिव काशी। मुक्ति होत जापककी दासी॥
असमुनिमगनभये मुनिझारी। देह गेहकी सुरति बिसारी॥
पुनिह्वै शांत ऋषय सुखराशी। बोलि उठे जयजय शिवकाशी॥
महा हर्ष सोवत जनुजागे। कलिको देन चुनौटी लागे॥
बारम्बार प्रशंसहिं सूता। धन्य तात तुम भयो सपूता॥
तुमसमानहितकर कोउनाहीं। तुम्हरे दर्शन सब अघजाहीं॥

दो० तात कृपाकरि जगतपर भाषेहु सहज उपाय।
यहिसमऔरउपायनहिं बिन आश्रमगतिदाय॥
और बात यक पूंछहूं विनय सहितकरजोरि।
काशी उतपति भाषहू सुनि बिनतीप्रभु मोरि॥

सो० कह्योसूत हर्षाय जब न रह्यो यह जगत कछु।
शून्यमें रह्योसमाय जिमिहि फूलमें गंधशिव॥
अगुण अरूप अनीह अलख निरंजनअव्ययअज।
अभय अमाननिरीह परब्रह्मशिव जगतपति॥

रह्यो अनाम अनामय भवको। सोइ भवविभव पराभवभवको॥
एक समयतेहि रुच्यो बिहारा। रूपधरौं अस हृदय बिचारा॥
धर्‌योरूप निज इच्छा चारी। भयो सगुण ह्वै शून्य बिहारी॥
रचौंथान तब अस मनभावा। तब शरकोशी भूमि बनावा॥

भयो प्रकाशकोटि रवि भासी। तेहिते नाम भयो तेहि काशी ॥
आनँद बसत सदा तेहिधामा। आनँद गहन भयो तेहि नामा ॥
मिलतमुक्तितहँवांबिन युक्ती। तेहिते नाम भयो अविमुक्ती ॥
पाप पुण्य यक रस परिणामा। तेहिते भयो बनारस नामा ॥
नभ अंतर तेहि थापिके शंभु बैठि तेहि थान।
सगुणरूप जिमिधारेहू तेहिकर सुनहु बखान ॥
पंचवक्र त्रयनेत्र पुनि प्रति मस्तक शशिवार।
भस्मत्रिपुंड्र ललाटप्रति प्रतिशिर सुरसरि धार ॥
सो० मुंडमाल गलमाहिं भूषण मणि युत अहि सकल।
रतन लजत लखि ताहि कोटि सूर्यकी द्युतिलसै ॥
यश है शंभु प्रकाशु कोटि सूर्य गन्तो कहा ॥
रोम रोम प्रति जासु कोटि कोटि रविकी प्रभा ॥
पदतल अरुण जलजकी शोभा। पटतर देत होत मनक्षोभा ॥
कोटि बाल रवि लाली जेहिमा। छिपतजहांशोभाकजकेहिमा ॥
लीला करब समुझि निजमनते। कीन्ह्योशक्तिअलगनिजतनते॥
तासु तेज किमि कहौं बखानी। नहिंदूसरिजेहि उपमाआनी ॥
होन पवित्र हेत निज वानी। कछुकरूप तेहिकहौंबखानी ॥
शिवा उमा वानी शर्वानी। महाकालिका गौरि भवानी ॥
उपजहिं जासु अंशते वेशी। शची शारदा रमा महेशी ॥
कोटिमिहर द्युति तेहि तनभासै। सोइभवकरै पालिपुनिनाशै ॥
दो० अति सुंदर बेणी गुहे रतन जटित तहँ पान।
अहिपतिनी फणसहित जनु बैठीलै मणिखान ॥
सेंदुर सुन्दर मांग में इन्द्र धनुष जनु आहि।
मणि मुक्ता प्रति लटन में तारावलि नभमाहिं ॥
सो० श्रवण वीरताटंक ता ऊपर अलकैं पड़ीं।
जनुदामिनीदमंक रातिसमय शशिकेनिकट ॥
सोहत रोरीभाल मृगमद कुंकुम बिन्दु तहँ।
बसततहां शशिवाल गोररूपशशिसमबदन ॥
तीन नेत्र अति सुभग सरोजा। भृकुटी विकटकमानमनोजा ॥

चितवनि चारु भक्त सुखदाई । तासु मध्य अंजन झलकाई ॥
शुकनासातहँ नथलटकनियां । सोहतसुभगजड़ितगजमनियां ॥
बेंदी अरुण लिलाट सुहाई । मनहु उदितकुजशशिनियराई ॥
हरतओंठ विद्रुमकी लाली । दशनबीज दाड़िम गति घाली ॥
हँसी मन्द जनको दुख नाशत । मनहु चन्द्रढिगदामिनिभाशत॥
गोल कपोल शंख छबि हारी । चिबुकसुहावन जनदुखदारी ॥
अलकैं छूटि श्रवण ढिग छपटी ।नागिनमनहु मलयगिरिलिपटी॥

दो० कंबुकंठ त्रयरेख शुभ तामें मोतीमाल ।
निकस्यो गंगाधारजनु फोरिके गिरवरलाल ॥
गजमणि कंठा पचलरी जुगुनू तवक जँजीर ।
शशितर श्रृंग सुमेरपर कच पचिआकी भीर ॥

सो० मोहनमाल हमेल तेहितर मणियुत कंचुकी ।
उमगेउ श्रृंगसुबेल रतनखानि प्रकटायजनु ॥
सुन्दरउदरविशाल नाभि गहिर हृदसम कही।
पहिरे सारीलाल पाटम्बर मणि जरकसी ॥

अष्टभुजा अति सुखद सुहावन । भूषण सकलबने मनभावन ॥
अंगद अरु भुज बन्द सुहावा । जोशन अंक रतनमन भावा ॥
कंकण बलय पछेलवा सोहत । धन्यजोध्यानसमयइमिजोहत॥
चूरीहरी जटित मणि मोती । मलयाडारमनहु अहिपोती ॥
प्रतिभुज सुभगहथार समेतू । दुष्ट दलन जन रक्षा हेतू ॥
चक्र गदा असि चर्म सुपासा । अपर वराभय भिंडकवासा ॥
सुन्दर जानु सुभग केदलीसम । उपमादेत लगै सबकुछकम ॥
चरण अरुण पंकज सम गाई । मुनिमनमधुप रहतजहँछाई ॥

दो० कमलदलन मोती गुहो त्योंनखपद विलसात ।
धरत ध्यान जाको तुरत सबकलेश कटिजात ॥
अरुणाई पगतल मनो कोटिन दिनपति बाल ।
ध्यानधरत हिय तमहरत तुरतहिकरतनिहाल ॥

सो० मुनिमन मानस हंस हरिविधिकी जननी शिवा ।
होत सकल अवतंस जाको यकक्षण ध्यानकरि ॥

निजमतिके अनुसार कह्यों कछुक जगजननिभा ।
अहिपति कोटि हजार बकैं कलपभरि नहिं चुकैं ॥
करैं मसी सब गिरिन बटोरी । सप्त सिंधु महँ देवैं घोरी ॥
लिखनी सुरतरु शाख बनावैं । तालुपत्र कागद ठहरावैं ॥
शारद लिखत रहैं शत कल्पा । उमाभावलिखिसकैं न अल्पा ॥
चारु थकैं पट रहैं सुख मोरी । तासु प्रभाव कहै किमि थोरी ॥
जोतमभानु न सकत मिटाई । तहँ खद्दोत करै का धाई ॥
करन पवित्र हेत निज बानी । कछुकसुमतिसमकह्योंबखानी॥
बरणत इमि जगमातु स्वरूपा । सुनत मगन सबभे ऋषिभूपा ॥
जिवहु सूत कहि सकल पुकारी । अमीसरिस जो कथाउचारी ॥

दो० सूतहु मगन सप्रेम ह्वै पुनि चितको ठहराय ।
कहनलगे शिवयशबहुरि शिवाचरण शिरनाय ॥
इमि जब अलख निरीह प्रभु बैठो धारिशरीर ।
बोल्योप्रभु तब शक्तिसन सुनो उमा मतिधीर ॥

से० एक पुरुष अस होय लायक सुंदर भक्त वर ।
करै काज सबसोय हम तुम सब लीलालखैं ॥
चिंतत इमिहि महेश लख्यो शक्तिकी ओर तब ।
प्रकटेउ तुरत रमेश शंकर के बामांग से ॥

श्यामशरीर सनीरवदनसम । मरकतमणिलजिकरतस्वमदकम॥
कनककिरीट रतनयुतशोशा । मानहु कोटि भानु रजनीशा ॥
मुसकीअलक बिकटघुंघुवारी । कामकमंद बन्यो जनु तारी ॥
भस्म त्रिपुण्ड्र बिराजत माथे । केसरि बिंदु दिहे तेहि साथे ॥
जलज नयन रतनार सुहावा । भौंह कौश जनु मार बनावा ॥
बनी नाक जनु चोंच सुवाको । तेहितरमोक्ष असितअतिबांकी॥
ललितप्रवाल अधरलखिमोहै । मोती लरी सरिस रदसोहै ॥
करणश्याममणियुत कुंडलजर । मनहुं राहु लीन्ह्यो रविकोधर ॥

दो० कंठ कौस्तुभ मणि लसै अरु कंठा रुद्राक्ष ।
बैजंती मणिमाल शुभ बनमाला कमलाक्ष ॥
चारि भुजा आजानु शुभ तामें युत हथियार ।

पंचजन्य अरु चक्र शुभ नन्दक जलज बिहार ॥
सो० तहँ भूषण झलकात अंगद बलय सुनवरतन ।
शोभन कड़ा सोहात मणियुतरविशशिसी प्रभा ॥
भूषण लालपियार श्याम श्याम तन महँ लसैं ।
जनु यमुना की धार कञ्ज फूले पियरे अरुण ॥
त्रिवलित उदर बिशाल सुहाई । तहँ श्रीवत्स महा सुखदाई ॥
ह्रदसम नाभि सोहात अतीवा । जलज फूल तहँ शोभासीवा ॥
कटि किंकिणी महा सुखसाजै । तेहि झनकार सुनतदुखभाजै ॥
पीतपाट पट सोहत धोती । दुहुं ढिग सुभगलागिनखमोती ॥
दुहुं अरुकंध पीतपट डारे । पगलग झूलत जासु किनारे ॥
अम्बर पीत श्याम तनसोहै । दामिनि बैठि मनो घन मोहै ॥
दूसर उपमा कहौं बिचारी । मरकत गिरिपर बाल तमारी ॥
तीसर उपमा अस मनभावा । मनहुं कसौटी कनक चढ़ावा ॥
दो० कदली सम ऊरू लसै शोभा बरणि न जाय ।
पदपंकज के ध्यान में सब दुख तुरत नशाय ॥
छं० पद पदुमतल अतिअरुणशोभित कोटिरबि लालीतहां ।
मुनि चित्तको सोइ बित्तसमुझउ रैनदिन बिहरै जहां ॥
जेहिध्यानकरिसनकादिनिरखत तासुमहिमाकिमिकहा ।
तेहिसुमिरि अस कहिसुयश श्योरी लहतहै मंगल महा ॥
दो० यहिविधिप्रकट्योविष्णुजब सुन्दर सुखद अनूप ।
हरषे तब शिवशक्ति लखि निजमनभावतरूप ॥
सो० तब शिवसोंकरजोरि कहेउ रमा पतिसनति ह्वै ।
सुनि बिनती प्रभुमोरि कहौ नामअरुकर्ममम ॥
दीजै मोहिं निदेश जेहि लगि मोहिं प्रकटायहू ।
हरषे बहुत महेश जिमिसुनि पितुबालक वचन ॥
पलिहौ विश्व महा हर्षाई । तेहिते नाम विष्णु सुख दाई ।
करिहौं तुम्है जगत को ईशा । तेहिते नाम होय जगदीशा ।
पूरणसदाकबहुं च्युत नाहीं । अच्युत नाम होय जगमाहीं ।
सुखमहँ मगनरहोनहिं मंदा । तेहिते नाम सच्चिदानंदा

हर अंगज तेहिते हरि नामा । यहिते अधिक न पूरण कामा ॥
मरिहौ दैत्य न लागी बारी । तेहिते नाम तुम्हार मुरारी ॥
रहिहौ सदा रमितमम चरणा । राम नाम तव यहिते बरणा ॥
मधुहि मारिहरिहौ उतपाता । माधव नाम होय जगख्याता ॥

दो० यहिविधिकहिशिवनामबहु निगमश्वासपथदीन ।
पंचबरण को मंत्र निज सो दै हर्षित कीन ॥
कह्यो जाय सुत तप करौ तपते अति बलहोय ।
मम चरणनको लायलौ बैठि रहौ छल खोय ॥

सो० तब हरिगे हर्षाय एक ठौर भू शोधि कै ।
तप नित बैठेउ जाय जपन लग्यो सोइमंत्रवर ॥
तब मन कीन बिचार बिना तीर्थ नहिं तप सधै ।
चक्रसों कुण्ड सँवारि किहेउ पूर निज स्वेदसों ॥

ताहि चक्र तीरथ भा नामा । तेहिजलछुवतमिलहिंसबकामा॥
जो मनकरैसोइ फल पावै । तेहिते तेहि मनकर्णी गावै ॥
संचित पुण्यतहां झलकाई । तेहिते तेहि मनि कर्णी गाई ॥
अपरकहतकोउअसब्योहारा । यक दिन उमा तहां पगु धारा ॥
कर्ण फूल तहँ गयो हेराई । तबते मनिकर्णिका सुहाई ॥
तीरथ देखि विष्णु अनुरागे । तेहितट बैठि करन तपलागे ॥
न्यासादिककरि ध्यानसम्हारत । बारबार शिव नाम उचारत ॥
तीन कोटि अरु लाख पचासा । जपत मंत्रनितकरिविश्वासा ॥

छं० धरि ध्यान सरशिर भस्म युत शशिगंगधर सुखकंदही ।
करिहृदय निजहरि मानसरवर हंसबपु शिरचंदही ॥
शिवचरण बारिज मधुपहरि मनचरत छबि मकरंदही ।
कहिजयतिजय सुखभवनशंकर अलखअजनिर्द्वंदही ॥

दो० यहि विधि तपत रमेश को गयो बहुत दिन बीत ।
संख्या संवत सहस दश भयो न तपमें जीत ॥
क्रोध्यो तब अच्युत बहुत तनमें चल्यो पसेद ।
सकल भुवन जलसों भरेउ हरितनभयो न खेद ॥

सो० हरि सोयो जल माहिं नारायण तहँ नाम भा ।

रह्यो चेत कछु नाहिं शिवमाया अतिशयप्रबल ॥
तब शिवकीन विचार सव्य अंगसे विधि बनय ।
दीन्ह्यो जलमें डार नाभि मध्य भगवान के ॥
अब शिव चरित सुनोमनलाई । जहँ न ज्ञान मनचितठहराई ॥
हरिनाभी अति सुभग सुहाई । मायाकरि तहँ जलजजमाई ॥
बाढ़ेउ जलज जहां लग पानी । तेहिपर फूलभयो सुखखानी ॥
तेहि मग धात फूल पर आयो । देखि बारि अतिशयघबड़ायो ॥
तासुरूप कछु कहौं बखानी । सकल महातम वेद न जानी ॥
अरुणवरण सरबदन बिराजत । शोभादेखि कोटिरबि लाजत ॥
प्रतिशिर कनकमुकुट तहँभ्राजैं । भाल विशाल त्रिपुण्ड्र बिराजैं ॥
कंठ अरुण रुद्राक्षक माला । बिच बिच सुंदर गुहे प्रबाला ॥
दो० चारि भुजा आजानु शुभ भूषण महा प्रकास ।
दंड कमंडल वर अभय लिये बस्तु संन्यास ॥
त्रिवलितउदरविशालअति नाभीगहिरिबिशाल ।
मणि मुक्ता जर तारयुत गहे पटाम्बर लाल ॥
सो० चरण अरुण जलजात नखद्युतिशोभाबालशशि ।
ध्यान में चित हर्षात पूर करत सब कामना ॥
अस जब बर्णनकीन सुनत ऋषिन संशयकियो ।
सूतहि आशिष दीन बोले शौनक है बिनित ॥
तात एक शंका मन आई । सो पूछे बिन रहो न जाई ॥
जो विधिरूप कहेउ तुम गाई । पांच बदन तहँ प्रकट दिखाई ॥
सकलकहतविधिकोचतुरानन । कौन प्रकार बोध उर आनन ॥
हँस्योसूतकहि शिवशिवबानी । जगहित अज्ञबन्यो मुनिज्ञानी ॥
लीला सकल शंभु की जानौ । कहौंकथा सुनिसब भ्रमभानौ ॥
जब विधि प्रकटभयो प्रथमाहीं । पांच बदन तहँ संशय नाहीं ॥
हरि विधि बाद भयो यकदाई । तहँ विधि गर्वकियो हठलाई ॥
करिमदकह्योशिवहिनिजबालक । जोहरिजनकसदाश्रुतिपालक ॥
दो० जेहि मुखसों विधिनिन्देहू शिव निजबालक जानि ।
सो शिर भैरव रूपधरि काटेउ श्रुति अनुमानि ॥

चतुरानन तब नाम भो रह्यो शेष शिर चारि।
यह सब लीला शंभु की देखो हृदय बिचारि॥
सो० लीला हेत महेश करत बिहार अनेक बिधि।
कहि न सकत जेहि शेष नेतिनेति भाषैनिगम॥
संशय हर्‌यों तुम्हार कहि संक्षेपहि यह कथा।
कहब सहित बिस्तार मुनि बहोरि भैरवचरित॥
यहिबिधि जब प्रकटेउकरतारा। चकित ह्वै सब ओर निहारा॥
देखेउ ओर न कछु तजिपानी। बिकलभयो नहिं निकरतबानी॥
को हम कौन मोर पितु माता। मन में शोचत यहै बिधाता॥
तब शिव प्रेरक असमति पाई। कमल नाल जर जहँते आई॥
जनक खोजलागी अब तहँवां। कमल नाल जर ह्वैहै जहँवां॥
असबिचार करि सूक्षम स्वरूपा। जलज नाल पैठ्यो सुरभूपा॥
दश हजार दिव वर्ष प्रमाना। चलेगयो नहिं लाग ठिकाना॥
थकितभयो अति शोतलगाता। ह्वै निराश तब लौटेउ धाता॥
दो० दश हजार दिव वर्षलग ऊपर आयो धात।
लह्यो न निजअस्थानको बिकलभयोअतिगात॥
तब शिवप्रेरक बुद्धिभै अस्तुति किह्यो सुनाय।
जो कोउ होवै जनक मम करै सुमोरि सहाय॥
सो० लह्यो तुरत निजथान कमल मध्यप्रकट्यो जहां।
शिवप्रेरक भगवान बारि मध्य जागत भयो॥
विधि सहायके हेत जल ऊपर आवत भयो।
विधिकोदेखि अचेत तेहिढिग पहुंच्यो करिकृपा॥
विधिसों कहेउ न डरपहु ताता। हैं हमतुम्हरोनिशिदिनपाता॥
जपौ मोहिं ममपद चितलावो। बारबार मन को हरषावो॥
तब विधि कह्यो कौन तू हैरे। बारबार मोहिं तात कहैरे॥
मैंहौं तात सकल जग केरा। अज करतार नाम है मेरा॥
पिता पितामह जनक कहाऊं। परम ईश सब जगत बनाऊं॥
भजहु मोहिं मम शरणहि आई। अहंकार सब देहु बहाई॥
तब उर क्रोध कीन बनवारी। नाम भरोस मूढ़ता भारी॥

पवन नाम पँगुलाकर होई। एकहाथ नहिं सकत उड़ोई॥
दो० नख हजार सम नालमें भरमेउ अति भटकाय।
तबकी सुधि कहँवां गई सुमिरेहु मोरि सहाय॥
सुनि तव बानी दीनता हम प्रकटिन यहिथान।
अब परेश तुम बनतहौ मम माया बलवान॥
सो० समुझो मोहिं परेश शरण गहौ तजि मोह मद।
बोल्यो दपटि प्रजेश हम परेश तुम कौन हो॥
उतपति है सुततोरि मम नाभी ते हरि कहा।
व्यापी माया मोरि वेद तत्त्व सब गा बिसरि॥
कहविधि ज्ञान तोरबिपरीता। माया मोरि तोरि बुधि जीता॥
हम परेश माया मम भारी। जो हठि कीन्ह्यो तुम्हैं अनारी॥
वाक्यबादि जबइमिबहुभयऊ। द्वै अभिमान उभय मतिगयऊ॥
वेद तत्त्वतजि त्यागि उमेशा। निजहीनिज चहबनन परेशा॥
शिवमाया मुनिअतिबलवाना। जेहिवशह्वै हरि विधिहुभुलाना॥
जहँ असदशा विष्णुविधिकेरी। तहां अपर को सकत निवेरी॥
तब सब चरित लखात्रिपुरारी। करिमदमोहिंइनदीनबिसारी॥
बहुपियार मोहिं विधिबनवारी। मायाबश अति होत दुखारी॥
दो० हर्षाऊं सब गर्भ हरि इन भ्रम देउँ छुड़ाय।
असकहि दोनों मध्यमें निज महँ दीन दिखाय॥
बारि मध्य ते लिंगवत धधधा गयो अकास।
सो लखि दोनों चक्रितभे समिटिभये यकपास॥
सो० बोल्यो तबहिं मुरारि हे विधि यह धौं काह है।
कहविधि मनहिं बिचारि यह प्रकाशहै शंभुको॥
जो हैं आदि परेश जाको हम तुम भूलिगे।
तेहि नित आयमहेश हमरो तुम्हरो मद हरयो॥
जानिपरतशिवअतिरिसकीन्हा। ज्वालारूप क्रोधकरि लीन्हा॥
तब हरि शोच करन मनलागे। जानिबूझि हम प्रभुकहँत्यागे॥
बड़ अपराध कीन हम भारी। शिव सहाय अब करैंहमारी॥
असकहि ज्वाला ओर निहारा। ज्वाला मध्य लख्यो ओंकारा॥

शिव स्वरूप ओंकार विशेखी। सोइ हरि ब्रह्म तासुमहँदेखी॥
मगन भयो लखि रूप परेशा। बोलिउठ्यो जय जयतिमहेशा॥
तेहि लखिहाथजोरिकलचाई। लाग्यो अस्तुति करन बनाई॥
पृथक्‌पृथक् अस्तुति अनुसारी। प्रथमहिं अस्तुतिकीन मुरारी॥

छं० जयजयअकार अजीतअद्वय आदि अज अविकाशिही।
अभिलषितदा अविमुक्तिवासी अव्यअगमप्रकाशिही॥
जय जय उकार उमेश उत्तम उरगधर उत्पति करं।
उरवास कर उत्पात हर उद्धार कर उड़पति धरं॥
जय जय मकार मनोज हारि महेश मंगल दायकं।
मंदार हार मभाल मंदर विहर कर मम नायकं॥
जय बिन्दु गगनग शून्य वासी निर्गुणं निरुपद्रवं।
निर्द्वन्द निर्बपु निगम पाल निरीह अतिकरुणाद्रवं॥
जय रेफ परम परेश सब पर परम पावन निर्मलं।
परमात्म पूरण कामकर सब दुःखहर जन वत्सलं॥
जय वर्णसरओंकार रूपक कहत हरि गद्‌गद् गिरा।
ममअर्ज सुनि प्रभु रूप धारो दुख निवारो हरहरा॥

दो० यहिमिसहरिबिनतीकियो तेहिमिसकीन्हीधात।
सुनिबिनती हरि ब्रह्मकी प्रकट्यो शिव हर्षात॥
सो स्वरूप वर्णौं कहा वरणि सकैं नहिं शेष।
नेति नेति भाषत निगम चुपकरि रहत गणेश॥

सो० पंचवदन दश हाथ आयुध युत भूषण सहित।
शशि त्रिपुण्ड्र प्रतिमाथ जटाबीच सुरसरि लसै॥
तीन नेत्र रतनार रविवत शशिवत वह्निवत।
चितवत भक्त उबार दुष्टहि जारत मारवत॥

काननमें अहि कुण्डल छाजै। मुण्डमाल गलमाहिं बिराजै॥
कंठ गरल अति शोभा धारे। अपर माल रुद्राक्ष सँवारे॥
उदर विशाल महा छबि राजै। नाभि गँभीर सुह्रदसम भ्राजै॥
कटि सुन्दर बाघम्बर धारी। होत मुदितमन ताहिनिहारी॥
ऊरू बननि न कदली पावै। गुल्फगोलतहँ अतिसनभावै॥

पद जलजात भक्त दुख हारी । बड़ भागी जेहि परत निहारी ॥
मुनि मन मान सरोवर हंसा । ध्यानी होत सकल अवतंसा ॥
नखअतिसुन्दरइन्दु निहायक । पगतल सुभगभक्त सुखदायक ॥

दो० पगतललाल प्रबाल सम परन कठिनतेहिमान ।
कोमल पल्लव अम्र जिमि, औरजलजअनुमान ॥
शिवहिनिरखिहरि विधिदोऊ कीन्ह्योदण्डप्रणाम ।
त्राहि त्राहि आरत हरण पाहि पाहि भर काम ॥

सो० हाथ जोरि लचिमाथ प्रथमहिं अस्तुति हरिकरी ।
जयजय दीना नाथ दीनबन्धु दीनोद्धरं ॥
निर्गुण सगुण स्वरूप वेद न जानत तव कथा ।
निज मति के अनुरूप हमहुं दिखावत दासता ॥

छं० जयईशगिरीशअनीशहरं । जनतापनिवारण दुःखहरं ॥
जयपंचवदनदिग्मानभुजं । तवभक्तिअनामयजक्तरुजं ॥
जयशंकर शंभुउमारमनं । शरणागत पालक वेदभनं ॥
विषसोहतकंठमेंजंबुफरं । गंगाजलबुंद समान शिरं ॥
द्विशबामसुखंजलजातउमा । कटिमेंहरिचर्मजबालसमा ॥
अतिशयबलवंतअजातुम्हरी । संसारहिबांधतज्योंफँसरी ॥
जयमारनशावनलोकपतिं । नहिंआदिनमध्यनअंतगतिं ॥
अबदीनदयालकृपाकरिये । भूममोरअजा अपनोहरिये ॥

दो० यहि विधि हरिअस्तुति करी मौनगही शिरनाय ।
बोल्यो विधि गद्गद गिरा जयजय दीनसहाय ॥

छं० जयतीकृपालजयचन्द्रभाल । जयदुष्टघालजयभक्तपाल ॥
जयजगतकारभुजगेन्द्रहार । संसारसार करुणावतार ॥
करपूरगौर सबदेव मौर । नहिंआदिअंतजयउमाकंत ॥
जयकृपाखानिममअर्जमानि । ममहरुतधारिवतुभर्महारि ॥

दो० सुनि बिनती हरि ब्रह्मकी हर्षित भयो परेश ।
मांगु मांगु वर इमिकह्यो घन समान अमरेश ॥

सो० बोले विधिहु मुरारि नाथचूक मेटो प्रथम ।
लीन्ह्यो हमहिं उबारि दरश दिखायो आपनो ॥

मायातव अतिचंड भल भुलाय हमको दई।
कीन्ह्यो कृपा अखंड दास जानिकै मदहर्‌यो॥
प्रथमहिं भक्ति देहु सुखदाई। जिमि न बहुरि माया लपटाई॥
तेहि पाछे फल दर्शन केरा। देहु हमैं करि कृपा घनेरा॥
एवमस्तु तब कह्यो पुरारी। अरु बोल्यो करि करुणा भारी॥
तुम मम अंगजधात मुरारी। तुमपर होब न हम रिस कारी॥
ममसायाअतिशयबलवाना। तेहि बश भूलेउ विधि भगवाना॥
सो करिकृपा निवारा आई। अब न तुम्हैं माया नियराई॥
ममदर्शनफलअतिसुखदाई। देत दर्शि कहँ निजहि बनाई॥
सोहरिहोहिंजक्तपरिपालक। सुजन उबारक दुरजन घालक॥
दो० धात रचैं संसार को भद्र अभद्र मिलाय।
बिना उभय मिश्रित किये लीलानहिंप्रकटाय॥
हेहरि जो हम तुम्हनको वेददियो श्रुति पंथ।
सो विधिको अब देहु तुम विधिहूके तुम कंथ॥
सो० सतो रजोतम जान मम माया कृत तीन गुण।
होहु सकलगुण खान धारिसतोगुणविष्णुतुम॥
स्वर्ग अवनि अरु अंत तीनहुंको तुमकरि सको।
होहु सकलजग कंत सुरन बीच शिरमणिरहौ॥
हम सिवाय नहिं तुमपर कोई। रहौ सदा निज तंत्रित होई॥
जो मन रुचै करौ तुम सबहूं। वेद मार्ग नहिं छांड़हु कबहूं॥
मम चरणन रति रहै सदाई। करब सदा हम तोरि सहाई॥
भूल्यो करब न क्रोध पसारा। प्रकटब तुरतहि करब उबारा॥
देहु सुजन कहँ सकलपदारथ। अर्थ धर्म अरु तीसर स्वारथ॥
चौथमुक्तिहमनिजबशराखित। तुम्हरे जननदेब अभिलाषित॥
सुतहि मिष्ठ देवै जो कोई। हर्षित तासु पिता अति होई॥
इमि जो पूजनकरै तुम्हारी। ताहि देश निशोण प्रचारी॥
दो० अपने जनसम तूजनहि करबै बहुत पियार।
कल्पित पंथहि छांड़िकै जो मम निन्दाकार॥
कह्यो विष्णु करजोरिकै जो तवनिन्दाकार।

सो ममजन किमिह्वैसकै ममबैरी अघसार ॥
सो० हरिकोदै वरदान विधिसों बोल्यो गौरिपति ।
होहु सृष्टिकी खान धारि रजोगुण गुणसदा ॥
करहुसदा शुभसृष्ट ममचरणन रतिराखिकै ।
हरिहिलखोनिजइष्टसुमिरहुसदासहायहित॥
प्रलय समय धरिरूप अनंता । धारि तमोगुण करि जग अंता ॥
निजहिशेषरहि शून्यसमाई । रहब सकल निजमें समिटाई ॥
तब हरिकह्यो दुहूं करजोरी । यक अभिलाष और है मोरी ॥
तुमहूं नाथ होहु अवतारी । सगुण रूप होइ लीलाकारी ॥
जिमिहिं तीनगुण बनयो ईशा । तिमि ह्वै त्रिसुररहैं जगदीशा ॥
त्रिसुर रहहिं हम सुरनकेमेले । यहि तन रहौ परेश अकेले ॥
एवमस्तु तब शंकर भाखा । हरि अभिलाष पूर सब राखा ॥
विधि भृकुटी से प्रकटब आई । मोहिं तेहिभेद वेद नहिंगाई ॥
दो० तब विधिबोल्यो बातयक हाथ जोरि कलचाय ।
नाथ स्वर्ग आज्ञादिहेउ भद्र अभद्र मिलाय ॥
तब हम स्वर्ग बनावहित निजमनकीन चवाव ।
तब प्रताप उरमांझ मम पैठेहु स्वर्ग बनाव ॥
सो० बहुतक चारि प्रकार उत्तम मध्यम नीच लघु ।
दुइ दुइ केर पसार होवै भद्र अभद्र सब ॥
आधीराति सकार दुपहर संध्या चारिगण ।
तहँ दुइ देखविचार राति दिवस भाषैं सकल ॥
चारि बरण मानुष में जानो । इमिहिंचारियुगकोअनुमानो ॥
भद्र अभद्र कहौं अब गाई । सुनहुमहा प्रभु चित्त लगाई ॥
कृष्ण श्वेत जानो दिन राती । सुर अरु असुर देवकी जाती ॥
मणि अरुकांच उष्ण अरुशीता । बैरी दुष्ट संत अरु मीता ॥
पाप पुण्य अरु विप्र कसाई । गन्ध कुगन्ध सुगन्ध लसाई ॥
दाता कृपण निश्व धनवन्ता । अगुणी सदा महा गुणवन्ता ॥
बाघ सियार सुअरि अरु गाई । काग मराल जलज अरु काई ॥
जियब मरबअरु भूंखअघाबा । सेवकस्वामि शिष्यअरु ब्राह्म ॥

दो० क्रमनाशा तहँ सुरसरी धाम तहां हिमि होय।
पालक बधिक विचारिये साधुअपर ठग सोय॥
मरुत देश अरु मालवा बेलबबुर अनुमान।
रक्षक चोर विचारि कै राजा और किसान॥
सो० सतयुग अघसे हीन कलियुग होइहि पूरअघ।
कलिमें नर अतिदीन लघुआयुर रुज युक्तसब॥
विद्या से अतिहीन बातन में पंडित बनैं।
परधन लेवैं छीन झूठ बकैं सोइ अतिचतुर॥
आयुर हीन तपै नहिं कोई। धन विद्याबिन यज्ञ न होई॥
तप जगिबिना न गोचर बसमें। बिनगोचरबशमननहिं कसमें॥
बिन मनकसे भजन नहिंहोई। बिनतवभजननमुक्तिमिलोई॥
कामक्रोध मदमोह लोभादिक। निशिदिनखड़ेरहैंजिमिवादिक॥
विधिवश कबहुं जोतवपद हेरी। बदिकै देहिं तासु रुचि फेरी॥
किमि निस्तारकरैं कलि लोगा। हे परेश कहिये सोइ योगा॥
तब हँसि बोले कृपा निधाना। धन्य धन्यविधि परमसुजाना॥
ऐसहि पितहि चही सतकारा। सुतहित करै अनेक विचारा॥
छं० ममबात सुनु विधि शंभुबोल्यो युक्ति अघहर हमकही।
मम भक्ति से नहिं युक्तिपरकछु भुक्ति अरु मुक्तदसही॥
मम चरण रति अद्वै करै तेहि देखि अघ कोशन भगै।
ममभक्तको सम चतुरयुग कलिकाल माया नहिं लगै॥
दो० तब बोल्यो विधि दीनह्वै नाथ कठिन कलिकार।
मन भटकावत बादिबदि क्रोध लोभ मद मार॥
कलिमें तव निंदक बहुत बाना बनै सरिष्ट।
भाषि बहुत निजउक्तिमत ज्ञानिहु करहिं भरिष्ट॥
सो० असकछु करौ परेश बिना योग जप नर तरैं।
निंदक तोर महेश सज्ञानिहु यमपुर बसैं॥
विधिहि बड़ाई देत बोल्यो शंकर हर्षि तब।
कलि मानुषकेहेत तुम चाहत कछु वस्तु पर॥
एवमस्तु तब शंकर भाषा। हमपूरब तुम्हरो अभिलाषा॥

जब हम प्रथम सगुण तनधारा। निज थलहेत भूमि संचारा॥
पंचकोश सर्वोपरि भाशी। ताकर नाम कह्यो हमकाशी॥
जहँ हरि प्रथम कीन तपभारी। चक्रसे कुण्ड बने बनवारी॥
ताको मणिकर्णिका नामा। मुक्तिखानि अरु पुरवत कामा॥
तेहि भीतरनहिं अघकरवासा। अघिन हेत सो हवै मवासा॥
कितनौ पाप करै जगमाहीं। काशीनिरखि तुरतजरिजाहीं॥
द्विजहत्या सब पुर पैठारा। काशीनिरखिहोत जरिक्षारा॥

दो० तहँवां अबमम पुरबन्यो योजन भूप हजार।
ताकी छबि अनुपमसदा मणिजरमई दिवार॥
ताके चहुंदिशि नर्बदा घेरे करत कलोल।
ममविहार हित बाग बन पक्षी सुंदर बोल॥

सो० कलिजीवनके हेत पंचकोश सोइ लेव तुम।
करि करुणा हमदेत लिंगरूप हमहू रहब॥
तव कृतमें करतार भरतखंड पावन महा।
होइहि जगको सार तासुमध्य थापित कियो॥

तहँपर नाम होयतेहि कासी। तहां मुक्ति रैहै ह्वै दासी॥
अविनाशी सर्वोपरि भासी। मोर रूप तहँवां के वासी॥
प्रलयकाल ऐहै विधि जबहीं। निज त्रिशूल पर राखबतबहीं॥
यहिकरनाश न कौनेहु काला। यहमम रूप कह्यो शशिभाला॥
यहि दर्शत अघजायँ बिलाई। भाग्यहीन नहिं यहिढिग जाई॥
सर्व जीव नर कीट पतंगा। मरितहँ पैहैं मुक्ति अभंगा॥
कितनौ अघीमरै तेहि धरणी। तेहिसमगनौन सुरपति करणी॥
जोशुचि बारलेय तेहि नामा। परहु देश बसि पुरवहि कामा॥

दो० लिंगरूप तहँरहब हम नाम बिश्वेश्वरनाथ।
अन्नपूरणा नामहै शक्ति रहैमम साथ॥
सब सुर यकयक रूपधरि रहैंकरैं ममसेव।
तुमहरि गणपतिसूर्य शशि इंद्रादिकदिगदेव॥

सो० मोहिं तेहि लिंग अभेद पूरण गैहैं वेद सब।
भेद करत लहि खेद निश्चयकरि फलपाइहैं॥

तहँबहु करब विहार पुरवासिन सुखदेव बहु।
मुक्तिदेव अविचार निरखी अघी नन्यायकछु॥
असकहि लिंगरूप शिव धारा। कोमल श्वेत महा द्युतिकारा॥
सतयुग श्वेत रहै यह लिंगा। त्रेता अरुण करै दुख भंगा॥
द्वापर पीत महा द्युति भासी। कलिमें कृष्ण होयअविनासी॥
पूरण अंशतहां बसि शंकर। थापित कीनअवनि काशीपर॥
पंचकोश पृथवी अलगाई। विधिको दीन महा हर्षाई॥
तब विधि गिरयोचरणसुखकंदा। कहिजयजयति सच्चिदानंदा॥
कलिनर हेत दीन प्रभुकाशी। चारिहु युगहि भई अघनाशी॥
हृदय बीच राख्यो जगकारा। जबलग कीन न सृष्टिपसारा॥
दो० आयसु सिरजनपालदै विधिहरिको शशिमाथ।
निजप्रभु अंतर्द्धान भो हरिविधि भयेसनाथ॥
तबविधि सृष्टिपसारकरि रच्योस्वर्गबहुभांति।
तत्त्वभूत अरुभूमिनभ मनुज देवबहु जाति॥
से० जसकछु सृष्टिप्रमान सोबनयो विधिजक्तसब।
विस्तर सहित बखान सकल पुराणनमें हवै॥
तेहितेकरिविस्तार नहिं भाष्योंविधिचरितको।
रच्योसकल करतार अंडज पिंडज चरअचर॥
भरतखंड जबबन्यो सुहाई। जंबू द्वीप बीच मुनि राई॥
तासुमध्य विधिथाप्यो काशी। जक्तबीच सबोपरि भाशी॥
हरिविधि आदिदेव सब साथा। पूजन हेत विश्वेश्वर नाथा॥
आय कीन पूजा तिन भूरी। सकल पाप दुखकीन्ह्यो दूरी॥
प्रथमहिं अर्चन कीन मुरारी। तेहिपाछे विधिअरु सुरझारी॥
कोउनाचै कोउ गाल बजावै। दै करतारी शिवहिं रिझावै॥
धरि धरि रूप बसे सबदेवा। लागे करन उमापति सेवा॥
देखहु मुनि कलि जीवन हेतू। करुणा केलि कीन वृषकेतू॥
दो० लोकपाल शंकर सरिस समुझत नहिं जड़लोग।
शिवहि त्यागि परदेव रत करै खरवा भोग॥
कल्पवृक्ष तजि रंडको गहै कांच तजि सोन।

यहिविधि परस्त शंभुतजि तेहिसम जड़है कौन ॥
सो० सुनिये महा सुजान यहिविधि आयो काशिका ।
सो वृष बिना वृषान जो सुनिहोय न शंभुरत ॥
जियहु तातसम लाष सुनिबोले मुनि सूतसन ।
पूरकिहेउ अभिलाष अमो सरिस कथि गाथयह ॥
शंका एक और मन माहीं । कह्यो नर्वदा शिवपुर पाहीं ॥
एक नर्बदा है जग माहीं । शंभुलिंग जहँ बहु प्रकटाहीं ॥
दक्षिण दिशि जेहिकर विस्तारा । पश्चिम बहत जासुकीधारा ॥
यहि वहि भेद कहो विस्तारी । वरणि कथा हरिये भ्रमभारी ॥
कह्यो सूत सुनिये मुनिराई । यहिवहि भेद वेद नहिंगाई ॥
जो नर्बदा शंभु पुर भ्राजै । तासु धार यह भूमि विराजै ॥
एक धार छांड़्यो वृषकेतू । भरयो लिंग तहँ पूजक हेतू ॥
है नर्बदा महातम भारी । लिंगरूप जहँ प्रकट पुरारी ॥
क० नर्बदा को नीर लखि सर्वदा पराहिं पाप
ताहिकी कटाक्ष को तो गंगा आदि जोहहीं ।
कोउ न समर्थ अस तासुको महत कहै
और को चलावै कौन विष्णुआदि मोहहीं ॥
ओरी अति भाग्य वाकी देखै मज्जै नर्बदाको
पाप तो बिलायँ सब मोद अति होहहीं ।
काशिहि कैलास में तो एक एक रूप हर
नर्बदा में शंभुजी अनेक रूप सोहहीं ॥
दो० ऋषिन नर्बदा गाथ सुनि सूतहि दीन अशीश ।
यक शंका उर और मम ताहूको करु खीश ॥
सकल नगर पुर चौपहल काशी है त्रयकोन ।
यामें कारण कौन है सकरुण भाषहु तौन ॥
सो० सुनहु सकलमुनिनाथ कह्योसूत सकरुणहियें ।
त्यागहु भ्रमसुनिगाथ जिमित्रिकोण काशीभई ॥
स० विष्णु गदाधर रूप प्रकाश जो पित्रनहेत गया बनई है ।
मुक्तिदहोनकेहेत रमापति साँझसमय शिवसोंबनई है ॥

दीन्हींसदाशिवकाशीको कोनतेहीतेगयाभइ मुक्तिमईहै ।
श्रोरीकहै सबदेखोप्रबीनन याहीतेकाशीत्रिकोणभईहै ॥
सो० सुनहु सकल मुनिनाथ कह्यो सूत हर्षित हिये ।
चरित विश्वेश्वरनाथ सकल निवेदन कीन हम ॥
शंकर चरित अगाध अपारा । नेतिनेति कहि निगमपुकारा ॥
विधि हरि शेष लहैं जहँ हारी । गनी कौनि तहँ बुद्धिहमारी ॥
गुरु प्रताप शारद करुणाई । भाष्योंजसकछु ममउरआई ॥
पर अभिलाष कहौ मुनि ज्ञानी । सोहमकहैंसुमिरि विधिरानी ॥
पुनिपुनि सूतहिं देत अशीशा । भाष्योनिजअभिलाषमुनीशा ॥
वहु मुख सुनी तात यह बाता । सातपुरी जगमें हैं ख्याता ॥
मथुरा अवध द्वारका माया । अरु उज्जैन कांची गाथा ॥
अपर काशिका पुरी सुहाई । मुक्तिदेत ये सात सदाई ॥
दो० तुम्हरे मुख निज काशिकै सुनी मुक्तिकी खानि ।
अपर पुरी भाष्यो नहीं यही भरम बड़ि मानि ॥
कह्यो सूत हँसि सुनहु मुनि शिवमाया बलवान ।
ज्ञानिहि अज्ञ बनावही जड़हिदेत अति ज्ञान ॥
सो० तुम अस ज्ञान बलीन भूलतहौ भरमत फिरत ।
करैं कहा नरदीन बचैं जो माया शंभु से ॥
तुमहौ शैव सुजान तुम्हैं न व्यापत शिव अज्ञा ।
जगहित बनत अयान हमैं बड़ाई दै रहे ॥
अबतुम सुनो भेद तेहि केरा । यामें हैं बहु बाद घनेरा ॥
जो पुरकह्यो सात अघहारी । सो सब सत्य न संशयधारी ॥
सो अस्थूल मतो व्योहारा । ताको आजसुनो विस्तारा ॥
जो षटपुरी कह्यो प्रथमाहीं । प्रथम जन्मसो अघहरनाहीं ॥
तहां मरेपर मिलत है काशी । काशी निरखिहोयअघनाशी ॥
काशी मरे मुक्ति सो पावै । फिरिलै जन्म न जगमेंआवै ॥
तहँ दृष्टान्त एक तुम देखौ । तबममवचनसत्यकरिलेखौ ॥
जब भगवान क्षीरनिधि वासी । दशरथतनयभयो अविनासी ॥
दो० चतुररूप धरि बसैं तहँ कीन्ह्यो सुभग विहार ।

राम लक्ष्मण भरत अरु रिपुसूदन ये चार ॥
तब मुनि बोले सूतसन शंका हरौ हमारि।
दशरथ कीन्ह्यो कौनतप जो सुतभये मुरारि ॥
सो० याहिकहो विस्तार हमैं लालसा है बड़ी।
श्रीपति जगभरतार आयभयेकिमि राजसुत ॥
कह्यो सूत हर्षाय शिवमाया के जोरि कर।
सकलसुनोचितलाय विस्तर सुतहमभाषहों ॥
एकसमय यकपुर में ताता। बधिक एकअतिदीन लसाता ॥
द्रव्यहीन अतिशय व्यभिचारी। मृगहिमारि नितहोतअहारी ॥
मारि अहेर बेचि सोइ लावै। ताको अन्नलेय सोइ खावै ॥
कबहुं कदाचित नाहिं बिकाई। तौमृगरांधिनिजहिसोइखाई ॥
मातु पिता तेहि वृद्ध अपारा। सोइअकेल कुलपालनहारा ॥
विधिबश एकदिवस यक बेरा। अन्नमिल्योनहिंमिल्योअहेरा ॥
बारिअहार रह्यो परिवारा। हायहाय करि भा भिन्सारा ॥
जाग्यो बधिक भोर जब भयऊ। धनुषवाण लै बनकहँ गयऊ ॥
दो० निज मनमें प्रणठानि कै बनको चल्यो मृगारि।
जबलगमिलै अहेरनहिं तबलग पियों न बारि ॥
मातु पिता सुतके जियत रहैं उपासे सोय।
तासुतको धिक्कार है कह्यो बधिक अस रोय ॥
सो० असकहि बनमेंजाय सकलदिवस ढूंढ़त फिर्‍यो।
यक मृग दृष्टि न आय संचित कृत प्रकटा चहै ॥
तेहि दिन रहै शिवराति चतुर्दशी फागुनबदी।
सर्वोपरि विलसाति बर्तराज शंभुहि प्रिया ॥
महाबर्त सब सुरन पियारा। भुक्ति मुक्तिको देवन हारा ॥
महाबर्त सब भांति अनूपा। रंकहि करत तुरत सुरभूपा ॥
चारि पदारथ करतल तासू। जो ब्रतकरै सहित विश्वासू ॥
सकल बर्त यहि नावहिं शीशा। यहब्रत असवर हवै मुनीशा ॥
सुरन विषे जिमि हैं बनवारी। वरणविषे जिमि विप्रसिहारी ॥
पशुमें धेनु पुरिन में कासी। सरितन मध्यदेव सरितासी ॥

अहिनमध्य जिमि हवैं अहीशा । शैवमध्य जिमि राममुनीशा ॥
भक्तिनमें शिव भक्ति अघाता । तिमिब्रत बीचहवै शिवराता ॥

दो० कहँ लग वर्णन करौं मनि वेद न पावत पार ।
भुक्ति मुक्ति दासी करै ठानि बर्त यक बार ॥
रहत याहि करि प्रेम हैं ब्रह्मा इन्द्र मरारि ।
दनुज मनुजखगनाग पशु सुर उपसुर नरनारि ॥

सो० जोनर पापको गेह ताहि रुचै यह ब्रत नहीं ।
जानहु बिन संदेह तासुहेत रव रव बना ॥
सुनहुसकलमतिधीर बधिकहिंफिरत अहेरनित ।
बिनभोजन बिननीर सांझभयोनहिंमृगमिल्यो ॥

सांझभयो जबमृगनहिं मिलेऊ । बधिकरिसाय नदीतटचलेऊ ॥
जेहितटनितहि पियतमृगपानी । मिलिहि जरूरतहांमृगजानी ॥
यदपि बारि भाजन तेहिसाथा । तदपि पियोनहिंहठबशपाथा ॥
नदीतीर यक कुञ्ज शैलूषा । तेहिचढ़ि बैठजायसोइभूषा ॥
धनुष चढ़ाय बाण तहँ छाई । चितवत पंथ कबै मृग आई ॥
शैलुषतर, यक लिंग महेशा । रह्यो अदेख द्दषदके भेषा ॥
सांझसमय यक मृग मुनिराया । पानी पियन नदीतट आया ॥
निरखिताहि अति हर्षितगाता । भो चैतन्य करौं यहि घाता ॥

दो० लिंग उपर पाती झर्‌यो ढरकि पर्‌यो अरुबारि ।
पूजा पहिले पहरको मानिलियो त्रिपुरारि ॥
खरभरात मृग जानेऊ बोल्यो ह्वै बाचाल ।
काह करतहौ बधिक यह क्षमाकरो कछुकाल ॥

सो० बोल्यो बधिक रिसाय क्षमा होत है कौन बिधि ।
घरहि तात अरु माय भूखे ह्वैगे दिवस द्वै ॥
यकक्षण अब मृगमोहिं युग समान बीतत हवै ।
मारतहौं अब तोहिं निज कुटुंब पालन बरे ॥

तब बोल्यो मृग अति हर्षाई । धन्यभाग्य मम परहित जाई ॥
तहँ परंतु यक विनय हमारो । मम घर चारि बाल दुइ नारी ॥
तिन्हैं बोध दै मैं फिरि आऊं । तब शर बैठि ब्रह्मपुर जाऊं ॥

तब नहिं तुम्हैं दोष कछु ताता । मारौ हमैं सहित हर्षाता ॥
बोल्यो बधिक करत बहु हांसी । पशु के बचन कौनविश्वासी ॥
तब मृग लग्यो करन सौगंधा । शिव रति छांड़ि करै परधंधा ॥
मारै गऊ बैल को काटै । धर्म करत जो चित्त उपाटै ॥
तिनकी गति विधिसन मैं पाऊं । सुनौबधिक जो लौटि न आऊं ॥

दो० शिव प्रसाद कछु ज्ञान भा शपथ मानि सो लीन ।
धनुष बाण गहि बैठ पुनि मृगहि जान घरदीन ।
लखि बिलम्ब तेहि रातिमें ताकी जेठी नारि ।
ढूंढ़न हित तहँवां गई यक पद निशा गुजारि ॥

सो० तेहिलखि हरषिमृगारि धनुष बाण खींचतभयो ।
गिर्‌यो पत्र अरु बारि लिंग उपर दुसरे पहर ॥
धनुष चढ़ावत देखि कह्यो मृगी बाचाल ह्वै ।
यह का करत अलेखि रातिसमयमें तियबधत ॥

बोल्यो बधिक क्रोधकरि भारी । हमनहिं लखत पुरुषअरुनारी॥
मृगहिमारि निजकुलकोपारत । कारण सोइ तुम्हैं हममारत ॥
घर में वृद्ध पिता अरु माई । भूखे ह्वैगे दिवस अढ़ाई ॥
कह्यो मृगी मम धन्य सुभागी । जो ममदेह क्षुधित हितलागी ॥
क्षुधावंत के भोजन दीन्हे । फलहै कोटियज्ञ जिमि कीन्हे ॥
पर यक बात सुनो करि दाया । हैं शिशु चारि भवन लघुकाया ॥
तिन्हैं सौंपिआऊं निजभर्तहि । लागी बेर न आउब तुर्तहि ॥
कह्योबधिक कहिगा यकऐसे । मानहुं सत्य तोर बच कैसे ॥

दो० सुनो बधिक मम शपथको जो नर मारत नारि ।
जो निज पितृ क्षयाहदिन सूनोकरत बिसारि ॥
जो तिय निजपतिकोतजत परपतिमें चितदेत ।
जोनृप बिनहिं बिचारकरि द्विजकोधनहरिलेत ॥

सो० तिनकी गति मोहिं धात देहिं यमपुरी में बसे ।
जो नहिं आऊं तात तुरत लौटि घर पहुंचिकै ॥
पूजन बर्त प्रसाद बस्यो कछुक करुणाहृदय ।
सुन्यो दाद बेदाद ताहि कह्यो घर जान को ॥

बेरभयो जब सोइ नहिं आई। कह्यो मृगा लघु नारि बुझाई॥
गहरुभई सोइ लौटेउ नाहीं। शंका होत हवै मन माहीं॥
कह्यो मृगी मैं अब बन जाऊं। पानीपियौं तासु लखि लाऊं॥
अर्द्धनिशा बीतत तहँ जाई। निज बोलीमें ताहि बुलाई॥
कतहुं न खोज तासुकर पाई। मारग अपरचली सोइ आई॥
पानी हेत नदी तट गयऊ। देखिबधिकअतिउचकितभयऊ॥
पाती बेल और जल धारा। गिरी लिङ्ग पर तिसरे बारा॥
पूजन तीसर याम महेशा। मानिलियो तेहि हरयो कलेशा॥

दो० जड़ता ताकी छूटि सब आयो ज्ञान प्रकास।
पर माया बश शंभुके कछुक कियो तहँ वास॥
धनुष बाण तब खींचिकै चह्यो तासु बध कीन।
निज बैरी को देखिकै कह्यो मृगी ह्वै दीन॥

सो० क्यों मारतहौ मोहिं मैं अनाथ त्रिय रातिमें।
कह्योबधिकबधितोहिंमातुपितहिपालबघरहिं॥
कह्यो मृगी हर्षाय पर स्वारथ में परम हित।
परहित निजतन जाय कोटिकल्पहरिपुरबसै॥

है परन्तु यक विनय हमारी। आइउँ छांड़ि बाल घरचारी॥
तिनहिंसौंपिभगिनिहिनिजजाई। तुर्तहि लौटि पहुंचिहौंआई॥
तब तुम मारि हमैं लैजायो। पितहिखवाय आपुपुनिखायो॥
दुइमृगगये इमिहिं दै आसा। अब नहिं होय तोरविश्वासा॥
तब सौगंध करन मृगि लागी। धेनु विप्र घर देहिं जो आगी॥
शिव पूजन बिन करत अहारा। जेहि मन बिषै न शंभुअधारा॥
पर उपकार न जेहि अवलंबू। लेत विप्र धन करि बहुदंभू॥
तिनकीगतिमोहिंदेहिंपितामह। जो नहिं आऊं लौटि निशामह॥

दो० धनुष बाण गहि बैठिगो शाखा उपरमृगारि।
सकल भये यकठौरतब लौटिगई जबनारि॥
सकल व्यवस्था आपनी कहत भयेअतिरोय।
कह्यो मृगाअबजाबहम तुमशिशुपालहुदोय॥

सो० बोली तब बड़ि नारि दंपति तुम घरम रहौ।

जैहौंनिकट मृगारि बिनापुरुष नहिंनारिसुख॥
नदीहोय बिन बारि देहहोय बिनजीव जिमि।
तिमिहिंपुरुषबिननारि तुम्हैंत्यागिकैसेजियब॥
कह्यो नारि लघुसुनु मत मेरी। पुरिखिनि होय जेठि घर केरी॥
दम्पति रहोसकलसुख साजा। मोरे बिननहिं कछुक अकाजा॥
जाउँ शपथ पालन के कामा। सत्यमें मिलतहवै सुख धामा॥
तीनिहुं चल्यो एक नहिं माना। यद्यपि पशु तद्यपिवर ज्ञाना॥
पाछे लागि चले सुतचारी। मातु पिता सँगमरबविचारी॥
चौथे पहर गयेमृग तहँवां। नदी किनारबधिकरहै जहँवां॥
देखि भीर मृग सो हर्षाना। धनुष बाण तरु ऊपर ताना॥
गिरयो पत्रअरुजलतेहिअवसर। पूजन चौथलख्यो तेहि शंकर॥
दो० बोल्योमृगसबबधिकसन हमहाजिर तुमपास।
मारिह मैं अब तुरततुम पूरकरो निजआस॥
शिव पूजनबलज्ञान भाकह्यो बधिकमनमाहिं।
यद्यपिपशुइनसम कोऊबचनपाल जग नाहिं॥
सो० जोमारौंइन काहिंमोहिं समान नहिं औरजड़।
हतन योग्य ये नाहिं घरप्राणी चहै जायँमरि॥
मृगसों कह्यो पुकार जीवदान तुमलेहु सब।
रहबै बिना अहार आजुसेमृग मारब नहीं॥
पाप करत सब जन्म सिराना। यकक्षण भजन नमनमें आना॥
हाय दैव ममकिमि निस्तारा। त्राहित्राहि इमिबधिक पुकारा॥
तुर्तहि प्रकट भये शिव साईं। बैल चढ़े गिरिजा दिशिबाईं॥
बरम्बूहि तब शंभु पुकारा। जड़ता तासु भईजरि क्षारा॥
अमल ज्ञान तबलह्यो मृगारी। चीन्ह्यो उमा नाथ त्रिपुरारी॥
त्राहि त्राहिकहिलकुटसमाना। भूतलपरयो निरखि भगवाना॥
करधरि शंकर लीन उठाई। वत्स वत्स कहिहृदय लगाई॥
वर्त राज यहसहित विधाना। जस कीन्ह्यो तसकरै न आना॥
दो० चारिपहर बिनबारि रहिनिशि में बसि उद्यान।
चारिपहर पूजा किहेउ दिहेउ सात्तजिवदान॥

यहिव्रतकोफलजोरुचै अतिप्रसन्नलखिमोहिं।
मनमाना वरमांगिले नहिं अदेय कछुतोहिं॥
सो० बोल्योहुलसितव्याध प्रथमभक्तिनिजचरणकी।
दीजै रहितउपाधि जन्मजन्म नहिं सो घटै॥
पुनि दूसर वरदान राज देहु महराज मोहि।
होहुं सुरेन्द्र समान विजयी अरु धर्मज्ञ बहु॥
पुनि करजोरि कह्यो तब व्याधा। और एक पुरवहु ममसाधा॥
राज देहु मोहिं जब सुख दायक। तहँसुतदेहुमहाअतिलायक॥
पर नृप लह्यो होयजिमि नाहीं। तिमिसुतदेहुनाथहमकाहीं॥
एवमस्तु तब शंकर भाषा। पुरयहुसकलतासुअभिलाषा॥
कछु दिन रहौ जाय पुर मेरे। पुरउब सकल मनोरथ तेरे॥
अवध राज सम राज न गाई। तहँकेनृपतिहोहुपुनि आई॥
दशरथ नाम महा रण धीरा। पुण्यमान अतिसुभगशरीरा॥
तहँ सुत होय तोर जग पाला। ममअंगजकालहुकर काला॥
दो० अस कहि अंतर्द्धानभे बधिक फिर्‍यो घरकाहिं।
सम्पतितेहिघरअतिभर्‍यो कहिसिरातसोनाहिं॥
जियोजबै लगि भक्तियुत सुखयुतकियो विहार।
मरि पुनि शंकर पुर बस्यो जहँ सुखको अम्बार॥
सो० तहँबितायकछु काल भयोअवधनृप अज तनय।
दशरथ नाम भुवाल महावीर रणधीर अति॥
जाको चहत सहाय इन्द्र सुरासुर युद्धमें।
सकल जगतकेराय जिमि उड़गण दशरथनिसप॥
हरि अवतार हेत यह हेता। अपर सुनो मुनिवर चित देता॥
दनुजनाथतेहिअवसर रावन। लंका मध्य भयो सर दावन॥
यद्यपि शैव तदपि अघ कारी। बंश भाव किमि तज बिकारी॥
सींचे नींब शर्करा घोरी। कटुता जाय तासु नहिं थोरी॥
तेहिबलदनुजनिशाचरझारी। फैलि जगत में करत उजारी॥
मारहिंमुनिनभागमख लेहीं। शिव भगवान न पूजन देहीं॥
पाप से भारवती ह्वै धरणी। विधि पहँजाय कष्टनिज बरणी॥

गई शम्भपहँ लैविधिशासन । बोली त्राहि त्राहि दुखनाशन ॥

दो० करहु दूरि दुख भूरि मम मारि निशाचर झारि ।
नतरुअकालहिकालबिन प्रलयकरहु त्रिपुरारि ॥
गिरितरुवनसागरसकल नहिंलागत मोहिंभार ।
पाप भार गरुवाति अति सो दुख मेटु हमार ॥

सो० मैं दासी तुम स्वाम सदा सहायक मोर तुम ।
तव रति आठौ याम सत्य होय तौ मेटु दुख ॥
धरु धरणी उर धीर कह्यो शम्भु समुझायकै ।
हरब सकल तव पीर लीला बहुत पसारिकै ॥

अंश मोर जो हरि बनवारी । अति धर्मज्ञ सतोगुण धारी ॥
मम शासन जगपाल कहावा । मोहिं तेहि भेद वेदनहिंगावा ॥
पालत जग वैकुण्ठ बसोई । कबहूं रहत क्षीरनिधि सोई ॥
तेहिढिगजाहुमानिममशासन । कहिहिसकलपरितापविनाशन ॥
तेहिढिग जाहुकहौ दुख रोई । धरि नर रूप सकलदुख खोई ॥
हृदयमध्य तेहिकरिहम वासू । सकल उपाय सिखाउब तासू ॥
तब धरणीकहिजयशिव साई । चली सिंधु तटको सुनि राई ॥
पियो क्षीरनिधि में तब क्षीरा । गऊ रूप धरणी धरि धीरा ॥

दो० तबहि पुकार्‌यो भूमि जय करुणा सिंधु अथाह ।
बूड़तहौं अघ उदधि में प्रकटिधरहु प्रभु बांह ॥
जिमि गजकी प्रहलादकी द्रुपदसुता की लाज ।
राखिलीन प्रभ तिमिहिं अब मोहूं करौ नेवाज ॥

सो० जब कनकाक्ष रिसाय गयो मोहिं पाताल लै ।
सूकर तन तुम धाय मोहिं उबार्‌यो मारि तेहि ॥
इत सुनि भूमि कलेश उत शिव प्रेरणपाय उर ।
प्रकट्यो तुरत रमेश रूप अनूप न जात कहि ॥

श्याम शरीर नयन रतनारे । माथे मुकुट विचित्र सँवारे ॥
भ्रकुटी विकट कमान अनंगा । मृगमदसरिसअलकअतिबंगा ॥
माथे भस्म त्रिपुण्ड्र बिराजै । श्रवण बीच कुण्डलछबि छाजै ॥
गलरुद्राक्ष सहित मणिमाला । भुजा चारि आजानु विशाला ॥

आयुध सकल सोह निजमाहीं। अंगदादि भूषण भरि बाहीं॥
उदर विशाल नाभिअति सोहै। हरिकटिनिरखिसकलमनमोहै॥
पहिरे सुभग पीतपट धोती। अरुणढिगन गांछी तहँ मोती॥
कदली बननि उरू छबि गाई। गुलुफगोल अतिसुभग सुहाई॥
दो० पगशोभा नहिं जातकहि मुनिमन मानस हंस।
जेहि सुमिरत क्षण एकमें होत सकल अवतंस॥
हरिहिनिरखि पृथिवी तुरत परीभूमिजिमि दंड।
त्राहि त्राहि आरत हरण हरु मम पीर प्रचंड॥

छन्द

जयबनवारी। हरु दुख भारी॥ हौसबलायक। मोर सहायक॥
जयजगपाला। हरुदुखजाला॥ मैं तव दासी। तुमअविनासी॥
जयजगत्राता। जनसुख दाता॥ शंखासुर मारा। झषबपुधारा॥
जिमिगजराखी। हैजगसाखी॥ नर वपु धारी। हरुदुख भारी॥
दो० अभय दान तेहि दीन तब करुणा सिंधु मुरारि।
हतौं सकल दनुबंश को बचैं न बूड़े बारि॥
कछु दिन धीरज तुम धरौ रसा गये कछुकाल।
ह्वै नरपति सुत अवधमें तुमको करब निहाल॥
सो० अस कहिकै भगवान कीन्ह्यो पृथिवी को बिदा।
निजभे अंतर्द्धान सुमिरि शक्ति शिवइष्ट निज॥
तब हरिपरमकृपालु सुरनबोलि प्रभुअसकह्यो।
ह्वै ह्वै कपि अरु भालु बसहु जाय आरण्य में॥
हमह्वै मनुज अवध में जाई। कछुदिन करबकेलि लरिकाई॥
करिबिवाह बहुयतनविचारी। बनको चलब राज तजि भारी॥
तहँ करि बहुतप शिवहिरिझाई। सरवर सुभग शंभुसन पाई॥
लै सहाय कपि भालु तुम्हारी। मारब दनुज दैत्यसबझारी॥
दै सुख धरा और निज दासन। करबराज कछुलैशिवशासन॥
अस कहि भे हरि अंतर्द्धाना। सकलसुरनजयतेहिदिशिठाना॥
सकल शीश धरि विष्णु रजाई। बानर भालु भये महि आई॥
किष्किधा करिकै रजधानी। देश बिदेश बसे कपि ज्ञानी॥

दो० यहां भानुकुल कमल रबि दशरथ राज सनीति ।
पालत प्रजहिं विवेक युत गयो तीनि पनबीति ॥
चर्म अवस्था प्रकटभै सुतन लह्यो नृप एक ।
सरयू तट नागेश ढिग तपन गयो करि टेक ॥
सो० लीन बुलाय वशिष्ठ सुतदमंत्र शिवको सिख्यो ।
करि नागेश्वर इष्ट करन लग्यो जप पुत्र हित ॥
करि सकार अस्नान निज कर तुरत बिल्व दल ।
सिद्ध मनोरथ मान षोड़श बिधि पूजतशिवहि ॥

जपत मंत्र शिवको मतिधीरा । सांझ प्रयंत न आसन पीरा ॥
लहि प्रदोष बेला चितचाऊ । उठि अस्नान करत पुनि राऊ ॥
पूजन करत महा हर्षाई । करत आरती घंट बजाई ॥
पुनिजपकरतबीतिनिशिजाई । होत सकार उठत मुनि राई ॥
२५०००००
जबनभखनभखनभआकाशा । बाण अनल मित पूर प्रकाशा ॥
सिद्धमानि निजतप तबशंकर । हरिहि बोलिबोल्यो तब हरबर ॥
मम अनुशासन ह्वै अवतारी । दशरथ सुत ह्वै अवध बिहारी ॥
लीला करौ हरौ भू भारा । तुम्हैं न लगि है कछुक बिकारा ॥

दो० जरा मरण में दुःख बहु तुम्हैं न ब्यापै एक ।
लीला करि हनि दनुज सब ऐहौ सहितविवेक ॥
जपत हवै नृप मंत्र मम सिद्ध भयो परमान ।
मम अनुशासन मानिकै जाय देहु बरदान ॥
सो० तब तहँ अंतर्द्धान शंकर भे हरि को सिखै ।
नृप ढिग गे भगवान धरे रूप नर भूप को ॥
नीलजलद समश्याम राजिततन लाजितरतिप ।
अंगअंग अभिराम पगतल में रबि अरुणता ॥

चरण कमल शोभा किमिगाई । मुनिमनमधुप रहतजहँ छाई ॥
धरतध्यान जो करि विश्वासा । ताकी पूर होत सब आसा ॥
उपमाजलजलागिमोहिंझूठी । बिनरबि बांधि लेत सो मूठी ॥
चरण प्रकाश कबहुँ नहिंजाई । सदा रैनि दिन अति सुखदाई ॥

जलजबारिविन जायसुखाई । पद से प्रकटि देव सरि आई ॥
मिलतिनउपमातेहिसमतेहिकहि । अंगअंगशोभितअनुपमसहि॥
द्विभुज अभूषण सहित अजाना । आयुधसुभग धरेधनुबाना ॥
माथे सुभग त्रिपुंड्र विराजत । मुकुटकनकमणिमयअतिराजत ॥
दो० बरम्ब्रूहि तब कहेउ हरि उठु नृपले बरदान ।
जोमनरुचै अदेयलखि अतिप्रसन्न मोहिजान ॥
उठ्योनृपति तबध्यानतजिलखि आगेप्रभुरूप ।
गिरयो:चरणपर लकुटइव त्राहित्राहि सुरभूप ॥
सो० तबकर धरि भगवान लीन्ह्यो राजहिं लाय उर ।
मांगु मांगु बरदान करुणा करि अस भाषेहू ॥
तब नृप अतिहर्षीन हाथजोरि पुलकित कह्यो ।
प्रथमदेहु बरदान अचल भक्ति निज चरण की ॥
फिरि दूसरि मनसाध मिटावो । निजसमान सुतदै हर्षावो ॥
रूप रंग कछु भेद न आना । कर्म पराक्रम तुम्हैं समाना ॥
एवमस्तु कहि हरि असभाषा । ममसमअपर न शंकरराखा ॥
श्रृंगीऋषि से यज्ञ करावो ।मखजहव्यनिजत्रियनखवावो॥
हमहीं होब तोर सुत आई । अंतर्द्धान भयो अस गाई ॥
अतिहर्षित नृप निज घरआवा । ऋषिहिंबोलिसुतयज्ञकरावा ॥
दीन्ह्यो त्रियन हव्य नरपालू । भईं सगर्भ पाय शुभ कालू ॥
जबसे गर्भ बसे बनवारी । बसेभवन जनुकोटिलमारी ॥
दो० रंक भवन पारस बस्यौ तसभा भूप दुआर ।
आय देव सब गर्भ में नुति कीन्ह्यो अधिकार ॥
* हरिभोजन कधि तातमें खगहित पुलमितिनंद ।
उभय चरण गत केशकरि जन्मलियो श्रीकंद ॥
सो० लह्यौ न मन कछु भेद यह अनूठि सुनि बार्त्ता ।

* हरिभोजन १ अर्थात् मांस ॥ कधितात १ अर्थात् मधु ॥ सार्थ ॥ चैत्र २ खगहित १ अर्थात् पक्ष ॥ पुल ॥ अर्थात् सेतु ॥ नन्द ॥ अर्थात् ६ केश ॥ अर्थात् ॥ दिन ॥ उभय ॥ अर्थात् दो ॥

कल्प भेद गत खेद है अथाह हरि हर चरित ॥
लह्यो लोक आनंद जन्मलियो जब हरि हरषि ।
उदयहोत जिमि चन्द्र फूलत कोक त्रिलोकमें ॥
कौशल्या सुत भे जगवंदन । तेहि अनुभरत केकई नंदन ॥
पुनि भे लषण शत्रुहन दोई । मातु सुमित्राकर दुखखोई ॥
इमिभे चारि भाय भगवाना । दशरथदिहेउदान विधिनाना ॥
दानपाय याचक भे दानी । आनँदसमय न जातबखानी ॥
यहिविधि रामलीन अवतारा । मंगल भरयो सकल संसारा ॥
मुनिवर लखो बर्त्तको भाऊ । कहँ वह बधिककहां यहराऊ ॥
जपतप योग यज्ञ मुनिराई । देखा सुना बहुत हम भाई ॥
कतहुं न दीख युक्ति असभारी । जेहिबल पुत्रहोहिं बनवारी ॥
दो० असब्रतकोतजि जोरहत तेहिसमअधम न कोय ।
बिनजाने करि असभयो जाने का धौं होय ॥
बड़े अभागी जक्त में जो शंकर रति त्याग ।
पर रतिमें चातुर बनत तिन्हैंलखो जिमिकाग ॥
सो० जन्मै वंश मराल करौं जाय बुधि कागकी ।
तिमिहि नरको बाल तजि शंकर रति पशु बनै ॥
जगमें सुखपर मुक्ति जो चाहो शंकर भजो ।
सहसकरै कोउयुक्ति शिवबिन सुखसपनेहुंनहीं ॥
अब आगे रघुपति गुणगाथा । सुनोचित्तदै सब मुनिनाथा ॥
चारिउभाय करत शिशु क्रीड़ा । हरतमातु पितुपुरजनपीड़ा ॥
मूड़न भयो सहित उत्साहा । कर्णवेधसुखसहित निबाहा ॥
पांचबर्ष पर भयो कुमारा । तब उपवीतभयो सुखकारा ॥
विद्या पढ़त भवन गुरु जाई । लोक रीति बहु प्रकट जनाई ॥
सखा सहित सरयू तट जाई । खेलत खेल अहेर स्वहाई ॥
यहिविधिसुखयुतदिवससिराने । मातुपिता लखि अतिहर्षाने ॥
कहँलग कहौं अवध प्रभुताई । क्षीर सिंधुको हँसत ठठाई ॥
दो० द्वादश समके जब भये मातु पितहि सुख देत ।
राज काजमेंचित दिहेउकछु कछु रूपा निकेत ॥

तब मुनिविश्वामित्रजो गाधिसुवन जग ख्यात।
यज्ञ न पावत सो करण दनुज करत उतपात॥
सो० तब देखयोधरि ध्यान मनुजरूप हरि अवतस्यो।
अस मन में अनुमानि कौशल पुरमें आयहू॥
नृपसे लहि परणाम आशिषदै मांग्यो हरिहि।
लै सँग लक्ष्मण राम हरषि गयोनिज प्रणकुटी॥
तहां सुबाहु ताडुका मारी। मुनिकी यज्ञ कराय मुरारी॥
सुन्यो स्वयम्बरजनक कुमारी। चलितेहि पंथ अहल्या तारी॥
पहुंचि तहां शंकर धनु भंजी। नृपन केर मद मत्सर गंजी॥
सीतहिजनकसुखितअतिकीन्हा। रामसेराम राम धनु लीन्हा॥
गई बरात व्याह सुख भरेऊ। हर्षित गवन अवधपुर करेऊ॥
कछुदिन अवध रहे रघुराई। राज होनकी जब सुधि पाई॥
दै केकई अयश अधिकारा। सीयलषणयुतविपिनसिधारा॥
बिनारामलखिलबसुख हीना। दशरथ गवन रामपुर कीना॥
दो० निश्चय जानत रामको दशरथ रमा निवास।
आवैंगे बैकुण्ठ को करौं प्रथम से बास॥
बहां राम बन पंथमें करि निषाद को मित्र।
हरषि नहान्यो सुरसरी जो जल महा पवित्र॥
सो० भस्मनल्यो सबअंग पूजि पार्थिव विधि सहित।
लक्ष्मण सीता संग तुरत बनायो वेष मुनि॥
निगम उक्ति करि साज अंग अंग रुद्राक्ष धरि।
भाल त्रिपुण्ड्र विराज मनहुं धस्योतपतीनतन॥
पुनि मज्जन करि तीरथ राजा। जायदीख मुनिराज समाजा॥
भरद्वाज आयसु अनुसारी। चित्रकूट बन गयो मुरारी॥
मत्त गयन्द्र पूजि शिव रूपा। विधिथापितसोइलिंग अनूपा॥
तेहि ढिग पर्ण कुटी प्रभु छाई। कीन अत्रि मुनिकेरि मिताई॥
भरत मनावन तहँ पुनि आये। करि सुबोध तेहिफेरि पठाये॥
इन्द्रसुतहि निजबल देखराई। शैल सोऊ त्यागेहु रघुराई॥
पंचवटी कहँ कीन पयाना। हत्योदैत्य तहँ बहु बलवाना॥

शूर्पनखा मख सब सुधि पाई । लिह्यो लंकपति सीय चोराई ॥
दो० शोचत तब रघुनाथ अति ढूंढ़त जनक कुमारि ।
सकलविपिनि शोवत फिरत हाहाकरत पुकारि ॥
सकलगिरिनतरु खोहमुनि ढूंढ़त काननमाहिं ।
हाहा जनक कुमारिका तव बिन जीवन नाहिं ॥
सो० शोचत तेहि बड़ शोच शोच विमोचन रामप्रभु ।
करत फिरत नर चोष गहे शम्भु माया प्रबल ॥
आगे चलि रघुनाथ देखि जटायू पंख बिन ।
कीन्ह्येहु ताहि सनाथ पठै धाम निजतात सम ॥
तेहि आनन सीता सुधि पाई । गयो लंकलै निशिचर राई ॥
तब प्रण कीन ताहि हतिडारौं । वंश समेत गर्भ युत मारौं ॥
गयो घटज पहँ तब रघुराई । सकलव्यथा निजरोय सुनाई ॥
मुनिसों बेद सार तब पाई । जहँशिवनामसहस सुखदाई ॥
भाल त्रिपुण्ड्र भस्म अति लाई । अंग अंग रुद्राक्ष बनाई ॥
जपत राति दिन मैं व्रट बारी । किहे बर्त्त निर्जल बनवारी ॥
शिव पद जलज प्रेम मकरंदा । पियत मधुपइव करुणाकंदा ॥
जब पढ़ि पूर होत एक बारी । त्राहित्राहि शिव करतपुकारी ॥
दो० प्रगटभये तप देखि शिव राम लियो उर लाय ।
दीन्ह्यो सरवर पाशुपत अरु बरदान अघाय ॥
तब शिव अंतर्द्धान भे रामहि अति हर्षाय ।
दक्षिण दिशिको तब चले अनुज सहित रघुराय ॥
सो० पंपापुर तब जाय हनुमत की मत लै प्रथम ।
बालि हन्यो छल लाय राज दीन सुग्रीव कहँ ॥
अनिल तात तब जाय सीय खोज लायो तुरत ।
लै कपि भालु सहाय सेतु बांधि बैठेउ तहां ॥
अतिशय विमलदेखि सो धरणी । विमलविमलरघुनायकबरणी॥
करिके यहां शंभु अस्थापन । कारजसुफलकरौं सबआपन ॥
जो अनन्य शिव दास मुनीशा । शुभग बस्तु अर्पहिंनिजईशा ॥
जो निजहृदयरखत शिवसूरत । तहँते काढ़ि लीन यक मूरत ॥

सुभग शिवालय तहँ बनवाई। चित्र विचित्र दृषद तहँ लाई ॥
तब पंडित खोज्यो अधिकारी। करै प्रतिष्ठित जो त्रिपुरारी ॥
सुनेहु रावणहिं पंडित भारी। अपर कुयज्ञ लख्यो त्रिननारी ॥
मख ब्रत पूजन तीर्थ मुनीशा। पत्नी बिना होय सब खीशा ॥
दो० तब रावण ढिग दूत यक पठै दीन रघुनाथ।
शिव अस्थापन हेत जिमि आवै लै सिय साथ ॥
सियसों करब न प्रीतिकछु तुमसों लखबनबैर।
मखाचार्य्य लखि बिप्रवर धरब तुम्हारे पैर ॥
सो० करि अस्थापन शंभु लौटिजाउ सियसहिततुम।
मानो बचन अदंभ लखो बांह शिव शम्भ की ॥
सुनि रावण हर्षाय शिव अस्थापन को अभय।
सियको यानचढ़ाय चल्यो मनहु निजमित्रघर ॥
पहुंच्यो जबहिं रामपहँजाई। आदर राम कीन तेहि धाई ॥
जानिनिजहिसो शमअचारज। सौंपेहुसियहि रामशिवकारज ॥
सियमनमोह हर्योकरिमाया। अपनहु धर्यो राम जड़काया ॥
किमिपरिहरै बचनप्रभुआपन। मनहुभयोनहि कबहुंजुदापन ॥
सब तीरथ जललीन मँगाई। सीय सहित तब राम हनाई ॥
बैठ्यो गांठि जोरि अवधेशा। लग्यो करावन कृत लंकेशा ॥
तब संकल्प विषे कह रावन। कहहु राम अपनो मनभावन ॥
कौनकाजलगि शिव अस्थापन। सत्य मनोरथ भाषहु आपन ॥
दो० कह्यो मनोरथ राम तब रावण बधके हेत।
पढ़्यो संकलप हृदयहँसि रामहि जानिअचेत ॥
कुम्भकर्णको कौर एक सकल कटक यहिसाथ।
भूमिपरी शशि गहनहित अधम पसारतहाथ ॥
सो० करि सबवेद विधान कीन प्रतिष्ठित शंभुको।
निजहित सोकृतजान भयोहर्ष अतिरावणहि ॥
रामेश्वर धरि नाम भई यज्ञ सब पूर तब।
करत पूर सबकाम जो दर्शन हित जात नर ॥
तब सांगता समय लंकेशा। कह्यो दक्षिणा देहु नरेशा ॥

कह्यो राम त्रय बस्तु बिहाई। मांगि लेहु जो मन ठहराई॥
लंका सिया और मम नगरी। इन्हैं छांड़ि मांगो बसु सगरी॥
है अदेय परबस्तु अनेका। जो मनरुचै सो लेव सटेका॥
रावण कह्यो सुनो रघुराई। मांगब इन्हैं हवै जड़ताई॥
बुद्धिमान निज करको भूषण। परसे लहत लखैं बड़ दूषण॥
लंकभवन मम सिय ममफांड़े। निजकरि अवध रहतहमछांड़े॥
मांगब इन्हैं कवन ब्यौहारा। जेहिपर कबजा दखलहमारा॥

दो० सूर्य्य बंशमें बंश तुम हो हरिके अवतार।
शिवकी भक्ति अनन्य करि शंभुहि भयो पियार॥
तेहिते मांगत दान हम शंभु भक्ति मोहिं देहु।
जन्म जन्म जहँ जन्महों शिव पद बढ़ै सनेह॥

सो० कहि तथास्तु रघुराय विदा कीन तब रावणहिं।
सियको यान चढ़ाय गयो लंकपति लंकमें॥
भे अधीर रघुवीर सियहि जात लखि लंकमें।
धरयो बहुरिमन धीर हृदयपाय करुणागिरिश॥

तब रामेश्वर पूजन कीन्हा। विविधदान महिदेवन दीन्हा॥
बहुरि लषण पूज्यो गौरीशा। बारम्बार नाय पद शीशा॥
बहुरि शिवहि पूज्यहु सुग्रीवा। राखेहु मोरि गौरिपति सीवा॥
जामवन्त पुनि पूज्यो आई। भक्ति समेत प्रीति अधिकाई॥
पुनि पूज्यो अंगद हनुमाना। जानि इष्टको इष्ट सुजाना॥
सकल कटक पूज्यो तहँ आई। मांग्यो सकल जीत रघुराई॥
यहि समान फल दायक पूजा। लख्यो रामतहँ और न दूजा॥
पुनि पूजाकरि अस्तुति ठाना। बारबार शिव नाम बखाना॥

दो० जय अनीश अविकार अज जय उमेश सुर भूप।
जय जय दीनानाथ प्रभु जय ओंकार स्वरूप॥
विधिहै जग करतार तुम हरिहै पालन हार।
करत लीन सब आपमें प्रभु निजरूप सँभार॥

सो० जय जय जयत्रिपुरारि जय रामेश्वर गौरिपति।
रक्षाकरो हमारि त्राहि त्राहि मैं शरण तव॥

असकहिघएटबजाय कटकसहित सागर उतरि।
गिरि सुवेलपरजाय विविध भांतिघेरेउ गढ़हि॥
हन्यो निशाचर तब तहँ झारी। कुंभकर्ण घननादहि मारी॥
मारि रावणहिं सीतहि पाई। दीन विभीषण को नृपताई॥
लखन अनुज सियजुत रघुराई। पुष्पक बैठि अवध में आई॥
भरत मिलाप भयो अति नीके। धर्यो पायप्रभु गुरु जननीके॥
घरी शोधि बैठेउ सिंहासन। रुचितदानदीन्ह्योद्विजदासन॥
करत राज प्रभु सहित बिवेकू। पाप ताप भाग्यो करि टेकू॥
यकतौ सुयुग निपाप बिराजा। दुसरे राम भये तहँ राजा॥
कीन परावन दुख सुख बासा। तरुकरादि बीती सब त्रासा॥

दो० भये सभासद सप्तऋषि नीति बतावन हार।
यक दिन सब इकठौरह्वै कीनेहु मनहिं बिचार॥
रावण द्विजको बंशहै यद्यपि कर्म सुरारि।
बंश सहित तेहिको हत्यो राम हेत यक नारि॥

सो० है द्विज सदा अदंड यदपि करै अपराध बहु।
होत वेद को खंड जो न राम को अघ लगै॥
तबह्वै सकल उदास रामहिं कह्यो बुझायकै।
करितुमद्विजकुलनाश कछुकपराचितकीननहिं॥

द्विज हत्या तुममें लपटानी। करो पराचित तुम बड़ज्ञानी॥
कह्यो राम सुनिये मनि झारी। जो कछु आज्ञा होय तुम्हारी॥
करौं पराचित बेर न लाऊं। जहँजहँ कहौ तहांतहँ जाऊं॥
तीरथ सकल करहु तुम रामा। दान देहु मख करहु ससामा॥
हत्या जब चिक्कार लगाई। गइउँ गइउँ असकहै सुनाई॥
तबतुमनिरघजानिनिज रघुबर। निजपुर लौटिआइयोहरबर॥
मुनिन जैस अनुशासन दीन्हा। तैसे राम जाय सब कीन्हा॥
प्रथम सारयू करि अस्नाना। मज्जन बहुरि गोमतीठाना॥

दो० गंगादिक तीरथ जेते पुरीधाम जग माहिं।
तजि काशीसबजगफिर्‍यो छूटच्योसोअघनाहिं॥
अश्वमेध प्रभ कीन शत नीमषार में आय।

विप्रन दीन्ह्यो दानबहु गौवय कोटि मँगाय ॥
सो० द्विजहत्या बलवान कोटि यतन छूटत नहीं ।
सो नर महा अजान तीरथ निन्दा जो लखै ॥
तब चित कीन्ह्यो राम काशीपुरको जाउँअब ।
तहँ होइहि विश्राम विश्वनाथ दर्शन किहे ॥
काशी सम्मुख चले खरारी । पंचकोश भीतर पगुधारी ॥
तब पुकारि हत्या चिल्लानी । जरिउँजरिउँयहिठौरबिलानी ॥
आगे ह्वै न मम पैठारा । काशीनिरखिभइउँजरिछारा ॥
निर्मल भयो राम पापनसे । द्विजहत्या छूट्यो तबतनसे ॥
सुनत बचन हर्षे अतिरामा । कहि जय शंभुपुरीसुखधामा ॥
करि मणिकरणीमें अस्नाना । निरख्योजायविश्वेश्वरथाना ॥
पंचामृत अस्नान कराई । गंगनीर जल शुद्ध चढ़ाई ॥
तंदुल चन्दन युत कर्पूरा । बिल्व कंज करवीर धतूरा ॥
दो० धूप दीप नैवेद्य धरि कीन आरती राम ।
घंटबजायो प्रेमयुत जप्यो सहस शिवनाम ॥
कीन दंडवत दंड जिमि करि पुलकांग शरीर ।
लाग्यो अस्तुति करन तब प्रगटिहरो ममपीर ॥

छन्द सवैया ॥

हेशिव साम्बसुनोबिनती शरणागतहौं अतित्राहिपुकारी ।
दासको देखो न कष्टकबो यहबानी तेरीकहै वेदप्रचारी ॥
मोहिंपुकारत बेरभई करुणा करिके सुधिलेहु हमारी ।
मेरिहिबार विचारकहा कबहूं नहिं काहूके दोषविचारी ॥
देवअदेव मथीकधिको निकरो तहँ कूट हलाहल भारी ।
कोउनभो समरत्थ तहां तबहींसबहीं तवशरण पुकारी ॥
कीन्ह्यो नबेरचख्योविषको तबलीनबचायसुरासुरझारी ।
मेरिहिबारविचारकहा कबहूं नहिं काहूके दोषविचारी ॥
सेवकबारबधूको किरात तुम्हैं अरप्यो कछुभूमिमें डारी ।
तातेकियोतेहिकोबलिभूपत्रिलोककोराजदियोतेहिभारी ॥
और विभाव कहांलोकहौं हरिहूतेहिद्वार भयोहैभिखारी ।

मेरहिबार बिचारकहा कबहूं नहिं काहूके दोषबिचारी ॥
भयो गुणनीध महादुष्टीशपरस्त्रीरतीसकचोर जुवारी।
एक उपासकियो शिवरातिमें पर्बशुद्धै नहिंप्रेम सम्हारी ॥
ताकोकियो निजमित्र कुबेरद्रवेशपुरी अलकाकोबिहारी।
मेरहिबार बिचार कहा कबहूं नहिं काहूकेदोष बिचारी ॥
चौदशिमें यकब्याधनिषाद मृगानित नींदश्रौभूखबिसारी।
ताकोब्रतीनिजमानिकै शंभुकियोयहिलोकमेंज्ञातपभारी ॥
अवधकोराजबनायदियो कियोअंतमहापदको अधिकारी।
मेरहिबार बिचारकहा कबहूं नहिं काहूके दोषबिचारी ॥
श्रीकरगोपतनय मिसखेलके तेरशिमें कृतकीन तुम्हारी।
ताहि दियो धनधाम सुराजपठै हनुमन्त महत्व पसारी ॥
और कहाकहौं जासुके बंशमें आयकैकृष्ण भयोबपुधारी।
मेरहिबार बिचारकहा कबहूं नहिं काहूके दोषबिचारी ॥
चोररह्यो यक पापी महा तव मूरतिमें चढ़ि घंटउतारी।
क्रोधकहा करुणाकरिकै तेहिमानिलियो तनअर्पपुजारी ॥
ताहिदियो धनधाम महाप्रभु और दियोगजकी असवारी।
मेरहिबार बिचारकहा कबहूं नहिं काहूके दोषबिचारी ॥
और सबै सुर सेवा चहैं तुमहौ शरणागत के हितकारी।
विष्णु विरंचि गहैं तवशर्ण तहां परकोकरै कौन शुमारी ॥
याहीते ओरी सबैतजिकै तवशरणमेंआय पड़ो लटडारी।
मेरहिबार बिचारकहा कबहूं नहिं काहूके दोषबिचारी ॥
रामकरी शिवकी यह अस्तुति प्रेमलगाय महापद भारी।
रामकीकृत्ययहअजौं महासुखदाय सदासबपातकहारी ॥
जोकोउपाठकरैउठिप्रात यहिअष्टकको अतिप्रेमसम्हारी।
तापर होहिं प्रसन्न रमेश दिनेश गणेश उमा त्रिपुरारी ॥
सो० राम विनय सुनि शंभु प्रकट शिवालय बिच भयो।
लखि तेहि भक्त अदंभु बांह पकरि उर लायहू ॥
तुम मम अंगज राम तुम्हरे निकट न जाय अघ।
विप्र महत के काम मुनि उर प्रेरित कीन हम ॥

सहि कलेश कीन्ह्यो सुरकाजू। कन्हु जाय अब हर्षित राजू॥
कछु दिनगये अवधतजिरामा। आयो अवध सहितनिज धामा॥
अस कहि भे शिव अंतर्द्धाना। हरषि राम तबकोन पयाना॥
आयअवध प्रभुसहित समाजू। लाग्यो करन अकंटक राजू॥
कह्योसूत समुझो मुनिझारी। यह इतिहास महा सुखकारी॥
लंकसे लौटि जबै मुनि रामा। कीन प्रवेश अवध सुखधामा॥
जोपै होत अवध अघहारी। तुर्तहि हरत राम अघभारी॥
द्विज हत्या मोचित मुनिराऊ। तजि काशीनहिं परजग ठाऊ॥

दो० यहिते लखो मुनीशसब काशी को शिरताज।
अपर पुरी सब देतहैं काशिहिं भेंट खिराज॥
काशी पुरते पुर नहीं शंभु भक्तते सेव।
भस्म से और न लेप है शंकर से पर देव॥

सो० जोचाहौ विश्राम सहित भुक्ति जग मुक्तिपर।
शिवरति आठौ याम करुओरी हर्षित हिये॥
यह इतिहास पुनीत श्रोतहिं वक्तहिं देत सुख।
पढ़ोसहितपरतीत सुनोसकल विश्वासकरि॥

यक इतिहास कहा हम गाई। अब दूसर सुनिये मुनिराई॥
युग द्वापर के अंत मुनीशा। जगमें भूप वंश रजनीशा॥
कुरु अरु पांडु रहे दोउ भाई। रहीप्रीति कछु वरणि न जाई॥
कुरु सुत भयोनाम दुर्योधन। अतिबलजीति लियोजगयोधन॥
पांडु तनय सरमितबल सीमा। नाम युधिष्ठिर अर्जुन भीमा॥
नकुल और सहदेव बखाना। लहि द्रौपदी महा हर्षाना॥
द्युतमें जीति युधिष्ठिर को धन। लीन्ह्यो छीनि राज दुर्योधन॥
करि हस्तिना पुरी रजधानी। करै अकंटक राज गुमानी॥

दो० ताही समयमुनीश सुनु श्रीपति जगभरतार।
जन्मलियो बसुदेवघर बाज्यो नन्द कुमार॥
सिंधुजवाहन तासु पति ताभष रिपुगजराज।
अर्द्धभवननँद नंदको बाजी सवति विराज॥

सो० बसुमिति शशिसुत केश अर्द्ध भानु रिपुमारिकै।

प्रकट्यो तबहिं रमेश मथुरा से गोकुल गयो ॥
गोपिन संग बिहार कीनविविधविधि दैत्यहति।
डारेहु कंसहि मार मथुरा में जब पगु धर्‍यो ॥
जरासंध सन ठानि लराई। जाय द्वारका पुरी बसाई॥
अर्जुन के सँग कीन मिताई। सिखै दुहू दिशि समररचाई॥
बचे युधिष्ठिर पांचौ भाई। और मरे सब ठानि लराई॥
राजा भये युधिष्ठिर राई। गये द्वारकै कुँवर कन्हाई॥
तबहिं युधिष्ठिरके मन व्यापो। मोहिंसम और न जगमेंपापी॥
हा विधि काह कीनयह काजा। सब कुलमारि भयों मैं राजा॥
अनुजनसहितसलाह बिचारी। जाय कौनविधि कुल हत्यारी॥
चलहिंकृष्ण ढिग पूछहिं सोई। वे भगवान देहिं दुख खोई॥
दो० पांचौ मिलि गे द्वारकै कृष्णहिं कीन प्रणाम।
जेहि विधि कुलहत्या टरै सो उपायकहुश्याम॥
मोहिं सतावत रैन दिन कुल हत्या बलवान।
जेहिउपाय जरि जाय सो मोहिंकहौ भगवान॥
सो० काशी को तुम जाव विश्वनाथ दर्शन करौ।
यहिते अधिक उपाव कोटि यत्न नहिं सो टरै॥
हरिपद शीशनवाय चलेकाशिका सकलमिलि।
पहुंचे तहँ सब जाय धर्‍योफाल तेहि भूमिमें॥
तबहिं पाप भाग्यो चिग्घारी। जर्‍योंजर्‍यों असकहतपुकारी॥
भे अति मुदित युधिष्ठिर आदी। कीन्ह्यो महा हर्ष सुखस्वादी॥
तब मणिकर्णी सकल नहाई। पूज्यो विश्वनाथ कहँ जाई॥
अन्नपूरणा सहित महेश्वर। पूज्यो जानि सर्वपर ईश्वर॥
मधु दधि क्षीर खाँड़ घृत लाई। भिन्न भिन्न करि सकल चढ़ाई॥
पुनिहु चढ़ायो निर्मल नीरा। बिल्व कंज तन्दुल करवीरा॥
धूप दीप नैवेद्य सँवारी। भक्ति समेत पूजि त्रिपुरारी॥
अस्तुति करन लगे करजोरी। माथ नवाय बहोरि बहोरी॥
कवित्त घनाक्षरीछन्द॥ रीझो तात विश्वेश्वर रीझोमातु विश्वे-
श्वरी नाम शीघ्र तुष्टतेरो बेर क्योंलगात है। तेरे दरबारमें तो

दान अविचार सदा मेरी बारमें विचार चित्र नईबात है॥ कहै ओरी करजोरी रीझोर शिवगौरी पापको बिसारबो न तुम्हैंबड़ी बात है। देखोजगरीति अरु न्यायशास्त्र रीतिकहूं सुत अपराधी को न तजा तात मात है॥

सवैया छन्द॥

हे शिव शम्भु दयाकर शंकर सेवकके सुखदातातुम्हींहौ।
ताकेबसीसबभुक्तिहुमुक्तिजिन्हैंसबछोड़िसोहाततुम्हींहौ॥
जानतहौ सबकेमनकी सबके उरबीच समात तुम्हींहौ।
ओरीकेतौपितुमातुतुम्हींगुरुभ्राततुम्हींहितनाततुम्हींहौ॥

दो० सुनि बिनती धर्मादिकी प्रकट भये त्रिपुरारि।
बैलचढ़े गिरिजा सहित सबदुखदीन्होटारि॥
मांगहुवर पाण्डहुसुवन अतिप्रसन्नमोहिंजानि।
भुक्ति मुक्ति जो मनरुचै महादानि अनुमानि॥

सो० लखि प्रसन्न शिवकाहि गिरचो भूमितल दंड जिमि।
त्राहि त्राहि कहि त्राहि हाथ जोरि ठाढ़े भये॥
जो यांचत सब संत भक्ति देहु प्रभु आपनी।
देहु धाम निजअंत परब्रह्म करुणायतन॥

एवमस्तु तब शंकर भाषा। पूरकीन तिनकी अभिलाषा॥
बंशतधज अघ जो सब लेखत। सो सब छूट काशिकादेखत॥
जाहु भवन ममपद रति करहू। कवनिहु भांति नपापहिंडरहू॥
अंतहिमालय मग ममलोका। हर्षितचलेहुसकलतजिशोका॥
असकहि शंकर गये बिलाई। पांडव सुअन हर्षि घर आई॥
कह्योकृष्णसों सकल सविस्तर। हर्षितभयो कृष्ण कहिशंकर॥
जबलग जियो शंभुपद ध्यायो। अंत शंभु के भवन सिधायो॥
सुनु मुनीश अस हैं शिव काशी। सर्वोपरि अघहर दुखनाशी॥

दो० जो हरतो अघ द्वारका देतो मुक्ति बनाय।
तौ कित पठवत काशिका कृष्णचंद्र सिखलाय॥
इमि तुम लखो मुनीश वर सकल पुरीकीबात।
बुद्धिमान संक्षेप में जानि लेत सब तात॥

सो० यह इतिहास पुनीत कहै सुनै जो चित्त दै
तेहिपर शंभु सुप्रीत कर यथा गजबदन पर ॥
ओरी भयो अनंद सुनि गाथा मुनि वृन्द यह ।
सो नर अतिमतिमंद जेहि न रुचै शंकरचरित ॥

अपर कथा सुनिये मुनि झारी । भैरव चरित कहौं बिस्तारी ॥
भैरव शंकर रूप अभेदा । तेहिप्रभावकहिसकत न वेदा ॥
सकल कहत शारद थकि जाई । तहँ नरबुद्धि कौनिअधिकाई ॥
निजमति सरिस कहैं हमगाई । जो सअंब शिव कर सहाई ॥
लखि अथाह शंकर की गाथा । लखहुनअचरजकछुमुनिनाथा॥
एक समय सब सुर मुनि राई । भे यकठे अस मतो जनाई ॥
विधि हरि शंभु तीन जगदीशा । इनमें है सब पर को ईशा ॥
जौन समय की है यह बाता । तब विधि रहेहु शराननताता ॥

दो० और न समरथ है कोऊ जो यह देहि बताय ।
सकल सुरन करि एकमति विधिपहँ गे हर्षाय ॥
हाथ जोरि ठाढ़े भये करि प्रणाम नय शीश ।
तुम हरिहर ये तीन सुर सर्वोपरि को ईश ॥

सो० बोल्यो धात रिसाय मूढ़ भयो तुम सकल सुर ।
नाम से काम लखाय अर्थ लाय सब बूझहू ॥
ब्रह्म ईश अज मोर नाम विधाता जग पिता ।
ईश होय किमि और हैं सर्वोपरि ईश हम ॥

सिरजिपालिहम करहिंसंहारा । सर्वोपरि गुरुवस्व हमारा ॥
देखो मुनिवर शिवमाया बल । भूलेहुविधिहु कहतबानीचल ॥
तत्क्षण प्रकट भये बनवारी । अरुण नयन उरमें रिसभारी ॥
हे विधि काहकरत अभिमाना । वेद तत्त्व तव सकल भुलाना ॥
नाभि जलज मम तोरि प्रसूती । मम अधीन तवसब करतूती ॥
मोहिंबिसारितुमनिजहिपरेशा । बना चहत मन तजि अंदेशा ॥
नाम भरोस कहे बड़ दूषण । कनक धतूर बनैं नहिं भूषण ॥
मैंहौं सकल जक्त को नायक । परम परेश जक्त सुख दायक ॥

दो० तवतन धरि हमरचत जग हरिह्वै पालत ताहि ।

हैंमहेश तेहिहरत हम मम समदूसर नाहि ॥
लखोमुनिन अतिशंभुकी माया प्रबल अथाह।
जेहिबशभूलेहु हरिहु विधि शंकर करैंनिबाह।
सो० बाकवादि भैंघोर अतिकठोर कहि जातनहिं ॥
हमहैं सबशिरमौर कहतपरस्पर विधिहुहरि।
जोपरेश सबध्याय उमानाथ जगनाथ शिव ॥
तिनको दीनभुलाय ममममहमहम करिरहे ॥
तब दुनहुन मिलिमंत्र विचारा। वादिकिहेउ नहिं है निस्तारा ॥
कहैंवेद जेहि को परमेशा। सोइ सर्वोपरि है सर्वेशा ॥
सुमिरन कीन निगम चलिआये। तिनसों सबवृत्तांत सुनाये ॥
कहब तुम्हार सदा जगलीका। जेहितुमकहौसोसबपरटीका ॥
तजहु कानिनिज बानिनिबाही। उचित वाजिबो देहु गवाही ॥
बोल्यो ऋग हम और न जानैं। सबपर सबपर शंकर मानैं ॥
जेहि वामज हरिभे जग पाता। दक्षिणांग ते भयो विधाता ॥
प्रथम चहोलखबो निज सूती। तब कीन्हे बकवाद सपूती ॥
दो० कह्योयजुर बिहँसातमन अज्ञबन्यो तुमदोउ।
जो शंकर कोतत्त्वतजि निज परेश पर होउ ॥
वादिनभूल्योउभयमिलि जरतहलाहलआंच।
शरणशरणचिचियानेहूतबहिं सकलसुरबांच ॥
सो० जरतहलाहलआंच काहेन लीन्ह्योखायतेहि।
जोपरेश है सांच तुर्तहि लाग सहाय सो ॥
तबउठि बोल्यो साम माया बश यहि बेरहो।
शिवरति आठौयाम तुम्हैं दोखहमनितकरत ॥
हमैं पाठकरि जेहि तुम पूजत। ताको आजकाह बश भूलत ॥
शिव कैलास निवास उमेशा। लखो परेश ताहिविधि मेशा ॥
कह्यो अथर्वण तब हर्षाई। हैं परेश शिव शंकर सांई ॥
करत प्रथम जो नभमें वासा। फूल विषेजिमि गंध प्रकासा ॥
ह्वै सकार लीला करबेका। तुम्हैं बनायो जग भरबेका ॥
तेहितजि बना चहत तुमईशा। पियतबारिमृगत्यागिश्रमीशा ॥

हरष्योसुनतइमिविधि बनवारी। शंभु अजा बश ज्ञान बिसारी॥
जानत तुम्हैं निपट हम सांचा। भयोआज केहिकारण काचा॥

दो० रहत दिगम्बर प्रेतसँग पहिरत हाड़ बटोरि।
सांपनको भूषण करत पियत भांग विषघोरि॥
वृष बाहन में जो चलत रहत जगतसे रूठि।
ताको कही परेश किमि दिह्यो शहादत झूठि॥

सो० बोल्यो प्रणव रिसाय मायावश तुम पशुबन्धो।
वेदन झूठि बनाय निन्दा करत परेश की॥
लख्योशंभुतेहिकाल हरिविधिभक्तिअनन्यमम।
पर माया के जाल दुखित होत मद मान में॥

प्रकटि करौं इनको दुख क्षारा। हरि विधिसेनहिंऔरपियारा॥
बौंडर एक तहां अति आवा। तेहि भीतर शिवरूपदिखावा॥
जो स्वरूप विधिसों प्रकटाई। ताहिसमय सोइरूप देखाई॥
कह्योविष्णुविधिसोंलखिताही। देखो कौनचरित यहि माही॥
लख्यो धात निजपुत्र बिचारी। कह्यो वत्स गहु शरण हमारी॥
सुनत क्रोध कीन्ह्यो शिवशंकर। प्रकट्यो एक स्वरूप भयंकर॥
श्याम स्वरूप नयन रतनारे। माथे भस्म त्रिपुण्ड्र सँवारे॥
चन्द्र भाल त्रय नेत्र सुहावा। मुण्डमाल गलमें अति भावा॥

दो० सुरसरि शीश त्रिशूल कर सोहत काल समान।
जनु शिव गुणवत रूपधरि चल्योकरन मैदान॥
शिव आगे ठाढ़े भयो कहौ काम मम नाम।
केहि सहाय करि काहिको पठै देउं यम धाम॥

सो० भैरव नाम तुम्हार सकल जक्तकी भयहरौ।
कालहु डरिहौ मार नाम काल भैरव सदा॥
यहिविधिअतिमगरूरनिन्दतमोहिं सुतमानिनिज।
देसजाय मददूर करहु करै जिमि और नहिं॥

भैरव मनमें लाग विचारै। कौनि सजाय देउँ जग कारै॥
निन्देहु शिवहि पांचयें मुखसे। ताको छीनरहौं मैं सुखसे॥
बामांगुलसे सो शिर छीना। हाहाकार विधिहु हरि कीना॥

भयो चेत मद गयो बिलाई। कहनलग्यो जयजयशिवसांई॥
हमैं दोष लावतहौ कैसे। हवै प्रचंड अजा तव ऐसे॥
तब मामेत कह्यो शिवसांई। अब भैरव तुमरहौ चुपाई॥
बहुत पियार मोहिं विधिमेशा। माया हर्यों तोर धरिभेशा॥
करि प्रणाम शिवमानि परेशा। विधिहरि जातभयोनिजदेशा॥

दो० भैरव से तब शिवकह्यो कीन्ह्यो पाप अथोर।
ब्रह्म शीश काटत भयो द्विजहत्या अति घोर॥
भूमहु जाय संसार में पाप पुकारि पुकारि।
भीखमांगि भोजन करौ जेहि छूटै हत्यारि॥

सो० तब प्रकट्यो यक नारि महाघोर शोणितभरी।
रूपनजाय निहारि द्विजहत्या तेहि नाम धरि॥
तेहि सन कह्यो महेश भैरव के पाछे फिरौ।
गुज़र तोर सबदेश पै यक काशी छांड़ि कै॥

भैरव चले रसाटनको जब। पाछेलागिचली तियसो तब॥
सकल तीर्थ जगमें हैं जेते। भैरव घूमि करी सब तेते॥
पाछे सो तिय घोर स्वरूपा। तजतनहीं यकक्षण मुनिभूपा॥
भैरव विकल महा तेहि देखी। यत्नबहुत तेहितजनकोलेखी॥
शिव स्वरूप यद्यपि मुनिराई। नरलीला करि जगहिदेखाई॥
भैरव प्रत्यक्ष रूप महेशा। कौनिहुविधिनहिंताहिकलेशा॥
तदपि दिखायो द्विज प्रभुताई। द्विजहु रूप शिवको बुधगाई॥
फिर्यो जक्त कछु शांत न पाई। तब मनमें अस इच्छा आई॥

दो० हरि पुरको अब जाउँ मैं अच्युत दर्शन पाय।
शांतकरौं निज पापको द्विज हत्या मिटिजाय॥
पहुंच्यो तब बैकुण्ठ में आवत तेहि हरि देखि।
महाहर्ष आतुर भयो शंभु अंश तेहि लेखि॥

सो० उठो रमा हर्षाय आवत हैं हरि करि रूपा।
दर्शन ते अघजाय बड़ो भाग्य दर्शन मिल्यो॥
रमा सहित परिपांय पूछ्यो लीला कौनि यह।
भैरव कह मुसकाय लग्यो पाप बिधिशीशहति॥

प्रलय बीच सब जक्त नशावत। विधिहरिबहुतस्वदेहमिलावत ॥
तहां पाप नहिं गहत पुरारी। अघी भयो यक शीश बिगारी ॥
अचरज होत हमैं यह भारी। हरौ नाथ भूम दास बिचारी ॥
कछु जवाब नहिं दीनविधारी। मांगेउ भीख स्वपाप पुकारी ॥
माणिक दीन रमा भरिथारी। लै भैरव सोइ तुरत सिधारी ॥
पाछे चलत भई सोइ नारी। ताहि बुलाय कह्यो बनवारी ॥
मम आज्ञा तजु भैरव काहीं। जो वरचहसिसोलेमोहिंपाहीं ॥
तजौं न भैरव कोटि यतनते। जबलगजियौं न ठहरौं अनते ॥
दो० तब भैरव हरि भक्ति लखि भे प्रसन्न मन माहिं।
लौटि ठाढ़ हरिओर भे वहु सराहि हरि काहिं ॥
मोहिं न बाधत नेक यह जग हित लीला कीन।
जिमि जगमानै विप्र को लखै न द्विजकी दीन ॥
सो० तुम शिव भक्त अगाध वर मांगौ जो मन रुचै।
पूर करौं सब साध हरि मांग्यो शिव भक्तिवर ॥
एवमस्तु कहि नाथ चलत भयो काशी सुमिरि।
चली नारि सो साथ डेरवावत अति रव करत ॥
चलत चलत जब भैरव राई। काशी भूमि गयो नियराई ॥
काशी भूमि धर्‍यो जब पादा। चिघरी पापिन मानि बिषादा ॥
जरिउँजरिउँकहिगईबिलाई। तेहि लखि भैरव अति हर्षाई ॥
तारी पीटि लग्यो सो नाचन। काशी नाम लग्यो सो बांचन ॥
विश्वनाथ दर्बार मँझाई। सकल पाप निज धोयबहाई ॥
करन लग्यो काशी कोतवाली। यात्री करत पाप से खाली ॥
बिन कीन्हें भैरव सेवकाई। रहि न सकत काशी नरजाई ॥
शिव काशी भैरव यक रूपा। करत जाप छूटत सबधूपा ॥
दो० देखौ मुनिवर काशिका कीहै महत अगाध।
नामलेत सुमिरन करत छूटिजात सबव्याध ॥
जो हत्या बैकुण्ठ में गयो न हरिदशाय।
सो काशीमें पगुधरत भयोभस्म चिचियाय ॥
सो० जो यहिमें चितलाय पढ़ै सुनै अति प्रेमसों।

तापरहोहिं सहाय बिधिहरिहर गिरिजागणप ॥
बिनाजाप जपयोग लहत पदारथ चारिनर ।
श्रोरी भयो श्ररोग गाय महातम काशिका ॥
लखोमुनिन असहै यह काशी । अपर पुरी नहिं तेहिसमभाशी ॥
है शिरताज पुरिन की कासी । अपर पुरीहैं तेहिकी दासी ॥
समदर्शीनहिंतेहि समश्रासी । पावत मुक्ति अधिहु कृतरासी ॥
नरन विषे तहँवां के वासी । सरितन विषे देव सरितासी ॥
सुनत महातम सबबनवासी । सूतहि देत अशीश सहासी ॥
लखि काशी सर्बोपरि भाशी । बोलिउठे जयजय शिवकाशी ॥
अबहमभयनसकलसुखरासी । काशी विषे भयन विश्वासी ॥
जो रति सहितकहैशिवकासी । भुक्ति मुक्ति होइहै तेहिदासी ॥

हरिगीतिका छन्द ॥

वरदान देहिं मुनीश सबमिलि जानि सबपर काशिका ।
शुभ सुयश यहिमें शंभुहरिको सकल ऊपर भाशिका ॥
जोपढ़ै सुनिरतिकरै यहिमा तासु घर नित सुख भरै ।
जो हांसि करि यहि सुयशनिंदहि तिन्हनमुख कीरा परै ॥
दो० एवमस्तु नभते भयो सुनिमुनि भये हुलास ।
कहिजयजयशिवकाशिकागयेसकलनिजवास ॥
सबै हरि हर दाससों बिनवत श्रोरी लाल ।
हाथजोरि सबके चरण नाय नाय निज भाल ॥

इतिश्री शिवचरित्रे काशीमाहात्म्य काशिका
आगमन सम्पूर्णम् शुभमस्तु ॥



श्रीगणेशायनमः

अथजड़चेतनी ॥

—— 000 ——

शाम्बशिव ॥

दोहा ॥

गजमुख षरमुख चतुरमुख षटमुखसागरबांह ।
बन्दिसकल करजोरियश वर्णहुं गिरिजा नाह ॥
गिरिजा कधिजा शैलजा रविजा नन्द कुमारि ।
सबके पदपरि दण्डवत वर्णुं यश त्रिपुरारि ॥
बन्दि शारदा प्रेमसों विनय करौं शिरनाय ।
मम उरमें करि वास निज शिव यशदेहिं बताय ॥
रविरविजहिशशिशशिजभुज गुरुकविराहुरकेत ।
बन्दहुं सबहिं प्रणाम करि विघ्न निवारणहेत ॥
सहस नयन मुख सहसको बंदौं युग करजोरि ।
गुप्त प्रकट जो शंभु यश मम उर देहिं बटोरि ॥
छं० सहस करारी नख भुजदारी जो प्रभु रदकजमारी ।
तिन पदबंदी सब छल छंदी पुरवहिं आश हमारी ॥
तिनकीबिनुकरुना रीझतहरना असयेभक्त गजारी ।
करहिंसुयुक्तीजिमिशिवभक्ती ममउरकरहिं पसारी ॥

हरिगीतिकाछन्द ॥

हौं दास ओरीलाल कायथ पुत्रहौं शिवदीनका ।
अरु वास ऊंडवग्रामजहँ बहुवास विप्र प्रवीनका ॥
तेहि ग्राम रक्षक चतुर्भुज हरिहनत दुष्टबलीनका ।
तेहिबंदि युगकर जोरिवर्णहुं सुयश शंभुमतीनका ॥
दो० प्रथमकहीमैं शिवकथा जिमि गिरिपर शिवशोभ ।

बढ़ीप्रीति जगरीति है लाभते बाढ़त लोभ ॥
भाकैलाशागमन तेहिं नाम परम सुख धान ।
तेहि पाछे काशी चरित कह्यों मुक्तिको खान ॥
नाम काशिकागमन तेहि भयो मुक्तिको पंथ ।
करुणा बश शिवशाम्ब के पूरभये दुइ ग्रन्थ ॥

तब निज मनमें मंत्र विचारी । आपनिभनित लगै बहुप्यारी ॥
बुद्धिमान जिहि ज्ञान अतीवा । तिहि आदरते मानहुं सीवा ॥
असविचारिमनप्रकटिदेखावा । निजहिअकविकहिविनयसुनावा॥
छन्द प्रबन्ध लखौ नहिं ताता । हरिहर सुयशलखौ हरषाना ॥
जे शिवभक्त महा अधिकारी । तिनहिंलागि पुस्तक वैप्यारी ॥
जे हरिभक्त भागवत सांचे । ते शिव सुयश हर्ष युत बांचे ॥
जे पाखण्ड नृपति गुरुदम्भी । सदाकुवादि निन्द अवलम्भी ॥
उपर साधुचित परम अठट्टी । माला तिलक बधिककी टट्टी ॥
गऊरूप तिनको मन मेढ़ा । सुनिशिवसुयशकरहिंमुहँटेढ़ा ॥
आंखितरेरि मोहिं जड़गाई । भनित भदेसिल कहिमुसकाई ॥

दो० ताहिलखोनहिंभक्तिहरिजेहिशिवयशनसुहाय ।
कल्पित पंथी ताहि लखि संगति देव बचाय ॥

सो० बड़ेअभागी लोग जिन्हैं नप्रियशिव को सुयश ।
करैं रवरवा भोग कल्प कोटि बसि नरक में ॥

हरि भक्तन के चिह्न बताऊं । दंभी अपर अदंभी गाऊं ॥
जेशिव सुयशसुनत हरषाहीं । शिवपद प्रीति करहिं मनमाहीं ॥
तिन्हैं भागवत लखौ अदंभी । परम साधु हरिके अवलंभी ॥
शिवयश सुनत करैं मनफीका । गुनौ ताहि दंभी ठग नीका ॥
सुनो वैष्णव भनित प्रमानू । तुलसीदास कहा जो ज्ञानू ॥
बिन छल विश्वनाथ पदनेहू । राम भक्त कर लक्षण एहू ॥
रमासहित जेहि जपतमुरारी । सुरसमान तेहिलखत अनारी ॥
शिवहिंनिदरि असअचरज भारी । आपु बनैं हरिको हितकारी ॥
बलिपशु सरिस न सूझत मारा । कांध चढ़ कर हरष अपारा ॥
तिनके चेत हेत कछु भाखौं । जड़ चेतनी नाम यहिराखौं ॥

दो० उनइससै चौंतिस रह्यो कातिक आदितवार ।
षष्ठी उत्राषाढ़ सुदि कथा भयो अनुसार ॥
सो० बार बार शिरनाय बंदौं पद श्री शारदा ।
देवी करैं सहाय चहौं बारि पर भीत धरि ॥
जेहि विधि होय जड़न को चेतू । सोइकथा मम उरधरि देतू ॥
गुरुहि ध्याय भै कथा अरंभू । पूरण करैं सदा शिव शंभू ॥
लही कछुक संतन के पासा । वर पुस्तकनकेरि लै आसा ॥
कछुक कीन शारद करुणाई । मम उरभीतर दीन बताई ॥
सो सब कहब प्रबंध बनाई । बारबार शिव शंकर ध्याई ॥
एक समय नैमिष बन माहीं । ऋषि गण गयो सूतके पाहीं ॥
दै अशीश निज संशय भाषे । कथासुननकोचितअभिलाषे ॥
नाथ विष्णु सब जगके कंता । चितानंद भगवंत अनंता ॥
सो लीला बश लै अवतारा । आयभयो नृप अवधकुमारा ॥
तहां वशिष्ठहि गुरुप्रभु कीन्हा । दिक्षा कौन रमापति लीन्हा ॥
दो० जपै सकल जगरामको राम महा सुख धाम ।
मुनि वशिष्ठ गुरु रामके कौन सुनायो नाम ॥
रमितसकल जगराममें रामरमितकेहिमाहिं ।
रामजपत केहिध्यानमें पूजत अरचत काहिं ॥
सो० मुनिनबखानि अनेक हँस्योसूत शिवशिव सुमिरि ।
जानत सकल विवेक अज्ञ बन्यो संसार हित ॥
सुनहु सकल मुनिनाथ कहीसूत हरिहर सुमिरि ।
परब्रह्म शशि माथ अगुण सगुण तेहिश्रुति कहै ॥
अज अनादि अद्वै अबिनासी । सदा सकल घट घटमों वासी ॥
सर्वोपरि शिवशून्य बिलासी । तासु नाम सर्वोपरि भासी ॥
निरगुण से सरगुण तन धारी । तेहि अंशज भे धातु मुरारी ॥
तासु मंत्र षट वर्ण सुहावा । वेद सार तेहि बेदन गावा ॥
तेहिजपिसृष्टि करतजगकारी । सो जपि पालत जग बनवारी ॥
तेहिजपि शंभुकरत लयअंता । तेहिजपि रमालह्यो हरिकंता ॥
सो जपि शेष धरैं शिर धरणी । सोजपि नाश करैं तमतरणी ॥

सो जपि इन्द्र भयो सुर राजू । लवा पाप को है सोइ बाजू ॥
तेहिबल शंभु मुक्तिके दाता । तेहि बिन जपे न है कुशलाता ॥
तेहिजपिभे सनकादिअतापी । अरुचरहै तेहिते खल पापी ॥
दो० रामकृष्ण सो मनुजपति धरत शंभुको ध्यान ।
पूजत अरचत शंभुको लहे शैव वरज्ञान ॥

छंद तारक ॥

उरबीच सदा हरि केशिवसोहै । परमाण तहां कवि केशवकोहै ॥
उरतेशिवमूरतिश्रीपतिलीन्ही । शुभसेतकेमूल अधिष्ठतकीन्ही ॥
से० ताकी कथा पुनीत सुनौ सकल मुनिराय अब ।
जो सुनि होय प्रतीत भक्ति बढ़ै शिव चरणकी ॥
क्षीरसिंधु तजि जब श्रीअच्युत । अवधमें आय भयोदशरथसुत ॥
एक अंशते चारि बिरादर । जेठराम शोभा सुख सागर ॥
भरत लषण रिपुहा अभिधाना । चारि बंधुये वेद बखाना ॥
मातहिपितहि मोदअतिदीन्हा । पुरजनप्रजहिसुखीबहुकीन्हा ॥
लीला बिबिध करी बालापन । दीन्ह्यो बहुतभांतिसुखभक्तन ॥
जबहिं कुमार भये सब भ्राता । पूजतशिवहिजानिनिजत्राता ॥
प्रातकाल उठिकै सब भाई । सखासहित सरयू तटजाई ॥
करिशुचि क्रिया करत अस्नाना । रचत भस्म जिमिवेदबखाना ॥
अरु रुद्राक्ष भरे सब अंगा । जेहितेहोत सकल अघभंगा ॥
नागेश्वर पूजत मन लाई । कहिजयजयति शंभुसुखदाई ॥
पंचामृत अस्नान करावत । चंदन पुष्प कपूर चढ़ावत ॥
तिल तंदुल गोधूम का अक्षत । प्रेम समेत शंभु पर अर्पत ॥
पुष्प कंज करबीर धतूरा । शिवपर अर्पत लखि दलपूरा ॥
बेलपत्र अलकीर अछिद्रा । शिवहि चढ़ावतकरिकरिमुद्रा ॥
पातीबिल्व शिवहिअतिप्यारी । अर्पत शिवबहु होत सुखारी ॥
शिव अर्चन जहँ निगमबतावा । यहिते अधिक न दूसर गावा ॥
तब शौनक बहु सूत निहोरी । निज संशय भाष्यो करजोरी ॥
दो० तात सकल संसारमें बहुकुज त्रिबिध प्रकार ।
शिवहिनपरप्रिय बिल्वसम याको कौनबिचार ॥

पनस रसाल बरा अरु पीपर। पाकरतूत अनार जंबुवर॥
पुंगीद्रुम इत्यादि विहाई। सर्वोपरि शैलुष ठहराई॥
उतपति महत बेल की गावो। करिकरुणा भ्रमभोर मिटावो॥
तब शिव बंदि सूत हरषाई। बारम्बार शारदहि ध्याई॥
आय शारदा मम उर नाच। शिवयश कहौं होय सबसांचू॥
करिकरुणा करु मोरि सहाई। चहौंबारि परचित्र रचाई॥
जब निर्गुण शिव सर्गुण भयऊ। लीला हेत यतन बहु ठयऊ॥
तब शर कोशरचो शिवकाशी। तेहिपरटिकत भयोअविनाशी॥
प्रथम तीन गुण बनयो शंभू। राखेहु ताहि त्रिशिखअवलंभू॥
निज नयनन गुण तहां पसारा। रज सत तमोनाम तेहि धारा॥
शिवके चषगुण कहौं बखानी। सुनो मुनीश परम हितमानी॥
दक्षिण ते सब जग उपजावत। बामसे सकल पालना पावत॥
मध्य नयन खोलत लय होई। सोइभांति त्रयगुण प्रकटोई॥
चषगुणप्रकटित्रिशिखपरराखा। तेहिते प्रकट भयो तरुशाखा॥

दो० सो तरु निरखिमहेश प्रभु भयो प्रसन्नमुनीन।
निज स्वरूप ओंकार सम तासु पत्र कै दीन॥
सो० बेलअपर शैलूष तासु नाम शंकर रख्यो।
तेहिकीन्ह्यो पतिरूख तासुअंश सबकुजभयें॥
दो० बामअंगते हरि प्रकटि पालन आज्ञादीन।
दक्षिणते विधि को बनै सृष्टिकार तेहि कीन॥
सो० लह्यो रजो गुणधात हरिपालनहितसतलह्यो।
करिकरुणाशिवतातलयहिततमनिजसोंरख्यो॥

हरिगीतछंद

जब भयहु संगर सुरासुर को देवता सब हारेहू।
लैसीखविष्णु मिलापकीन्ह्योमथन सिंधुबिचारेहू॥
तहँ प्रथम आयोकूट कातिल आंचसों सब जारेहू।
तबगयेसब मिलि शरणशिवकेत्राहिकहिचिक्कारेहू॥
तबआय शंकर कीन करुणा कूटको चखिलीन है।
निजउदरमेंलखिसकल विधिकृतकंठमेंरखिदीनहै॥

मर्यादि राखन हेत विषकी भयो शंभु मलीन है ।
तबविकलह्वै हरि धात सुरमुनि नीर धारा कीनहै ॥
दो० उष्णनिवारण हेतसब यत्न कियो बहु भांति ।
जूड़ बस्तु शिवपरधरत जिमि विषहोवेशांति ॥
सकलदेखावत दासता अर्पत वस्तुहि मात ।
भूताफागुन कृष्ण की सोइभयो शिवरात ॥
सो० तबआयोकुजबेल निजदल शिवकेशिररख्यो ।
समिट्यो विषको फैल ह्वै सचेत शंकरउठ्यो ॥
तब दीन्ह्यो शैलुषहि बड़ाई । तुम समाननहिंममसुखदाई ॥
सकल द्रुमनमें तुम गुरुहोऊ । तुमसेअधिकनप्रियममकोऊ ॥
कल्पतरहु अश्वस्थ रसाला । तवपद सकलनवावहिंभाला ॥
ममशिर जो धरिहै तव पाती । ताहि बनाउब हमनिजभांती ॥
मम पूजन तवबिनु नहिं होई । कितनौ यत्न करै चहै कोई ॥
पूजन सामा जुरै करोरी । बेलपत्र बिन सबहै थोरी ॥
एकौ होय न पूजन सामा । बेलपत्र यक सबसुखधामा ॥
पूजन विष्णु गणप अरु मोरी । बिना बेलपत्री सब थोरी ॥
दो० इमि सुनि महिमा बेलकी शौनक ऋषिन समेत ।
बोलि उठ्यो जय बेलकी जो शंकर सुख देत ॥
सो० तब शंकर पद ध्याय सूतमहा मति प्रेमयुत ।
कहन लग्यो हरषाय अपरकथा रघुनाथ की ॥
इमि पूजत सब बस्तु चढ़ाई । धूप दीप नैवेद्य लगाई ॥
करत आरती घंट बजाई । जपत मंत्र षट वर्ण सुहाई ॥
अस्तुति पढ़त महा हरषाता । जयशिवत्राहित्राहिजनत्राता ॥
रक्षा करौ सदा तुम मेरी । भक्तिदेव निज पद की ढेरी ॥
असकरि अस्तुति गालबजावत । दै तारी शिव शिवा रिझावत ॥
अससुनि शौनक शंका कीन्हेउ । आशिष बहुतसूतकोदीन्हेउ ॥
हमहुं तात पूजाकी बारी । गाल बजाय देत करतारी ॥
परनहिं जानत तासु प्रभावा । कवन भाव यह शंकर भावा ॥
दो० रीझ खीझ शिव शाम्भकी समुझि परत नहिंतात ।

याको कहि बिस्तारयुत करु मम संशय घात ॥

हरिगीतिकाछंद ॥

तब कह्यो सूत बिचारि मनमें सुनहु मुनिवर कानदै ।
है परम अद्भुत शंभुलीला गूढ़ जानहु तेहि सदै ॥
तेहि वेद जानव नेति भाषत शारदौ थकि जातहैं ।
नहिं पारपावत हरि हरीशहु हरि हरो सकुचात हैं ॥

दो० ताकी महिमा किमि कहैं अति लघुबुद्धि हमारि ।
अंजुलि से नापब कठिन यथा सिंधु को बारि ॥

सो० अति मतंग मुनि पील जौन भारनहिं सहिसकै ।
सो किमिगहै पिपील तथाशंभु यश नरसुतहिं ॥

तदपि तुम्हारि लालसा देखी । शिवहिध्यायकछुकहब बिशेखी ॥
एक समय हरिबिधिसों भाषा । कहबिधिलखिनारदअभिलाषा ॥
शिवपद प्रीतिनिरखितबनारद । कह्योब्याससनसहितबिशारद ॥
व्यास कृपा मोपर अति कीन्हा । करिअनुराग मोहिं सो दीन्हा ॥
सोअब कहौं तुमहिं समुझाई । सुनहु मुनीश्वर चित्त लगाई ॥
हरि हर सेवक जो जग माहीं । सुनत शंभुयश अति हरषाहीं ॥
जोन होय शिव यशसुनि तुष्टा । ताहि लखौ कपटी अरु दुष्टा ॥
अब सुनिये शंकर प्रभुताई । कहौं शारदै माथ नवाई ॥

दो० दक्षभयोयकविधि तनय महा बुद्धिको खानि ।
परम भागवत शिवबड़ ताहिउमा अनुमानि ।
उमा भई तेहिकी सुता तेहि घरलै अवतार ॥
जगदम्बा तेहिजानिकै कीन बहुत सुखसार ।

सो० जगदंबा तेहि जानि दक्ष सुमति लै धातकी ॥
भक्तिसहितसनमानिताहिब्याहिदीन्ह्योगिरिश ।
तबविधिकीनबिचारदक्षहिसबलायकसमुझि ॥
दीनमहा अधिकार कीन प्रजापति को शिखा ।

भयो दक्ष मद गेह मुनीशा । लहिअधिकार भयोमतिखीशा ॥
करि अभिमान बीसहू बीशा । निजपर लख्यो न परजगदीशा ॥
शिव चरणनसे भयो बियोगी । लख्योशिवहिजिमिजगकोयोगी ॥

जेहि शिवचहत बिपतियहि होवै । निजपदते तुरतहि सुचिखोवै ॥
अबपरकथासुनहुविधिसुतकी । कारज नाश सुनो मद युतकी ॥
मदसे होत सकल कृत भंगा । वृद्धि पाप कीहै मद संगा ॥
मदसे मधुको माधव मारा । मदसे मदन भयोजरि क्षारा ॥
मदसे भयो कलंकी चंदा । मदसे भयो मंदगति मंदा ॥

दो० मदहिसेबलि पातालगो मदहिसे रावणनास ।
मदहिसेगोपिन हरितज्यो कीनद्वारका वास ॥
मदसे श्रीपति हारिकै बसे जलंधर गेह ।
मदहै भोजन शंभु को मदसे करौ न नेह ॥
हारिपाप को गेह मद मदमें होहु न लीन ।
देखौ नरहरि तेज को सर्व निवारण कीन ॥

सो० जसफल पायो दक्ष होय न सो गति रांड़की ।
यद्पि करी सुरपक्ष तदपि दुर्दशा बहुभई ॥
सुनुमुनीश यहज्ञान शिव विरोध नहिं परहितू ।
उदय भयेबिनु भान कोटि दीप नहिंतमनशै ॥

अब सुनियेमुनि दक्षकि लीला । शंभु अजा जाकी मतिकीला ॥
माया पुरी जहां शिव द्वारा । कनखल विषे जाय विधिबारा ॥
युत अभिमान यज्ञ तहँ ठाना । नाम वृहस्पति यज्ञ बखाना ॥
नेवते सकल देव मुनि झारी । भृगुआदिक जे मख अधिकारी ॥
दिगपतिसकलबुलायेहितसों । रचना सकल रचायो वितसों ॥
रविशशि आदि सकलग्रहआये । प्रेमसहितहरिविधिहिंबुलाये ॥
करिबिरोधनहिं शिवहिबुलावा । मायाबशनहिंबिधिहुसिखावा ॥
शंभुभक्तनहिं परबिधि हरिजस । सो भूल्यो शंकर माया बस ॥

दो० तजि शंकर सबदेव मुनि गये दक्षकी जाग ।
मायाबश शंकर विमुख लीन चहत मखभाग ॥

सो० तहँ मनि रह्यो दधीच परम पासुपत शैवबर ।
बोल्योसभाकेबीच आयो क्योंनहिंसकल पति ॥

बिनदीपक नहिं मंदिर भाता । बिन दुलहा नहिं होयबराता ॥
बिनाशंभु किमि यज्ञ सुहाई । देखौ करि बिचार सुरराई ॥

कह्यो दक्षकी सुनहु मुनीशा । आयो बिष्णु सकल सुरईशा ॥
नग्न सभूत अमंगल साजू । ताकर कौन यज्ञ में काजू ॥
तब दधीच अतिशय रिस वाना । धिकधिकतोहिं ऐसअभिमाना ॥
कबहूं यज्ञ न पूरण होई । सकलकाज तवशिव प्रभु खोई ॥
सुमिरण जासु अमंगल हारी । रमा सहित जेहिजपतमुरारी ॥
तेहि तुमकहत अमंगलभेखी । नहिं रहि जाय तोरि यहशेखी ॥
भाग लेन जितने सुर आये । सकल भाग्य हतहोत जनाये ॥
परको शोच करै को भाई । शिव माया बश हरिहु भुलाई ॥
दो० अस कहि मुनि बाहिर गयो करिकै सब पर क्रोध ।
शिव माया वश सबभये करी न मुनि कर बोध ॥
सो० जब तजि गये दधीच भाग्य भगी जनु सुरन की ।
अरु दक्षहि लखिनीच दै जवाब आयुर चली ॥
अब सुनिये पर कथा मुनीशा । जेहिबिधि भईदक्षमखखीशा ॥
पितुमखहालसुनीसतिजबहीं । हरषि कीन अचरजबहुतबहीं ॥
अतिहिं शोचबशभई भवानी । कारण कौन न हमकहँ आनी ॥
नहिँ महेश को नेवत पठावा । कौन चाल यह पिता उठावा ॥
केहि विधियज्ञ पूर सो होई । बिनमहेश मोहिं शोच बड़ोई ॥
जो मम विनयमानि प्रभु जावैं । तौ मम पिता पूर फल पावैं ॥
गई शंभु पहँ तुरत भवानी । बारम्बार जोरि युग पानी ॥
करि दंडवत सुमाथ नवाई । बोलत भई रजायसु पाई ॥
दो० करतहवै मख तात मम कनखल बीच महेश ।
गये सकल सुर भागहित युत बिधि इन्द्र रमेश ॥
सो० बहु कारज बशनाथ तुम्हैं भूलि मम पितु गयो ।
करहु कृपाबिश्वनाथ मोहिं सहित चलिकैतहां ॥
कह्यो महेश देखि चतुराई । कारज बश नहिं हमहिंभुलाई ॥
बैरमानि न्योत्यो नहिं हमका । हमरे बैर भुलायो तुमका ॥
कह्यो सती पुनि युगकर जोरी । बिनती एक सुनहु प्रभुमोरी ॥
तुम सम दृष्टी नाथ कहावा । बैर प्रीति तुम को यकभावा ॥
चलिये जानिमोहिं निजदासी । पूरण यज्ञ करौ अबिनासी ॥

तुम्हैं बिना मख पूर न होई । मम पितुकाहिं हँसैं सबकोई ॥
भे प्रसन्न सुनि विनय भवानी । चलन चह्यो तब औघरदानी ॥
देखत भयो तबहिं धरिध्याना । लख्यो दधीच केर अपमाना ॥
कह्यो शंभु अब सुनहु भवानी । सम दर्शी तुम कहफुरिबानी ॥
तदपि भक्तको पक्ष बड़ेरो । भक्त अधीन रहै चित मेरो ॥

दो० मोहिं लखै जो बैर सों तापर करौं न क्रोध ।
जन बैरीसो बैरिमम जबलगि हतौं न बोध ॥

छन्द ।

कह शंकर भो सुनु देविप्रिये निज शत्रुहु मित्र न काहू गनौं ।
जन बैरीसे बैर रहै हमरो जन मित्रको मित्र कहौं अपनौं ॥
मम भक्तदधीच बड़ो द्विज मौरलख्योअपमान गयोहैचलो ।
तहँवां हमजाब न देविप्रिये इयहिको फलदक्ष सुपावैभलो ॥

से० सुनि शंकर की बात बहु उदास देवी भई ।
नाथ बड़ो जड़ तात कीन्ही बैर परेश से ॥

पिता कीन मम बड़ अपराधू । क्षमा करौ प्रभु कृपा अगाधू ॥
जो कृपालु मैं आयसु पाऊं । देखौं जाय सुभाउ कुभाऊ ॥
लखि अमानतवहिय रिसहोई । तातनात लखि पीठजरोई ॥
तबनिज अजहिं शंभुशिरनावा । जो हठ कै हठ सती करावा ॥
कह्यो शंभु प्रिय जाब न नीका । बिना नेवत असजाबअलीका ॥
मातुपिता घर बिनहु बुलाये । जाब भलो सब कहतसुहाये ॥
है सुठीक जहँ बैर न होई । बैर जहां तहँ खैर न होई ॥
लख्यो शंभु तब सती उदासी । दीन्होहुकुम जान अबिनासी ॥

दो० रूपराशि यक तौ सती अद्वै अलख अनूप ।
करिकरुणा करुणायतनदीन्ही अधिकस्वरूप ॥

से० जसभा सती बनाव पहिरि अभूषणचीरपट ।
वेदन करत चवाव कौन भांति तेहिबरणहीं ॥

निज मतिसमकछुकहौंबखानी । होन पवित्र हेत निजबानी ॥
शशि सरोज सम बदनसुहाई । मुसकी अलक महाछबिछाई ॥
चोटी गुही मनो अहि रानी । अमीछालसा शशिनियरानी ॥

तापर बेनी पान सुहाई । मनहुं राहु रविकीन एकाई ॥
सेंदुर भरी मांग छवि सोहै । इंद्र धनुष सम सो मन मोहै ॥
लट प्रति मोती गुही सुहाई । तारावलि जनु नभमें छाई ॥
तीन नेत्र अति शोभा भारी । तहँ अंजन खंजन छविहारी ॥
भौंहैं सुभग कमान मनोजा । मनहुंगहु नितसजेहु जलोजा ॥
दो० सोहतश्वेत त्रिपुंड्र अति तिहिढिग शशिधरवार ।
कहकशान जनु गगन पर उदय करी करतार ॥
सो० तहँ पुनिबेंदी लाल समनिरतन शोभा भरी ।
मनहुंभूमिको बाल उदयभयो शशिके निकट ॥
बंदी मनहुं करै छवि बंदी । छवि हित मार चलायो फंदी ॥
दूसरि उपमा अस मत भाई । निशिदिन बीच सकार सुहाई ॥
तीसरि उपमा कहौं बखानी । गंग जमुन बिच सोहत बानी ॥
नासा सुवा चोंच समगाई । तहँ बेसरि छविसुभग सुहाई ॥
उपमा तासु हेरि कवि हारे । शशि महँ मंडल ताहिपुकारे ॥
नृप भूषण षोड़श शृंगारा । अंग अंग रचि सखिन सँवारा ॥
विस्तर भयनहिं कह्यों बखानी । मातु बननि बरणब अज्ञानी ॥
जो कहि सकत न शारद शेषा । तहां कौनि नर सुतकी लेषा ॥
बड़ शृंगार जानि बुधि छोटी । शिरहि सँवारि पाउँ पर लोटी ॥
जलज चरण तहँ शोभा भारी । कड़ा छड़ा तहँ समनि सँवारी ॥
दो० जावकछवि पावक सरिस ताऊपर पकपान ।
मानहुंउयेउ प्रबाल गिरि माघ सकारे भान ॥
सो० बिछुआअतिसुखदेतप्रतिअँगुरीमणिजरखँची ।
चारि पदारथ लेत ताको ध्यान सम्हारि नर ॥
पगतल अरुणजलजसमसोहत । मुनिमनमधुप जहांपरमोहत ॥
धरत ध्यान जेहि विधिबनवारी । शंकर शक्ति महा छवि हारी ॥
यकरथ सुभग बन्यो तेहि ठोरी । तेहिमहँ नह्योसिंह कीजोरी ॥
तेहिचढ़ि चलत भई जगमाता । शिवहि प्रणामकीन हरषाता ॥
चलत सतीशिवनिजमन माहीं । निजमायाकहँ अधिकसराहीं ॥
सकुच समेत विदा तेहिकीन्हा । षोड़शसहसमुख्य गणदीन्हा ॥

चलत भईसति कनखल ओरा । बोलत छरीदार करि शोरा ॥
सकल कहत जयजय शिवसांई । दक्ष भवन सबगे नियराई ॥
पंछ्यो दक्ष कहां की भोरा । निरखि शंभुगणजरयो शरीरा ॥
कोउ नहिं सतीउतारनआयो । मन महँ सतीमहा दुखपायो ॥

दो० उतरि यानते मातु तब गयो दक्षके गेह ।
दक्ष त्रास उर मानि सब सतीप कीनन नेह ॥
सो० भली मिली यकमातआदरयुत हरषित हिये ।
भगनी सबबिहँसात बिना नेवत लखि आयवो ॥

निरखि सतीपद विष्णु विधाता । कीनप्रणाम जानि जगमाता ॥
निरखि तातगति तबसतिरोई । शंभु कहा को सुरति करोई ॥
मैं निज पतिकर कहा न मानी । ताको फल अबपाय अघानी ॥
असकहि सतीगई मखशाला । देख्योभाग न कहुंशशिभाला ॥
बहुत रिसाय दक्षसन बोली । यज्ञकियोनहिंकियोठठोली ॥
जोमखफलद सकलमख साईं । ताहिनिदरि तुमचहतबड़ाईं ॥
बहु खद्दैत जुरैं यकठाई । बिनाभानुतमकेहिविधिजाई ॥
बड़ श्रुतज्ञ तुम अति विज्ञानी । कारण कौन बालगतिठानी ॥
सुनत दक्ष बोल्यो करि क्रोधा । गुरुसम मोरकरत तुमबोधा ॥
सकलसुता समकरि ममकानी । रुचै रहौ नहिं जाउ भवानी ॥

दो० सुनि अस जड़ता दक्षकी सती कीन बहुक्रोध ।
जारौं मख सब सुर सहित मूढ़लहै तबबोध ॥
सो० सकलसुता समतूलि मोकहँ जानतनिजसुता ।
शिवमायाबशभूलि लखतनमोहिंअखिलेश्वरी ॥

करौं प्रलय सब जक्त नशाऊं । पुनि रचनाकरि सृष्टि बनाऊं ॥
असकहिकै निजरूप सम्हारा । महातेज तब बढ़यो अपारा ॥
तीसर नयन उघारा चहिहू । शिवप्रेरिततब असबुधिलहिहू ॥
लयनित शिव आज्ञा नहिंपाई । उचित नहै असकिहे ढिठाई ॥
तहँ परन्तु यक बात कठोरी । दक्षसुता है अभिधा मोरी ॥
सो तजिदेहुं त्यागि यह देहा । तब छूटै जड़सों यह नेहा ॥
अपर कहत इमि वेद बखानी । सुनत शंभ निन्दा जो प्रानी ॥

महा पाप तेहि लागत भारी। तहँ निरधार करी श्रुतिचारी॥
दो० की निन्दक शिरकाटही कि काटै तासु जबान।
जो नहिं पूरै तासु बल भजै मूंदि कै कान॥
पातक रहै सदा तेहि अंगा। जबलगिकरै न सो तनभंगा॥
शौनक कह्यो जोरि युग पानी। निन्दाकाको कहत बखानी॥
हँस्यो सूतकहि शिवशिवबानी। निन्दाभेद सुनहु मुनि ज्ञानी॥
शिवहि लखै नहिं सबपरईशा। तेहिशठनिन्दक जानुमुनीशा॥
कहै शिवहि जोपर सुरमाना। सो बचनिन्दा भेद बखाना॥
प्रकृतिपुरुष असकरत बिवादा। ताहि लखो निन्दकको दादा॥
अस विचारि जगमातु भवानी। सोतनुतजिनिजलोकसमानी॥
योग अनलसों सो तनजारा। भयो सकल जग हाहाकारा॥
दो० मरतसती निजपतिसुमिरि मांग्यो यह बरदान।
जन्म जन्म तुव चरण रति होयसहित दृढ़ज्ञान॥
सो० मरत सती यह शाप दीन सबहिं पति पद सुमिरि।
लहहिं सकल सुरताप जो शिव निन्दक घर बसे॥
देखौ मुनि शिवकी यह लीला। जो हठिकै सबकीमतिकीला॥
रहे सकलसुर हरि विधि ज्ञानी। मरतसतीको नहिं सनमानी॥
रहे शंभु गण जो सति साथा। मरे सती सब भये अनाथा॥
करन उपद्रव तहँ सब लागे। भृगु उच्चाट मंत्र पढ़ित्यागे॥
कछुक मरे निज कर सतिशोचू। कछुकगयेगिरिसहितसकोचू॥
शिव चरणन पर माथ नवाई। सती मरण तब रोयसुनाई॥
तब चिंत्यो नारद ऋषि भाला। तुरतहिपहुंचिगयोविधिबाला॥
करि दंडवत सुमाथ लचाई। बोल्यो जयशिवजयसुरसांई॥
दो० कहो सकल वृत्तांत मुनि शिव सों युग करजोर।
करी दक्ष अपमान जस सो बिस्तार अथोर॥
सो० जो न देहु यहि दंड बहुत बढ़ै पाखंड जग।
होय वेद को खंड बनैं अदंडक दंड सब॥
कहत वेद इतिहास पुराना। निन्दा सों नहिं पाप बखाना॥
सुर पूजे नर निंदज पापा। छूटै किहे भली विधि जापा॥

सुरनिन्दज अघ अतिबलवाना । सो पुनि जाय भजे भगवाना ॥
हरिनिन्दज अघपरमबलीना । सो शिव भजे होत है क्षीना ॥
शिव निन्दजअघटरत न टारे । कोटि उक्तिकरि युक्ति बिचारे ॥
होय वेदबच बातिल सबहीं । जो न देव कर दक्षहि अबहीं ॥
रहे सकलसुर विधिहरिजादी । सती बोध नहिं कीन अनादी ॥
उचिततुम्हैं सबकेरसिखापन । पालहु वेद राखि प्रण आपन ॥
दो० इमि नारद के बचन सुनि समुझि दक्ष अभिमान ।
श्वेत रूप से अरुण भा कीन क्रोध वृषयान ॥
सो० लीन्ह्यो तुरत उखारि एक केश निज शीश ते ।
पटक्यो भुजा पसारि गिरिऊपर अतिक्रोधकरि ॥
हाल्यो गिरि कांप्यो त्रयलोका । खरभर सागर भयो सशोका ॥
पटकत केश भयो दुइ टूका । ज्वलित मनहु भादौंको लूका ॥
पुरुषाकृत यक भयो तुरंता । वीरभद्र अतिशय बलवंता ॥
दूसर भद्रकालिका देवी । निर्भय रहै जासुको सेवी ॥
अति भीषण तनखप्परधारे । लयकर लयकर बचन उचारे ॥
वीरभद्र अति भयकर रूपा । कछु बरणौं तेहिकेर स्वरूपा ॥
गौर शरीर पांच शिर सोहैं । शीश जटा मधुकर मद मोहैं ॥
प्रतिशिर तीन नयन रतनारे । भाल विशाल त्रिपुण्ड्र सवांरे ॥
प्रति मस्तक सोहतशिशुचन्दा । देखत होत शत्रुमन मन्दा ॥
श्रवणनमें अहि कुंडल राजै । मुंडमाल गलमाहिं विराजै ॥
दो० सोहत सुभग अजान तहँ सुन्दर बाहँ हजार ।
गहे सकलमहँक्रोधयुत त्रिशिषादिक हथियार ॥
प्रलयानल सम छवि परत महातेज अम्बार ।
मनहु लीन अतिक्रोधकरि विष्णु चौथअवतार ॥
सो० निजसमान शतकोटि निजतनते तवगणवनय ।
शंभु चरणपर लोटि हाथजोरि बोलत भयो ॥
छन्द कहुरंकको रावकरौंअबहींकहु इंद्रको रंक समानकरौं ।
कहु मेरु सुमेरकसेरकरौं कहुसागरको जलपानकरौं ॥
कहु शेषदिनेशसुरासुरको यकहांकमेंबन्दितखानकरौं ।

निज शत्रुकनाम परेशकहौ तुरतै गहिमरदनमानकरौं ॥
दो० कांच घड़ा सम पिरथवी तुरतहि डारौं फोरि ।
देनिदेशपरमेश मोहिं सुनि अस्तबिनती मोरि ॥
सो० बोल्यो तबहिं महेश सुनुगणवर मम अतिप्रिये ।
विधिसुत दक्ष प्रजेश निदरि मोहिं यशकोचहत ॥
कनखलमें मखकीन अरंभा । गये सकलसुर तेहिअवलंभा ॥
मुनि दधीचि ममपद अनुरागी । लखि अपमान मोरगा भागी ॥
गई सतिहु ममकहा न माना । देख्यो तहां मोर अपमाना ॥
तज्यो प्राण जारयो निजगाता । यज्ञ विध्वंसहोय कहिबाता ॥
तेहिते जाउ तुरत तेहि ठाऊ । यज्ञ विध्वंस करौ गणराऊ ॥
सुर मुनिगये भाग हितलागी । गणवर सबको लखो अभागी ॥
काहूको नहिं राख्यो कानी । हत्यो सकल बैरी समजानी ॥
सुनत वीर अस शंकर बाता । महा हरषनहिं हृदय समाता ॥
दो० कहि जयजय शंकर शिवा वीरभद्र हरषान ।
प्रलयकालसम नादकरि सकटककियो पयान ॥
सो० रथ अतिसुभग बनाय नहे सिंह तेहिमहँ अधिक ।
शोभा वरणि न जाय वीरभद्र तेहि चढ़ि चल्यो ॥
भद्रकालिका लै निज लस्कर । चल्योवीरहित सुमिरतशंकर ॥
क्षेत्रपाल निज फौज समेता । चलतभयोकहि जयवृषकेता ॥
चलीभीर कछु वरणि न जाई । कूदत बीर गगन नियराई ॥
पगतल दृषद होत रजतूला । गिरत कोह टूटत तरुमूला ॥
उड़ीधूरि पहुंची नभपासा । भूमिभयो षट आठ अकासा ॥
बाजा सकल जुझाऊ बाजत । प्रलयमेघजेहिसुनिअतिलाजत॥
मारु राग सब वीर पुकारत । शंभु शिवाकहिजयतिउचारत ॥
यज्ञकथा अब सुनहु मुनीशा । होनलग्यो प्रथमहिं सो खीशा ॥
रोवन लग्यो श्वान बिनहेतू । बिनहिं बात टूटे मख केतू ॥
बरषनलग्यो रुधिर कचपालू । देखि दशा सबभयो बिहालू ॥
दक्षपाट महिषी जगख्याता । वीरनकही देखि उत्पाता ॥
यह सब क्रोध शंभु कर जानौ । अपरबात नहिं मनमें आनौ ॥

दो० सकलविचारत मनहिंतुम किमिकारणअसहोय ।
शिवमाया वश भूलिहू समुझि परत नहिं कोय ॥
सो० वीरनकह पुनिरोय भल भूल्यो मुनि देव सब ।
सतीदीन तन खोय तेहि मखमें कल्याण कब ॥
तेहि अवसर गण सहित गणेशा । पहुंचेआय सकल मखदेशा ॥
सुनत शोर देखत शिव भीरा । भयो दक्ष सुरसहित अधीरा ॥
जोरि युगलकर सुरपति आगे । बिनती करन दक्षतब लागे ॥
तुम्हरे बल मखकीन अरम्भा । रक्षा करहु छांड़ि छलदम्भा ॥
तबसुरपति निजदलसनमानी । गह्यो वज्र धनुशर निजपानी ॥
अनलशमन अरु नयऋतनाथा । जलपतिपवन भयोतेहिसाथा ॥
अरु कुवेर ईशान दिगीशा । उठे लरन सबसुनहु मुनीशा ॥
रोक्यो गणन करत उत्पाता । गणहुंक्रोध कीन्होअतिताता ॥
आयुध चलनलग्यो दुहुं दिशते । मारतसुरहुगणहु अतिरिसते ॥
परम क्रोधकरि सुर शर मारत । बीचहिकाटि शंभगण डारत ॥
दो० गण शरमारत सुरनको सो सुर डारत काटि ।
भयो परस्पर मारइमि इत उत बोलतडाटि ॥
सो० तब रिसकरि सुरराय वज्र चलायो गणनपर ।
काली मुखफैलाय लियो छीलि तेहि बज्रको ॥
तब लगि क्षेत्रपाल करि क्रोधा । निजसमानजोलखतनयोधा ॥
मारी इन्द्रहि त्रिशिष चलाई । गजते गिरो भूमि सुरराई ॥
अनलहि हनेहु त्रिशूल चलाई । यमको बमकरि दीन भगाई ॥
यहिविधिसकल दिगीशन मारे । घायल ह्वै सब भवन सिधारे ॥
गये भाग को भये अभागी । यश वीरता अछे सबत्यागी ॥
शंकर विमुख सुनो मुनिराई । धावै बहुत न पेट अघाई ॥
दीख दक्ष जब सब सुरहारे । जाय विष्णुढिग त्राहि पुकारे ॥
गिरो चरणपर रोय प्रजेशा । रक्षरक्षु मोहिं रक्षु रमेशा ॥
तुममखपतिमखफलदमखेशा । तुम्हैंअछत हमलहत कलेशा ॥
शरणपाल तुमको श्रुति गावै । दीनबन्धु तुव नाम कहावै ॥
दो० दास जानिमोहिं राखु मख दीजै गणन बिडारि ।

तुम्हैं न प्रभु परिश्रम कछू रक्षा करो हमारि ॥
सो० ह्वै उदास मन माहिं कह्यो रमापति अति सकुचि।
किह्यो दक्ष भल नाहिं ठानी रारि परेश सों॥
सर्वोपरि जिहि वेद बतावैं। हमहु रमासुत तेहि पदध्यावैं॥
लघुसे प्रीति जाति सब आनी। बड़ सों बैर खैर की हानी॥
है परंतु मोहिं शरणकि लाजा। निजबलनरिसकरबतवकाजा॥
तब निज आयुध गही सम्हारी। उठे क्रोध करि तब बनवारी॥
रोंकी गगन जाय दै हांका। तृण समानसबदलको ताका॥
तिहि क्षण वीरभद्र गा आगे। हरिहि देखिनिजरथकोत्यागे॥
उतरि भूमि पर भयो प्रणामो। तुमशिवसरिसनाथममस्वामी॥
लीन्हे हम शिव आयसु घोरा। नाथहुहुकुमलखितनहिंथोरा॥
उचित होय तस देव रजाई। अस कहिगणवरमाथ नवाई॥
कह्यो बिष्णु तब सुनहु गणेशा। है प्रबला अति आज महेशा॥
दो० भक्ति बिवश आयों इहां पाछे लख्यों बिरुद्ध।
शरण पाल ममपरण है तेहि बशठान्यों युद्ध॥
सो० तुमहु छांड़ि छल दंभु युद्ध करौ मम साथमें।
तुम्हरो रक्षक शंभु जीतौगे संशय नहीं॥
बिना मोहिं जीते गण वीरा। जान न पैहो मख के तीरा॥
अस सुनि वीरभद्र गण राई। चढ़ो यान पर शंभु मनाई॥
हरिकी सैनहि ठेलि ढकेली। बमबम्करि मखभीतरपेली॥
तब करि क्रोधबिष्णु तेहिरोका। गदा घालिहरि हरिशिरठोका॥
तब त्रिशूल लै वीर गणेशा। गदा काटि डारी महि देशा॥
तब करि क्रोध महा रिस धारी। चक्र सुधारि गह्यो बनवारी॥
शीतल भयो चक्र को जोला। ह्वै बाचाल सुदर्शन बोला॥
बिनती सुनहु महा प्रभु मोरी। तजहु न नाथ मोहिं बरजोरी॥
शिव जनउपर नहींमम जोरा। जिमिकधिपरलघुअनलकिशोरा॥
वहि दिन केरि करौसुधि सांई। नयन चढ़ाय मोहिँ तुमपाई॥
दो० मोहिं चलावो नाथ जो फिर न लगौं तुम हाथ।
तुरत जाब उड़ि शंभ पहँ पुनि न तजैं शशिमाथ॥

सो० जब मोहिं दीन महेश तब तुम से कहि दीन श्रम ।
मम जन छांड़ि रमेश है अमिथ्य याकी जरब ॥
सुनत चक्रबानी जग पाता । भयोकछुकतबसकुचितगाता ॥
ताहि राखि लीन्हे धनु बाना । करिअतिक्रोधश्रवणलगिताना ॥
वीरभद्र को उर तकिमारा । गिरो धरणिनहिं कीन सम्हारा ॥
शिवकहिउठ्योनयकपलबीता ।तक्योगरुड़जिमिअहिहरिचीता॥
त्रिशिख उठाय सुतीक्षण धारा । अति रिसाय हरिके उरमारा ॥
गिरो भूमि पर कंपित गाता । पुनिशिवबोलिउठ्योजगपाता ॥
कीनक्रोध कछु बरणिन जाता । तेहि अवसर तहँगयोबिधाता ॥
युग कर जोरि कह्यो जगकारी । असतपक्ष में है निज हारी ॥
तुम प्रभु सकल वेद के ज्ञाता । भूले ककस हवो जग पाता ॥
निशि दिन जाकोध्यान लगावत । तासु संग अब रारि मचावत ॥
दो० शिव बैरी को पक्ष तुम हठि हठि करत रमेश ।
शिव माया बश भूलि कै लखहुनशिवहिं परेश ॥
सो० शिवहैं परम परेश ता बैरी को रखि सकै ।
चलौ चली निजदेश लहैदक्षनिजकर्मफल ॥
सुनत ब्रह्म वानी बनवारी । गे सुलोक चढ़ि गरुड़ सवारी ॥
हंस चढ़े बिधिगे निज लोका । सकल देव ताक्योनिज ओका ॥
रह्यो इष्ट हरि जनक बिधाता । शंकर बिमुख तजी सबनाता ॥
शंकर बिमुख सुनो मुनिराई । हितू सकल बैरी सम गाई ॥
बमूबमूबोलिगणन मखशाला । लीन दबायसुमिरिशशिभाला ॥
यज्ञ वस्तु सब सुरसरि डारी । भृगु कूचक धरि गाल उखारी ॥
जे मुनि रहे तहां मख कारी । ताड़ित करि सबको धिक्कारी ॥
लेहु भाग मम निकटहिआवो । कछुक खाव कछु घरलैजावो ॥
रदहि तोरि कीन्हेउ रद काहू । शंकर बिमुख लेहु जस लाहू ॥
काहुहि नाक काटि कर तोरा । काहूको धरि मस्तक फोरा ॥
दो० तब दक्षहि धरि वीर वर करसों मूड़ मिरोरि ।
तोरि यज्ञ महँ होमि हू हरषित भयो अथोरि ॥
सो० दीन्हो तुरत बजाय बिजयघंट रण जीत को ।

बम् बम् कह हर्षाय कहीसकलजयशक्तिशिव ॥
दै डंका लौटो वर वीरा । कटकसहित अतिहरषशरीरा ॥
कह्यो सूत सुनिये मुनि झारी । नहिं चेतत अस लखत अनारी ॥
जो न भजै शिवको असजानो । तेहि शठलखोश्वानखरमानो ॥
शिवसे बिमुख परहि मैं राता । मिथ्या नर तन दीन बिधाता ॥
सेवा इष्ट करै चह जेहि की । शिवपद प्रीतिबढ़ैरुचितेहिकी ॥
तेहि पर शिव अनुकूल सदाई । यहिते तुलसी भयो गुसांई ॥
रबि गणपति हरि शंभुअपरना । पूजै चहै जाहिकरि परना ॥
शिव पद प्रीति रखै निरदंभू । तापर कृपा करैं अति शंभू ॥
पूजा सब पहुंचै शिव पाहीं । यथा जाय जल बारिधिमाहीं ॥
पूजन भाव सकल सुर मानो । फल प्रद सकल शंभुकोजानो ॥
दो० अस लखि सकिओरी कहत सुनो सकल सज्ञान ।
सकल तजो शिव कहँ भजो जो चाहहु कल्यान ॥
सो० सुनि यह कथा मुनीश थर थर कांपे युत सभा ।
भे सब बिस्वा बीश सेवक शंकर चरण के ॥
जियहु सूत तुम वर्ष करोरी । भईशंभु पद दृढ़ मति मोरी ॥
अब पर कथा कहौ करि दाया । लवटि काह कीन्हो गण राया ॥
तबहिंसूतकहि जय शिवशंकर । लाग्यो कहन कथाअतिसुंदर ॥
गिरिपर पहुंचि गयो गणनाथा । जाय शंभु पद नायो माथा ॥
सकल हालशिवसों कहिदयऊ । सुरन संग जिमि संगर भयऊ ॥
जेहिविधि लरेसुरनभयत्यागी । कह्यो सोउ जिमिगे सबभागी ॥
यज्ञविध्वंसजौनिविधिकीन्हा । सुरनमुनिनजेहि विधिकरदीन्हा ॥
भृगुकरजेहिविधिगरबनिवारा । दाढ़ी सहित दाढ़ जिमि फारा ॥
दक्षहि शीश तोरि जिमिमारा । कीन निवेदन युत विस्तारा ॥
सुनिसबमुदितभयोअतिशंकर । मिल्यो वीरभद्रहि भरि अंकर ॥
दो० सब गणपतिको पति कियो बीरभद्रको शंभु ।
सकलकाजमहराजनिजराख्योतिहिअवलंभु ॥
शिवशिवजनबिल्लुकभसम अरुरुद्राक्षकमाल ।
निन्दक पावै दक्ष गति भाषत ओरीलाल ॥

सो० उहां सकल मुनिदेव भे यकठे गे धातपहँ ।
करि प्रणाम अरु सेव रोयरोय बोलत भये ॥

नाथभयो मखको अपमाना । जग में मख को नाउ बिलाना ॥
सपन्यो करी न अबमखकोई । बिना भाग सब देव मरोई ॥
लै विरंचि सबदेव अधीरा । गयो विष्णु पहँ सागर क्षीरा ॥
पहु चितहां सबजयजयभाषी । रमा रमन पदपर शिर राखी ॥
अस्तुति करन लगे विधि देवा । कहिजयजयति जनावत सेवा ॥
जय मुकुंद जयजय जगधारण । जय गरीब को दुःख निवारण ॥
जय सच्चिदानंद जगदीशा । जय शंकर प्रिय जयतिमतीशा ॥
जय सकलेश रमेश सुरेशा । करहु कृपा अबहरहु कलेशा ॥
सुनिसुरविनय कहोप्रभुबाता । केहि कारण आये सब धाता ॥
कहा विरंचि वृतांत बखानी । देवव्यथा सब अच्युत जानी ॥

दो० चलोचली शिव पाससब असकहि उठेरमेश ।
रिस तजिशिवकरुणा करैंतबसब कटै कलेश ॥

सो० तबविधिभयोमलीनकउनदिखाउबमुहंशिवहिं ।
जस सब करणी कीन देखत जारैंक्रोध करि ॥

तबहरि कह्यो बहुत मुसकाई । अजहू माया तुमपर छाई ॥
शिव समदरशी वेद बखानैं । सपन्यो क्रोधनशिव उरआनैं ॥
माया वश जो करत गवांरी । करत गरूर भूलि त्रिपुरारी ॥
तेहि दे कर शिव लेत उबारी । वेद पंथ पालत त्रिपुरारी ॥
शरण गये शंकर अपनाई । त्राहि कहे सब चूक भुलाई ॥
मोहिंअतिशय प्रतीत शिवकेरी । बंदत चरण देत सुखढेरी ॥
जनकी विनय थोरि बहुमानत । अतिशय चूक नउरमें आनत ॥
शिव समान को कृपा अगाधू । देत भुलाय भक्त अपराधू ॥
मोपर करुणा करत विशेखी । हरत चूक निजसेवक लेखी ॥
असकहि मगन भये बनवारी । सकलकहो जयजयत्रिपुरारी ॥

दो० सुनितबहरिके वचनअस सबकोभा विश्वास ।
चल्यो शंभुढिगसुरसहित हरषितरमानिवास ॥

सो० विधिहरि सुरनसमेत पहुंचेशिवपहँगिरिउपर ।

बोलेजय वृषकेत त्राहि त्राहि आरत हरण ॥

दो० करिप्रणाम कर जोरि सब ठाढ़भये शिरनाय।
हरिविधि सुरके अग्रह्वै अस्तुति करतबनाय॥

छन्द

बम्बम् महेश। जयजय उमेश॥ काटौ कलेश। तुमहौ परेश॥
हमहैं असाध। तुम कृपा काध॥ हमरो पराध। क्षमियो अगाध॥

छं० आयेहैं देव सबै मिलिके शरणागत हैं तुम्हरे सब शंभू।
राखिलेराखिले राखनहार नहैसबकोदुसरो अवलंभू॥
कीन्हीजु कर्मलहीफलसर्म तकीअबद्वारतुत्यागिकेदंभू।
धरो अबबाहँ करोकरछाहँ अहोपुरनाहसुदानीमखभू॥
कल्पकुरुःकेविवेकनहीं सबसाधु असाधुस्ववांछितपावै।
वेदक है नहिंसोतरु सुर सत्यसोई शिवनाम बतावै॥
कुक्कुटकोशपिशाचकिरातहि सोमिनिकोतहँसाखिगनावै।
अभिमतदानितुम्हारिहिबानिसुमांगतओरीअभयवरपावै॥
हे शिवशंभु दयाकरशंकर सेवक के सुखदात तुम्हींहौ।
वाकिबसीसबभुक्तिहुमुक्तिजिन्हैंसबछांड़िसुहाततुम्हींहौ॥
जानतहौ सबके मनकी सबके उरबीचसमाततुम्हींहौ।
ओरीकेतौपितुमातुतुम्हींगुरुभ्राततुम्हींहितनाततुम्हींहौ॥

दो० सुनिबिनती हरिधातकी हरषित गिरिजानाह।
ह्वै प्रसन्न कीन्ही सबै अभय उठा कर बांह॥

सो० पुनि बोले वृषकेत चितै सुरन की ओर तब।
कहोरमापति हेत सकल अमर आये कहां॥

बोलेहरि तब युग कर जोरी। सुनहु महाप्रभु विनती मोरी॥
माया तोरि अधिक बलवान। ज्ञानिहि करै महा अज्ञान॥
माया वश सब तुम्हैं भुलाई। गयेदक्ष मख सब सुर धाई॥
हमहुंगये माया बश स्वामी। जानि दक्ष आपन अनुगामी॥
दक्ष मंदमति करि जड़ताई। तुम्हैं न न्योत्यो भाग लगाई॥
कारणबश तहँ गै जगमाई। भाग तोर तहँ नहिं लखिपाई॥
तबनिन्दालखिअधिकरिसानी। स्वतनजारि निजलोकसमानी॥

तुव प्रेरित लै कटक महेशा। वीरभद्र तहँ गयो गणेशा॥
पौरुखभरि करिसुरनलराई। वीरभद्र कर सब छत खाई॥
गयेभागि हम सबनिजदेशा। तब ध्वंसित मख कीन गणेशा॥
तुवकोपे नहिं कयउ रखवारा। गुरु पितु मातु बंधु परिवारा॥
सब सुरकरी ताकिगौं पल्ला। दक्ष भयो हारी को बल्ला॥

दो० दाढ़ी भृगु उच्चारि तब मारि दक्ष करि अंत।
विजय डंक निरशंक दै लौटो वीर तुरंत॥
सो० गयो भाग हित लेख चल्यो अभागी ह्वै सबै।
कारणतहां विशेख शिव बिनु सुखसपन्योनहीं॥

यद्पि लरे सबसुर गण साथा। तदपि अचूक हवै सुर नाथा॥
जिमिहिं नाथ कठपुतरीमाहीं। गुण अवगुणकछु देखितनाहीं॥
बहु गुण करै तार बल सोई। करै चहै जोइ तार धरोई॥
हमैं सबै कठपुतरी लेखी। निजहि तारधर लखौविशेखी॥
तहां न्यायकरि बूझो स्वामी। कहा चूक ठहरी अनुगामी॥
तेहि कारण सबशरणतिहारी। त्राहि त्राहि सुर करत पुकारी॥
जोन करौ मख पूर गुसांई। सकल जक्त मख देय उठाई॥
मख में भाग न जो सुर पावैं। भूखन मरैं काह सुर खावैं॥
तेहिते करौ पूर मख स्वामी। सकल जानि आपन अनुगामी॥
दक्ष जियाय लेउयश स्वामी। पूरण यज्ञ करौ वृषगामी॥

दो० एवमस्तु शंकर कह्यो हरि की ओर निहारि।
तुमसम अपरन मोहिंप्रियपुरउब आशतुम्हारि॥
सो० अस कहि उठे मभाल चढ़ि वृष कनखलकोचल्यो।
सब सुर भये निहाल जय जय करि पाछे चले॥

कनखल पहुंचिगयो त्रिपुरारी। मखकी लख्यो दुर्दशा भारी॥
वीरिनि आय चरण शिरनावा। रोयरोय निज व्यथा सुनावा॥
हौं अनाथ प्रभुकरहु सनाथू। पालहु नाथ वेद कर पाथू॥
दीनबंधु तुम को श्रुति गावै। कल्पवृक्ष तुव नाम बतावै॥
छोटन को उतपात गुसांई। क्षमा बड़न को वेद बताई॥
करितासति पुनि करुणाधारैं। बड़ा सोई अस वेद पुकारैं॥

शिवनिन्दकगतिजसश्रुतिगावा । सो सब यथा उचितहमपावा ॥
अब जसउचितहोयप्रभुकीजै । शरण गहे को फल प्रभु दीजै ॥
छं० प्रभु औघर दानी है तुम बानी वेद न कहत बखानी ।
मोहिंजानिमलानी नारिअयानी हरोसकलमखहानी ॥
तुम तौ प्रभुतारी सोमिननारी नहिं कछुपापसिहारी ।
जो अब मम बारी करतबिचारी है चित्रित त्रिपुरारी ॥
दो० सुनि बिनती सर्बज्ञ शिव वीरिनि ओर निहारि ।
कह्यो मांगु मनरुचित वर देवै बिनहिं सिहारि ॥
सो० तब वीरिनि कर जोरि शिव चरणन पर गिरिपरी ।
पूरी इच्छा मोरि कृपा दृष्टि के लखतही ॥
दक्ष जियाय लेहु यश स्वामी । पूरण यज्ञ करौ वृषगामी ॥
प्रथम भाग आपन प्रभु लीजै । यथा उचित सब देवन दीजै ॥
तब हरिसों कह कृपानिकेतू । तुम हरि सकल धर्म के सेतू ॥
लाय अजा शिर दक्ष शरीरा । मंत्रित करि सींचौ कुश नीरा ॥
महा मंत्र षट बरण रमेशा । जो तुम जपत सनेम हमेशा ॥
ताहि सजीवन लखोमुकुन्दा । वेद सार सोहत निर्द्वंदा ॥
सो जपि रचत सृष्टि भवकारी । पालत जग तुमताहिसिहारी ॥
प्रलय करित हम सो मनुधारी । सो जपि भानु देत तमटारी ॥
तासों मंत्रित करि कुश बारी । देहु जियाय दक्ष बनवारी ॥
दाढ़ी अज भृगु के मुंह लाई । छती अक्षत कीजै सुरराई ॥
दो० तुरतहिं हरि कीन्हीं सकल लीन्हीं दक्ष जियाय ।
घायल सब निर्छत करी सकल उठे हरषाय ॥
सो० तब करि चेत प्रजेश शंभुहि लख्यो परेश वर ।
मनमें जपत महेश बोलि न आवत अजल पन ॥
तबशिवचरणपरातजिहमहम । गलबलबोलिउठाशिवबमबम ॥
हँसेशंभु सुनि गलबल बानी । भे प्रसन्न अति औघर दानी ॥
दक्ष शीश पर निज कर फेरा । जारी सकल पाप तेहि केरा ॥
कह्यो रुचित वर मांगुप्रजेशा । सकल त्यागि भय छाड़िअँदेशा ॥
मांगी भक्ति सुगलबल नादा । एवमस्तु भाष्यो सुखकादा ॥

कही शंभु सब सुरन सुनाई । गलबल नाद मोहिं भलभाई ॥
मम पूजन पाछे बम् बानी । गाल बजाय कहै जो प्रानी ॥
जगमें देब ताहि सुखसंपति । संतति सहित अंतमें परगति ॥
सुनतसकल असवरअविषादा । सिखी सकलसुरगलबलनादा ॥
गलबल सुनत ग्रामशिशुआये । मानहुं लखन तमाशा आये ॥

दो० अजय शीश नरधर निरखि सकल ग्राम के बाल ।
कर तारी मारी बहुत रची ठठोली ख्याल ॥
तेहि अवसर प्रगटी तुरत शंभु शक्ति जग मात ।
बोली यदपि प्रसन्न शिव तदपि न मोहिंसोहात ॥
सो० ये शिशु प्राण समान मोहिं परम प्रिय लागयहू ।
कर तारी बहु ठान भले हँसे शिव निन्दकहि ॥
सब शिशु लीन बलाय आशिष दै बांछित दयो ।
पुनि बोली जग माय सुनहुसकलसुरमुनिबचन ॥

दक्षहि शिशुन दीन जो तारी । सो ममचित्त लग्योअतिप्यारी॥
जो जग में कर तारि बजावै । मम प्रसाद मन बांछितपावै ॥
शिव पूजन पाछे करतारी । देय बजाय लहै सुख भारी ॥
गाल बजाय शिवहि हरषावै । तारी दै पुनि मोहिं रिझावै ॥
गलबल लखव दक्षकीबोली । तारी मानब तासु ठठोली ॥
इहांदेव सुत बित युत राजू । अंत मुक्ति दै करब निवाजू ॥
अंतर्द्धान भयो अस भाखी । शंकर चरण हृदय निज राखी ॥
तबभृगुमुनिहिं बोलिप्रभुलीन्हा । यज्ञकरनको आयसुदीन्हा ॥
लै आयसु तब दक्ष नहाई । लाग्यो करन यज्ञ हरषाई ॥
भली भांति भै पूरण जागा । लहीसकलसुरनिजनिजभागा॥

दो० तब शिवगे कैलासको सकल सुरन हरषाय ।
सब सुरगे निजलोकको शंभु चरण शिरनाय ॥
सो० तबते बोरिन दक्ष सर्वोपरि शिवको समुझि ।
छाड़िसकल सुरपक्ष धरित्रिपुंड्र शिवशिवरटत ॥

अस प्रभु छाड़ि भजै जो आना । तेहिसमको मतिमंददिवाना ॥
तेहि समभाग्यवान मुनिको है । मनवच कर्म शंभुको जो है ॥

लखोभाग्य मुनितेहि अनकूली । जोपर प्रीतकरै शिवभूली ॥
गहत कांच जड़ पारस त्यागी । त्यागिअमीविष पीवतमागी ॥
कहौ कौन अस दीनदयालू । अरिहुकरतजो परमनिहालू ॥
सती मरणकर कीन न शोचू । शरणगये जसकीन सकोचू ॥
तेहि गुणकहौं कौन विधि गाई । बकत शेष शारदथकिजाई ॥
जेहि वरणत सकुचैं षटचारी । तहां कौन मम बुद्धिगवारी ॥
कहत कथा परहोत अभारी । जाको शरण गहत बनवारी ॥
अस बिचारि जे परम सयाने । सकलत्यागि शिवमहँलपटाने ॥
दो० अस सुनि सकल मुनीशवर बोलि उठेजय शंभु ।
सकल त्यागि शिव चरण दृढ़ कीन्हीं प्रीतिअदंभु ॥
से० चिरजीवहु तुम सूतकरहिं सदाहरि हरदया ।
करी हमैं मजबूत शिवरतिमें कहि दक्षगति ॥
तब धरि ध्यान सूत शिव काहीं । सुमिरिशारदानिजमनमाहीं ॥
कहन लग्यो रघुनाथ चरित्रा । महा पाप हर सुखद पवित्रा ॥
जब लग पूजतशिवहि खरारी । तब लग सेवक सजतसवारी ॥
रथ पालकी सुकुंजर वाजी । कोतल खड़े रहैं सब साजी ॥
बल्लमवंद खास बरदारा । रहैं खड़े तहँ बांधि कतारा ॥
चोपदार बांधे वर पागा । गहे सुआसा कनक अदागा ॥
सेवक लिहे पुसाकैं ठाढ़े । चुनि चुनि कबासुबूटा काढ़े ॥
पटुका जरी लरी मणि मोती । जगमगात मानहुं रबिज्योती ॥
समनि मुकुट जरझूलतझब्बा । एकहि लिहे पान भरि डब्बा ॥
करि पूजा शंकर को रघुबर । भ्रातन सहित चलतअपनेघर ॥
दो० पहिरिसुपट महराजसम पान खाय हर्षाय ।
शिविकागज रथचढ़िचलत कबहु तुरंगनचाय ॥
से० अग्रे सकल समाज बोलत छरिया बिरदवर ।
बढ़े उमर धनराज महाराज रघुराज की ॥
राम रूप कछु कहौं बखानी । मातु शारदा करु फुरि बानी ॥
वारिद सजल श्याममृदुगाता । तहँ तड़ित सरिसपीतपटभाता ॥
ताज जरकसीशिरपर सोहत । चमकतिकोटि भानु छबिमोहत ॥

मृग मद मान हरतकचबांके । श्रवण प्रजंत परे लट ताके ॥
श्रवण सुभग कुंडलझलकाई । मनहुं राहु रबिकीन यकाई ॥
भस्म त्रिपुंड्र ललाट सुहाई । मलय बिंदु तहँ अति छबिदाई ॥
भौंहैं कौस काम छबि हारी । जलज नयन तहँ शोभा भारी ॥
नासासुवा चोंचसम सोहत । गोल कपोल मदन मद मोहत ॥
मुख शोभा नहिं जातबताई । लब लालीविद्रुमहि लजाई ॥
हँसनि मंद शोभा घर लूटत । दाड़िम मनहुं पवन वशफूटत ॥

दो० सुंदर शुभग अजान भुज तामें धनुशर सोह ।
तहँभूषणजर मणिजटितदेखिकाममनमोह ॥

सो० जाकी करुणा पाय शोभा शोभा को लहत ।
तेहिबरणौंकिमिगाय जहां नपावतपारश्रुति ॥

यहि बिधि आवत रामनिकेता । मगमें नगर लोग सुख देता ॥
जाय सभा नृपके शिर नाई । जात जननि पहँ आयसुपाई ॥
भोजन करत संग सब भ्राता । आनँद हरषबरणिनहिं जाता ॥
जो आनँद को आनँद दानी । तेहिआनँदकिमिकहौंबखानी ॥
यहिबिधिनितहिरामशिवपूजा । करि तब करतकाम प्रभुदूजा ॥
तब शौनक बोल्यो कर जोरी । जियहु सूत तुम बर्ष करोरी ॥
रघुपति चरित महा सुखदाता । सो तुम मोहिं सुनायहुताता ॥
शंका एक भई मन मोरे । सो छूटी करुणा बश तोरे ॥
हरिको रूप जहां तुम गाई । माथे भस्म त्रिपुंड्र बताई ॥
राम चन्द्र हरि को अवतारा । तेहि शोभा तुमकोन पसारा ॥

दो० तहँ तुम भस्म त्रिपुंड्र को कह्यो रामके माथ ।
कहुं कहुं अस बरणनसुना तिलकदेतरघुनाथ ॥
सबहरि जनजे जक्तमें लावत तिलक बिशाल ।
सकलअंगकोउभस्ममलि तिलकलगावतभाल ॥

सो० बहुतक जन करि टेक निंदहिँ भस्म त्रिपुंड्रको ।
याकोसहित विवेक नाथ कृपा युत भाषिये ॥
हंस्यो सूत कहि शंभु सुमुनि मंडलो कोसरहि ।
हौसब बुधि के खंभु अज्ञ बन्यो संसार हित ॥

सुनो कथा शुभ तुम्हैं सुनाऊं । तिलक त्रिपुंड महातम गाऊं ॥
भस्म त्रिपुंडशिवहि अतिप्यारी । निजहुभस्म लावतत्रिपुरारी ॥
भस्म सकल शोभा की खानी । मुक्ति भस्म सो वेद बखानी ॥
करै चहै कोटिन जप जुक्ती । बिना भस्म नहिं पावै मुक्ती ।
चारि पदारथ हैं तेहि हाथे । भस्म त्रिपुंड लखोजिहिमाथे ॥
निंदहि भस्म वेद पथ त्यागी । रवरव बन्यो हेत तेहि लागी ॥
भवन अदीपक नदी अनीरा । भस्मबिना तिमिमनुजशरीरा ॥
शैवन को स्वइ इष्ट विशेखी । तेहिसम सुखदअपरकमदेखी ॥
जलज धर्मको भस्म पतंगा । पाप दीप को हवै भुअंगा ॥
परम पाशुपत विधिवन हारी । बिना भस्म नहिंपीवतबारी ॥
इंद्रादिक सब दिग्पति राई । करत राजतन भस्म लगाई ॥
राम कृष्ण हरिके अवतारा । परम शैव अस वेद पुकारा ॥
लावत भस्म लेप सब त्यागी । तिनसमअपरनशिवअनुरागी ॥
बिना भस्म नहिं तिन्हैंस्वहाई । कोटिन यतन करै सेवकाई ॥

दो० भस्म तिलक में भेद नहिँ दूनहुं एकहि वृत्त ।
भस्म रूपहै शंभुको तिलकहु लिंगा कृत्त ॥
अपर सुनो मुनिहरिकथा करिजोत्रिभुवननाथ ।
चिन्हहेत निज भक्तके तिलक रचो निजहाथ ॥
लखिहरिनिजजनमध्यमेंकोउकोउशिवरतिहीन ।
तिन्हैं कृतारथ होनहित ऐसि यतन प्रभुकीन ॥

सो० एक समय भगवान बनै पारथी मृद मई ।
पूजीसहित विधान नेमरहै जिमि नित्यको ॥

षोडश विधि सों पूजि महेशा । अतिप्रसन्न चितभयो रमेशा ॥
पुज्य शंभु अद्वै जग माहीं । पूजक हरि सम दूसर नाहीं ॥
अस्तुति पढ़ि प्रभु गाल बजाई । परदक्षिण करिमाथ नवाई ॥
प्रीति सहित मन में हरषाई । कीन विसरजन तबसुखदाई ॥
लीन्हो स्वकर मुकुर बनवारी । बदन विलोकि सुकेशसंवारी ॥
भाल विशाल त्रिपुंड लसाई । देखि प्रसन्न भयो जग सांई ॥
तबनिज मन चिंत्यो महराजू । मोहिंदीन शिवत्रिभुवन राजू ॥

मोरि भक्ति करिहै संसारा। तासु चिन्ह कछु करौं विचारा॥
कौन विसरजन जो शिवमूरति। ताको ध्यान धरीकरि सूरति॥
लिंग रूप शिव लखि भगवाना। लिंग मई सब जानि जहाना॥
सो मृदलै त्रय रेख खचावा। लिंग मान शिवरूप बनावा॥
संपुट कही रहै जोइ इत उत। मध्यलिंगशिवको शोभा युत॥
तिलक नाम तेहि करि भगवाना। द्वादश अंग कही तिहि थाना॥
शिव सरूप बर रुद्र यकादश। पूजा समय बनावत द्वादश॥
द्वादश थान कही तेहिते हरि। मनहुं पारथी भे रुद्री भरि॥
रचत पारथी मृद जगकेतू। करीतिलकमृ:मय तिहिहेतू॥

दो० निज भगतन केहेतसो प्रकट करी भगवान।
करिकरुणा निजदास परदिह्यो सीखबरदान॥

सो० प्रथमहि करि अस्नान लावो भस्म त्रिपुंडको।
तब पूजा मध्यान रचो तिलक मृद संतको॥

तिहि समझो शिव सेवनमनमें। रची पारथी जनु सब तनमें॥
मुक्ति हेतु मानो मृद सेतू। केसरादि हरदो धन हेतू॥
इमिजो रचीतिलक ममवाना। तिहिसमुझवनिजदाससमाना॥
भस्म त्रिपुंड इष्टहै मोरा। ताहिलखोजनितुमकरिथोरा॥
विना भस्म तन शुद्ध नहोवै। बिना शुद्ध शुभ बुद्धि नहोवै॥
बिना बुद्धि नर तजतन दंभू। दंभ तजे बिन मिलत नशंभू॥
शंभु मिले बिन मुक्ति नहोई। चहै लाख नर युक्ति करोई॥
यहिविधि तिलक रचोबनवारी। तिहिसमुझतकछुआनअनारी॥
त्रिशिखाकृततिलकहि कहिकोई। लिंगा कृत सुनिके चुप होई॥
कल्प भेदसो जानु मुनीशा। है अथाह लीला गौरीशा॥
सुन मुनीश तेपरम अभागी। चलत चालहरि अज्ञात्यागी॥
परम भागवत जेहरि दासा। हरिके बचन करैं विश्वासा॥
पथम विभूति मलैं सरवंगा। पुनि देतिलक करैं चितचंगा॥
भस्म पुंड जोतीन सुहाये। तीनपंथ तिहि वेद बताये॥

दो० भस्म त्रिपुंडहि माथदे मुनि वरसुनचितलाय।
ब्रह्मा विष्णु महेश पुर जहां रुचै तहं जाय॥

छन्द

जिहि मुंडमें भस्म त्रिपुंड नहीं सोइ मुंडहै लोह निहाई यथा ॥
धरि तापर पाप के पुंज महा घन ताको भयो यम दंड तथा ॥
यम दंडक दंड त्रिपुंड सदा करै आयुत जन्मक पाप व्यथा ॥
त्रय देवके लोक यथारुचि को त्रयपुंड के रेखहैं तीन पथा ॥
जिहि मुंडमें भस्मत्रिपुंड नहीं तिहिहेतु रचीविधनानिरि कुंडहि॥
सूकर शीश भलो तिहि शीश ते विष्टक भंडकियो सोइमुंडहि ॥
भस्म बिहीन अशीश भलो कहि शर्म दिवावत है यमदंडहि॥
औरी कहै मतिमोरि यहै अतिशय सुख चाहु तोलाहु त्रिपुंडहि॥

सो० यहि विधि भस्म त्रिपुंड है सर्वोपरि मुनि सुनो।
भस्म बिना जोमुंड तिहि काटे कछु दोषनहिं ॥

ब्रह्म चार्य्य जे मुनि वैरागी। प्रथमहि भस्मदेहिं सबत्यागी ॥
तापाछे पुनि तिलक लगावै। तेहरिके अतिशय मनभावै ॥
पूजा श्राध यज्ञ ब्रत दाना। बिना भस्म नहिं वेदबखाना ॥
बिना भस्म होवे सब कैसे। ऊसर बीज बोय फल जैसे ॥
सुनो महा मुनि चित्रित गाथा। कलिमहोय बहुकल्पितपाथा ॥
तिहिमा एक पंथ बहु भारी। उपर साधु मनमें बट पारी ॥
निंदहिं शिवहि भस्मबनिज्ञानी। निजहिकहहि हरिभक्तसुजानी॥
वैरी सदा ताहि हरि जानै। निंदे इष्ट कौन भल मानै ॥
हवैकाग समतिन कर ज्ञाना। विष्टा करहिं भोरहीं पाना ॥
तिमि शिव निंदक कोबनवारी। शीघ्रहिं देहि नर्क भंडारी ॥
वेद वेद वेदा श्रम वरणा। त्यागि गहैं घृत शक्कर शरणा ॥
चारि बचाय नाम तेहि होई। ज्ञानी करैं अर्थ यहि टोई ॥

दो० महिमा तिलकत्रिपुंडसुनि बोले मुनिहरषाय।
हमै कृतारथ कीन तुम शिवको तत्त्व लखाय ॥

सो० अबभा हमरे ज्ञान बाढ़ी प्रीति त्रिपुंड पर।
सोनर पशुखरमान जोन लगावै भस्म को ॥

जिहि परप्रीति करै बनवारी। तहां मनुजकी कौनि शुमारी ॥
निदरि भस्म निजजन्मनसावै। हरि हर बैरी सोइ कहावै ॥

अस कहिसूनहि दीनअशीशा । सूनो हरषि सुमिर गौरीशा ॥
कहन लग्यो रघुपतिगुणगाथा । शारद चरण जोरि युगहाथा ॥
विश्वामित्र महा मुनि ख्याता । तिहिमखदनुज करतउत्पाता ॥
अवध जानि हरिको अवतारा । जाउंतहां असहृदय विचारा ॥
जो प्रभु कृपाकरैं मम साथू । मारिदनुजमोहिंकरहिंसनाथू॥
अस विचारि मुनिकीन तयारी । जटाजूट बांधे शिर भारी ॥
कर त्रिशूल कांधे मृगछाला । भस्मत्रिपुण्ड सुसोहतभाला ॥
भस्म श्वेत सर्वांग स्वहाई । शिष्यनसहितचले मुनिराई ॥
अवध पहुंचिगे राज निकेता । गे नृपसभा सुआशिष देता ॥
मुनि आगमन अवधपतिजानी । सचिवनसहितचले अगवानी ॥
कीन प्रणाम माथ महिनाई । हाथजोरि निजभाग्यमनाई ॥
सुतन बोलाय प्रणाम करावा । रामदेखि मुनिवर सुखपावा ॥
आशिष दीन महा हरषाई । रहै सदा शिवसाम्ब सहाई ॥
तब नृप सरयू नीर मंगावा । पदपखारिनिजभवनसिंचावा ॥

दो० निज सिंहासन के उपर बैठारी मुनिनाथ ।
मंज्जन भोजन करणहित नृप जोरी युगहाथ ॥

सो० तब ऋषिराज नहाय भस्ममली सर्वांग में ।
भालत्रिपुण्ड बनाय रची पारथी विधिसहित ॥

पूजि पारथी सविधि ऋषेशा । प्रीति समेत रिझाय महेशा ॥
हाथ जोरि मांग्यो मुनि नाथा । तुम प्रेरक सबउरणशिमाथा ॥
रामहि प्रेरिकरो मम साथू । दनुजमारिमोहिंकरहिंसनाथू ॥
तब नृप बहु मिष्ठान मंगाई । प्रीति सहितमुनिनाथखवाई ॥
पूछत भयो जोरि युग पानी । हेत आगमन कहौ बखानी ॥
कहमुनिदनुजसतावतमोहिंअति। देहुराम तेहिहेत महीपति ॥
नेक न शंक करहु नर पाला । रामहि लखोनतुमनर बाला ॥
जानो इन्हैं विप्र मुनि पालक । अतिरक्षक निश्चरकुलघालक ॥
अजित राम अस बेदन गावा । बिजय दान शंकर सनपावा ॥
तब नृप भयो शोच के वासन । तजीशोचलखिनिजगुरुशासन॥

दो० राम लषण नृप लाय उर बिकल तजत जनु प्रान ।

सौंपे मुनिकहँ करि बिनय तुम मुनिपिता समान ॥
सो० अति हर्षित मुनिनाथ दै आशिष नृपको बहुत ।
रामलषणलै साथसुमिरि शिवहिनिजबनचल्यो ॥
सांझहि लखि मगुतेतरु पाथा । मुनि बरटिकेसहितरघुनाथा ॥
सब सुपास रघुनन्दन कीन्हा । मुनिकोभलीभांतिसुखदीन्हा ॥
प्रथम पारथी बिधि जय दाई । रामहिंमुनिवरसबिधिसिखाई ॥
बहुतभांतिशिव तत्त्व लखावा । तेहि पाछे सबअस्त्र सिखावा ॥
मुनिहिंमानिगुरुयुगकरजोरी । बोले रघुपति मुनिहिं निहोरी ॥
लिंग प्रभाव कहौ मुनिराई । मृदमय दृषद विवेक बड़ाई ॥
कह मुनिनाथ सुनौं रघुराई । शंभु लिंग सब एक सम गाई ॥
रेख खचाय देय जलडाई । तबौ शंभु पूजा फल पाई ॥
है परंतु तहँ मृद फलभारी । सो पारथो सकल सुखकारी ॥
निजमतिसमकछुकहौंबखानी । सकल महातम वेद न जानी ॥
पूजै एक मृदु लिंग सँवारी । मनहु नरवदेश्वर सतवारी ॥
सहसशिवालय सुरसुखधामा । दश हजार जनु सालिग्रामा ॥
वेदवाक्य अस हम सुनिपावा । सो तुमसे कहि प्रगट जनावा ॥
परम पाशुपत तुम वुधिधामा । तुम्हैं शिवै नहिं अंतर रामा ॥
दो० वाक्य अर्थ में भेद नहिं शंभु वाक्य तुम अर्थ ।
मूरख जानत और कछु जो अतिजड़ असमर्थ ॥
सो० भोरभये मुनि नाथ करि मंजन रघुपति सहित ।
पूजिसविधिशशिमाथ चलतभयेनिजबिपिनको ॥
तब मुनि सहित लषणरघुराई । आश्रम पहुंचिगये निजआई ॥
मुनि रामहिं सानुज सनमानी । कंदमूल फल भोजन आनी ॥
सांझ भये निशि करि बिश्रामा । भोरहि कही मुनीशहिं रामा ॥
निरभय यज्ञ करौ मुनिराई । बैठे सानुज धनुष चढ़ाई ॥
तब सुबाहु आवा करि जोरा । हनी राम तेहि बलकरिथोरा ॥
पुनि अतिकोपि ताड़ुका आई । हस्यो राम मुनि शासन पाई ॥
पुनि रिसाय आवा मारीचा । राम प्रताप न जानत नीचा ॥
बिनफररासहनी तिहिबाना । सिंधु नघाय हस्यो नहिं प्राना ॥

कटकदनुजसब लक्ष्मणमारा । सब मुनि निरभयजयतिपुकारा ॥
रामहिं आशिष देहिं मुनीशा । जियौ अनुज युत कोटिवरीशा ॥
किहौ हमैं निर्भय रघुराया । सदा करैं तुम पर शिव दाया ॥
यज्ञ पूरकरि सब मुनि राया । प्रेमसहित रघुपतिहिं टिकाया ॥
शंभु भक्ति पूछत रघुराई । कहत मुनीश्वर तत्व लखाई ॥
यहिविधिकहतसुनतशिवगाथा । कछु दिन तहां रहे रघुनाथा ॥

दो० धनुष यज्ञ सुनि जनक पुर हर्षित लक्ष्मण राम ।
देखनको मुनि गण सहित चलेजपतशिवनाम ॥

सो० दीख अहिल्यहि जाय परी शिला ह्वै विपिनमा ।
धरी पांय रघुराय लहि स्वरूप विनती करति ॥

छं० जय राम करुणा धाम । दायक सकल बिश्राम ॥
यकबार लेतहि नाम । तुम सकल पूरत काम ॥
मैं नारि पातक खानि । पगधर्यो दासी जानि ॥
बहु जन्मकृत प्रगटानि । जोतुमहिं लाई आनि ॥
मनिश्राप जोमोहिंदीन । अति परम करुणाकीन ॥
मुनि श्राप में बरदान । तुममिल्योमोहिंभगवान ॥
मुनितपतजिहिपदलागि । सो छुयो ममबर भागि ॥
सबपाप भा जरिछार । अब जातिहौं पतिद्वार ॥

दो० असकहि सो पतिपहँगई मुनिनसहित रघुनाथ ।
जाय नहायो सुरसरी जाको निर्मल पाथ ॥

सो० पूजी सविधि पुरारि मुनिन सहित रघुवंश मणि ।
युग करजोरि खरारि निज जय मखमें मांगेहू ॥

पुनि मुनिसे पूछा रघुराई । गंग महातम कहौ गोसाईं ॥
मंजन फलकरि करुणा भाषौ । दास जानि कछु गोयनराखौ ॥
कहो मुनीस सुनो रघुराई । गंग महातम अति सुखदाई ॥
भयो भगीरथ तव कुलकेतू । गंग आनि बांधो वृष सेतू ॥
तिहि दरशन ते पाप बिलाई । मंजन पान महा फलदाई ॥
सो बिवेक निजमतिसम गाऊं । गंग महातम तुमहिं सुनाऊं ॥
दरशत गंग सुनो रघुराई । पापजाय सौजन्म नशाई ॥

पान करत गंगाको बारी । सहस जन्म अघ जायखरारी ॥
मंजन करत बढ़ै छवि तनमा । भागै पाप सहस दश जनमा ॥
है परन्तु तहँ मंत्र अधीना । बिना मंत्रहै सबफल हीना ॥
हरहर मंत्र महा सुख दाई । मंजन मंत्र वेद गोहराई ॥
वेदसार यह मंत्र कहावै । तुरत पाप सबकाटि बहावै ॥
हरहर करि जो नाहिं नहाई । वृथा जन्म जग भीतरपाई ॥
गंगा तेहिपर क्रोध पसारैं । सकलपाप तेहि ऊपर डारैं ॥
दो० हरहर कहि जो मंजहीं तिनकर पाप छुड़ाय ।
जो हर हर बोलैं नहीं तिनको देहि बढ़ाय ॥
सो० जो मंजै रघुनाथ कहि हर गंगा कूप जल ।
तेहिको करै सनाथ दै सुरसरि निज दर्श फल ॥
सुनि रघुनाथ मंत्र अघ भंगा । बोलि उठे प्रभु जयहरगंगा ॥
पुनि हर गंगा कहि करि मंजन । आगेचले सकल दुखभंजन ॥
पहुंचि जनकपुर शिव धनुतोरा । भृगुपति गर्भ हरी बरजोरा ॥
तुरत अवध पुर पठई पाती । आये दशरथ सहित बराती ॥
भयो बिवाह सिया रघुवरको । मिटाशोच सबजनकनगरको ॥
उत्सव सहित यथा श्रुतिगाई । ब्याही जनक सुचारिहु भाई ॥
लहो याचकन बस्तु अनेका । भये निरीछित पुनियंचवेका ॥
जिनपावा तिन परहि बहावा । पुनिहुलहीतिनजो मनभावा ॥
लखि बषशोशलमय कर जोरी । राम सियासों मांगत ओरी ॥
राखु सदा ममपति रघुराई । दे शिवभक्तिसुभग सुखदाई ॥
राम ब्याह जस भयो उछाहू । वरणिनसकैं सहस अहिनाहू ॥
तहां कौनि नर बुद्धि मलानी । तेहिते मैं संक्षेप बखानी ॥
बधुन सहित नृप बिदा कराई । लवटि बरात अवधपुर आई ॥
भा परछन सब भांति सुहाई । मातन चरण राम शिरनाई ॥
दो० लहोदान सन्मान सब द्विज याचकन अघाय ।
विस्तर युत वरणत थकत श्रुतिशारदअहिराय ॥
सो० ठहरे जेहि पुरमाहिं लक्ष्मीपति लक्ष्मी सहित ।
चित्रित तहँ कछुनाहिं सुखसंपति शोभाधरम ॥

जबसे सिया सहित रघुवीरा । व्याहि अवध आयो मतिधीरा ॥
नित नित मंगल बढ़त सुहाये । घर घर बाजत अनँद बधाये ॥
भ्रातन सहित राम उठि प्राता । सरयू निकट जात जगपाता ॥
करि मंजन सरयू शुचि बारी । प्रीति सहित पूजत त्रिपुरारी ॥
हरषितलौटिपितहिं शिरनावत । करिप्रणाम मातहिं हरषावत ॥
बहुरि करत भोजन विश्रामा । राज काज सब देखत रामा ॥
दशरथ लखो राम सब लायक । कीनविचार सुमननरनायक ॥
टीका राज रामकहँ देऊं । हर्ष समेत नयन फल लेऊं ॥
असविचारि गुरु शासन पाई । सामासकल नरेश मँगाई ॥
समुझि राज सुरकाज कवंधन । मनहिं विचारकीन रघुनंदन ॥
सियसों मति कीन्ही तजिराजू । चलिये विपिन संतसुरकाजू ॥
भरत मातु शिरधरि बदनामी । चलेविपिन उरधरिवृषगामी ॥
चले राम लक्ष्मण सिय साथा । प्रजामातु पितुभयो अनाथा ॥
तजोप्राण दशरथ तेहि शोचू । निजबरदान समुझिमनपोचू ॥

दो० जाय नहायो सुरसरी सिया लषण युत राम ।
केवटको सेवक समझि दिह्यो ताहि मनकाम ॥
सो० पूंजी सविधि महेश गंगतीर रचि पारथी ।
मांगी सुबर रमेश दनुज बधन सुर छूटवो ॥

तव सित भस्मलाय बनवारी । जटाजूट बांधो शिर भारी ॥
सानुज भाल त्रिपुण्ड बनावा । सहितविधान वेदजिमिगावा ॥
धूलित भस्म करी सब अंगा । मनहुं उभय मुनिबन्योअनंगा ॥
ताक्षण राम लषण जस सोहे । उपमा हेरि हेरि कवि मोहे ॥
मिलतिनउपमाबहुअभिलाषी । शैव तरास वेदमत भाषी ॥
सुरसरि उतरि प्रयाग नहाई । भरद्वाज पहं गे रघुराई ॥
राम प्रणाम कीन मुनि देखी । मुनि वरआशिष दीन विशेषी ॥
शंभु भक्ति पूछी रघुनाथा । तत्त्व समेत कही मुनि नाथा ॥
सुनिरघुपति अतिशय सुखमाना । चित्रकूट प्रभु कीन्ह पयाना ॥
चित्रकूट पहंचे रघुराई । पूजी मत्त गयंदहि जाई ॥
मत्त गयंद लिंग शिव केरा । विधि अस्थापित तेजघनेरा ॥

अत्रीमुनि से कीन मिताई । पर्ण कुटी तहँ रघुवर छाई ॥
शंभु कथा सादर मुनि गावत । सुनिसियरामलषण सुखपावत ॥
नितहि प्रात उठि रघुकुलकेतू । पूजत मत्त गयंदसहेतू ॥
मांगत शिवसों वर रघुराई । दनुज निकंदन देवरिहाई ॥

दो० भरत मनावन को गये पुर जन मातु समेत ।
तत्व बोध रघुपति दई कीन्ही बिदा निकेत ॥

सो० बसि सोनंदी ग्राम शिवहि पूजि मांगत यही ।
कुशल लषणसियराम अवधिबादिआवें अवध ॥

यहाँ रामसिय लषण समेता । बनबसि सुरनमुनिनसुखदेता ॥
एक दिवस चुनिफूल शुभग तर । बनई रामस्वकर भूषण वर ॥
सो सीतहि रघुपति पहिराई । फटिक शिला बैठे सुखदाई ॥
नाम जयन्त इंद्र सुत जोई । दीखचह्योरघुपति बलसोई ॥
काग रूप धरि सो करि धावा । सीता चरण चोचक्षतलावा ॥
रुधिर चलत देखी भगवाना । अति सर्वज्ञ तासु छलजाना ॥
अतिशय क्रोध कीन रघुराई । अनल बाण यहि देउँ जराई ॥
तबतिहिसुरपति सुतलखिरामा । निजमनशोचकीनसुखधामा ॥
जोयहि करौं भस्म मैं आजू । अतिशयदुखितहोय सुरराजू ॥
सुर सुख हेत मोर अवतारा । दुखित करबनहिंकाजहमारा ॥
अस्तविचारितिहिबलहिलखावा । सीक बान रघुनाथ उठावा ॥
मंत्र षड़क्षर शिव सुख धामा । जपतजाहि निशिवासर रामा ॥
तासों मंत्रित करि त्रिनवाना । तजी राम भा अग्नि समाना ॥
सो प्रमाण तुलसी असगावा । प्रेरित मंत्र ब्रह्मशर धावा ॥

दो० देखि वान रविमान सो करि डरबहुत भगान ।
युग अंगुल पाछेचलयो जानि राम रुचिवान ॥

सो० गयो तुरत पितु लोक तहौं नपाई शरण जड़ ।
सब जग फिरा सशोक हरि हर बैरी कोरखै ॥

तब सोलै नारद सिख भारी । जाय राम ढिग शरण पुकारी ॥
सीक बाण तेहि पाछे आवा । करिप्रणामतिहि रामजुड़ावा ॥
शरण परे तिहि हतीन प्राना । करि यकनैनतज्यो भगवाना ॥

तजी ठौर सोलखि उत्पाता । आगेचले सकल जगपाता ॥
आगे राम छिहे धनुबाना । पाछे लषण बीर बलवाना ॥
तासु मध्य सीतागुणखानी । सुरसरि यमुनबीचजिमिबानी ॥
पर उपमा इमि भाषत संता । मनहुंकामरति सहितबसंता ॥
रामहि मिलत जोईमुनिमगमा । आशिषदेत परतकोईपगमा ॥
निश्चर मिलतताहि हनिडारत । देत स्वलोक वाणके मारत ॥
परम तत्वतहँ जान मुनीशा । करै भक्ति शिव सबअघखीशा ॥
कैस्यो होय महा अघकारी । शिव जापक नहिंनर्कविहारी ॥
सोलखि हनत राम निज हाथा । देत स्वपुर तिहि कोरघुनाथा ॥
शिव प्रताप कञ्ज फूलत ऊनर । रावणादि भेहरिके दूनर ॥
अघिन पाशु पतकर लखुलाका । हरिबिनभयो नपरसमताका ॥

दो० जो अघतजि गहिवेद मत करै शंभुकी भक्ति ।
ताकी महिमा कहनको वेदन राखैं शक्ति ॥
लखि ऐसहु शंकर चरण करैनअघ तजिप्रेम ।
तिहिते श्वानशृगाल भलकबहुं न ताकोक्षेम ॥

सो० तहँ आयो सुर राज देन लिखापन मुनिन कहँ ।
जब आवैं रघुराज रावण दिशि बल भाखिहू ।
कहत न पायो गाथ आवत लखि रघुनाथको ॥
तुरत फिर्यो सुरनाथ करिप्रणाम निजपुरगयो ।

दैसरभंगहि गति रघुनाथा । जाय घटज पद नायो माथा ॥
लखितिहि शंभुभक्ति अधिकारी । बहुसत संग कीन बनवारी ॥
निरखि राम उर शंकरध्याना । घटसुत कह्यो बहुतशिवज्ञाना ॥
तब मुनिसन कह कृपानिधाना । आयसु होय करौं तहँथाना ॥
करिप्रणकुटीछाय तृणशाला । कछुदिन भजनकरौं शशिभाला ॥
कह मुनिरामसकल तवथाना । जहँन बसहुअसकौन मकाना ॥
घटघट बसहु चराचर केरे । देत बड़ाई मुहिं शिव प्रेरे ।
पंच वटी जहँ दंडक भीतर । सो अतिठौर मनोहर रघुवर ॥
तहँवसि करहु शंभु तपरामा । पूरहु मुनिन केर मनकामा ॥
हतौ दनुजजिहिलगिऔतारी । जयति राम बैकुंठ विहारी ॥

चलेराम लक्षमण सिय साथा। कहिजय उमानाथ शशिमाथा॥
रामभरत पगकहि त्रिपुरारी। बिन शिवभजेपियत नहिंबारी॥
तिहि नर मूढ़करत अपमाना। जानि शिवहि सब देवसमाना॥
जासुध्यान धरिविधिबनवारी। करत काज बनिजगपतिभारी॥
सो प्रमाण तुलसी असगावा। गरुड़ काग सम्बाद स्वहावा॥
सुमिरिउमाशिवसिद्ध गणेशा। पुनिप्रभु चले सुनहु विहँगेशा॥
दो० कलिमें तुलसीदाससम कस्यो नहरि सनेह।
इष्टपक्ष दरशायके बनयो रघुपति गेह।
सो० कतहुं गोलिकहुंखोलि शंभु तरवछाड़हुनहीं।
लखोतासु की बोलि इष्ट पक्ष तजितरवमत॥
पंचबटी महँ रचि तृण शाला। सियालषणयुत टिक्योकृपाला॥
फरे हरे है सब द्रुम झारी। मिटी शाप मुनि वरकीभारी॥
ऋषिमुनिनिकर रामपहँआवैं। सुनैं कथा शिवकी पुनि गावैं॥
तहँ लखि राम अस्थिकोढेरा। पूंछेहुऋषिन हालतिहिकेरा॥
सुनि ऋषिहाड़ निशाचरखाई। अतिशय दुखितभये रघुराई॥
भुज उठाय कीन्हो प्रण भारी। जो सहाय मम है त्रिपुरारी॥
जगमा निश्चर रहै न पावै। राम नाम मम तब कहवावै॥
सुनि हर्षित भे सकल ऋषेशा। बोलि उठे जय जय अवधेशा॥
एक समय हरषित रघुनाथा। लखिकहलषणजोरियुगहाथा॥
नाथ शारधा यक मन मोरे। सो पुरिहै करुणा बश तोरे॥
पूजा बिरति भक्ति अरु ज्ञाना। सहित बिबेक कहौ भगवाना॥
माया जीव विवेक बढ़ाई। ईश्वर भाव कहौ रघुराई॥
बेद वरण आश्रम रघुराई। इन कर भेद कहौ बिलगाई॥
अपर सुना अस कछु रघुराई। कलिमें कलपित पंथबनाई॥
ठग लोग तव दास कहाई। तिनके चिह्न कहौ समुझाई॥
सुनि अस प्रश्न सहोदरकेरा। हर्षित भयो कृपाल घनेरा॥
सरहि शीश पर फेरेहु हाथा। बोलेहु बचनसुमिरिशशिमाथा॥
सुनहु बंधु प्रियसहितविवेकू। पूजा इष्ट करै करि टेकू॥
तहां वेद अस भेद बतावत। फल प्रद सकल शंभुको गावत॥

पूजै चहै जौन सुर हितकरि । देतसकलफलतेहिशिवअनुसरि ॥
जिमिहिकर्मसब गोचरठाना । होत सुखहिसे सकल बखाना ॥
पूजेशिवहि सकलसुर रीझत । जिमिमुखभखेसकलअँगसीझत ॥
दो० तेहिते जोनर चतुर अति त्यागि सकल मनमाहि ।
पूजत शिवहि सो इष्टकरि लखि सर्वोपरि ताहि ॥
सो० मम सुभाव सुनुतात शिव पूजै सोइ मोरजन ।
सपनेहुमोहिं न सुहात शिव बैरीमोहिंबहुभजे ॥
भक्तिके लक्षण अब सुनु भ्राता । भक्ति शंभुअतिशय सुखदाता ॥
प्रथम बिप्र पद प्रीति बढ़ावै । ताफल मोरि दासता पावै ॥
करै अदंभ मोरि सेवकाई । सुदृढ़ रहै ममपर लौलाई ॥
ताको फल शिव दास कहावै । शंभु भक्ति करि परगति पावै ॥
ताहि सविस्तर देउ गनाई । जब शिव भक्तिसुदृढ़उरआई ॥
तब बैराग पाय भा ज्ञाना । दीन चिन्हाय ब्रह्म निरवाना ॥
ताहि चीन्हिभा ताहि समाना । जासु नाम बहु बेद बखाना ॥
निरगुण सगुण ब्रह्म शिवईशा । जासु अंशसे भे जगदीशा ॥
बामसे बिष्णु जासु हम रूपा । पालन हेत भये जग भूपा ॥
दक्षिण से बिधि भो जगकारी । रह्यो मध्य निजलय गुणधारी ॥
माया रूप कहौं अब गाई । हम हमार तुम्हरो तुम भाई ॥
इमिहै माया सोइशिव दासी । डारे रहति सकल परफांसी ॥
इंद्री दृष्ट जहां लग जानो । माया राज तहां लगि मानो ॥
सो छूटै शिवकी करु नाई । अपर उपाव न एकौ भाई ॥
सकलकादिअरु तृणपरि यंता । दारु यंत्रिका भाषत संता ॥
माया तार रूप अति गावै । तहां तारधर शिवहि बतावै ॥
तेहिबशनाचतसकल चराचर । उभय रूप तहँलखोअज्ञाकर ॥
बिद्या अपर अबिद्या भावा । तहां भेद अस वेद बतावा ॥
ईश्वर भजनविषे जो राता । बिद्या रूप लखो तेहि भ्राता ॥
करै काज पर शिवहि बिहाई । ताहि अबिद्या जानो भाई ॥
जीव सकल जानो तुम ईशा । होत भिन्न सोइ भयो अनीशा ॥
माया मिल स्वजीव कहावत । बनतईश जबशिवहिरिझावत ॥

दो० जिमि सुरसरि जल भिन्नहि नाम परचोतिहि खार।
पुनि करुणा लहि गंग की मिलत गंग को धार॥
ईश भाव सुर शीश मणि राम कह्यो निर धारि।
हम सब स्वारथ दै सकत परमारथ त्रिपुरारि॥
सो प्रमाण तुलसी लिखा जो भागवत अतीव।
बन्ध मोक्ष प्रद सर्व पर माया प्रेरक सीव॥
सो० वर्ण भेद सुनुचारि मुखजभुजजऊरुजपदज।
वेदकहतनिरधारिबिप्रहि सब परमुख्यकहि॥
आश्रम भेद सुनहु चित लाई। प्रथम ब्रह्म चारी श्रुति गाई॥
पुनि गृहस्थ को आश्रम गावा। तीसर बानप्रस्थ बतावा॥
संन्यासी तहँ चौथ स्वहावा। सर्वोपरि तेहि भाव लखावा॥
है संन्यास धर्म अति भारी। जापर कृपा करहिं त्रिपुरारी॥
तहां गृहस्थाश्रम अति सुंदर। जो करि यत्न रिझावै शंकर॥
चारिसे भिन्न सुकल्पित पंथा। कलिमें बनै साधि मन मंथा॥
तिनके चिह्न सुनो तुम भ्राता। अति अभिमानरहै तेहिगाता॥
निजसम गनै न ज्ञानी परको। बनहिं दासमम निंदहिहरको॥
दीनहिं देखि देहिं बहु गारी। अतितामस नहिं जातसम्हारी॥
मिलै जहां घृत दूध मिठाई। टिकैं तहां बहु दंभ दिखाई॥
शिवहि न पूजैं मूढ़ विशेषी। जरहिं बहुत शिवभक्त न देखी॥
मोरभक्त शिव निन्दक होई। जानहु बंधु चिह्न तुम सोई॥
शिवहिनिन्दिअसअचरजभारी। बनै दास मम ज्ञान बिसारी॥
बाप से बैर पूत से नाता। कहौ बंधु कब सुधरै बाता॥
होयँ सकल खरवा बिहारी। जबलग रहैं निशोश तमारी॥
सुनिअसलषनजोरियुगहाथा। हरषि राम पद नायो माथा॥
सो प्रमाण तुलसी कहिगाहै। जो सुदास रघुनंदन का है॥
जोनिजमुखन रामजीभाषा। लंककांड में सो लिखि राखा॥
शिवकोनिंदरिभक्तिचहैमोरी। सो नर मूढ़ ताहि मति थोरी॥
शिव बैरी मम दास कहावा। सो नर सपनेहु मोहिं न पावा॥
कलिमानुषगतिसुनहुमुनीशा। तजि रघुनाथ वचन बनि ईशा॥

लोगन सिखै दंभ बहु खोवै । सहस जन्म रवरव में रोवै ॥
दो० ऐसो मत रघुनाथ कर सुनि न करै जो चेत ।
सो किसानउसरौरको कबहुं न जामिखेत ॥
सो० यहि बिधि कथा पुराण कहत राम प्रिय अनुज सन ।
धरे शंभु पद ध्यान बनबसि घर सुधि नहिं करत ॥
एक दिवस शूर्पणखा नामा । रावण बहिन महा दुख धामा ॥
धरे सुभग सुठि नारिस्वरूपा । आई जहां कौशला भूपा ॥
राम साथ याची निज व्याहा । बहु सर्वज्ञ राम मुनि नाहा ॥
लक्ष्मणकर श्रुति नाक कटावा । जनु रावणहिं सँदेश पठावा ॥
तब गै सो खरदूषण पाहीं । जो अतिबली थाह बल नाहीं ॥
चढ़्यो क्रोधकरि कटकसमेता । हत्यो राम तिनको रण खेता ॥
तब रावण पहँ गै बिलखाई । सकलकथा निज रोय सुनाई ॥
तोहिंजियत अस मोरहवाला । धिक धिक बीसबाहु दशभाला ॥
खरदूषण त्रिशिरा को मारी । करी मनहुं अधनाश तुम्हारी ॥
खरबध सुनत बहुत भयमाना । लखि अवतारधर्यो भगवाना ॥
दिगपति सकल सुरासुर झारी । खरसमान खरसकलबिचारी ॥
हरिहरछांड़ि न तेहिबधलायक । अतबिचारकरिनिशिचरनायक ॥
लै मरीच आवा बन माहीं । बहुत बिचारकीन मनमाहीं ॥
करि मारीच कपट को भाऊ । बन्योमृगा जरजटित जराऊ ॥
दो० कह्यो जानकी ललकि मन अति सुंदर यहि चाम ।
यहि को हति आनहु तुरत कृपा सिंधु सुखधाम ॥
सो० मन महँ हँसि रघुराय शिवमायालखि अतिप्रबल ।
सीतहिं लषण तकाय चल्यो राम तेहि हतन को ॥
कीन राम तेहि पाछे धावा । निशिचर करत कपटको भावा ॥
कबहूं दुरत कबहुं खुलिजाई । यहि बिधि दूरि गयो रघुराई ॥
तब तकि राम बाणतेहिमारा । मरत बेर लक्ष्मणहिं पुकारा ॥
निशिचरबोल न चीन्ह्यो सीता । जानेहु राम पुकारत भीता ॥
सीता कह्यो लषण तुम जाहू । रामहिं जीति लीन जनु काहू ॥
कह्योलषण अतिसकुचितगाता । हैं अजीत रघुनायक माता ॥

सुरनरअसुरन कोउ असलायक। रणमें जीति लेय रघुनायक॥
तुम्हैं सौंपि मोहिं गे रघुराजा। तजतमोहिंलागत अतिलाजा॥
कह्यो सिया कछु वचनकठोरा। लक्ष्मणभे अतिदुखितअथोरा॥
रेख खँचाय सौंपि बनजीवन। चले रामपहँअतिसकुचितमन॥
तब रावण धरि भिक्षुक बेसा। देवदत्त बोल्यो लंकेसा॥
तब सीता भिक्षा लै आई। रेख बीच नहिं सो धरिजाई॥
तब रावण बोला छल सानी। बांधी भीख लेत बड़ि हानी॥
असमुनिसिया तज्योजबगुंडा। लीन उठाय तुरत दश मुंडा॥

दो० निज स्वरूप दिखराय तब लीन्ह्यो सियहि उठाय।
रथ ऊपर बैठारि करि लंकहि चल्यो उड़ाय॥

सो० देखि जटायू ताहि बहुत लड़ेयो सिय हेतु मुनि।
जानि बलो मन माहिं जारयो परभर अनल सों॥

रावण गयो सियहि लै लंका। गयो राम ढिग लषणसशंका॥
लौट्यो राम चर्म लै तासू। देखि लषण मनभयोहिरासू॥
तब पहुंचे प्रभु पर्ण निकेता। देखि सिया बिनभयोअचेता॥
हाय हाय कहँ गई जानकी। जीवन जीवन प्राण प्राणकी॥
अस कहि लषण राम बहु रोये। अँशुवन से सब अंग भिगोये॥
सुमिरत जाहिमिटत दुखभारी। तिहिदुखयहलीलात्रिपुरारी॥
आगे चलत जटायू पावा। सो सियके सबहाल बतावा॥
तब अगस्त पहँगे रघुराई। सकलव्यथा निजरोयसुनाई॥
नाथ नारि मम गई चोराई। धिक मोहिं क्षत्रीवंश कहाई॥
दे मुनीश सो यत्न बताई। रावण मारि सिया लै आई॥
कह्यो अगस्त धरहु मन धीरा। मिथ्या सहो नारिहित पीरा॥
कुल परिवार नारि भो रोगू। नदी नाव इव सब संयोगू॥
व्रत भंगिनी नारी को नामा। तिहिहितकरत शोचकतरामा॥
ह्रिस्वस्थित भजुमनमथजितको। जो है सुखद सदाउतइतको॥

दो० बहुतलखायोज्ञान मुनिरामहिंकुछनसोहान।
जरतअनलघृतजतुपरयोसीयबिरहअधिकान॥

सो० हम क्षत्री रघुवंश तापर लीन्हे धनुष शर।

कीन्हे विना विध्वंस सीय चोरको कलनहीं ॥

अबै ज्ञान उर नहिं ठहराई। सिखबज्ञानपुनिसीतहिपाई ॥
तब रिसान मुनि करिबहु क्रोधा। है ज्ञानी तुम लहत नबोधा ॥
करो रुचै जो तुम्हें नरेशा। अति प्रबलाहै अजा महेशा ॥
रावण जितब कठिन अतिभारी। तुम अस बीर चढ़े धनुधारी ॥
रावण बल नहिं बरणि सिराई। कहत शेष शारद थकिजाई ॥
सहजहि शिवगिरि लीन उपारी। जिती इंद्रतिहिसुतबलधारी ॥
कुंभकर्ण तिहि बंधु बलीना। अर्द्ध वर्ष सोवत डर हीना ॥
जागत यक दिन होत भयावन। सकलदेव तब करत परावन ॥
अक्षय कुमार तासु को बेटा। ताको बीर देत सब भेंटा ॥
इन सम कोटि रहत बलवाना। धात मयो तिहिकोट बखाना ॥
खाई सिंधु बहै दिशिचारी। इतन्यो पर रक्षक त्रिपुरारी ॥
तिहि तुम चहत मारिबो रामा। मोहिंलगत अतिअचरजधामा ॥
प्रथम कहौ तुम एक विचारी। किहिविधिउतरिजाहुकधिभारी ॥
सुनि रघुनाथ घटज की बानी। रोयो सिया रूप उर आनी ॥

दो० रोय गिरयो मुनिचरण में त्राहि २ कहि राम।
कीमैं त्यागत प्राणहों की मम पुरवहु काम ॥
सो० तुम गुरुसरिसमुनीश तुम्हेंविदितसबयुक्तिहै।
करहुयतनतजिरीसमोहिं जानिनिजदासलघु ॥

पियो सिंधु करि बूंद समाना। इल्वल हत्यो महाबलवाना ॥
रावण मरत कौनि मुनि देरी। जो तुम कृपाकरो दिशि मेरी ॥
तुमसे अधिक पाशुपत नाहीं। सिंधु सुखाय एक क्षणमाहीं ॥
शंभु भक्ति तुम करो अदंभू। तुम पर कृपा करैं बहुशंभू ॥
जोतुम यतन करो मम लागी। शंकर देहिं रावणहिं त्यागी ॥
मुनि पदरोय परयो अकुलाई। तब मुनीश गहि बांहउठाई ॥
लखि प्रचंड माया शिव केरी। पोंछि आंशु कर शिरपरफेरी ॥
सुनहु राम अब बात हमारी। जोतुम चहत रावणहि मारी ॥
करहु शंभु तप दृढ़ता धरिके। शिवहिरिझावहुबहुतपकरिके ॥
सहस नाम शिवको बहु प्यारा। तासु नाम जो है श्रुतिसारा ॥

लह्यो शंभु सन सो बनवारी । धातहि दिह्यो जानि जनभारी ॥
तिहि विधि जानि वेद को सारा । थाप्यो साम बीच करतारा ॥
सनकादिक विधि से सो पावा । व्यासहि सो करि प्रीति सिखावा ॥
करत व्यास तिहि को नित जापा । पद्म पुराण बीच सो थापा ॥
दो० जपो बार में बाग्शुचि निशि में शुचि शुचि बार ।
जब लग रीझैं शंभु नहिं तब लग अवधि विचारि ॥
सो० लेपि त्रिपुंड्र लिलार गहि रुद्राक्षहि बेदविधि ।
बैठिय कंत भुवार करो पाठ श्रुति सारकी ॥
तब रघुवीर हरषि कर जोरा । पुर यहु नाथ मनोरथ मोरा ॥
अब कृतकृत्य भयों मैं स्वामी । दिह्यो सीख लषि निज अनुगामी ॥
असकहि सिख्यो सहस शिवनामा । जाके जपत मिलत सब कामा ॥
शोधि घरी शुभ कर अस्नाना । भस्म बिछाय कीन तहँ थाना ॥
भाल विशाल त्रिपुंड्र लगाई । सकल अंग रुद्राक्ष बनाई ॥
करि साधक लक्ष्मण को दूरी । करण लग्यो शिव कीतप तूरी ॥
राति दिवस में शुचि शुचि बारा । करत पाठ रघुवर श्रुति सारा ॥
पाठ पूर करिके रघुराई । जपत मंत्र सरवर न सोहाई ॥
इमि जो गये एकादश बारा । अति प्रसन्न भये शंभु उदारा ॥
सुरन सहित भे प्रकट महेशा । कछु बरणौं तिहि अवसर भेशा ॥
प्रथमहि भयो अवाज अघोरा । प्रलय मेघ करत जनु घोरा ॥
आंधी चल्यो भयो अँधियारा । दनुज बिचारि राम शर मारा ॥
उड्यो न बाण बँध्यो दोउ हाथा । तबै नयन मूँद्यो रघुनाथा ॥
शिव शिव कहि तब नयन उघारा । इंद्रादिक सब देव निहारा ॥
तासु मध्य रथ दीख अनूपा । तिहि पर लख्यो शंभु सुरभूपा ॥
पांच बदन दश भुजा बिशाला । शशि त्रिपुंड्र सोहत अति भाला ॥
अहि भूषण सोहत शिरमाला । तीनि नेत्र जिमि पंकज लाला ॥
बिषछवि कहि न जात मोहिं पाहीं । गंगाधार बहै शिर माहीं ॥
बांयें बिष्णु लिहे कर छाता । चवँर डोलावत दक्षिण धाता ॥
यहि बिधि सेवत देव समाजा । उमा रूप अर्द्धंग बिराजा ॥
देखि राम तब भयो निहाला । बोलि उठ्यो जय जय शशिभाला ॥

आगे चलि प्रणाम बहु कीन्हा । हर्ष सहित निज इष्टहि चीन्हा ॥
दो० तब शिव रथते उतरि करि रामहिं लीन उठाय ।
प्रीति सहित शिर सूंघेहू हियमें लीन लगाय ॥
सो० निज गोदी बैठाय शिव कर फेरेहु सकल तन ।
कह्यो शंभु हर्षाय मांगु राम बर मन रुचित ॥
कह्यो राम अतिशय हर्षाई । प्रथम देहु निज भक्ति गोसांई ॥
जो अनपावनि सदा सोहावनि । सदा दासको मन हर्षावनि ॥
दूजे प्रीति देहु निज पदकी । जो कुठार है माया मदकी ॥
तीजे देहु सुवर मद नारी । जेहिते लेहु रावणहिं मारी ॥
त्रिया मोरि हरि लै गा रावन । ताहि पाय हम वाहि नशावन ॥
तुम्हरे बल सोहै बलवाना । तासु पक्ष त्यागहु भगवाना ॥
साम मध्य है श्री मुख बानी । दीन हेत हौ अवघड़ दानी ॥
जौन दीन तव किमि असभाषौं । सदा भरोस चरण तव राखौं ॥
सुनत प्रसन्न भयो अति शंकर । एव मस्तु कहि हरेउ भयंकर ॥
दिह्यो पाशुपत शर असभावत । प्रलय हेत जो निज कर राखत ॥
यहि ते हतौ रावणहिं जाई । लै सँग कीश भालु कट काई ॥
यहां प्रमाण व्यास को गावा । पद्म पुराण देखि मन भावा ॥
उत्तर खंड बिषे सो लेखो । तहँ अध्याय गँगन ऋषि देखो ॥
ऋषिण कृष्ण सम्बाद सोहावा । तहां तीन श्लोक बतावा ॥

व्यासउ वाच ॥

श्लो० एतद्देवपुरारामो लब्धवान्कुम्भसम्भवात् ।
अरण्येदण्डकारण्ये प्रयया प्रघूद्वहः ॥
नित्यंत्रिषवणश्नाई त्रिसन्ध्यासुऽस्मरन्शिवम
तदासोदेवदेवोपिप्रत्यक्षंप्राह राघवम् ॥
इदंपाशुपतंदिव्यंप्रग्रहातरघूद्वहः ।
एतदासाध्यपौलस्त्यंजिहिमासोकमर्हसि ॥
दो० सरबर लहि रघुबंश मणि बोल्यो तब कर जोरि ।
नाथ लह्यों मैं जन्म फल करि सेवकाई तोरि ॥
सो० यदपि दीन तुम बाण तदपि देखि दश शीश बल ।

मननहिं करत पयान तेहि मारब को तुम बिना ॥
तब शिव कह्यो सुनो रघुराई। सब बिधि करिबेतोरिसहाई ॥
तुम अनन्य मम दास सुहावा। तुमसे परप्रियश्रुतिहु न गावा ॥
मम अंशज यककपि हनुमाना। अंजनि सुवन महा बलवाना ॥
पूरण अंश मोर सो भावा। महाबीर तेहि वेदन गावा ॥
आगे मिली तोहिं सो आई। सब बिधि करी तोरिसेवकाई ॥
सब प्रकार तव तत्त्व लखाई। जिहिलखिमूढ़करहिं सेवकाई ॥
रणमें सकल सुकरिहै कामा। तुम्हैं न कछु श्रम ह्वैहै रामा ॥
तब करजोरि कह्यो रघुराई। बिनती एक सुनो जग सांई ॥
पूरण अंश तोर सो स्वामी। केहि बिधिहोय मोरअनुगामी ॥
सुनहु राम कह शशि अव तंशा। तुमहु हवो मम पूरण अंशा ॥
पूरण अंश तुम्हैं श्रुति गावा। प्रथम भयो तुम जेठसोहावा ॥
तेहिते सो अनुचर तुमस्वामी। यहिमिसु बोधकीन्हवृषगामी ॥
अस कहि शंकरगयो बिलाई। सहित सुरन निज पुरगेसांई ॥
रामगये उठि कुंभज पाहीं। सकल वृत्तांत कही दुखदाहीं ॥
दो० सुनि अगस्त हर्षाय अति आशिष दीन सोहाय।
बिदा मांगि मुनिराज सों अग्र चल्यो रघुराय ॥
सो० भै शवरी सों भेंट तासु बैर खायो हरषि।
ताको अघ सब मेटि दिह्योराम निजधामवर ॥
किष्किंधा बन कपि अस्थाना। पहुंचे अनुजसहितभगवाना ॥
आगे आय मिल्यो हनुमाना। रामहिंचीन्हि महासुखमाना ॥
सकलकथा निज हनुमत गाई। लै सुग्रीवहि कीन मिताई ॥
स्वारथ लागि सुकंठहि पाली। ताल बेधिमार्‌यो छलिबाली ॥
दै सुग्रीव राज तब बासा। किह्यो प्रवर्षणगिरिकिधिमासा ॥
देखि वृष्टि ऋतु को सुखसारा। सीय बिरह दुखसहतअपारा ॥
अब रावणगति सुनहु मुनीशा। जेहिविधिभयोतासुवलखीशा ॥
एक दिवस नारद मुनि राई। गयो लंक शिव प्रेरण पाई ॥
रावण नारद आवत देखी। कीन दंडवत हर्ष विशेखी ॥
तब रावण पूछ्यो हर्षाई। निजआगमन कहो मुनिराई ॥

दो० बहु दिनते तुम्हरो दरश नहिं पावा हम तात।
यहिते आयों बेगि मैं कहु आपनि कुशलात॥
सो० कह रावण मुसुकात बड़ी अनुग्रह कीन मुनि।
सकल भांति कुशलात शंभु अनुग्रह ते अहै॥
तब नारद बोले मुसुकाई। कहौ रुचै जो निशिचर राई॥
तुम जानत शिव केरि अनुग्रह। ममसतसेशिव मानतविग्रह॥
एक बंधु तुम और धनेशा। तहां भेद बहु करत महेशा॥
तासु निकट निज नगर बसाये। एकहु बेर न लंकहि आये॥
तेहिसे राखत बहुत मिताई। कहतझूठिफुरि तुमहिंबनाई॥
अस दुर्भाव रखत त्रिपुरारी। लखतनहीं तुमकाहविचारी॥
असकहि नारद बिदा कराई। ब्रह्म भवनगे शंभु मनाई॥
तब रावण मन कीन विचारा। कह्योसत्य सबघात कुमारा॥
जब लग शंभु न लंका आवै। तबलग मोरि न शंका जावै॥
ल्याऊं गिरि कैलास उपारी। घरहि थापि पूजौं त्रिपुरारी॥
कौनि कुबेर कीन सेवकाई। मोहिंतेअधिकजोनहिंप्रभुताई॥
असकहि तुरतचल्योदशशीशा। लीन्ह्यो तुरत उपारि गिरीशा॥
तेहिअवसर शिव उमासमेता। करत रहे विश्राम निकेता॥
जब रावण गिरिलीन उखारी। हाल्यो शोरभयो अतिभारी॥
दो० तब गिरि हालब जानिके अतिकंपित ह्वै माय।
त्राहित्राहि कहि सडर उर शिवउरगै लपटाय॥
सो० तब शिव कीन विचार जान्यो रावणकी कला।
मन रिसाय त्रिपुरारि दीन शाप अतिकोपकरि॥
कीन होय जो अस उतपाता। प्रकटै तुरत तासु दुखदाता॥
केतरौ होय मोर हित कारी। रक्षाकरौं न तेहि यकबारी॥
गिरिवासिन कीन्ह्यो बिकलाता। बंशसहित सो होय निपाता॥
बरबश हरि तेहिसकै न मारी। नर ह्वै हतै ताहि बनवारी॥
तज्यो पक्ष शिवकरि तेहिपरना। लखिअनन्यनिजभक्तअपरना॥
भक्त बैर शिव बैर बढ़ावत। प्रेरिपंगु गिरि शिखरचढ़ावत॥
शंभु शाप रावण ढिग गयऊ। देखिशाप बहु बिस्मितभयऊ॥

धरिगिरि तहां गयो सो लंका । अहंकार बश भूल्यो शंका ॥
राम कथा अब सुनो ऋषेशा । शिव प्रेरन लहिभे अवधेशा ॥
सीय ब्याहिकरि भे बनबासी । बनमें बहुत निशाचर नाशी ॥
तब रावण सीता हरि लेई । राम लह्यो शावर शिव सेई ॥
करि सुग्रीव मित्र अवधेशा । वालिहन्यो करिछलबलेशा ॥
वर्षापाय तहां प्रभु रहेऊ । सीय विरहमें बहुदुख सहेऊ ॥
जो विस्तार सहित हमभाषा । प्रथमदेखितुम्हरो अभिलाषा ॥
वर्षा विगत शरद ऋतु पाई । सीय खोज कहँ कीश पठाई ॥
लै मुदरी हनुमान सिधाये । दक्षिण दिशबहु सगुण जनाये ॥
उतरि सिंधु लंका में जाई । सीय देखि बहुमन हर्षाई ॥
तोरि बाग बहु दनुज संहारा । अक्षय कुमार मारि गढ़जारा ॥
सिया सोधलै पुनि फिरिआवा । राम लषणको चित हर्षावा ॥
भालु कीश दल लै जगदीशा । लंकहिचढ़्यो सुमिरिगौरीशा ॥
पहुंचे सिंधु तीर रघुवीरा । करि प्रणामउतर्‌यो कधितीरा ॥
तब हरकारा खबर जनावा । रावण को रघुवर दल आवा ॥
गनबे योग न सो कटकाई । पदुम अठारह मैं सुनिपाई ॥
जोकपिआय प्रथम गढ़जारा । तेहि सम देख्यों कोटिहजारा ॥

दो० सुनि रावणबिंहस्यो बहुत पुनिडाटर्‌यो अतिवोहि ।
बोलत लगे पिशाच जनु भय दिखरावत मोहि ॥

सो० नर कपि भालु अहार ताको वर्णत वीरता ।
याको देहु निकार रहन योग नहिं लंकमें ॥

असकहि बैठ सभा सो जाई । मंत्री सब निजलीन बुलाई ॥
इन्द्रजीत आदिक सुत जेते । रावण तहां बोलायो तेते ॥
मन्दोदरी तहां चलि आई । गयो विभीषण अवशर पाई ॥
आदर सहित सबहिं बैठाई । रावण पूछ्यो मंत्र सुहाई ॥
राम नाम अवधेश नरेशा । दंडक टिक्यों मुनिनके भेषा ॥
सूपणखा तिनसों करि रारी । नाक कान तिनके कर हारी ॥
सुनि खरदूषण लाग गोहारी । तिनकोकटकसहिततिनमारी ॥
सोबधसुनि मैं करिरिस भारी । हर्‌योजाय तेहि सुन्दरिनारी ॥

तासुखोज आवा कपि जोई। तेहि बल विदितहवैसबकोई॥
चल्यो राम अबलै कपि संगा। दियादेखि जिमिचलतपतंगा॥
आवनदेह तासु रुचि राखौं। को कधि पारजायतेहिचाखौं॥
निज निज मंत्रकहो सबभाई। देशकाल ग्यै रीति जनाई॥
बोलि उठे बहु खल हँकारी। महाराज है अचरज भारी॥
सुर दिगपति भूधर तुम मारी। तबकबहूं नहिं मंत्र विचारी॥
दो० नर कपि भालु अहार मम तामें करत सलाह।
ब्यालकटक लखि गरुड़को करनचहो उत्साह॥
सो० बड़ उत्सव की बात जो चलि आवें सब यहां।
पठै दीन जनु धात विधिबश भोजन भवन में॥
तब प्रहस्त बोल्यो कर जोरी। सुनहु नाथ यक बिनतीमोरी॥
मंत्रिन को अस मंत्र न चाही। जासु मंत्र महँ होय तबाही॥
रारि बचाउब काम सयानो। जो हित सहित मोरबचमानो॥
पठै देहु तिनकी तुम नारी। दै परबस्तु तजौ सब रारी॥
लौटिजायँ तो अधिकभलाई। मिटै रारि सब भांति सुहाई॥
जो कदापि फिरिकरैं ढिठाई। तो हठि तिनहिं लेहिंहमखाई॥
मेघनाद सुनि कह्यो सक्रोधा। करत मूढ़ कादर सम बोधा॥
हरी बस्तु फेरब अज्ञाना। जियत देव कादर परमाना॥
सिया पाय सोकरी बिचारा। पठैदीन डेर पाय अपारा॥
जो प्रभु मोकहं देहु रजाई। सिंधु पार तिहि मारौं जाई॥
मारि भालुकपि रामसमेता। करौं अवध में जाय निकेता॥
देखौ पिता बैठि सतकरनी। करौं भालु कपि नर बिनु धरनी॥
तब मय सुता कह्यो रिसवाई। मारत अक्षय न क्यों धरिखाई॥
करत हीन नरकपिसोंधरनी। येककीअगति बनत न बरनी॥
कहबसेकरब बहुतकठिनाई। देहु सिया जो चहहु भलाई॥
कौन बीरता आनब चोरी। लह्यो न कसतिहिथिवधनुतोरी॥
लखिदासीमोहिंमानुनिहोरा। रखु अहिवात सिया दै मोरा॥
दै परबस्तु होहु सतधारी। असत किहे है रण में हारी॥
दो० निज कुल को लखु कंजबन सीता सीततुषार।

तिहिपरिहरिरिक्षहुकुलहि बनहुं न बंशकुठार ॥
सो० रावण कह्यो रिसाय भीत नारि मम बड़ि हँसी ।
कहु तुहिं कतहुं दिखाय ममसम योधाजक्तमें ॥
कह्यो विभीषण युग करजोरी । सुनहु नाथ विनती अबमोरी ॥
दास जानि नहिं कीजै क्रोधा । सव्यन नाथ सरिस पर योधा ॥
परनहिंरामहिं मनुजविचारो । नाथरहिततुम किहिविधिमारो॥
अविनाशी सर्वोपरि भासी । शंकर अंश महा बल रासी ॥
भाभी कहा सो भाभी मानो । देहुसिया तुम अतिहित जानो ॥
रामहिं लखो चराचरनायक । लीला हेत धरयो धनु शायक ॥
नाहिं तो प्रलयकरैंपलमाहीं । को निस्तरै तासु बल माहीं ॥
सीता पठै करौ हित अपना । स्वारथ सकल लखो भवसपना ॥
जो सीता नहिं देहु सुरारी । तुम पर क्रोध करैं त्रिपुरारी ॥
मनुजहुतनुज लखोजोरामा । केहि अपराध हरयो तिहिवामा ॥
यदपिशंभु अति औघरदानी । तदपि लखत सतअसतगुमानी ॥
गहत सत्यतजिअसतमहेशा । राम सत्यब्रत तुम असतेसा ॥
दासजानि मम राखु दुलारा । सीता पठै पालु परिवारा ॥
जतनकरोतुम तजिहठतावत । जबलगि उतरि न सागरआवत॥
दो० फिरत रह्यो आरणय में नाथ एक मम दास ।
सोलखितपवर रामकोआयकह्योमोहिंपास ॥
सो० दंडक में चितलाय राम करी तप शंभुकी ।
शर वर दीन अघाय तव मारनहितशंभुतेहि ॥
तेहिते शिव अनकूल बिचारो । बार बार मोहिं है दुख भारी ॥
तब रावण बोला अभिमानी । सकल सभीत भये ममप्रानी ॥
जो नरदेखि असुर भयमाना । उचितनतिहिममनिकटठेकाना॥
यक कादर सब फौज भगावै । यक पापी सब नाउ डुबावै ॥
मम समीप नरकेरि बड़ाई । करत न सठ तोहिंलाजलजाई॥
असकहिरावण करिबहुरीसा । मारयो लात विभीषण शीशा ॥
ह्वै अतिभीत विभीषण भागा । जाउं राम पहं अस अनुरागा ॥
गँगन पंथ सो चला उड़ाई । कह्यो बचन रावणहिं सुनाई ॥

मैं तहँ जाउं जहां रघुराई। सीता दै तुम करो भलाई॥
अस कहि गयो सिंधुकेपारा। मगन होत मन बारहिं बारा॥
जेहिपदलागितपतमुनिबनमा। जो पद धरे जानकी मनमा॥
जेहिपद छुवत तरीमुनिनारी। सो प्रत्यक्ष हम लेब निहारी॥
दुहुकर छुवब जायहमसोपद। खोउब सकल पाप अपनोगद॥
पहुंचिगयो तब रामकटकमा। कटक देखि भा चित्त अटकमा॥
केहिबिधिकरहिंमोरसनमाना। शत्रुबंधु कहि करहिं अमाना॥
असशोचत तब कटकमझावा। कपिनजाय कपिपतिहिंजनावा॥
तब सुग्रीव राम पहँ जाई। तासु कथा सब दीन सुनाई॥
मंत्रिन से लै राम सलाहा। तिहिपाछे निज परन निबाहा॥

दो० शरण पाल निज बानि कहि अभय दान तिहिदीन।
निज चरणन के दरश फल लंकापति तिहिकीन॥

सो० तब बोले नर नाह सुनहु लंकपति बुद्धिबर।
दीजै सोइ सलाह जिहिबिधि उतरैकपि कटक॥

कह्यो विभीषण सुनुजगपाता। अति चित्रित तुम पूछहुबाता॥
नामलेत तव भवकधिछूछत। जलकधिहेतजतनमोहिंपूछत॥
तदपिकहब हमकरिसेवकाई। मांगहु मग सागर सन जाई॥
सुनिलक्ष्मणअतिशयमनमाखे। राम चरण पर कर शिर राखे॥
नाथ सुनत अस बड़िकदराई। मिलै पंथ तब कटक चलाई॥
आज्ञा मिलै देहु कधि जारी। उतरै कटक होय सुखभारी॥
जेहिबलघटजताहिचखिलीन्हा। सोशिवमंत्रहरषिमोहिंदीन्हा॥
लक्ष्मण सो बोलेहु रघुबीरा। धीरज धरहु न होहु अधीरा॥
बीर भाव अस वेद बताई। प्रथम शांति पाछे मनसाई॥
असकहिगयो सिंधुतटरामा। मांगेहु मगहि करत परनामा॥
तीन दिवसबिनुभोजनबीरा। मग हित बैठि रह्यो रघुबीरा॥
राममनहिंमनशिवअभिलाषी। करि संकल्प बचन असभाषी॥
सिंधुतरब जेहिदिन शिवसांई। लिंग थपब तव गेह रचाई॥
असकहि अनलबानकरलीना। सोखौं सिंधु महा रिस कीना॥
शिवप्रेरितकधि धरिनररूपा। आयो जहां कौशला भूपा॥

हाथ जोरि महिमाथनवाई। कीन्ह्यो विनय सुनहु रघुराई॥

दो० तव प्रताप मैं सूखहूं उतरै कटक अपार।
पर परंतु मरजाद मम छूटत एकहिं बार॥

सो० तेहिते करो उपाय दास जानि मोहिंआपनो।
उतरि कटक सब जाय बनीरहैमरजादमम॥

नाथ नील अरु नल दुइबानर। तिनकेछुवत तरतजलपाथर॥
कपिन पठै भूधर मँगवाई। तेहि छुवाय कधि लेहु बँधाई॥
सेतु बँधाय उतारो कटका। दनुज मारि मेटहु सब खटका॥
तिहिकरिबिदारामउठिआये। सकल भालु कपिगिरिकहँ धाये॥
सेत तयार कीन नल नीला। देखि प्रसन्न भयो सुखशीला॥
कह्योराम बहु सुंदरि धरनी। अतिशय सुखद जातनहिंबरनी॥
यहां शंभु मंदिर रचवाई। तब आगे दल देव चलाई॥
जो अनन्य शिवभक्तमुनीशा। सुभग बस्तु अर्पहिं निज ईशा॥
रामसे अधिक वेद नहिंगावा। शंभु भक्त जस राम सोहावा॥
शिवहि न परप्रियरामसरीसा। कहतसकल श्रुतिसाधुमुनीशा॥
तव रचाय मंदिर रघुनाथा। शेत मूल थाप्यो शशि माथा॥
हृदय बीच जो शंकर रूपा। राखत सदा राम सुर भूपा॥
तासु अग्र एक लिंग निकारी। तहां प्रतिष्ठित कीन खरारी॥
लिंगथापि पूजन करि रामा। कटक सहित पहुंचे लंकामा॥

दो० कह्यौं काशिका गमन जब करुणा लहि रघुराय।
शिव अस्थापन की कथा कह्यों सबिस्तर लाय॥

सो० गिरि सुवेल रघुनाथ उतरत भे कपिदल सहित।
लंका में दस माथ अति अशंक कछु शोचनहिं॥

एक दिवस सब सचिव समेता। बैठे गिरिपर कृपा निकेता॥
कोमल पत्र प्रसून बिछाई। तेहि पर ज़र मृगचर्म सुहाई॥
बीरासन तेहि पर रघुराई। जटा मुकुट अति शोभाछाई॥
गांछे बिच बिच शुभग प्रसूना। छबिलखिहोतिकामछबिऊना॥
भाल त्रिपुंड गहे धनु हाथा। जनु मुनिबीरबन्योंरतिनाथा॥
अक्षयतुनीर धरा दिशिबांये। मंडल करिसबसचिवसोहाये॥

पा के लषण बीर बल वंता । सोह काम ठिग मनहु बसंता ॥
सांझ समय बिधु पूरण मासी । लखिसबसोंबोल्योखरनासी ॥
शशि के मध्य श्यामता सोहै । कहोसकलनिजनिजमतिजोहै ॥
भूपति को भूमहि अतिभाया । कह सुग्रीव भूमि की छाया ॥
बंधु भाव लछिमन मन राखी । शशिउरटिकयोगरलअसभाखी ॥
बंधु वैर लंका पति हेरा । रंभा हरेउ शार बिधु केरा ॥
राम भक्ति प्रिय पवन कुमारा । कह्योधरयोशशिध्यानतुम्हारा ॥
निजमतिसरिससकलअसभाखी। पर वार्तात राम पर राखी ॥

दो० रामहिं प्रिय अति शिव चरण सबको कह्योसुनाय ।
धरे ध्यान शशि शंभुको नील कंठ छवि भाय ॥

सो० पुनि लै सबको शीख पठै बसीठी बालि सुत ।
जाय बालि सुत दीख प्रथमद्वाररावन सुतहिं ॥

जुरा तहां बहु मल्लक माला । निरखत खेलतहँ रावण बाला ॥
लखि कपिबहुत ठठोलीलाई । अंगद कोपि ताहि गरियाई ॥
तब रावण सुत कोप बढ़ावा । कह्यो मूढ़ कपि कहंते आवा ॥
लखतन माहिं मत्त गजबच्चा । कह अंगद मैं केहरि चच्चा ॥
हत्यो प्राण तेहिको पद तानी । भाग्यो सकल महाभयमानी ॥
तब कपि जाय सभातेहिदेखी । उड़ा होस लखिरावणसेखी ॥
बहु मणि जटित धरासिंहासन । वैठ तहां रावण बीरासन ॥
लोह कोह सम सुतन सुहावा । तहं दश शीश श्रंग सोभावा ॥
कोह खोह समहै श्रुति नासा । प्रतिशिरसुभग त्रिपुंडप्रकासा ॥
मणि मय मुकुट धरे दश भारी । उये मनहु रबिदश यकबारी ॥
भूषण सहित सोह भुज कोरी । अजगर समनिमनहुएकठोरी ॥
इद्रतहां तेहिकोश रखावत । अग्नितासु जेवनार बनावत ॥
करत समन तेहिकीकोतवाली । नैरित बरुणभयोतेहि माली ॥
पवन बिजन धर मेघ कहारा । बेद सुनावत तेहि करतारा ॥
चवर क्षत्र लीन्हे रज नीशा । यहि बिधि राजकरतदशशीशा ॥
असलखि अंगद बहुसकुचाई । भयो सुदृढ़ सुमिरत रघुराई ॥
पहुंच्यो सभा बीच कपि राई । वैठत भयो ताहि शिर नाई ॥

कह दश शीश कहांको कीशा । मैं रघुनाथ दूत दश शीशा ॥
दो० को रघुनाथ न जानहूं भेद कहौ तुम तासु ।
नरको चर वानर सुनतहोत नमनबिश्वास ॥
सो० जगपति रमानिवासअवध राजघरअवतर्‍यो ।
जासु चराचरदास नर बानर सुरअसुरसब ॥
अवधराजकिमिकटकसिहारत । चक्र चलायसकलदिसिमारत ॥
अब समुझो हम कपितवबानी । सुना निकारि दीन तेहिरानी ॥
वुधि प्रताप तेहिमां कछु नाहीं । मांगत खात फिरतबनमाहीं ॥
बिधिबसमिलीसुभगतेहिबामा । सोहम छीनिकीन निजधामा ॥
छीनब अपर अपर है चोरी । भयो कालबसतव मतिभोरी ॥
सुनु लंकेश कह्या कपि राई । वुद्धि मान तुम परत जनाई ॥
अबुध सरिस तुमकीन्हौ काजा । परअबहीं नहिंकछुरुअकाजा ॥
सिय लैपगौ राम पदजाई । त्राहित्राहि कहि माथ नवाई ॥
शरण पाल तिहिको श्रुतिगावैं । तुरत तोर अपराध मिटावैं ॥
हंसि दश शीश कह्या दशकाई । करसि मूढ़किमि बहुतढिठाई ॥
निज अपराध मेटि पुरलेते । काहेकपिता ताहि वनदेते ॥
जाय अवध लेतोरि समाजू । भरतहिं मारि लेहि निजराजू ॥
तोथावे मोहिं सेकरि रारो । तुम्हैं आदि कपि करै सुखारी ॥
तब अंगद बोल्यो रिसवाई । बीस आंखि नहिंपरतदेखाई ॥
दो० तृणसर दसा जयंतकी देखि करत नहिं बोध ।
चक्र चलावत देरनहि जबलग करतनक्रोध ॥
सो० सुनु प्रमाण दशमाथ कहौंअसाधन साधको ।
चलि आयेरघुनाथ राज विभीषण देनहित ॥
वेधि तार मुनि मारेहु बाली । लखतनतेहितुमक्योंशठलाली ॥
रेखन नाघि सक्यो तुम स्वामी । नाघ्यो सिंधु तासु अनुगामी ॥
तेहि प्रताप तुम अजहुं नबूझा । बात कहत खरदूषण जूझा ॥
चाप तोरि सियक्यों नहिआनी । रह्या बीरतुम बड बलवानो ॥
भृगु पति केर गर्भ जिन छीना । ताहिकहत तुमनिश्चरदीना ॥
तजि अभिमान चलौ ममसाथा । दैसिय शरण गहौ रघुनाथा ॥

निज कुलपालु सकल मदत्यागी। मुनिपुलस्त्यकुलपालश्रदागी॥
कह दशकंधर बहुत रिसाई। कहसिबात कापश्रहुतश्रनाई॥
तोरव धनुष कवनि मनुसाई। शिवधनुयुतगिरिलिह्योंउठाई॥
सुरनर असुर शरणमम आवें। कोअस जासु शरण हम जावें॥
तियको दान जो तव प्रभु लेई। पूंजत शिवहिं सिया हमदेई॥
रिपु सेजो कोउ करत मिताई। लखोताहितुमश्रति कदराई॥
जोतव प्रभु जानत बिरताई। तुम्हैं पठै किमि करतयकाई॥
तुमसे परको ह्वै सपूता। बाप मराय भयो तेहि दूता॥
दो० हँस्यो सुनतइमिबालिसुत अहौबुद्धिकोभौन।
ममपितुमारनकहत जोइतवपितुमारेहुकौन॥
सो० जाके बल तोहि गर्वतिहिनिजपर रूठोलखो।
कहत वेदबुध सर्व शिव हिनपर प्रियराम सों॥
सुनहु कथा अबतुमहिं सुनाऊं। प्रीति प्रतीत राम शिव गाऊं॥
कीन राम तप कुंभज साथन। तहं प्रत्यक्षप्रकटभोवृषभागन॥
तजि तबपक्ष दीन बरदाना। तव बधहेत दयो बरवाना॥
और सुनो अस वेद कहानी। हरिहिं दोनबर औघर दानी॥
तुम्हरो भक्त भक्त निज जानब। बैरी तोर शत्रु निज मानब॥
जग करता भरता अरु हरता। हरिहिं कीनशिवत्रयगुणधरता॥
तेहिते लखु रामहिं शिवरूपा। तजहु असतहठनिश्चर भूपा॥
तब रावण बोल्यो करि क्रोधा। करत सुगुरसम शठममबोधा॥
तेहि असाध कहितबकपिराई। गयो तुरत उठि जहं रघुराई॥
चारिहुं दिस घेरेहु कपि जूथा। चढ़्यो लंकते दनुज वरूथा॥
भाअतिविकटसमरकपिनिश्वर। लक्ष्मण हत्यौ तासुकोसुतवर॥
घट श्रुति रावण रघुपति मारा। कपिन निशाचर कटकसंहारा॥
राज विभीषण केशिर सारी। अति शय हर्षित भयौ खरारी॥
लै सिय रामशिवहिं शिरनाई। चले अवध प्रभु घंटबजाई॥
रावण रघुपति समर पसारा। पुरकपिकह्यो सहित विस्तारा॥
तेहिते मैं संक्षेप वखानो। बेगि भरतहित अवधहिआनो॥
दो० पुहुपकचढ़िसियअनुजयुतमंत्रिनसहितखरारि।

हरषसहित पहुंचे अवध सुमिरिउमात्रिपुरारि ॥
सो० मिले भरत परिपाय आगे चलि सिय रामको ।
रामलीन उरलाय मेटी सकल गलानि दुख ।
मातन सकल मिले रघुनंदन । गुरुहि प्रणाम कीन जगवंदन ॥
गुरुवशिष्ठ को लै अनुशासन । बैठे राम राज सिंहासन ॥
बढ़ो हर्ष कछु वरणि न जाई । रुचित दान महि देवन पाई ॥
राम राज जसभयो अनंदा । कहत श्रुतिहु मति होवे मंदा ॥
सोमैंकहौं कौनि विधि वरणी । करिपार गज किमि लघुतरणी ॥
सुनि रघुनाथ चरित मुनिझारी । बोलि उठे जय जय बनवारी ॥
हम अब लखा तत्त्वरघुवरकर । रघुपतिसरिसनप्रियशिवकेपर ॥
सूतहि दै अशीश पुनि बोले । अपने मनकी शंका खोले ॥
जो तुम तात कह्यो बहुबारी । शिव बैरी हरि हनत प्रचारी ॥
निजहु दास मानत हरिबैरी । पठवत नरक ताहि सतपैरी ॥
को असनाथ करी जड़ताई । शिवरिपुता अच्युतशिवकाई ॥
जेहिमारेहु हरि करि बहुक्रोधा । सोकहि नाथ करौ ममबोधा ॥
हँस्यो सूतकहि शिवशिवबानी । जगहित बन्यो तात अज्ञानी ॥
सुना चहत शंकर गुण गाथा । तेहितें अज्ञबनत मुनिनाथा ॥
दो० सुनहु नाथ शिवकी अजा बहुपरबला बलीन ।
मित्रहि बनवत शत्रु है शत्रुहि मित्र प्रवीन ॥
सो० समदरशी शिवनाथ ताको मित्र न शत्रु कोउ ।
लीलाहित शशिमाथ रचैं शत्रु अरु मित्रको ॥
शिव भगवान भाव मुनि एका । कहतसंत श्रुति बुधकरिटेका ॥
कह्यो सूत सुनिये मुनिनाथा । है सर्वत्र विदित यह गाथा ॥
शिव निन्दक होवै हरि दासा । गनैं शत्रु तेहि रमा निवासा ॥
शंखचूड़ यक दैत्य कहायो । कृष्ण भक्त तेहि वेद बतायो ॥
रहो अनन्य भागवत सोई । तेहिसम कृष्णदासनहिंकोई ॥
निशिदिन करै कृष्णकी सेवा । लखै न हरिपर सों परदेवा ॥
शंभु संग सो बैर उठावा । शिवहिपचरितेहिविष्णुमरावा ॥
तेहितिय तुलसी पतिब्रतधारी । तेहिप्रताप शिवसकतनमारी ॥

संशय करहु न सुनिमुनिनाथा । वेद पंथ पालत शशि माथा ॥
पतिव्रत नारि न बिधवाहोवै । तेहिप्रताप शिवताहिनखोवै ॥
शिव बैरीलखि विष्णु मुनीशा । करिछलकरचोतासुब्रतखीशा ॥
नेक न कानि दासकी कीन्हा । छूटत धर्म मारि शिवलीन्हा ॥
ऐसहि सेवक धर्म ऋषेशा । श्रुतिविरोध किमिकरैं रमेशा ॥
माता पिता बंधु गुरु दासा । इष्टक शत्रु शत्रु सम भासा ॥
पितु प्रहलाद यतनकरि मारी । मातहि भरत दीन्ह बहुगारी ॥
बंधु हतन हित भेद बतावा । भयो विभीषण परम सुहावा ॥
गुरु अपमान कीन बलि राऊ । व्याकुल कीन नयन के घाऊ ॥
प्राकृत जनन कीन असकाजा । किमिनकरैं हरि सबजगराजा ॥
इष्ट भाव हियँ दृष्ट करोहू । अपर प्रकार न मोह धरोहू ॥
करतभक्ति जेहिबिधिबनवारी । कहि नर गति को बनै अनारी ॥

दो० सुनि यह कथा समासतब हर्षित भये मुनीश ।
इच्छा करि बिस्तारकी सूतहि दीन अशीश ॥

सो० तब शंकर पद ध्याय सुमिरि शारदा को बहुरि ।
सूत महा हर्षाय कहन लग्यो हरि हर सुयश ॥

जबनिर्गुण शिव सगुण भयऊ । निजवासाहित पुरशिवठयऊ ॥
बाम अंगते हरि उपजावा । जग पालनतेहिकाजसिखावा ॥
दक्षिण ते बिधि को प्रकटाई । सृष्टि रचन तेहिकाज बताई ॥
हरि वासा वैकुंठ सुहावा । सत्यलोक बिधिवास बतावा ॥
रच्यो सृष्टिजब विधिसबझारी । पालत तेहि भगवान मुरारी ॥
शिव पुर निकट भयो गौलोका । चिंतत जाहिमिटतसबशोका ॥
गोवैं तहां शंभ की रहहीं । ध्यान करत सबपातकदहहीं ॥
तेहि पालन हित शंभु बिचारी । बोलि लीन भगवान मुरारी ॥
हरिसों कह्यो शंभु समुझाई । परतन धरि पालहु सबगाई ॥
शिव अनुशासन बहुमन माना । दूसर रूप धरचो भगवाना ॥
कृष्ण नाम तिहि वेद पुकारा । राधा रूप रमा तब धारा ॥
तिहि पुर रह्यो कृष्ण अरुराधा । सुमिरतजाहिमिटतसबबाधा ॥
केलि हेतु बहुगोप सँवारी । गोपी बहुत भई अधिकारी ॥

यहवर तिनको दीन महेशा। तव महं बढ़े विष्णु से बेशा ॥
विष्णु तुम्हैं कछुहोय न भेदा। एक रूप गावैं सबवेदा ॥
असकहि भे शिव अंतर्द्धाना। पाळत धेनु रहे भगवाना ॥
दो० गोपिन सँग खेलतहरषि पाळत धेनु सुजान ।
जोयह सुनिहैंध्यानधरि तिहिपलिहैंभगवान ॥
सो० अबसुनु कथारसाल परम पावनीदुखहरनि ।
चरितकीनशशिभाल सोबरणौंशिवपदसुमिरि ।
वृजानाम यक सखी सुहावनि। अतिसुंदरि रतिमाननशावनि ॥
तासुरूप लखि मोहि मुरारी। भयो तासु बश लीला धारी ॥
अवसर पाय राधिका चोरी। जात तासु घर यतन बटोरी ॥
नाम सुदामा गोप सुभासा। सेनापति अति हरि को दासा ॥
तिहि दरपर रखवार बनाई। भीतर जात सुकृष्ण कन्हाई ॥
यकदिनसोवृत सुनिकरिराधा। धरन हेत हरिको चितसाधा ॥
वृजाद्वार पहुंची रथ ठौंकी। भीतर जात सुदामा रोंकी ॥
सुनिसुबोल हरिगयो बिलाई। निजतन बिरजा नदी बहाई ॥
सब वृत्तांत जानि जगमाई। लज्जितलौटि स्वभवनहिंआई ॥
कोप भवन गे अति रिसधारी। भूपरि भूषण बसन उतारी ॥
तब श्रीकृष्ण गये तिहिधामा। द्वारे राखेहु गोप सुदामा ॥
देखि राधिका कानि न राखा। दुरहो दुरहो कृष्णहि भाखा ॥
शासन सखिनदीन यहिमारो। गृहते मेरे तुरत निकारो ॥
बहु दुर्वचन कह्यो करिटेका। दीन्ह्यो शाप न कीन विवेका ॥
नरवत कामकीन यह कामी। जगमें जाय होय नर नामी ॥
हरिसो शाप शीशधरिलीन्हा। शंभु अजाके अस्तुति कीन्हा ॥
दो० सुनत सुदामा कीनरिस लखि निजस्वामिहिशाप ।
जो यहि उत्तर देउं नहिं लगै मोहिं बहु पाप ॥
सो० सेवक को यह धर्म स्वामी हित बहु दुख सहै ।
देखहु चर्म कि चर्म घाव सहै स्वामी बचै ॥
दीन सुदामा राधहिं शापा। नर ह्वै भोगहु तुमहूं तापा ॥
सदा अपाप कृष्ण बनवारी। नाम लेत जेहि पातक जारी ॥

ताको दीन्हेहु छाय कलंका। नेक न मानेहु हरि की शंका ॥
तिहिते होहु कलंकिन जाहू। परब्रह्म हरि हाथ बिकाहू ॥
हरिकोहठितुमदुरदुरकीन्हा। परब्रह्म नहिं हरि को चीन्हा ॥
तिहितेहरिहरिकहितुममरहू। हरिके बिरह अनल महँ जरहू ॥
सुनि राधा रिसवानिअतीवा। जड़ नहिं माने कछु ममसीवा ॥
मोहिं न चीन्हेशठजगमाता। बार अनेक कहे कटु बाता ॥
तेहिते दैत्य होहु तुम जाई। अति बलवान देव दुखदाई ॥
परब्रह्म शिव परै न चीन्ही। यहि मिस शाप राधिका दीन्ही ॥
सुनि बकवाद कृष्णतहँआये। माया खींचि कुवादि मिटाये ॥
उभयबोधदै इस्थिर कीन्हा। अरु वरदान सुदामहिं दीन्हा ॥
दानवहोहु तहौं मम दासा। शिवके हाथ होय तव नासा ॥
पुनिऐहौहियँलहिशिवकरुना। नेक उदासी निज मन धरुना ॥
तेहिते पतित सुदामा भयऊ। जगमें आय दैत्य कुल जयऊ ॥
विधिसुतकश्यपजोजगख्याता। दितिसुततासुविप्रचित ताता ॥
तासुत दंभासुर बलवाना। अतिबलवान न जातबखाना ॥
तिहिसुत भयहु सुदामाआई। शंखचूड़ तहँ नाम धराई ॥

दो० बहु उत्सव दंभा कियो शंखचूड़ सुत पाय।
जातकर्म करि हर्षयुत दान दियो हर्षाय ॥

सो० पलनापर करि जोर जब खेलत टूटत महद।
रोवत होवत शोर मनहुं प्रलय के बादले ॥

बालबीति जब भयो कुमारा। पढ़न हेत गुरु भवन सिधारा ॥
विद्या सकल पढ़ी तहँ जाई। कृष्ण मंत्र लीन्ह्यो हर्षाई ॥
कृष्णहिलखतब्रह्मअविकारा। कृष्ण छांड़िनहिं परहि उचारा ॥
पूजत कृष्ण ध्यान बहुलाई। जपत कृष्ण करि इष्टसुहाई ॥
तपहितगयोविपिनमहँनिश्चर। विधितपठानि कीनतप दुस्तर ॥
लखिपूरणतपविधितहँआयो। बरम्बूहि कहि ताहि जगायो ॥
लखिविधिकोनिजसनमुखठाढ़ो। सिद्धिकामलखिआनँदबाढ़ो ॥
हाथ जोरि महि माथ नवाई। मांग्यो वर तब निश्चरराई ॥
होहुं अजीत सुरासुर माहीं। गिरिनरनाग जितैं मोहिंनाहीं ॥

तजि निर्द्वंद अपर सुर जोई । मारि न सकहि मोहिं जगकोई ॥
करौं अकंटक जगमहँ राजू । अस वरदान देहु महराजू ॥
एवमस्तु ब्रह्मा तब बोले । पुनि निजधात मनोगति खोले ॥
बदरीबनहिं जाहुनिशिचारी । तपत तहां तुलसी यकनारी ॥
अति सुंदरि धरमध्वजकन्या । तिहिवरि होहु तात तुमधन्या ॥
अस्तुतिहिकृष्णकवचविधिदीन्हा । हरष समेत निशाचरलीन्हा ॥
तासु प्रभाव रहै मुनि ऐसो । बांधे ताहि मरै नहिं कैसो ॥
दो० तुरत गयो बद्री बनहिं शासन लहि विधि केर ।
धरमध्वज जा देखिकै हर्षित भयो घनेर ॥
सो० करि बिवाद सज्ञान रहै ज्ञान के खानि दोउ ।
शासन विधिको मान करिबिवाह निजभवनगो ॥
तुलसीसहितपहुंचिनिजधामा । मातुपितहिनिजकीन्हप्रणामा ॥
दंभासुर लखि तिहि कुलकेतू । दै निज राज गयो तप हेतू ॥
जहँलगि असुर वंश जगमाहीं । यकठे भये आय तिहि पाहीं ॥
शुक्रहु आय तहां पगुधारा । राज तिलक तिहिकेशिर सारा ॥
जबते शंखचूड़ भा राजा । कृष्णभक्त भा सकल समाजा ॥
शिवसे बैरमानि सब छीन्हा । इष्टकोइष्ट शिवहि नहिंचीन्हा ॥
पाछिल वृत्त कह्यो कविगाई । सकल सुरासुर बैर बताई ॥
इंद्रहि जीति लह्यो इंद्रासन । हरषितभयो समुझिगुरुशासन ॥
फौज बटोरि चढ़्यो मघवा पर । घेरिलीन जनु मेघ दिवाकर ॥
भयो युद्ध बहु बल बुधि मानी । भागे देव प्रवल तेहि जानी ॥
गिरि कंदर सब देव लुकाने । आपनि भाग्यहीन सबजाने ॥
भयो इन्द्र सो लहि इन्द्रासन । परअधिकारलह्यो तेहिदासन ॥
अग्निलोकको पति इकभयऊ । यमकरकाज दैत्य यकलयऊ ॥
लीन्ह्यों एक नरितकर काजा । वरुण लोकमें एक विराजा ॥
वायू भयो एक निशिचारी । भयो एक धनको अधिकारी ॥
भा ईसान एककरि साना । ह्वै दिनकर इककरतबिहाना ॥
एकलीन शशिकर अधिकारा । लीन्ह्यों एक शेष कर भारा ॥
कोउ किन्नर गन्धर्वको राजा । कोऊ करत यक्ष को काजा ॥

दो० यहिविधि सब अधिकार लै करनलग्यो सुरकाज ।
नीति सहित पालत प्रजहिं शंखचूड़ महराज ॥
सो० हठि हठि सुरपथ लाग भागेबचत न कतहुं सुर ।
लेत सकल मषभाग घूमि निशाचर जक्त में ॥

भाग्यहीन सुर कृशतन भयऊ । इन्द्रपाससबसुर मिलिगयऊ ॥
इन्द्र सहित सबगे विधिपाहीं । कृशशरीर बहुदुख मनमाहीं ॥
करि प्रणाम सब त्राहिपुकारी । सदासुखद सुर तुमजगकारी ॥
केहि अपराध बिसारेहु देवन । सदाकरत तुम्हरो हम सेवन ॥
तुम्हैं उचितनहिं असप्ररमेशा । सुरनमारि पालहु असुरेशा ॥
की अकालकरु प्रलयविधाता । की हति असुरबनो जगपाता ॥
तब बरबश भै अमर खराबो । करौयतन अबनाथ सिताबो ॥
अपने उपर अयश जब हेरत । टोना लाय टोन्हाइन फेरत ॥
बहुदुखभरे सुरनविधिवोन्हा । बहल बदल कहि धीरजदीन्हा ॥
सब सुरसाथ लिहे जगकारी । गयो क्षीरनिधि जहँ बनवारी ॥

दो० रमा सहित हरिपदनिरखि करि प्रणाम लचिमाथ ।
हाथ जोरि ठाढ़े भयो सब सुर लै विधि साथ ॥
सो० बरणि कह्यो सबगाथ शंखचूड़ की प्रबलता ।
बारबारलचिमाथलाग्यो विधिअस्तुतिकरन ॥

जय परमेश रमेश परेशा । दीनदयाल अखिल भुवनेशा ॥
सुखप्रद सुखद सदा श्रीरंगा । हरन पाप भव प्रद्रव दंगा ॥
दीनानाथ अनाथ सहायक । सुजनउबारक दुरजनघायक ॥
विश्वभरण पोषण लयकारक । निजइच्छाकर त्रिजगविहारक ॥
असुर निकंदन जन उर चंदन । अमर नाग नर किन्नर बंदन ॥
पाहिपाहि जन आरत टारन । त्राहित्राहि दनुजादि सँहारन ॥
तुम शरणागत को दुख भक्षक । सदा प्रणत पतिके तुम रक्षक ॥
जबजब कष्ट पर्‌यो हमकाहीं । तबतब हर्‌योआय तुरताहीं ॥
शंख असुर जब वेद चोराई । तेहिकर सुर बहु तापउठाई ॥
मत्सरूप ह्वै ताहि सँहार्‌यो । करि करुणा सुरवेद उबार्‌यो ॥
लखि दुख देवनको अतिभारी । बहुरि कूर्म वपुनाथ सवाँरी ॥

जब हरणाक्ष भयो बलवाना । रसा उठाय पताल ठिकाना ॥
धरि वाराह वपुष तेहिमार्थ्यो । सकल सुरनको कष्ट निवार्थ्यो ॥
लखि प्रहलाद कष्टपुनिधायहु । ह्वै नरहरि असुराधि नशायहु ॥
दो० लीनचह्यो बलिराज जब राज सुराधिप केरि ।
वामनह्वै तेहिकोछल्यो लखि सुरविपतिघनेरि ॥
सो० हय भुज हनेहुं सुरारि ह्वै प्रशराम स्वरूप बर ।
दिहेउ देव दुखटारि किह्योभूप बिन भूमिसब ॥

तोटकछन्द ॥

लंकेश जबै बड़ वीर भयो । तबहीं प्रभु राम स्वरूप लयो ॥
शिवकी तप कानन जाय करी । लहि वान दशानन प्राणहरी ॥
लहि कंससों देवन त्रासघनी । तुम्हरो शरणागत त्राहिभनी ॥
ह्वै कृष्णस्वरूप हत्यो तेहिको । हरिभारलयो सगरी महिको ॥
यमनादिचल्यो श्रुतिरीतिजबै । प्रभु लीन्हेहुं बोध स्वरूपतबै ॥
तिनसोंछलि वेदछोड़ायदियो । महि देवन देवन काज कियो ॥
दो० जब कलियुग पातक बढ़े छुटिगे धर्म वलेक्ष ।
ह्वै कलकी सब भार महि हरिहौमारि मलेक्ष ॥
सो० कहा कहैं जगपति तव करुणाई हम सकल ।
कहिकहिसबसकुचात नारद शारद शेशश्रुति ॥

सुनिविधि सुरविनतीहरिनाथा । धीरज दीन सबहि गहिहाथा ॥
शंखचूड़ कोलखि दुख दाता । अतिशय क्रोधकीन जगपाता ॥
हतौं शंखचूड़हि पल माहीं । असकहितक्योसुदरशनकाहीं ॥
पुनि निज मन चिंत्योबनवारी । मोर दास बड़ अहै सुरारी ॥
निजदासहि मारतबड़ि लाजा । बिना हते नहिं है सुरकाजा ॥
तब निरखी धरि ध्यान रमेशा । शिवपूजकनहिंलखिअसुरेशा ॥
करो क्रोध कंप्यो त्रैलोका । देवन हरष अदेवन शोका ॥
मोरदास ह्वै शिवहि न भजई । सोजनु मोहिं बैरकरितजई ॥
भजै न मोहिं देहि जनुगारी । जोन मोर पति लखै पुरारी ॥
शिव मम पतितिहिसे दुभावा । यदि मुहिं बहुतइष्टकरिगावा ॥
सोगवाँर तिहि बुद्धि अनारी । चूमै शिशुहि मारि महतारी ॥

अस कहि चक्र उठाय रमेशा । गरुड़साजिमन ध्याय महेशा ॥
चलनचह्यो तबअस मतिआई । विधिवरदान दीनतिहि जाई ॥
तजि परेश इनहिं हतैन कोई । शिव तजि अपर परेशनहोई ॥
दो० असगुणिहरिइस्थिरभयो लखितेहिबधशिवहाथ ।
सुर समेत विधि साथलै शिव पुर गे हरिनाथ ॥
सो० करिरेवा अस्नान दीख शिवालय जाय हरि ।
शिवगृहलखिभगवानकरिप्रणामभेवहुछकित ॥
कच्छा सात रहे तहँ भारी । प्रति दरवाज खड़े रखवारी ॥
प्रथम द्वार परजाय रमेशा । बोलि लालसा दरश महेशा ॥
करि प्रणाम तिहि आयसु पाई । दुसरे द्वार गयो जग साँई ॥
तहौं जाय स्वइवृत बखाना । यहिमिसितजी सातअस्ताना ॥
गेभीतर हरि विधि सुरसाथा । दीख सभा शिव शंकरनाथा ॥
बनीमहा मणि गचि अँगनाई । मणि युतजड़ी दिवालसुहाई ॥
खंभा नील मणीके ठाढ़े । पीत लालि मणि बूटा काढ़े ॥
कौस्तुभादि मणि कीहै बेदी । सुमिरिजाहिजनहोय अखेदी ॥
चँदवा चांद सुरज छबि हरई । उष्णशीत कछु जानि न परई ॥
मणिकिरांत नहिं जात बतावा । राति दिवस करतहां अभावा ॥
शीतल मंद सुगंध स्वहाई । त्रिविध बयारिचलै सुखदाई ॥
तहां सर्वतो भद्र मनोहर । वेदी मध्य बना अति सुंदर ॥
रजतमयी सिंहासन तिहिपर । श्वेत मणिनकेबूटा जिहिपर ॥
तिहिपरउमासहितशिव सोहत । सेवकसकल खड़ेरुखजोहत ॥
दो० इंद्रादिक दिगपतिसकल कोटिन कोटप्रवीन ।
सेवतशिवहिविवेकयुत निजनिजकारजलीन ॥
सो० बहुचतुरानन धात सुरासहित सेवत शिवहि ।
चतुर्भुजी जगपात रमासहित कोटिन तहां ॥
बहु पूजत बहु ध्यान लगाये । बहुतक खड़े रहैं रुख लाये ॥
बहुनारद तहँबीण बजावत । बहुसनकादिक शिवगुणगावत ॥
बहुतखड़े तहँ आदिकसविता । शशिभूमजबुधगुरुशनिकविता ॥
बहुत रामतहँ धनु शरलीन्हें । बहुत कृष्ण मरली मखदीन्हें ॥

बहु गंधर्व तहँ गान सुनावत । किन्नरादि बहु बाज बजावत ॥
यहिविधि सुभग सभा शिवबैठे । चहुंदिशि खड़े महा गणऐंठे ॥
शिव स्वरूप कछु बरणि सुनाऊं । निज हरषौं औरौ हरषाऊं ॥
जोकहि श्रुतिहु न पावत पारा । सहसलषन शेषहु करिहारा ॥
विधि हरि इंद्र रहैं चुप साधी । शिवगतिवर्णि सकैंनहिं आधी ॥
सो मैं कहौं कौन विधि वरणी । धरैरज्जुअहि किमिशिरधरणी ॥
होन पवित्र हेत निजबानी । निजमतिसमकछुकहौं बखानी ॥
पांच बदन छबि अधिक सुहाई । प्रतिशिर तीननेत्र सुखदाई ॥
चितवत एक सृष्टि बनिजाई । सोदक्षिण जो विधिहि बनाई ॥
खोलत एक पालि जग जाई । सोहै बाम हरिहि उपजाई ॥
खोलत एक महालय होई । सोहै मध्य रुद्र प्रकटोई ॥
जो कैलास विश्वेश्वर भूपा । जनसुख हेत शंभु पररूपा ॥
तिहिते कछुक भेद नहिंमानो । भेद किहे बहु खेद सयानो ॥
एकहि नाम रूपवर ध्याना । एकहि समुझिलहौ वरज्ञाना ॥
प्रति शिर जटा गंगकी धारा । प्रतिशिरसुभगत्रिपुंड्रलिलारा ॥
प्रतिमस्तकशशि बालसुहावा । विषछबिअधिकनजातिबतावा ॥
मुंडमाल गल अधिक विराजै । समनिफणिकभूषणछबिछाजै ॥
अस्त्रन सहित सोहदश बांहीं । औरौ रहत सदाजिहि छांहीं ॥

दो० अहि कुंडल वर कर्णमहँ गल रुद्राक्ष सुहाय ।
श्वेतभस्म सबतनलसै शोभाकहिन सिराय ॥
सो० त्रिवलितउदरगँभीर नाभिगहिरिशोभाउदधि ।
पहिरे हरि चर्मचीर दिशाबस्त्र ताको लखो ॥

ऊरुलखि सित केदलि लाजै । गुल्फगोल महँ अधिक बिराजै ॥
पदशोभा किमिकहौं पुकारी । धरतध्यानज्यहिबिधिबनवारी ॥
सनकादिक जाको नित ध्यावैं । सकल सुरासुर जहँमन लावैं ॥
जासुभागिमुनि बहुबलकरहीं । सो नर शंभु चरण चितधरहीं ॥
सोनर मुनि बहुलखौअभागी । जो पर भजै शंभुपद त्यागी ॥
धरतध्यान जेहि बिष्णुबिधाता । अति जड़ता बरणत पर बाता ॥
पगतल अरुण कंजकी शोभा । मुनिमन मधुप रहतजहँलोभा ॥

सहसबालरबिछबिछिपिजाई। निरखि शंभु पगतलअरुणाई॥
यहिबिधि शंभुबैठि सिंहासन। देत पदारथ कथिनिध दासन॥
बायें उमा महाछबि सोहै। सो छबि कहन योगकबिकोहै॥
जासु अंशसे बहु गुण खानी। उपजैं सुरा रमा इन्द्रानी॥
हरिविधिकी ज्वरमातकहाई। तेहि छबि कहत लगैजड़ताई॥
मातु पिता यकठे करि पाई। श्रोरी करत प्रणाम कनाई॥
राखु मोंगिपति शंभ भवानी। देहु भक्ति निज जो सुखखानी॥
अबसुनियेमुनिसुरनकि गाथा। गये तहां हरि सब सुर साथा॥
सभा देखि भे चक्रितसबहीं। निजनिज रूप दीख बहुजबहीं॥

दो० तब अच्युत सब सुरनको समुझाई गहि बांह।
बहुलखि चक्रित होहुजनि शिवकी कलाअथाह॥

सो० जय जय जय सब बोलि देउ दोहाई शंभुकी।
शंखचूड़ गति खोलि रोय सुनावहु शंकरहि॥

सुनिहरि बचन सकल सुरनामी। बोलिउठेजय जयवृषगामी॥
करि स्वरतार दोहाई दीन्हा। त्राहित्राहि कहिरोदनकीन्हा॥
सुनि शिव निकट लीनबुलवाई। कहौ हेत जेहि देत दुहाई॥
पृथक पृथक सब भये प्रणामी।कहिजयजयतिजयतिवृषगामी॥
तब सबके ह्वै अग्र मुरारी। अस्तुतिकरन लग्योबनवारी॥

छन्द॥

जय ईश अनीश मतीश सदा। तुम हौ सरबोपरि वेद वदा॥
तुमहीं निरद्वंद्व परेश मुदा। निज इच्छाधरत स्वरूपकदा॥
प्राचीन तुम दीन सहायक। अर्बाचीन तुम्हीं सुर नायक॥
अधिकार दई तुम देवन को। अरु काम दईनिज सेवनको॥
तव नाम सबै हम भूलकरी। तेहि हेत कलेश के कूप परी॥
अतिनाथ तुम्हारि अजापीना। तव नाम भुलाय करै दीना॥
जबदीन भयोतव शरणतकी। अभिमानतजो सब मोहसकी॥
अब त्राहि पुकारि दुवारखरे। प्रण आपन पालिदे शंभुहरे॥
जयजयजगदीश अजानिगुणम्। बम्बम्बम्बम्बम्बम्बम्बम्॥

दो० सुनि बिनती हरिनाथकी भये प्रसन्न महेश।

कह्यो मांगु वर सकुचतजि हेममप्रिये रमेश ॥
सो० अरुभाषौ समुझाय जो कलेश देवन भयो।
हमतुम्हरो सुवदाय अबतशोचउतलवकरौ ॥
कही रमेश जोरि कर दोऊ। मोहिं सम भागिवाननहिंकोऊ ॥
जेहिबिनती सुनिआपगजारी। ह्वै प्रसन्न वरदेन बिचारी ॥
प्रथमहिं भक्ति देवनिजचरणा। ज्यहिअनपावनिकहिश्रुतिबरणा॥
पनि दूसर वर देहु महेशू। तव माया नहिं देय कलेशू ॥
पुनि तीसरिअसबिनतीमोरी। पुरवहु नाथ दाद सुरकेरी ॥
यहै नाथ मोहिं एक अँदेशू। जो प्रभ पूंछत देव कलेशू ॥
कौनि वस्तु असहै जगनाहीं। जो सर्वज्ञ लखत तुम नाहीं ॥
घट घट बसहु सकल उरसाईं। हमैं आदि तृणलगि जहँताईं ॥
तदपि भक्ति बश मानि रजाईं। करब निवेदन माथ नवाईं ॥
शंखचूड़ यक दैत्य बलीना। सो अधिकार सुरनकरछीना ॥
भयो इन्द्र निज अपर दिगेशा। बने दास त्यहि सुनहु परेशा ॥
सब सुरसहतबिपतिबनमाहीं। तेहि भयअभयरहतक्षणनाहीं ॥
बिधि वरदानदियो तेहिभारी। तजि परेश नहिं मृत्यु सुरारी ॥
तेहि वश मैं नलख्योतेहि साथा। जानिमीचतेहिप्रभुतुवहाथा॥
समदरशी तुम यदपि कहावत। शरणागत प्रिय वेद बतावत ॥
सब सुर आये शरण तुम्हारे। राखु राखु पति राखनहारे ॥
दो० सुनि हरि बिनती देव दुख शंखचूड़ संवाद।
अभय दान सबको दियो हंसिशिव करुणाकाद ॥
सो० जाहु सकलकैलास हरि बिधि सुरममसोखगहि।
ममपरतन के पास सो सब हरी तुम्हार दुख ॥
बिनय कीन अस पुर बनवारी। होहु नाथ तुमहूं अवतारी ॥
तेहितन रहौ सुरन के मेले। परब्रह्म शिव रूप अकेल ॥
तेहि हित मैं दूसर तन धारी। भयो जाय कैलास बिहारी ॥
नाम रूप बपु गुण सब एका। नाम मात्र परभा कहबेका ॥
जगहित मैं पर रूप बनावा। म्वहिं तेहि भेदवेदनहिंगावा ॥
तेहि ढिग कह्यो जायदुखरोई। सोसब बिपति सुरनकीखोई ॥

अससुनि शिवकहँ देखिदयाला । बोलिउठे सुरजय शशिभाला ॥
तब सब शिवसे बिदा कराई । चले प्रणाम करत शिरनाई ॥
तुरत आय पहुंचे कैलासा । निरखिशिवहिंत्यागेसबत्रासा॥
नाय माथ सब कीन प्रणामा । कहि जय उमाशंभु सुखधामा ॥
तब ह्वै हरि सबसुरनकेआगे । अस्तुति करन शंभु की लागे ॥
जयजय उमानाथ त्रिपुरारी । जय महेश जनके दुख हारी ॥
जय सुरनायक देव सहायक । जयशरणागत के सुख दायक ॥
जय अनीश अद्वैत अखंडा । जय सर्वोपरि बल धर चंडा ॥

छन्द ॥

जयजय महेश निरभय परेश सब पति उमेश पर गति सुरेश ।
चितकरुदयाल वरवरुकृपाल दुखहरुमभाल सुखकरुकमाल ॥

कवित्त ॥

ईश अनीशअर्द्धंग शिवापति हौ सुरपाल कहैं श्रुतिचारी ॥
देव भये सबकष्टम्भ्रष्ट तुम्हैं सुखदा लखिआय पुकारी ॥
भायक दैत कश्यवंशमशंख शिखातेहिनाम महाबलधारी ॥
सो सब देव निकारिदयो अधिकार लयोशिवलागुगुहारी ॥

दो० सुनि बिनती हरियाद की लखिसब को निज दास ।
निरभय वरदै सुरन को बोले उमा निवास ॥

सो० सब हम जाना भेद शंखचूड़ की प्रबलता ।
तजौ सकल सुर खेद शंखचूड़ मारालखौ ॥

छन्द सुनि अस शंकर बानी । देवन अति सुख मानी ॥
कहि जयनिशिपति माथा । देवन किह्यो सनाथा ॥
जय शिव होय तिहारी । लीन्हीं हमैं उबारी ॥
असकहि माथ नवाई । चलत भये जय गाई ॥

दो० सुनु मुनीश शंकर सरिस कोहै सुशरण पाल ।
शरणागत सुर जानिकै तुरतहि करी निहाल ॥

सो० जोनभजै अस शंभु तेहि हतभागी मुनिलखौ ॥
बीस करै अवलम्भु पर न बचै यमदण्ड से ॥

रसुन विदाकरि उमा निवासा । शोचतभयो निरखि सुरदासा ॥

कौनिभांति सुरकाज सवांरौं । किहिअघलायअसुरपति मारौं॥
शासन देउँ असुर पति काहीं । शासन भंगहते डर नाहीं॥
पुष्प दिजाचार्जहिं दै आदर । जौगन महावीर बुधिसागर॥
निज निकटहिअविलौनबुलाई । शंखचूड़ वृत्तांत सुनाई॥
शंखचूड़ सुरदीन निकारी । सुरन राज सबकरत सुरारी॥
सुरभे सब शरणागत मेरे । तासु काज मैं करब सबेरे॥
अब तुम शंख चूड़ ढिग जाई । मम सँदेशकहु युत चतुराई॥
छांड़ि देय सुरराज सुरारी । रहै सुभूतल जाय सुखारी॥
करै कियौं आयसु धरि माथा । करै कि युद्ध आय ममसाथा॥
धरि शंकर शासन निजमाथा । शंखचूड़ ढिगगा गननाथा॥
दिह्यो संदेश महेश सुनाई । जो मन रुचै करौ तुमभाई॥
हँस्यो सुनत तबनिश्चर राजू । पीगे भांग बहुत शिव आजू॥
जो अस मोहिं डेरवायपठाई । विपिनमध्यकबसिखेनिलड़ाई॥

दो० मोकहँ परति प्रतीत नहिं कहु गण सांचौ सांच ।
सोहत नहिं भिखियारिको पुरुष राजकी यांच॥

सो० तेहिते तुम फिरिजाय तेहि समुझावो चेतकरि ।
बैठि रहे चुपलाय सापहु साउब ज्ञान नहिं॥

और सुनौ यकबात हमारी । मोहिं दीनबर असजगकारी॥
तजि परशमोहिं हतै न काऊ । सो ममइष्ट कृष्ण सुरराऊ॥
महाकाल कालहुके काला । मोरपात हरिदीन दयाला॥
हँसो पुष्पदन्ता सुनि बानी । निरखि शंखचूड़हिं अभिमानी॥
जाकरतोहिं बहुतअभिमाना । तिहिलखुनिजपरअधिकरिसाना॥
शरणगही शिवको सुरसाथा । तब बधहेत विधिहु हरिनाथा॥
शिव तजि अपर परेशनहोई । शिवकर लखो दास सब कोई॥
हरि विनतीसुनि शंभुदयाला । अभय दान दै देवन पाला॥
तुम्हैं जनाय दीन प्रण आपन । सुरन राजतजि करौ भलापन॥
बोला शंखचूड़ करि क्रोधा । डिरसों डिरत न जो जगयोधा॥
शंकर के जो अस मन माहीं । प्रातकाल पहुंचब गिरिपाहीं॥
कहोजाय हुसियारी साथा । गिरिते उतरि रहै शशि माथा॥

कीतजि गिरिवर जायभगाई । की मम संग करै मनुसाई ॥
योगीलखि अबतलकबचावा । अपनैं से सो कीन चबावा ॥
दो० सुनि ताको अभिमान बड़ हँस्यो बहुत गणराय ।
शंभ अज्ञाबश जानि तिहि चल्यो गिरीशमनाय ॥
सो० शंखहि कही सुनाय काल विवश त्वहिंज्ञाननहिं ।
सन्यपात ह्वै जाय जिमि ज्ञानिहु के मृतु समय ॥
असकहि गण शंकरपहँगयऊ । पद शिरनाय कहत सबभयऊ ॥
नाथ मृत्युतिहिबहुनगिचानी । तिहिबशकरी न कछुनवकानी ॥
शंखचूड़ अति है जड़ भूला । प्रात होत पहुँचौ गिरि मूला ॥
हँस्योशंभसुनितिहिमनुसाई । निज मायहिं बहु दीन बड़ाई ॥
अब सुनु शंखचूड़ की गाथा । गयो भवन निशि निश्चर नाथा ॥
तुलसीसो सबबात बखानी । शंखचूड़ अतिशय अभिमानी ॥
उत्तरदिशि जो गिरि कैलासा । तहँ यक योगी तपत निरासा ॥
सो बनि देवन केर सहाई । मोरे निकट सँदेश पठाई ॥
की दे राज सुरन की फेरी । की मम सँग करु युद्ध घनेरी ॥
बीर चुनौटी सुनि सुखबाढ़ा । पहुंचब प्रात कीन असखाढ़ा ॥
तिहिनितप्रातअबशिह नजैबै । शिवहि जीति जयको पदपैबै ॥
शिवसंग्राम सुनाजबतुलसी । भई तेज हत सूखे गुलसी ॥
मर्छित भूतल परी तुरंता । रोदन करत हाय कहि कंता ॥
पुनि धीरज धरि उठीसँभारी । पति पद परी जोरि कर तारी ॥
नाथशिवहिंजनिसुरकरिजानौं । अज निरद्वंद सर्व पर मानौं ॥
जो तुम्हार पति कृष्णमुरारी । शिव सेवक तिहि लखो सुरारी ॥
हरिविधिजासुध्याननितकरहीं । तिहिसँगकौनिभांतितुमलरहीं ॥
जाकर नाम लेत जय होई । तासु अजय करिसकै कि कोई ॥
शिवशासनशिरधरिप्रभुकीजै । शासन मानि राज सुर दीजै ॥
परधनतजब न होयअलीका । शिव रजाय सब धरमक टीका ॥
जो शिवआयसु गहौ सुरारी । तब सब दिन तुम रहौ सुखारी ॥
जो करिहौ प्रभु आयसुभंगा । तौ दीपक बिच होहु पतंगा ॥
दो० नाथ विनय मम मानहू मानि सेवकिन नात ।

शिव आयसु शिर धरिकरौ रहै मोर अहिवात ॥
सो० विधि वरदान बिचारि है परेश कर मृत्यु तव ।
कांपत हृदय हमारि शिवतजि अपरपरेशनहिं ॥
तिहितेम्बहिंलखिकंपितगाता । शिवभजि राखु मोरअहिवाता॥
सुनितियबचनमहारिसधारी । बोला शंखचड़ धिक्कारी ॥
जो रणधीर बीर जग ख्याता । तिहितिय भीत हँसै की बाता ॥
छिद्योंजीतिसबलेखअलेखी । कबहुं न भीत तोर चित देखी ॥
अगुन अगेह दिगम्बर योगी । अहि विभूति भूषण बिष भोगी ॥
तिहिरणसुनतकिहेचितकांचा । नारि सुभाउ कहैं कवि सांचा ॥
डिरहि निरखि योगीसनरारी । मूठि चलाय लेय नहिं मारी ॥
असडिरसुनत हँसीबहु आई । बचन एक भाषे रिस दाई ॥
सेवत जाहि चराचर झारी । मोर इष्ट श्री कृष्ण मुरारी ॥
तिहि शिवको सेवक तूभाषा । नेकहु कानि मोरि नहिं राखा ॥
करीक्षमा त्वहिं जानि पियारी । नहिंतौ लेत्यों जीभ उखारी ॥
असकहिलीन्हेंसि हृदयलगाई । उत्सव समय न करुकदराई ॥
है मम पात सुदरशन धारी । ब्रह्म सच्चिदानंद मरारी ॥
तब तुलसी बोली करजोरी । रिसतजिसुनहुंविनयप्रभुमोरी ॥
दो० मैं अतिअज्ञ श्रुतज्ञ तुम श्रुतिमहँ करौ विचार ।
शिवते हरि सो चक्रको पायो कौनि प्रकार ॥
यदपि जलज पोषकतरणि तदबिहनै बिनवारि ।
कमलदास पर सुरतरणि लखौ वारि त्रिपुरारि ॥
सो० राखहु मोर दुलार शिरधरि शिव शासन करौ ।
है यह श्रुतिकोसार शिव विरोध नहिं परहित ॥
लखहुदक्षगतिमनहिंअसुरपति । शंकरविमुखभयो कसदुरगति ॥
रहो इष्ट हरि जनक विधाता । शंकर विमुख तजो सबनाता ॥
तेहिते मानि नाथ मोहिं दासी । सबतजिभजोशंभअविनाशी ॥
सुरअधिकार तजो शिव शासन । रवि नमानलखुदीपप्रकासन ॥
बड़ीभागि निज लखो सुरारी । जो त्वहिं अज्ञादीन पुरारी ॥
सुनि रिसाय बहुक्रोध संभारी । उठिकर द्वारगयो असुरारी ॥

होत भोर मंत्री सब आये। होहु तयार हुकुम सब पाये॥
चली फौज कछु बरणिनजाई। गिरि तरु टूटत नदीसुखाई॥
दिशि कैलास चले शठ कैसे। सलभ समूह अनलकहँजैसे॥
शंखचूड़ मंत्री युत आपू। चलतभयो करिकोटि प्रतापू॥
आगे राहु शुक्र युत सोहै। इनसन्मुख सुखकौनलहोहै॥
यहिमिसि असगुनभयोअनेका। शिवमायावश गनत न एका॥
पहुंचे जाय निकट कैलाशा। जलथल निरखि रोतहँवासा॥
शिवको चर अस खबरजनाई। गिरितर कटक दनुजकीआई॥
तब शिव बोलि लीन गणचारी। नन्दी षटमुख गनपमखारी॥
गिरिते उतरि बेगि तुम जावो। कटक समेत बेरनहिं लावो॥
रोकहु दनुज न गिरिपर आवै। करहु उपाय वेगि हटिजावै॥
मारहु ताहि खयलाय खयलाई। जिमि न करैपर ऐसिढिठाई॥
दो० शिवआयसुसुनि गणप्रमुख रणहित कटकसमेत।
उतरे गिरिते तुरतही बोलत जय वृषकेत॥
सो० गिरिते चली तुरन्त सहित योगिनी कालिका।
करु करु निश्चर अंत घन समान गाजत चली॥
होनलग्यो रण विकट कराला। कहिजय शंखचूड़ शशिभाला॥
ताकि हनहिं गणवर वरतीरा। डारहिं काटि निशाचर वीरा॥
निश्चर ताकि गणनकहँ मारैं। बीचहिं गणनकाटि महिडारैं॥
कबहु दनुजपर गणनक धावा। कबहुं निशाचर गणनभगावा॥
अचरज करो न सुनिमनिराई। बिनजय अजय नयुद्धरवहाई॥
देवहु सकल जुरे तहँ आई। इन्द्रादिक रणसाज बनाई॥
दिगरतिसकलछिहेनिजलश्कर। लगे लड़न बंदिपद शंकर॥
कटक समेत रमापति आये। गरुड़ चढ़े सब अस्त्र सजाये॥
शिवहिं बंदि रणके ढिग आये। बहुत निशाचर मारि गिराये॥
सांझ समय रण बंद कराई। निजनिज बासउभयबलआई॥
तेहिदिन निश्चर मरे अनेका। सैनप मुख्य एकते एका॥
शुक्र असुर गुरुतहँ चलिआयो। शिष्यन मरे देखि दुखछायो॥
मंत्र महा मृत्युञ्जय जोई। जो तिथिकिहे सजीवन होई॥

सो कवि किहेरहै तेहि सिद्धा। लोक वेद यहु बात प्रसिद्धा॥
दो० तेहि मनुमंत्रित सींचिजल लीन जिआय अदेव।
शंखचूड़ बहु हर्षयुत करन लग्यो गुरु सेव॥
सो० यहिविधि मुनि बहुबार मारी सुरगण असुरदल।
कवि नित करत उबारपढ़ि संजीवनि मंत्रशिव॥
तबगण प्रमथ विष्णुके प्रेरे। जाय शंभुपहँ युग कर जोरे॥
नाथ सुनहु असविनय हमारो। अतिशय प्रबला अजातिहारो॥
जितने असुर हनोहम दिनमा। लेतजियायसकलकविछिनमा॥
यहिविधिजिये न जीतब साँई। जो परेश नहिं करौ उपाई॥
सुनि शंभू करि क्रोध अपारा। नंदीगण कहँ तुरत हँकारा॥
आयसुदीन तुरत तुमजावा। कविहिपकरिममनिकटहिलावो॥
तुरत गयो नन्दीगण रणमा। मारी बहुत निशाचर क्षणमा॥
कविके निकटगयो अतितरजी। लीन उठाय महाधुनि गरजी॥
निशिचरपतिसुनिलाग गोहारी। गयोकूदि गण जहँ त्रिपुरारी॥
गुरुहीन जब भये सुरारी। जयका आशतजो सब झारी॥
कविहिनिरखिशिवक्रोधपसारी। मुखमें लीलि पेटमा डारी॥
शिवके उदरगयो कवि जबहीं। तहौं दीखविधिकीकृतसबहीं॥
ह्वै चकृत बहुधा तहँ घूमें। सब जग लखी पेट शंभू में॥
भूमि अकाश नदी गिरि गांऊं। बहुप्रकार देखी सब ठांऊं॥
लखीदिवसनिशिरविरजनीशा। सकल सुरासुर दीख कवीशा॥
पुर बैकुंठ रमा बनवारी। सुरा सहित देखी जगकारी॥
दो० यहिमिसि देखी सकलजग घूमि घूमि सबठौर।
बीते संवत सहस इमि शंभु न देखी और॥
सो० निजहु रूप बहु देखिभा चकृत पुनि ज्ञानलहि।
शिवहि सर्वपर लेखि करीजाप कवि उदरमें॥
जो षट वरण मंत्र मुनिराई। सर्वोपरि जाको श्रुति गाई॥
वेदसार सो सब मनुराजा। जपत तुरत पूरत सबकाजा॥
सदासिद्धि वृष वृद्धि करैया। लहत चारिफल तुरत जपैया॥
जेहि जपि सृष्टिरचै जगकारी। जेहिजपि पालतजगतमुरारी॥

जेहिगहि शंभु करत लयझारी। जेहि जपि शेष धरतमहिभारी॥
जेहि जपि इन्द्रभयो सुरराजा। जेहिजपिदिगपकरतजभकाजा॥
जेहिजपिरमाविष्णुपतिपावा। जेहिजपिघटसुत सिन्धुसुखावा॥
अस जो मंत्रताहि नरत्यागी। जपत अपर मनु परम अभागी॥
तेहिजपिउदर बीच कविराई। करी सिद्धि जपि घरी अढ़ाई॥
जब कविकीन जापतजि दंभू। भये प्रसन्न सकल पति शंभू॥
वीजपंथ तेहिलीन निकारी। शुक्रनाम भा तबते जारी॥
मांगु मांगुवर कह्यो कृपाला। हाथ जोरि बोल्यो भृगुबाला॥
प्रथमदेहु प्रभु निजपद सेवा। याचत जाहिसकलमुनिदेवा॥
पुनि अपराध क्षमा मम कीजै। सेवक जानि अभय बर दीजै॥

दो० एवमस्तु शंकरकही बिदा करी हरषाय।
शंकरपद शिरनायकवि गयोसुआयसुपाय॥

सो० कहु मुनीश परदेव को कृपालशंकरसरिस।
जोनकरैशिवसेवतेहिहतभागीमुनिलखो॥

उहां होत रण कठिन करारे। बाजत दुहुंदिशि समर नगारे॥
सुरअसुप्रमथगणनसबमिलिके। हनतनिशाचरबलकरिपिलिके॥
षटमुख गणपति अरुबनवारी। शंखचूड़ सन लरत प्रचारी॥
अनल बाण जब तज्यो सुरारी। बरुण बाण तब हन्योमुरारी॥
कहि जय कृष्णनिशाचर धावत। हनत रमापतिजयशिवगावत॥
मारी सर्प बाण असुरेशा। गरुड़ बाण तब हनी रमेशा॥
कृष्ण बाण तब असुर पवारी। हनी पाशुपत शर बनवारी॥
देखहु शंभु बिमुख मुनि रोया। हनतस्वभगतहिहरितजिदाया॥
यहोलखत नहिं भजै पुरारी। सो जड़ अधम अचेतअनारी॥
यहिमिसि भयोमहा रण भारी। दुहु दिशिभयोन नेकहु हारी॥
तब बिधि बरमन चीति रमेशा। गयो शंभुपहँ सहित गणेशा॥
करि दंडवत माथ महि नाई। बोलत भयो सुआयसु पाई॥
शंखहि प्रभु बिधिको बरदाना। तजि परेश स्वहिहतेन आना॥
सो परेश तुम तजिपर नाहीं। शंख चूड़ बध तव कर माहीं॥

दो० शंखचूड़ बधरूढ़ मत बर बश तुव कर नाथ।

नाहिं तौ सब चर अचर करमरब जियब तुव हाथ ॥
सो० अबन उचित अस भाल ताहि रूपलाउब समरमहँ।
हतौ ताहि तत काल चलि महेश सुर सुख लहैं ॥
सुनिअस बिनय रमापतिकेरी। देवन पर करि नेह घनेरी ॥
उठे त्रिशूल हाथ शिव लाई। जासों प्रलय करत जगसांई ॥
उतरि कोहते समर तकाया। क्याल बाललखि जनुखगराया ॥
रणमहँपहुंचि लरनशिवलागे। बिकटरूपलखि निशिचरभागे ॥
दंभा सुतहु त्यागि छल दंभू। लरन लाग ह्वै सन्मुख शंभू ॥
बहुत काल लगि भई लराई। जस कछु समर भावश्रुतिगाई ॥
शिव सँगघर कोबीर बखानब। अदब हीनपर बलउर आनब ॥
लीला करत सकल जगसांई। परन भेक सँग शेष लराई ॥
यहिमिसिबहुतकालजबबीता। दंभा सुतहि न शंकर जीता ॥
तब ह्वै बिकल सदेव सुरेशा। गहीजाय पद कमल रमेशा ॥
बिकल देव लखिकै बनवारी। गयो जहां रण लरत पुरारी ॥
हाथ जोरि कह रमानिवासा। अबन महा प्रभु करहु तमासा ॥
हतहु दंभ सुत करहु न देरी। काटहु बिपति सकल सुरकेरी ॥
तब शिव कही सुनो बनवारी। है तियतासु पति ब्रत धारी ॥
बिधवा होयन पतिब्रत मारत। वेद बिरोध होय यहि मारत ॥
तापर कृष्ण कवच यहि बाजू। सोवा पालब है मम काजू ॥
दो० ताते तेहि ढिग जायतुम कृष्ण कवच छलि लेहु।
अरु छलि तेहितिय भंगिब्रत देवन को सुखदेहु ॥
सो० तुम्हैं न लगिहै पाप ब्रतभंगन को मम कृपा।
खोवन हित सुरताप है तुम्हरो अवतार हरि ॥
धरि शंकर आयसु शिर भारी। तुरत बूढ़ द्विज बन्यो मुरारी ॥
लिये लकुट कर चले एकाकी। माथे तिलक दिहे मृतिकाकी ॥
असितबसनसितकेश स्वहाता। चलत लकुट बलकंपितगाता ॥
महाराज श्रीपति असुरारी। शिव शासनगहिबने भिखारी ॥
जेहि शासन शिर गहतरमेशा। तहँ नर सुतहि कौनउपदेशा ॥
तब हरि शंख चूड़ ढिग जाई। बोले देव दत्त छल छाई ॥

द्विज लखिमहादीनअनुमानी । बोला शंख चूड़ बर दानी ॥
मांगु मांगु द्विज जो मन भावै । लहितव कृपा मोरिजयपावै ॥
कहा दीन द्विज तन भगवाना । मोरि वृत्ति सुनिये बलवाना ॥
पिता मोर अति शय धन वंता । कृष्ण भक्त बरबर कुलवंता ॥
सो मरिगयो मोहिं धनत्यागी । सो हरिलयो चोरबिधिलागी ॥
ताते भिक्षाटन अब करहूं । मांगत भीख लाज बहुधरहूं ॥
ताते मांगि सकहु नहिं राजा । मिलय नहीं तौहोय अकाजा ॥
जगमें निन्दा होय हमारी । लहतभीखनहिं बनिउभिखारी ॥

दो० शंखचूड़ द्विज बचन सुनि बोला सत्त प्रमाण ।
कृष्ण सत्त मैं देव सब मांगु रुचित बरदान ॥

सो० मांगी द्विज संकोच शंखचूड़ दीन्ही तुरत ।
करीन नेकहु शोच यद्यपि रहै सो प्राण सम ॥

तन धन धाम नारि सुत वंधू । तृण समान जानै सत सिंधू ॥
पाय कवच हरषाय मुरारी । शंख चूड़के भवन सिधारी ॥
धरि बपु शंख चूड़ बन वारी । बैसिन निशिचर सैन सवारी ॥
हरषि बजावत बिजय नगारे । मंत्रिन सहित गयोतेहि द्वारे ॥
लखितुलसीपति युतकल्याना । हरषित द्विजन दीनबहुदाना ॥
साजि आरती बाहिर आई । पतिहि प्रणाम कीनशिरनाई ॥
करि आरती महा हरषाई । धरिकर पतिहि भवनलैआई ॥
पांय पखार पान मुख दीन्हा । हाथ जोरि बिनतीतब कीन्हा ॥
नाथ एक शंका अति मोरे । सो सब जाय अनुग्रह तोरे ॥
सर्बो जित मृत्युंजय नामा । अज सच्चिदा नंदपर धामा ॥
ताको कहत नाथ तुम जीती । यहसुनिमनहिंनहोतिप्रतीती ॥
जो चर अचरहिमारि गिरावत ।हरिबिधिजनकजाहिश्रुतिगावत॥
जो कालहु कर काल कहावै । तेहि जीतब बिश्वास न आवै ॥
बोल्यो शंखचूड़ तन अच्युत । लखिबिचारतुलसीकरअद्भुत ॥

दो० जो तुम कहो सो सत्यप्रिय देखि महा रणरारि ।
उभयक इति समुझायबिधि दीन्हीसुलहपसारि ॥

सो० विधिकर शासन मानि सुरन राज हसतजिदयो ।

सुर सनाथ भे जानि शिवहु गये कैलास को ॥
असकहि प्रिये लीन उर लाई । शय्याउपर गये सुख दाई ॥
करि बिहारपतिब्रतहि छुड़ावा । बार बार हरि काम जगावा ॥
उहां शंखचूड़हि शिव मारा । सकल सुरन सुखलहीअपारा ॥
तन तजि गयो शंख गोधामा । बनापुनिहु हरि मित्र सुदामा ॥
शंभु सरिस को कृपा अगाधू । लही शत्रु जो लहत न साधू ॥
धन्य भागि तुलसी मुनिराई । जेहि पति भये रमापति जाई ॥
मुनिमन जेहिकरध्याननिहारैं । सो तुलसी सँग करत बिहारैं ॥
शिव माया अब सुनहुमुनीशा । जोहठिकरतसकलमतिखीशा ॥
बिहरसमयजसस्वपतिसुभाऊ । लखो न तुलसी बहुरतिदाऊ॥
तब चिन्ताकरि मनहिं विशेषी । पतिको मरण ध्यानधरिदेखी ॥
तब बोली करि क्रोध अपारा । को तु चोर मम धर्म बिगारा ॥
कहु निज वृत्ति प्रकट छलकारी । नतरु देउँ शापानल जारी ॥
सुनि अस प्रकट भये श्रीकंता । बने चतुर्भुज रूप तुरंता ॥
श्याम शरीर जलद सम सोहै । बरणै छबि अस कविजगकोहै॥

दो० जाको छबि बर्णत सुरा अहिप न पावत पार ।
सो छबि किमि ओरो कहै मतिकोहीन गवांर ॥

सो० रसना पावन काज कछु बरणौं हरि रूप को ।
महाराज सुर राज मोहिं देहिं शिव भक्ति सुख ॥

श्याम शरीर सबन बन दासम । निरखत कामकरै ममताकम॥
माथे मुकुट समनि छबि दाई । कोटि भानु जनु उदयसुहाई ॥
काननमें कुंडल छबि छाजे । भाल विशाल त्रिपुण्ड्रबिराजे ॥
नयन तामरस अरुण स्वहाई । भौंह कमान काम की गाई ॥
शुक नासा छबि देत अनूपा । गोल कपोल शंख के रूपा ॥
हँसी मंद जनको दुख हरही । दाड़िम बीज हिरद रदकरही ॥
कंबु कंठ वृष कंध सुहावा । भुज बिशाल कधि मानबतावा ॥
अंगदादि भूषण कर सोहैं । कंज पीत यमुना सर मोहैं ॥
सकल स्वअस्त्र लिहे सुरकेतू । दुष्ट दलन जन रक्षा हेतू ॥
शंख चक्र कज गदा स्वहाई । गल मणिमाल अधिकछबिदाई ॥

हृदय लसनि रुद्राक्षकमाला । अरु बैजंती गहे कृपाला ॥
घस बनमाल फूल के गजरे । जनु यकठ तारागण सगरे ॥
उदर बिशाल बनाबहु सुंदर । नाभि गहिर तहँ फूलाजलकर ॥
पहिरे पीत बसन तन कारे । मरकत गिरि जनु दिनकरवारे ॥
॥ दो० रान महा द्युति खान तहँ गुलुफगोल अनमोल ।
चरणकमल जहँ चिन्तमुनि मधुहैकरतकलोल ॥
॥ सो० तरवा अरुण बखान कोटि बाल रवि की प्रभा ।
धरि थोरो जिहिध्यान लहाचहै शिवभक्तिसुख ॥
यहि भिति जो प्रकटेभगवाना । लखितुलसीअतिशयरिसताना॥
रे रे दुष्ट चोर छल कारी । किहि पराध मम धर्म बिगारी ॥
कहीविष्णु सुनुनारि सयानी । मम स्पर्श नहिं है ब्रत हानी ॥
घट घट बसौं चराचर माहीं । बाढ़े धर्म गहौं जिहि बाहीं ॥
लेत नाम मम पाप बिलावै । मम स्पर्श किमि धर्म नशावै ॥
तुलसीकहीअधिकरिसकरतै । जो वृष रहत ककल पति मरतै ॥
धर्मपाल तुमकहँ श्रुतिभाषैं । सो बिपरीत मोर मन साखै ॥
कज उपमा तुमकासबगावै । तहँ मृदु फूलहि अर्थ बतावै ॥
मममनकठिनकंजकांटासम । ढूंढ़त जगहि सदा दै दै दम ॥
ममपति सदाभरोस तुम्हारा । करत रहा नहिं आन अधारा ॥
पूजत तुम्हैं जपत लवलाई । तिहि मारण हित यतन रँभाई ॥
तवचितहैजिमिउपलकठोरा । होहु उपल जग गहि बचमोरा ॥
तबहरिकही सुनौसतिबाता । शिव के बैर कौन जग त्राता ॥
शिवशासन जो तजै अनारी । सोहत भाग्य कहत श्रुतिचारी ॥
जो जगकरै भरै पुनि हरई । तासु बैरकरि किहि बलसरई ॥
चहै होय कैस्यो मम दासा । करि शिव बैर तजै मम आसा ॥
दो० शिव निन्दक मम दास जो करै हसाई मोरि ।
तिहि मारौं निज शत्रु लखि पठैरवरवा खोरि ॥
सो० तुम करि जड़वत ज्ञान दई शाप म्वहिं अतिकठिन ।
तुमहुं होहु जड़ मात जगमें कुज असशाप मम ॥
सुनि हरि तुलसीकेरकुबादा । प्रकटे तुरत शंभु सुख कादा ॥

कीन निवारण बाद कठोरा। करी उभय दिशि कृपा अथोरा॥
तुलसी सन बोले वृष केतू। सुनहु सती मम बचन सहेतू॥
हरिहिलखौसबजगपतिस्वामी। मम परतन सब घटघटगामी॥
हरि कर नाम लेत यकबारा। कटै पाप वृष बढ़ै अपारा॥
तिहि स्पर्श पाप नहिं मानौ। मरब स्वपति मम लीलाजानौ॥
निजवृषकीलखुसतिप्रभुताई। तव पति भये रमा पति आई॥
जिहिनिरखैंमुनिध्यानलगाई। सो प्रत्यक्ष तुव पति भा आई॥
अबतजिशोचसुत्यागिगवांरी। बनु हरि तिय बैकुंठ बिहारी॥
मम माया वश उभय भुलाई। शापाशाप किह्यो हठलाई॥
तेहि कारण हरिहै शिल रूपा। शालिग्राम नाम सुर भूपा॥
बनो वृक्ष जगमें तुम बामा। तुलसी तहों रहै तुव नामा॥
जगमें रहि पूरहु सब कामा। हरि तुलसी असबोलतनामा॥
हरि करि छल ब्रततोरछड़ावा। सो फल भलीभांतिहरिपावा॥
हरि शिर उपर होय तुवबासा। बिन तू हरि शिररहै उदासा॥
तुव पति अस्ति शंख के रूपा। रहै सदा हरि निकट अनूपा॥

दो० जो पूजै हरिरूप शिलनिश्चय करि जग मांहि।
बिन तुलसी दल शंखके फलन मिलैकछुताहि॥

सो० भे पुनि अंतर्द्धान तुलसी को समझाय शिव।
करि करुणा वृष जान खैंचिलीन अपनी अजा॥

माया रहित भई जब तुलसी। हरिहिं मानिनिजपतिबहुहुलसी॥
युग करजोरि गई पुर हरिके। बिनती करण लगीपगु परिके॥
अनुचितबहुत तुम्हैं मैं गावा। ताकर फलनीकी बिधि पावा॥
अब करि कृपा क्षमहु अप राधू। तुम करुणा कर नाथ अगाधू॥
एवमस्तु कहि रमा निवासा। तुलसीसहित गयोनिजबासा॥
लखौ शंभु लीला मुनि राया। निशिचर बधू भई हरि जाया॥
निशिचरतियतुलसी मुनिराई। हरि भगवान जक्त सुखदाई॥
तेहि तुलसीहरि शीश चढ़ावा। निज हारे गुर भौरी खावा॥
सेरहि करै सुमेर पुरारी। करै सेर पुनि ताहि विगारी॥
यह सब खेल हवैशशि माथा। तार चराचर जाके हाथा॥

अबसुनिये मुनिजग व्यवहारा । शालिग्राम क पूजन कारा ॥
शंख बजाय चढ़ावै तुलसी । बांछित लहै सदामन हुलसी ॥
हरि पूजक जे चतुर मुनीशा । तुलसी दलहि धरहिहरिशीशा ॥
शंख बजाय रिझाय रमापति । इत सुखलहैंलहैं उतपर गति ॥

दो० यहि बिधि शंकर बैरसों मारत हरि निजदास ।
ताते राखत चतुर नर शिवपददृढ़ बिश्वास ॥
शिवहु स्वहात न दास निज जो बैरी भगवान ।
तेहिते दुबिधा छाड़िलखु हरिहर एक समान ॥
असमुनिबसुबसुसहस ऋषिसबैपरिशिवचीति ।
पूजत हरिबिधि सकलसुर मांगतशिवपदप्रीति ॥
तेहिते जो नर चतुर जग पूजत सुर सरमान ।
सबसे फल मांगत यही करहिं कृपावृषजान ॥
सुनि अस जड़चैतन्य ह्वै जो न भजै वृषकेत ।
तेहिते श्वान सियार भल होय न कबहूं चेत ॥
यह कलि विष धर ना गहै ताकोशिवजसमोर ।
जौन सुनै चितदै पढ़ै कस न लहै गति घोर ॥
हाथजोरि ओरी कहै सुनो सकल मम मीत ।
जो इत सुख उत गति चहौ करौशंभुपदप्रीत ॥
यदपि भदेशिल भनितममतदपि भराजसईश ।
सुर सरि जलजिमिकांचमेंधरतसकलसुरशीश ॥
जो यहि आदर करि पढ़ै सुनै चित्त करि बेश ।
तेहि परहोहिं प्रसन्न रबि हरिहर गौरि गणेश ॥
इत संपतिसंतति सहितरहै सुखित जगमांहि ।
उत मरि हरि पुर बसै योगी जाहिसिहांहि ॥
जो चाहौयहि जगतमें गति सुख संपति बाल ।
सकल तजो शिवकहँ भजो भाषत ओरीलाल ॥

छं० ओरीकहैं सबसे करिनेह उभय करजोरे बिनय करिके ॥
जगमेंसुखसारजु कीनचहौप्रथमैं बनिदास रहौहरिके ॥
तेहिकोफलशंभुकिभक्ति मिलैतबमुक्तिमिलैगटईधरिके ॥

जौनउभय पदप्रीतिकरै स्वइखातहै माटिमुहोभरिके ॥
सो० होत सकल सुख धाम गायशंभु यशअति सुखद ।
बोरी लह्यो अराम छूट सकल भव रोग दुख ॥

छंद

शर अनल अंक सशंक मधु सित मृगे छठि शशि वारही ।
तेहि समय भे संपूर्ण पुस्तक हरष भाषत वारही ॥
जो पढ़ै चितदै सुनै बोरी लहै सब सुख सारही ।
तेहि भरैं मनसा गणप हरि हर उमाबिधि दिन कारही ॥
दो० यह कलिकाल कराल अति बोरी कहत पुकारि ।
भजि शंकर कलिको जितो परबिधिमें है हारि ॥
सो० जो सचेत शिव दास पढ़ै सुनै मम भनित को ।
जड़ करिहैं उपहास अँधरे मुकुर स्वहात नहिं ॥
दो० जयशिव जयशिव जयशिवा जयशिव जयशिव शंभु ।
शिव तजि बोरीलाल को अपर नहै अवलंभु ॥

इतिश्री शिवचरित्रे पुस्तक जड़चेतनी नाम भनितभाषा
सम्पूर्ण समाप्त शुभमस्तु ॥



श्रीगणेशायनमः

गिरिजामङ्गल ॥

——000——

दोहा ॥

प्रथम बन्दि गणपति चरण सकल सिद्धिके हेत।
बरणौं शंकर सुयशको जो अनभव सुखदेत ॥

कूटभाषा ॥

वारिजसुत सुत तासु सुत तावाहन मुखध्याय।
ज्यहिबलबलि रिपुरिपुसुता मंगलकहौं बनाय ॥

यहां काव्य कर्ता गणेशजी की बन्दना करतु है कि वारिज नाम कमल कमल के सुतजो हैं ब्रह्मा और ब्रह्माके सुत जो हैं कश्यप तिनके सुतजोहैं इन्द्र तिनका वाहन जोहै हस्ती हस्ती मुख जोहैं गणेश तिनका ध्यान करतहौं ज्यहि ध्यानके बलसों बलिरिपु जोहैं इन्द्र तिनका रिपु जोहै पहाड़ और पहाड़ जो है हिमंचल तिनकी सुता जोहैं पार्वती तिनका मंगलजोहै बिवाह तिसको बनाय करिकै वर्णन करौं ॥

दो० घटसुत रिपुसुत यानपति तारिपुबेलिविचारु।
तारिपु कन्या कंतपद बौरी प्रेम सम्हारु ॥

घटसुत जोहैं अगस्त्यमुनि तिनका रिपुकहे समुद्र ताको सुत कहे चन्द्रमा तेहिका यानकहे वाहन जोहै मृगा मृगाको पति जोहै सिंह ताको रिपुहै जो हाथी अरु हाथीको कहे नाग सो बेलि नागमें एकत्र करने से नागबेलि असपदहुवा नागबेलिकहे कमल ताको रिपु जो है पाला पालाका नाम हिमि औ हिमि जोहैं हिमंचल तिनकी कन्या जो हैं पार्वती तिनके कंत जो हैं

महादेव तिनके पावन में है वोरी प्रेम सम्हारु काव्य कर्ता अपनाको समुझावत है कि हे मन तू श्रीमहादेवजी के चरणन सों नेहकरु ॥

सो० भूधरकन्या कंत तापितु रिपुपदवंदिकै ।
ज्यहिउरमाझबसंत गिरिजागिरिजापतिसदा ॥

अब कवि श्री रामचन्द्रजी की बंदना करतु है ॥ भूधर जो हैं शेषनाग तिनकी कन्या जोहै सिलोचन तिसका पति जो है मेघनाद मेघनाद का पिता जो है रावण तिसके रिपु जो हैं रामचन्द्र तिनको बंदना करौंहौं कैसे हैं रामचन्द्र कि जिनके हृदय के मध्यमें गिरिजा जो हैं श्री पार्वतीजी औ श्रीमहादेवजी निश्यहीं बसे रहते हैं ॥

दो० शैलसुतापतिहाररिपुताहितरिपुसुतध्याय ।
बरनौंशिवगिरिजासुयशसबकलेशमिटिजाय ॥

शैल नाम पर्वत आवश्यकता हिमंचल तिनकी कन्या जो हैं पार्वती तिनके पति जो हैं श्री महादेव तिनका हार जो है सर्प तिसका रिपु कहे गरुड़ तिनका हित जो है पक्ष समाधान पंख तिसका रिपु जो है बयारि तिसके सुत जो हैं हनुमान तिनका ध्यानकरिकै गौरीशंकर का सुयश वर्णन करौं जासों सब कलेश दूर होजाय ॥

दो० जाबल बुधि बानी चलै विधि रानी तिहि नाम ।
ताके पद बंदन करौं मिलै सकल मन काम ॥

सो० उमा चरण शिरनाय उमा सुयश वर्णन करौं ।
माता करै सहाय निज यश मम उरमें धरै ॥

पुनि बंदौं शिव जन हरषाता । जो अति सुखद सुमंगल दाता ॥
परम पाशुपत जे जग माहीं । बंदौं तिन्हैं जोरि युग बाहीं ॥
षट्दश महा शैव जगख्याता । कोमल मंजु चरण जल जाता ॥
पृथक् पृथक् बंदौं सब काहू । ह्वै प्रसन्न मेटहिं दुख दाहू ॥
दुरवासा पद कमल नमामी । शिव अवतार सकलजगस्वामी ॥

परम पाशुपत तेज अतीवा। ज्यहि वर बची द्रौपदी सीवा॥
पुनि बंदौं कौशिक पदकंजा। ज्यहि की कृपा राम धनु भंजा॥
शिवहि सेय असभयेप्रतापी। भयो दास हरि तिहि गुणथापी॥
पुनिविधिकेपदकमलमनाऊं। जासु कृपा निरमल मति पाऊं॥
शिवहि सेय जोभाजगकारी। बंदत चरण सकल दुखहारी॥
बंदौं मारकंडय युत प्रीता। शिवहि सेय जो मृत्युहि जीता॥
बंदौं इंद्रहि सहित समाजा। शिवहि सेय जो भा सुर राजा॥
बंदौं वान चरण मनलाई। जो शिव भक्त अनन्य अघाई॥
भोग्योजगसुखसहितसमाजा। भयो अंत शिव पुर गण राजा॥

दो० प्रीति सहित कर जोरि युग बंदौं हरि महराज।
शिवहि सेय सबपरभयो जगपतिसुरशिरताज॥

सो० लह्यो रमा मणि चार चक्र सुदर्शन हर कृपा।
भाषत वेद पुकार नहिं शिव प्रिय पर विष्णु से॥

बंदौं शक्ति चरण धरि पानी। शिवहि सेय जो भै शिवरानी॥
शंभु शक्ति से नेक न भेदा। वाक्य अर्थ सम गावत वेदा॥
भवभवविभव पराभवखानी। अंशज जासु रमा ब्रह्मानी॥
पुनिबंदौं पद पदुम दधीचा। भयो न अस शिवजनजगबीचा॥
शिवहिसेयअसभयोअभीती। हरिहु न पायहु तिहि कहँ जीती॥
बंदौं चरण परशु धर रामा। जो शिव सेय लह्यो सब कामा॥
दश अवतार मध्य हरिरूपा। सुमिरत जाहि मिटै सब धूपा॥
पुनि बंदौं रघुपति के चरणा। सब सुखमिलत जासुकीशरणा॥
शिवहिसेय असलह्योप्रतापा। मिलतसकलफलजिहिकीजापा॥
पुनिबलिरामचरण धरिपानी। बंदौं महाशैव अनुमानी॥
शिवहिसेय असलह्योबड़ाई। कृष्णहु कीन जासु सेवकाई॥
बंदौं गर्ग चरण मनलाई। भयो कृष्ण गुरु शिव यशगाई॥
बंदौं शुक्र चरण धरि शीशा। लह्यो सजीवन मनु भजिईशा॥
बंदौं चरण वृहस्पति नामी। सुर गुरु भयो सेय शिवस्वामी॥

दो० पुनि गौतम के चरण युग बंदौं बारम्बार।
जो शिवभक्ति अनन्यकरि लह्योपदारथचार॥

सो० गौतम को जो नाम पुर पैठत सुमिरन करै।
लहै सकल मनकाम आदर करै नरेश बहु॥
पुनि बंदौं युगपद विधिरानी। जो मम हृदय बतावत बानी॥
फिरिफिरितासुचरणधरिमाथा। कछु गाऊं शंकर गुण गाथा॥
एक दिवस मनमें रुचिआई। कछुक नाम हित करौं उपाई॥
वेद पुराण संत अस कहही। मरयो न शोचहि पाछे रहही॥
कूप तड़ाग सेत आरामा। अपर शिवालय अरु सुरधामा॥
है परंतु तहँ और विवेका। इत उत सुखद शिवालय एका॥
अपर सकल जगमें यशहेतू। यक शिव धाम उभय दिशिकेतू॥
तब रुचि बढ़ी शिवालयहेता। पर मम भागि न सो दिशिचेता॥
करयो न असहरिनारिसहाई। जेहि ते मम रुचि लहै बड़ाई॥
बिनाभागिनहिंअससुखमारा। है परंतु तहँ धन व्योहारा॥
बहुत धनी हम जगमें देखा। शिव से विमुख अधमके भेखा॥
बिन शैवत धन कैससरोई। घूर उपर जिमि फूल तरोई॥
बिन शैवत कसहै धनधारी। बसन हीन युत भूषण नारी॥
बिन शैवत कसहै धनवाला। बिना पुरुष जिमि सुंदरि बाला॥
सोकिमिलहै भागिममछोटो। पर शिव चहैं तो होवै मोटो॥
तृण से मेरु मेरु से तिनका। करैं शंभु चितवैं जो किनका॥
दो० बाढ़ति रुचि शिव गेहपर बिना द्रव्यसकुचाति।
तब विधि रानी करि कृपा बोध कीन हरषाति॥
सो० करि मम हृदय निकेत उपजायो मम चित्तमें।
करु शिव यशपर चेत सहसशिवालयसमजोई॥
जोपुस्तक बनवोशिवयशकी। लहु फलतुरतशिवाल सहसकी॥
थपै शिवालय में लिँग एका। ग्रंथ मध्य शिव नाम अनेका॥
असलखि शारदकी करुणाई। कहौं सुयश शिवरुचि मनछाई॥
तबदेख्यौं शिवसुयशअपारा। नेति नेति जेहि निगम पुकारा॥
थकतवेदबिचरतजिहिखोरी। सो पथचलै किमिहिं जड़भोरी॥
है शिव सुयश बनाउब कैसे। जलपर भीत उठाउब जैसे॥
यहै शोचि शंका भै भारी। तब मम कंठ कह्यो विधि नारी॥

शंभुसुयशअतिशय सुखदाई । तुम बनवो हम करब सहाई ॥
लखिकृपालसबविधिविधिनारी । भयोहृदय ममअधिकसुखारी ॥
करि प्रणाम गुरुको अतिआदर । लाग्योकहन सुयशशिवसादर ॥
प्रथमकह्योंजिहिबिधिशिवआये । गिरि कैलास महाछबिछाये ॥
नाम तासु मनकरि अनुमाना । श्री कैलासागमन बखाना ॥
दूसर कह्यों काशिकागमनू । काशी महत महा दुखदमनू ॥
जड़चेतनो तृतीय बनाई । सीता राम चरित तहँ गाई ॥
कीन जैसि शिवत रघुराई । बरण्यों सकल सबिस्तरलाई ॥
जब भे तीन ग्रंथ सुखकारी । निरमलयश शिवके अधिकारी ॥
तब मन रुचि चौथेपर धारी । लाभ सों लोभ होय अधिकारी ॥
तब मनमें उपज्योअसज्ञाना । तीनिउ ग्रंथ कह्यों शिव बाना ॥

छं० अब चौथ जो यह ग्रंथ बनवों शंभु करुणा पायकै ।
तहँ सुयश शंकर सहित गिरिजा भाषहूं मनलायकै ॥
बिस्तार युत गिरि कन्यका यश कहत ओरीगायकै ।
जो सुनै जगमें पढ़ै मंगल सुखलहै अधिकायकै ॥

दो० गिरिजा मंगल नाम तेहि तेहिते धरयों बिचारि ।
मुनि शुचि अंकनिशीशमें बत्सरको अनुसारि ॥

सो० मधु माधव मधु पूत अपर माधवी मेघवी ।
मास पक्षदिन जत तिथिनक्षत्र क्रमसेलखो ॥

टी० मधुकहे चैत्रको महीना माधव नाम कृष्णपक्ष मधु पूत कहे सोमवार माधवी कहे एकादशी तिथि मेघवीकहे धनिष्ठा नक्षत्रमें यह ग्रंथ प्रारम्भ हुआ ॥ इति ॥

ऊंडव नाम ग्राम सुखकारी । रक्षक जहां चक्र गदधारी ॥
श्याम चतुर्भुज नाम सुहाई । छाया तासु ग्रामपर छाई ॥
देहिक देविक भवतिक तापा । तेहिबलनहिं पुरवासिनव्यापा ॥
बसत तहांममपितुसुखधामा । तेहि शिवदीनलाल असनामा ॥
कायथ में श्री बास्तम दूसर । तेहि समयशीनलखियत दूसर ॥
अति तेजसी परम वृष धारी । दाता वीर ज्ञान अधिकारी ॥
बिद्यमान धर्म्मज्ञ अशेषी । सर सुर पूजक शैव बिशेषी ॥

तेहि सुतभयो मंदमति ओरी ।ज्यहिलखिअघतनरहतनिकोरी ॥
अब निज जड़ताकहौंपुकारी । चहौं छुआ शशि बांह पसारी ॥
चहौं स्वअज़्लि कधिकबटोरी । अस जड़ता देखौ सब मोरी ॥
जहँ खगेशबल नाहिं बिसाई । तहां मशक किमिकरै उपाई ॥
शिव यशअगम अगाधि अपारा । नेति नेति ज्यहिनिगमपुकारा ॥
शेश सहस मुख सकतनगाई । असहै शंभु सुयश प्रभुताई ॥
बिष्णुबिरंचि आदि शचिकंता । बरणत रहत लहत नहिअंता ॥

दो० सो यश मैं बरणा चहत यहै जड़ापन आहि ।
जहां न पावत पार सुर नरकेहि लेखेमांहि ॥

सो० पुनि नहिं ज्ञान पसार विद्याको बल नेक नहिं ।
गहा चहौं गज़ भार पौरुष नहीं पिपील को ॥

है परंतु तहँ यह दृढ़ताई । लखि निजपरबिधिनारिसहाई ॥
बड़ करुणाई लहि अतिनीचू । बड़ेहोहिं जिमि सुरघर कीचू ॥
लहिकरुणागजजिनिअजशाला। खात मधुरफल ऊंचबिशाला ॥
बार बार तेहि के पद ध्याई । भाषौंशंभु सुयश सुखदाई ॥
जेजगमें बुधि मान सयाने । तिनके पद बंदौं असजाने ॥
जिमिनहँसैं लखिभनितभदेशू । करहिं कृपालखि सुयशमहेशू ॥
जानौं नहिं कछु काव्यतरीका । बिन तरीकनहिं लागतनीका ॥
परलखियो तहँ ज्ञान पसारी । जहां अमी तहँ है अधियारी ॥
बिनशिव सुयशकाव्यरसकैसे । बिष संयुत मणिमय घटजैसे ॥
प्रकृत नरन यशकी कबिताई । सुंदर यथा इंदौरन गाई ॥
बिनशिव काव्यकाव्यपर कैसे । सेमर निकट सुवा गा जैसे ॥
बिनशिवध्यानहोय बकुध्यानी । निरखत रहै मीन अरु पानी ॥
बिन शिव ज्ञान कागसमज्ञानी । होत भोर बिष्टा नित सानी ॥
बिनशिवभजनहोय परभजना । ऊसर मध्य बीजको फेकना ॥

दो० अस विचारि शिव यश निरखि यहमम भनित भदेश ।
अचरज नहिं जो आदरहिं बुद्धिमान जन वेश ॥

सो० अससुनि बिनय हमार जोनकरैं क्षमपर हँसैं ।
ते शिव बिमुख गवांर मोहू से मतिमंद बहु ॥

अब सुनुतत्त्व शैव मन लाई । सुने जाहि छूटै जड़ताई ॥
शिवहि भजैतेहिलखोसपूता । नहिं तेहि लखो मूतकी मूता ॥
शीश सोई जो नवै शिवनपद । नाहिंतो लखो तोमरीकटफद ॥
भाल वही जहँ भस्मत्रिपुंडा । नहिं तेहि लखो श्वानकरमुंडा ॥
सुभग नेत्र शिव दरशनहीना । तेहिलखु झंझी करिमतिपीना ॥
श्रवणसोईज्यहि शिवयशरुचई । नहिंतेहिउपमाअहिघरसुचई ॥
शिव पुर धरै भूमि सोइ नासा । नाहिंतो पंथ ठेहसम भासा ॥
शिव यशरढ़ै अरपि शिवखावै । सोइमुखनहिंगिरिखोहबतावै ॥
शिव यशरटै जीभ तेहि जानों । नाहिं तो भषुअजयापहिंचानो ॥
गलबलाय शिवपुर सोइगाला । नाहिंतो लखो सुसंबुकताला ॥
शिव अर्चन हितश्रमि कहैकर । नहिं तेहिलखो शाखवद्रीकर ॥
मिलिशिवजनजोनाहिंजुड़ाती । शिलशिलसमजानौंतेहिछाती ॥
शिव दर्शन हित चलै अदंभा । तेहिविन चरण बबुरकोखंभा ॥
शिव दंडवत करै सो अंगा । तेहिबिनलखै सकलतनभंगा ॥
नरतन मिलतबहुततप कीन्हें । तेहिफलमिलतशंभुजपकीन्हें ॥
नर तन को फल है बहु भुक्ती । संतत युतइत उतफलमुक्ती ॥
सो न मिलै बिन शंकरसेवा । तेहिते ताहिगह्यो सब देवा ॥
शंभु शिवारत बिधि बनवारी । तहां मनुज गतिकहब गँवारी ॥

दो० अस सुनि गौरी शंभुपद भजै न जो सबत्यागि ।
नरतन लखोपिशाच तेहि तेहितें रहियो भागि ॥
सांचेहु दंभेहु शंभुपद जो कोउ राखत नेहु ।
तेहि पद वोरी शीश धरि शिवयश में चित देहु ॥
रबिशशिकुज बुध जीव कबिशनिरुराहु असकेत ।
बिघ्न निवारण हेत करि इनके पदचित देत ॥
मधुरिपु मधुरिपु मधुरिपु मधुरिपु मधुरिपु तात ।
इन पांचों पद शीशधरि शिव यश कहु हर्षात ॥

टी० मधुनाम दैत्य तेहिकेरिपु बिष्णु मधुनामरस तेहिकेरिपु सूर्य मधुनाम दैत्य तेहिकीरिपु देवी मधुनाम काम तेहिके रिपु शिव मधुरिपु नाम शिव तेहि के तात अर्थात् पुत्र गणेशजी ॥

दो० विधि पतिनीको ध्याय अति तासु आशिषा पाय।
गिरिजा मंगलको कहौं जो सुनि कष्ट नशाय॥
सो० नैमिष में मुनिराज एकसमय वशु गज सहस।
जुरि मिलिकरी समाज गये सूतपहँ प्रीतिकरि॥
सूतहि दै आशिष हरषावा। कथासुननहितविनय सुनावा॥
मीनसुता सुतके तुमचेरा। तव उर रहत शंभुको डेरा॥
तुम त्रिकाल दरशी गुरु सेई। है मति तोरि शंभु रसभेई॥
जेहि सुनिमिलैं पदारथ चारी। सोइ कथाकहु हृदयविचारी॥
जेहिपढ़ि सुनिरुजजाय विलाई। सुत वितबढ़ै महा सुखदाई॥
रणमें होय महा जयदाई। सोई कथाकहु सूत स्वहाई॥
जेहि सुनिहोय पाप तनभंगा। होयमलिनमनजेहिपढ़िचंगा॥
पापिहु सुनै जाहि मन धरिकै। मिलैमुक्ति तिहिके पगपरिकै॥
सुने जाहि कलिकला न व्यापै। असुन सताय सकै त्रयतापै॥
सोई कथा कहु व्यास दुलारे। जेहिसुनि पापजरैं बिनजारे॥
पढ़त सुनत जेहि तुष्ट पुरारी। ह्वै प्रसन्न मेटहिं दुखभारी॥
सुनि अप्रश्न मुनिनकरसूता। लखिशिवरतिमेंअतिमजबूता॥
जेहिउरलखोनशिवरतिसबहूं। तेहिढिगकहौनशिवयशकबहूं॥
अधिहिसोहाय न शिवयशकैसे। अंधरे मुकुर न भावै जैसे॥
शिवयशकुचितसुचतइमिनाहीं। सेंदुर यथा सुवरि शिरमाहीं॥
सुभगवस्तुनहिं खलकोफवती। स्वानहिं पचै यथाघृत कमती॥
दो० ज्ञान तासु अज्ञान सम जेहि उर बसहिं न शंभु।
यथा भवन मणिजर खचित बिनादीप अवलंभु॥
बिन शिव ज्ञानकरै हतज्ञानी। यथाभानु कमलहिबिनुपानी॥
जेहिउरबसत शंभु दिन राती। तेहि ढिग कहबकथाबहुभांती॥
निपटशैवसन शिव यशगाउब। यथा दूधमें खांड़ मिलाउब॥
यहिविधिसूत मुनिनरुचिदेखी। परम प्रीति शंकरपद लेखी॥
कहन लग्यो तबकथा रसाला। सुमिरिसाम्बशिवगौरिमभाला॥
एक समय नारद मुनि ज्ञानी। रसाअटन को भये पयानी॥
हरिगुण गावत करतल वीना। दयाज्ञान निधि परम मतीना॥

देख्यो घूमि रसा सब ठाऊं । तीरथ नगर शहर पुर गाऊं ॥
काहुहि राज करत मुनि देखा । काहुहि भीषन पावत पेखा ॥
बहुतन अरुजलखो विधिताता । रोग ग्रसित देखा बहु गाता ॥
द्रष्टवान बहु बहु चष हीना । बहुतससुत बहुअसुतमलीना ॥
बहुतक धर्नी दीख युत भूषन । बहुत निस्वरीवत मरिभूषन ॥
धवलधाम मणिखचित स्वहाये । झोपरी बहुत पलाशन छाये ॥
बहुत दीख हय गज असवारे । शिविकारथ बहुभांति सवाँरे ॥
बहुत पयादे पद बिन त्राना । लादे शिरपर बोझ अमाना ॥
यहिविधिदुखीसुखीलखिजगमा। शोचतचलेजात मुनिमगमा ॥

दो० कयहिप्रकार दुखदुखिनकर विनश्रमजाय हेराय ।
जाउं विष्णु पहँ जोरि कर पूछहुं कछुक उपाय ॥

सो० अस मुनि दयानिधान परदुख देखत भे दुखी ।
बसत जहां भगवान गये क्षीरनिधि को विधिज ॥

नारद दीख तहां बनवारी । रमा सहित क्षीरोधि विहारी ॥
माथे मुकुट कनक मणि सोहै । देखि प्रभा कोटिन रविमोहै ॥
श्याम फाम घनश्याम लजावै । पीतवसनदामिनिद्युतिखवि ॥
मुखकी अलकपरी लगि काना । तहँ कुंडल रवि राहु मकाना ॥
माथे भस्म त्रिपुंड्र बनाये । तेहि उपमा वेदहु नहिं गाये ॥
है निर्द्वन्द भस्म की शोभा । सकलसुरासुर जेहिपरलोभा ॥
ज्यहिलावत शिवविधिबनवारी । कहब कथा परकेरि गवारी ॥
पापिहि रुचै भस्म नहिं कैसे । सुभग वस्तु सूकरिकहँ जैसे ॥
यथा कटुक हयको गुड़ लागै । अघीभस्मतेहिविधिमुनिस्यागै॥
भस्म बिहीन जासुको भाला । लखुतेहि सेवक अष्टकपाला ॥
हवै भस्म उपमा ते हीना । तेहिसमानतेहिकहतमतीना ॥
अति शोभित शुचि पुंड्रबनाये । अरुणजलजसमनयनसोहाये ॥
सुभग नाशिका शुकमद हारी । गोल कपोल शंखद्युति मारी ॥
वीज अनारहि रद रद करही । हँसीमन्ददामिनि छविहरही ॥
वांह अजान चारु शुभ चारी । शंख सुदर्शन गद कज धारी ॥
मुंदरीवलय विजायठ सुन्दर । मुक्तासहित सोहजनुकरिकर ॥

गलें समनि रुद्राक्षक माला । सुभगहृदय अरुउदरविशाला ॥
नाभी गहिरि जलज युत भारी । बनी कमर केहरि मद हारी ॥

दो० रंभा खंभा जांघ जनु गुलुफ गोल अन मोल ।
चरणकमलजहंनितकरतमुनिमनभृङ्गकलोल ॥

सो० तरवासद्युति प्रवाल कोटिबाल रविद्युतिहरत ।
जिहिभजिबोरीलालचहतसुखदिशंकरभगति ॥

छन्द

लखि मुनिभूपा । रूपअनूपा ॥ करिनति नाना ।अस्तुति ठाना ॥

हरिगीतका छन्द

जयविष्णु जय भगवान जय जगपात जयसुख दायकं ।
जय माधवं मधु कैटभारि मुरारि जय सुर नायकं ॥
जय सिंधुजा पति सुखद सुखकर शंभु रूप निरंतरं ।
सबहरत दुख लखि दुखित जगतुम दीनबंधु सुशंकरं ॥

दो० सुनिविनतीमुनिनाथ कीजगपति रमानिवास ।
उठिकरिमुनिहिं प्रणामकरि बैठारोनिजपास ॥

बोल्यो रमानाथ भगवाना । मांगुमांगु द्विजवर बरदाना ॥
हैअदेय सब बस्तु हमारे । तुम नारद अतिप्राण पियारे ॥
जवनिवस्तु म्वहिं दीनगिरीशा । सोतुमआपनि लखोमुनीशा ॥
अब लगि कहवां रहे मुनीना । बहुत दिवसपर दरशनदीना ॥
निज आगमन हेतुमुनि भाषौ । लेहुसोई जो मन अभिलाषौ ॥
तब बोले कर जोरि मुनीशा । बारम्बार नाय पद शीशा ॥
रसाअटन मैं गयों मुरारी । देखा जगबहु भांति दुखारी ॥
बहुचष हीन बहुत धन होना । रोगग्रसित बहुखिन्न मलीना ॥
पुरुष अनारि नारि बिन नाहू । भोजनमिलतननिशि दिनकाहू॥
जो जीवनकर फल श्रुतिगावत । पुत्र हीन नहिं मक्ति बतावत ॥
सो अपुत्र प्रभु बहुनर देखी । दयालागि म्वहिंनाथविशेखी ॥
तिहिलगितकयों शरणतवनाथा । सकलउपायजानि तव हाथा ॥
हमरे प्रभुतुम गुरुपितु माता । सकलशोच हरसुखवरदाता ॥
सो उपाय भाषा जगलागी । थोरे श्रमहिं जाय दुख भागी ॥

सुनि नारदके बचन दयाला। अतिहिप्रसन्न भयोजगपाला॥
बोलेप्रभु बहु मुनिहिं बखानी। धन्य धन्य मुनिवर बरज्ञानी॥
दो० एकतोतुमम्वहिंबहुत प्रियसत्यसुनौविधितात।
दुसरे परउपकारहितजो म्वहिंबहुत सुहात॥
सो० तिहिते कहब उपाय देखि तुम्हारो लालसा।
शंकर करैं सहाय बिन श्रम छूटै जक्तदुख॥
सुखद उपाय सुनौंमुनि नायक। जो सर्वोपरि है सुख दायक॥
गिरिजा मंगल शिव यश भारी। पढ़तसुनत सबपातक हारी॥
सुत धन देत करत जय रनमें। हरत व्याधि दैपौरुष तनमें॥
गति पति देत न लावत बारा। तिहितुमलखौ मुक्तिकोद्वारा॥
वेद सार सोहै शिव रूपा। बीजमंत्रतिहि लखुमुनिभूपा॥
गोपनीय सब कहँ मुनि राया। दास जानिम्वहिं शंभुबताया॥
मोपर करत कृपा अति भारी। विश्वनाथ मम नाथ पुरारी॥
निजअधिकारसकलम्वहिंदीन्हा। दासजानिमोहिंसबपरकीन्हा॥
धन्य धन्य सो धन्य महाजन। जाहिसाम्बशिवजानतआपन॥
अस कहि मगन भये बनवारी। पुलकि शरीर नैन बहै बारी॥
पुनि धरि धीरज शंभु मनाई। कहनलगे मुनिसनजगसाई॥
मोसन तात धात सोपावा। जानिसुबस्तु बहुतमनभावा॥
थापी ताहि साम के भीतर। तबते साम भयो अधकी तर॥
सोतुम मानि सिखापन मोरा। जाउधात पहँसहितनिहोरा॥
सोलै होहु कृतारथ आपू। जगफैलाय हरौ सब तापू॥
चारि पदारथ करतल त्यहिके। शिवयशहृदयबसैमुनिज्यहिके॥
दो० सुनि नारद श्रीपति बचन बारबार हरषाय।
चलत भये विधि धामको हरिकोमाथ नवाय॥
सो० पहुंचे मुनि विधिधाम तुरतगये निज तातपहँ।
लचि शिरकोन प्रणाम बारबारअस्तुतिकरी॥
पुनि पूंछी मुनि गिरिजामंगल। ज्यहिसुनिजरतपापकोजंगल॥
रसाअटनजिहि विधिमुनिगयऊ। असुहरि सीखबतावतभयऊ॥
सुनि विधि दै नारदै बड़ाई। बार बार शंकर पद ध्याई॥

लगे कहन शिव कथारसाला । जोगिरिजा मंगल मुदमाला ॥
क्षीर सिंधुसे जब मुनि राई । हरिहिनमितविधिभवनसिधाई ॥
तब लक्ष्मी दूनौं कर जोरी । पतिप्रणामकरिबहुतनिहोरी ॥
आयसु पाय बचन तब भाषा । निजअभिलाषगोयनहिंराखा ॥
कह्यो नाथ नारद सन जोई । गिरिजामंगलसबदुख खोई ॥
को गिरिजा कयहिकी सोजाया । मंगलकौन करी सुर राया ॥
सुमिरत तुम्हैं मिटैं त्रय तापू । कौनसुयशज्यहिसुमिरतआपू ॥
सुमिरत जाहि मगन तुमरहेऊ । सकल पदारथदाजिहिकहेऊ ॥
सोमोहिं नाथ जानिनिजदासी । चरणकमलकीलखिविश्वासी ॥
कहो सकल नहिं राखौ गोई । जोमोपर करुणा अतिहोई ॥
सुनप्रिय बचन हरषि भगवाना । बार बार तिहि बुद्धिबखाना ॥
बड़ीभाग्य तिहि केरि रमाहै । शंभु सुयश पर जासुतमाहै ॥
असकहि कहनलगे भगवाना । सुंदर कथा सुयश वृषयाना ॥

दो० नारद से निज लोक में कहत कथा सोइ धात ।
कथिजासन क्षीरोधि में कहत सोई जगपात ॥
सो० कहत सूत हरषाय शौनक सन सोई कथा ।
शारदको बलपाय कहत सकल कविजक्तमें ॥

है शिव सर्वोपरि परमेशा । जक्त गुरू जगपति जगतेशा ॥
सर्वोपरि तिहिकहँ श्रुतिगावै । हमरो विधिकर मूलबतावै ॥
सकलकर्मको है सोइसाखो । रवि शशि वह्नि जासुकी आंखी ॥
जेहिइच्छाहोवहिं जगनायक । उत्पति पालन अंत करायक ॥
बाम से विष्णु भये हमतासू । दक्षिण से विधि केर प्रकासू ॥
मध्यते रुद्र आप॰ अविनाशी । महाकाल सोइ भा कैलाशी ॥
प्रथमरह्यो सोइ शून्यसमाई । यथा सुगंध फूल सुखदाई ॥
अगुण अनीह अनाम अखेदा । निर्गुण जाहि कहत सब वेदा ॥
तिहिरुचिसगुनकीनयकवारा । धार्यो रूप शिव नाम उदारा ॥
लीलाहेत शक्ति प्रगटावा । उमानाम जिहिको श्रुतिगावा ॥
शिवा हरा अरु भवाभवानी । जया जक्त जननी सर्वानी ॥
शिवअंशजहमविधिगुणखानी । उमा अंश तुम अरु विधिरानी ॥

विधिभृकुटी से शिवअवतारी। भये आय कैलाश बिहारी॥
विधिसुत दक्षप्रजापतिज्ञानी। ताकी सुता भई सबीनी॥
ब्याहीदक्ष जानि भव भामा। तब से दक्ष भयो सुखधामा॥
कछुदिन गये दक्ष अभिमानी। शिवसे नेहतजो तजि कानी॥
पितहि जानिशिवकोअपमानी। दक्षज तन तजि दीन भवानी॥
ऐसहि जो ज्ञानी कवि जाता। शिव बैरीसों त्यागत नाता॥
दो० गुरु पितु पति भ्राता सुहृद जो शिव बैरी तात।
सकलभांति निज शत्रुसम बुधत्यागतसबनात॥
सो० सुनु मुनीश अस ज्ञान भाषत बेद पुराण बुध।
कोटि गवास समान शिव निन्दककोहै बदन॥
यहै बिचारि सती तन त्यागा। भयो बिध्वंस दक्ष कीयागा॥
जस दुर्दशा भई बिधि सुतकी। भईन असकोउरांड़ असुतकी॥
मुनि बिस्तार सहितसो भावा। जड़ चेतनी मांझ हम गावा॥
सो तन तजि जगमातु भवानी। गिरिशहिमंचल घरप्रगटानी॥
कह्यो रमा सुनु कृपा निधाना। यक अचरजमोरे मनमाना॥
कौन कौनि तप गिरिवर भारी। जेहि घर मातुभई अवतारी॥
सुरनर मुनिसब तजि जगमाता। भईजाय गिरिघरगिरिजाता॥
औघर दानी शिव जग माई। लहर वहर नहिंपरतजनाई॥
एक समय गिरि काशी जाई। मणिकर शिवमंदिरबनवाई॥
मेष कृष्ण तेरसि शनिवारा। लखिप्रदोष बोला शिवप्यारा॥
करि ब्रत मणि मयलिंग बनाई। थापित कीन शंभु गिरिराई॥
ह्वै प्रसन्न प्रगटी जग माता। मांगु मांगु बरजो मनभाता॥
सो स्वरूप बरणौं कयहि भांती। जोसुरमुनिके दृष्टिन आती॥
उपमा रहित कहै श्रुति जाको। बरणौंरूप कौन बिधिताको॥
गौर रूप सब भूषण धारी। अष्टभुजो केहरि असवारी॥
सबकर जलज हथ्यार समेतू। दुष्ट दलन जन रक्षाहेतू॥
चरण कमल किमिजात बताये। मुनिमनमधुपरहत जहँछाये॥
ध्यावतज्यहिहम बिधिदिनराती। अपरकथा कहबोजड़ भांती॥
दो० प्रगटि रमा जगमातु तव कह्योपुत्र बर मांगु।

है अदेय तुमको सकल लखितुम्हरोअनुरागु ॥
सो० मांग्यो प्रथम गिरीश उमा शंभुपदकीभगति ।
पुनिमांग्यो लचिशीश तुमसमान पाऊंसुता ॥
एव मस्तु बोली जग माई । तुम्हरी सुता होब हमआई ॥
म्वहिं समाननहिं शिवपरराखी । अंतर्द्धान भई असभाषी ॥
है प्रदोष ब्रत सबब्रत राऊ । लखो रमा यह जासुप्रभाऊ ॥
तेहिपर कृष्णपक्ष शनिवारा । करतब्रतीकोअति सुखकारा ॥
कह्यो रमा यह कौनि भलाई । सुता होब याची जगमाई ॥
कह्यो विष्णुसुनु प्रिया सयानी । जासुबुद्धि शिवचरण समानी ॥
सोकछुनातसों काजन राखत । चरणकमलकोरसअभिलाषत ॥
जिमिनित दर्शनिलै मुनिराया । बुद्धिमान स्वइकरतउपाया ॥
इमिहिं विचारि हिमंचल राई । जो ममसुताहोय जगमाई ॥
बालापन निज गोद खिलाउब । चरणकमलनिजहृदयलगाउब ॥
शवतजिताहिअपरनहिंवरई । तेहिहितहितमोहिंसनशिवकरई ॥
अहो धन्य मम भाग्य बड़ाई । जेहि घर शंकर होहिं जमाई ॥
हरि विधि जाहि ध्यानधरिध्यावैं । ध्यानहुं में नहिं दरशनपावैं ॥
तासु चरण पूजब भरि हाथा । अरु तेहिवारिचढ़ाउबमाथा ॥
कह्यो रमा गिरि बहुत मतोना । असउपायजो चितधरिकीना ॥
तब धरिध्यान शंभु बनवारी । कहनलग्यो परकथाविचारी ॥
दो० देवर अंतर्द्धान भै जब गिरिको जगमाय ।
गिरि मन मैना उदरमें बास कियो तब जाय ॥
सो० है बड़ अचरज तात आउब उदरहिं ईश्वरी ।
प्रभा तासु बिलसात सो आवत कब उदर में ॥
दोहद रूप भयो गिरि घरनी । बढ़ीप्रभा जनु कोटिन तरनी ॥
रहित पाप सब भा संसारा । परवतभये सकल मनियारा ॥
अमल नदी पय सरिस सोहाई । त्रिविधि बयारिबहै सुखदाई ॥
सफल फूल सब तरुवर सोहे । काल अकाल न एकहु जोहे ॥
जीवन सकल तजा सब बैरा । मोर सांप मंजारी पैरा ॥
महिष अश्व अरु केहरि हाथी । लवा बाज सबभे इकसाथी ॥

मैना गर्भ जानि जग माता । रहत हिमंचल अति हरषाता ॥
बार बार मैनामुख जोहत । गिरिभाग्यलखि सुरपतिमोहत ॥
सुख युत इमि बीते नव मासा । दशम मास भा मातु प्रकासा ॥
ऋतु बसंत मधु मास पुनीता । सुखदकाल बहु उष्णनशीता ॥
नौमी तिथि सितपक्ष अनूपा । मृगनक्षत्रअरु दिनद्विजभूपा ॥
अर्द्ध निशा शशि उदय सुहावा । जन्मि मातु सबजगहरषावा ॥
नभ में दामिनि सम दमकानी । मैना पुर भै प्रकट भवानी ॥
अष्ट भुजी सब आयुध लीन्हें । नूर शिंगार विभूषण कीन्हें ॥
शशि बदनी शशि बालछिलारे । भस्म त्रिपुंड्र स्वमाथ सँवारे ॥
तीन नेत्र शुचि रवि शशिमाना । दासहिं वित्ति देत सुखनाना ॥

दो० अरुणकमलसमपददोऊतरवाजिमिरविशाल ।
सुरमुनिजाको ध्यानधरि वोरीहोतनिहाल ॥
सो० सुरयुत विधिभगवानप्रकटिजानिजगमातुको ।
आयेसब गिरिथान करि प्रणाम अस्तुतिकरत ॥

छन्द

जय जगमाताजय सुखदाता । जयशिवकामिनतुमबहुनामिन ॥
जय शिवनारी जग सुखकारी । तवपद ध्यावत सबसुखपावत ॥
हम तव दासा मनक्रमभासा । करि अतिदाया हरुनिज माया ॥
मांगत वारो युग कर जोरो । दे निज भक्ती जो सुख युक्ती ॥

दो० सुनि विनती सब सुरनकी एवमस्तु कहिदेवि ।
सुरनविदाकरिगिरिशसन बोलत भैसुरसेवि ।
सो० करितपतुमसुखखानिकन्यामांग्योमोहिंसम ।
करिनिज वरकीकानि हौंप्रकटी तवभवनमें ॥

अस कहि ह्वै कन्या जग माई । मनुजसता सम रोयसुनाई ॥
धन्य धन्य मैना मुनि धन्या । भईमातु जगजिहि घरकन्या ॥
आदि अनादि सदाअविनाशिनि । पराचीनअविमुक्तिनिवासिनि ॥
अर्वाचीन जाहि श्रुति गाई । सो लीला वश सुता कहाई ॥
सुता जन्म जाना सब काहू । गिरिपुर सुरपुर भय्योउछाहू ॥
गायक गंधर्व गावत गीता । अप्सरगण नाचहिं करिप्रीता ॥

कोउताली कोउढोल बजावत। कोउ मृदंगपर ताल लगावत ॥
वीण सितार भेरि सहनाई। सकल बजाय सुमंगल गाई ॥
बरषैं फूल सकल सुर फूले। नभपर छाय रहे घर भूले ॥
देत हिमंचल दान विशाला। भूषण बसन रतनमणिमाला ॥
जो पावत सो परहि बहावत। स्वमनरुचितपुनिहूनरपावत ॥
एकसे एक लहे अरु दोन्हें। दानी याचक परत न चीन्हें ॥
जातकर्म्म कीन्ह्यों गिरिराई। मणिगण भूषण बहुरि लुटाई ॥
पांचदिवस बीते यहि सुखमा। दुख अरुकुदिनपरेबहुदुखमा ॥
छठयें दिवस छठी कनजानी। उत्सव अधिककीनगिरिरानी ॥
बाजत नभ अरु नगरनिशाना। घरघर अधिक मोद उमड़ाना ॥
सजत बधाई घर घर नारी। मंगल वस्तु लेत भरि थारी ॥
मैना करि अस्नान सुहाई। रतन जटित चौकी धरवाई ॥

दो० तेहिपर बैठि शिंगार नृप रवि भूषण सजवाय।
सुता गोदलै मोद युत बहु धन दीन लुटाय ॥
सो० हय गज धेनु मंगाय सहित अलंकृत दान करि।
पट भूषण पहिराय विदा करत याचक सकल ॥

आवत पुरतिय सहित बधाई। रोचन सुता शीशपर लाई ॥
गावत मंगल गीत मनोहर। उत्सवसहित सुनावत सोहर ॥
जो मांगत सोइ पावत सोई। देत गिरीशहि अतिसुख होई ॥
ज्योतिषशास्त्र धरे मुनि रूपा। आवत भयो भवनगिरि भूपा ॥
धरच्योनामतेहि हृदय विचारी। उमा शिवा अरु शैलकुमारी ॥
गिरिजा पारवती भुवनेशी। महा कालिका मातु महेशी ॥
यहिविधि उत्सवभयो अनेका। समरथनहिंकोउसबकहिबेका ॥
थकतकहतज्वइश्रुतिविधिशेषा। परकी कौन करै तहँ लेषा ॥
बार बार निज भाग्य मनावत। लैगोदी गिरि अति दुलरावत ॥
कबहुं चूमि तरवा मुंहलावत। कबहुं सूंघिशिरअतिसुखपावत॥
किलकिलाय कबहूं जगमाई। लपटि जात गिरिके उरजाई ॥
सकल काज तजिगे गिरिराई। निशिदिनढिंहेरहत जगमाई ॥

छन्दसवैया ॥

पयके पिश्रावन हेत कबौं जब मैनहु लेत गिरीश से मांगी ।
ज्योंमणित्यागिश्रहीपदुखीतिमिहोतगिरीशभवानिकत्यागी ॥
लागै न वेर त्यवे द्रुतफेरि दुलारिके राखत गोद सभागी ।
देखोरमा तेहिभागिसमाको जोहैपरज्योतिलीयों अनुरागी ॥
बारहि बार दुलारि उलारि गिरीश तिया निज गोद भरै ।
आनँद कन्द विलोकिकै आनन प्यावत पय अति मोदकरै ॥
आपनि भाग्य मनाय महा जगदीश मनायकै पायँ परै ।
देखोरमा तेहि भाग्य समाको जो लैपर ज्योतिविनोदकरै ॥

दो० प्रिये वत्स कहि वत्सप्रिय दुलरावत हिमि तात ।
कबहुं करत जगमातु सुधि जोभ दाबिरहिजात ॥

सो० पुनि माया जगमात डारि देत निज तातपर ।
मानि सुताकर नात दुलरावत कहि वत्सप्रिय ॥

कबहुंचेति शिशुखेल भवानी । रोवतचितकरिअतिहिमलानी ॥
दम्पति दुखी होत तेहिदेखी । सुर मनाय करि दान विशेषी ॥
डीठि झरावत चतुर बोलाई । कहत साम्बशिव होउसहाई ॥
जब हँसिदेत सुता हरषाई । सुखी होत दम्पति अधिकाई ॥
इमि कछुदिनबीते मुनिज्ञानी । चलन बकैयां लागि भवानी ॥
पितु गोदोते उतरि महेशी । जननिहिंनिरखिचलतअतिवेशी ॥
दौरि मातु उर लेत लगाई । मुखचुम्बत अतिशयदुलराई ॥
कबहुंनिरखिपितुकिलिकिलकारी । कनियांहितकरदेत पसारी ॥
झपटि उठाय लेत गिरिराई । शिरसूंघत अति हृदयलगाई ॥
गिरिअतिभाग्यवन्तकथिजाता । जेहिघर सुताभई जग माता ॥
जासु रूप नहिं वेद बतावत । सो प्रत्यक्ष गिरिवर दुलरावत ॥
पांचवर्ष बीते गिरि वारी । शिशुपनतजिपुनिभईकुमारी ॥
खेलनलागि सखिनके साथा । लखिलखिदम्पतिहोतसनाथा ॥
कंदुकादि सब खेल भवानी । खेलत महा मुदित हरषानी ॥
विद्या पढ़न लागि जगमाई । शीघ्र बहुत विद्या सब पाई ॥
श्रुतिजननीज्यहि अंशजवानी । पढ़ब तासु लीला अनुमानी ॥

दो० खेलत गुड़िया मुदितमन सखिनसहित जगमात ।
गिरिमैना तेहि खेललखि अतिशय मन हरषात ॥
सो० खेलत खेल अनंत तासु खेलको कहि सकै ।
उत्पति पालन अंत जासु खेल श्रुतिगावहीं ॥
बिधिपतिनीकोध्यायभाषौं गिरिजा शिवसुयश ।
देवी करै सहाय सुभग ग्रंथ पूरण बनै ॥

सब सुर बिष्णुबिरंचि दिगेशा । गिरि पुर आवत धरिगिरिबेशा ॥
सनमानत तेहिगिरि सुरजानी । जात स्वघरकरि दरशभवानी ॥
एक दिवस नारद कर बीना । हरि गुणगावत बहु लवलीना ॥
करि लालसा दरश जग माई । गयो हिमंचल पुर मुनि राई ॥
देखि हिमंचल नारद आवत । कीन्हप्रणाम सोमाथलचावत ॥
कनक सिंहासन पर बैठाई । पद पखारि निज शीशचढ़ाई ॥
असतेहिजलसौंभवनसिंचावा । सुतन बुलाय प्रणाम करावा ॥
तेहि पाछे जगमातु बुलाई । मुनि पद मेलि कह्योगिरिराई ॥
यद्यपिसतसुतमुहिंबिधिदीन्हा । तदपि सुतादै हर्षित कीन्हा ॥
जानि परत मुहिंयहमुनिराई । यहितें मम कुल परमसुहाई ॥
करि करुणा याको कर देखी । गुण अवगुण सबकहौबिशेखी ॥
तबमुनिलखिगिरिजाकरहाथा । अचरज बहुत करीमुनि नाथा ॥
सकलभागिविधि बलसेभिन्ना । अरुआयुरतेहिलखी अछिन्ना ॥
अबिनाशिनिसबौपरिभाशिनि । भव भवबिभवपराभवकाशिनि ॥
कह्यो हिमंचल सन मुनिराई । सब प्रकार गिरिजा सुख दाई ॥
भाग्यवती अतिशय तवकन्या । यहितें तव कुल ह्वै है धन्या ॥
परयक रेख परी कर माहीं । ह्वै सत्य तहँ संशय नाहीं ॥
अगुण अगेह दिगम्बर योगी । याको कंत मिलै बिष भोगी ॥
तेहिपतिबरियहहरषबिशेखी । सासु ससुर सपन्योंनहिं देखी ॥

दो० सुनि नारद के बचन गिरि दम्पति भयो अचेत ।
मुख सूख्यो नैनक बह्यो बोल्योकृष्ण न श्वेत ॥
सो० धरि धीरज गिरि नारि समुझिसत्य नारद वचन ।
सुता सनेह बिचारि नारद के पगु में पर्‍यो ॥

नाथ कह्यो लक्षण जोइ जोई। संशय हीन सत्यसब होई॥
परमुहिं समुझिपर्‍यो कछुनाहीं। किमिसुखहोयऐसपतिपाहीं॥
प्रथम सुता बिधि कह्यो अदागी। पुनितेहिपतिकोकह्योअभागी॥
दुइ किलसैं यक भवन कृपाला। अष्ट भुजी अरु अष्टकपाला॥
काग मराल चलैं किमि साथू। यहसंदेह मोहिं मुनि नाथू॥
सो करि कृपा नाथ सबभाषौ। दास जानिकर गोयनराखौ॥
अरु गिरिजा पर करिमुनिदाया। करि बिचार सो कहौउपाया॥
जस है भाग्यवती मम कन्या। तैसहि बरलहि होयसुधन्या॥
तब मुनि कह्यो परी जस रेखा। कोटि उपाय न छूटत देखा॥
पर अब हमरे असमति आई। सो सुनिये मैना गिरि राई॥
जस वरन्यो गिरिजा बर बेषा। तसहमसबशंकर महँ देखा॥
परको होत अमंगल जोई। मंगल लखौ शंभु महँसोई॥
मंगल गहब मनुज ब्योहारा। तेहिते शम्भु अमंगल धारा॥
परब्रह्म शिव अगुन अगेही। धार्‍यो बिष बनिदेव सनेही॥
दिशा वस्त्र धार्‍यो त्रिपुरारी। दासन देत पटम्बर भारी॥
अहि भूषण पहिरत वृषभासन। कौस्तुभादिमणिदैनिजदासन॥

दो० करै सुता जो तोरि तप रीझैं जो त्रिपुरारि।
बरै शिवाको शम्भुतब सबदुख देवै जारि॥
सो० जो बरन्यो हम दोष गिरिजाबरमें रेखलषि।
सो गुणहोवै चोष जोकदाचि शिव सों बरै॥

मथत सिंधु निकर्‍यो बिषभारी। रहे सकलसुरबिधि बनवारी॥
कोउन भो समरथ तेहि माहीं। लेय बचाय जरत सुरकाहीं॥
तब चिचियायशरण शिव ताका। शरणा गत रक्षक शिवसाका॥
तुरत प्रगटि धार्‍यो बिषभारी। लीन बचाय सुरा सुर झारी॥
यह शिवकी नहिं नेकपरिच्छा। बिषअरुअमीप्रकटजेहिइच्छा॥
सुमिरण जासुसकल दुखहारी। रमा सहित जेहिजपतमुरारी॥
करैजु तप तव सुता सयानी। होय प्रसन्न शंभु बर दानी॥
जो कदाचि बिधि परसेब्याहा। लिखाहोय पर सुनुगिरिनाहा॥
तौ बिधिलिखामेटिशिवस्वामी। गिरिजाब्याहकरैं वृष गामी॥

बिष्णु बिरंचि आदि सब लेखा। मेटि न सकत कर्म की रेखा॥
तेहिशिव मेटि करैंबहु बारी। रंकसे भूप भूप भिखियारी॥
अस कहि बिदाभये मुनिनाथा। चले कहत शंकर गुण गाथा॥
दो० तहँ प्रमाण तुलसी लिखा जो भागवत अकाम।
तुलसी रेखा कर्म को मेटि सकैं नहिं राम॥
पुनि अस भाष्यो ज्ञान पसारी। भावी मेटि सकैं त्रिपुरारी॥
ऐसो लखत न जो शिव ध्यावै। सो पूरुष खरमान कहावै॥
नारद गया बिदा ह्वै जबहीं। मैनाकह गिरिवर सों तबहीं॥
नाथ भरोस तजौ मुनि बचना। तजि विचारकर कारजअपना॥
घरवर जहां होय सब लायक। गिरिजा ब्याहकरौगिरिनायक॥
ऐसे करब कहा गिरि राई। देवहु वोध प्रिया समुझाई॥
इमि जबबीतिगयो कछुकाला। बय वपुधारयो गिरिवर बाला॥
भीतर रहन लागि गुरु लाजा। सखिन साथसीखत घरकाजा॥
ब्याह योगलखि सुतासयानी। गिरिसों कहतभई गिरि रानी॥
घर वरजहां होय सब लायक। सुता विवाह करौ गिरिनायक॥
एक दिवस भोरहि जगमाई। निज जननी सों कह शिरनाई॥
मातु स्वप्न देख्योंमैं राती। तबसे चित हरष्यो बहुभांती॥
एक विप्रवर गौर स्वरूपा। अति सुन्दर सब भांति अनूपा॥
माथे सुभग त्रिपुंड बनाये। श्वेत भस्म सब अंग लगाये॥
मुहिं उपदेश कीन सोआई। कसन करौ गिरिजा तप जाई॥
तपसे वृद्धि तेजकी होवै। दुख दरिद्र सबको तप खोवै॥
तपसे भाग्य बढ़ै अधिकारी। तपसे कृपा करैं त्रिपुरारी॥
तपसे जो रीझै शशि भाली। देय मिटाय रेख दुख वाली॥
दो० तिहितेमुहिं आयसुजननिपितुसों देहुदिवाय।
करौं जायतप विपिनमें सबदुखजायनशाय॥
सो० सुनि नारद के बैन जो भाष्यो कर देखिकै।
चितमेंहोत न चैन जानिसत्य मुनिवर वचन।
तब मैना हिम वान बुलाई। सुता स्वप्न सबकह्यो सुनाई॥
सुनि हरषान बहुत गिरिराई। मैना सों कह वृत्त बुझाई॥

रह्यो यही सोरच्यो चित माहीं। सुना सनेह कहत प्रियनाहीं॥
असकहि विकलभयोगिरिराई। मनिकेरजतफनिफजिमिगाई॥
मैनहुं विकल भई बहु भांती। लगी जरन दम्पति कीछाती॥
पुनि धीरज धरि सुता बुलाई। आशिष दै बहुभांति सिखाई॥
घर तपकरौ जोरि सब सामा। नकरु अनाथ मातुपितुग्रामा॥
बन कलेश बहुभांति बिचारी। लहत बोधनहिं हृदयहमारी॥
गिरिजा कहपितु मातु सुनाई। बिनकलेशनहिंसुखश्रुतिगाई॥
होय नमोहिं तप करत कलेशू। लखि परिणामहरषसुखवेशू॥
शिर आशिष दीजैपितु माता। जिमि होवै मंगल बनजाता॥
अस कहिपितुपद गह्योभवानी। अरुप्रणाम जननी पद ठानी॥
असुदै बोधसकल निज भ्राता। सखिन समेत चलीजगमाता॥
शिवा रूप किमिकहौं वखानी। नहिं दूसरिज्यहिउपमाआनी॥
गज वृष सिंह मृगा पशु जानी। उपमा तासुन मन ठहरानी॥
रम्भा कंज प्रवाल अनारा। श्रीफल अंब जानि जड़सारा॥
शुक पिकखंजहंस लखिपक्षी। उपमा तासुलग्यो नहिंअच्छी॥
शशि कोबंधु गरल को जानी। दिनमलीनलखिमतिसकुचानी॥

दो० लखिआदरशितबालरवि मृगमन आमिष जानि।
तिहि उपमा जगमातुकी कहत बुद्धि सकुचानि॥

सो० सरपिनलखिविषखानि रतिकेपतिकेतननहीं।
उपमा मनहिं न मानिहै अनूपगिरि नंदनी॥

चंचल रमा न ठहरत कबहूं। भागिअभागिलखतजगसबहूं॥
निशि दिनबकत रहै विधिरानी। इनउपमा नहिं योग्यभवानी॥
छबिमय सुधा बनै कविजाई। परम रूपहै कच्छप आई॥
रज्जु रूप शोभा धरि आवै। अरु शृंगार मंदर तन पावै॥
अरु पुनिरतिप मथैनिजपानी। उपजै रमा तहां गुण खानी॥
सकुचि कहत कविमान भवानी। जहां अतरु तहँ रैंड़प्रधानी॥
जब घरछांड़ि चलीबन माता। भये अचेत मातुपितु भ्राता॥
भये सकलगिरि मणि द्युतिहीना। भवन बसेर भूत जनुकीना॥
शुक सारिक जो शिवा जियाई। मणिमयपिंजरनराखि पढ़ाई॥

तिन सब रोयकहैं दुखबानी । जियब कौन भल बिनाभवानी ॥
पशु की दशा जहां असगाई । मातु पितागति किमिकहिजाई ॥
हिमिमैनातजि जीवनश्रासा । हाय हाय कहि लेत उसासा ॥
वेद गिरा मुनि तबतहँश्राये । प्रेरनकरि जग मातु पठाये ॥
कहि तिनकथा महेशभवानी । समुझायो गिरिवर गिरि रानी ॥
बोधितभेलखिसुखपरिनामा । जानेहु सुतहि सत्य सुखधामा ॥
वहां शिवा पहुंचो वनमाहीं । धूलित कीन भस्म तनमाहीं ॥
अस त्रिपुण्ड्रचितवेदविधाना । वेदी बनै कीन तहँ थाना ॥
अंग अंग रुद्राक्ष बनाई । जनु प्रत्यक्ष तप तनुधरि आई ॥
करनलगी तप शंभु भवानी । तपन रीति जिमि वेद बखानी ॥
करतपाठ श्रुतिसारत्रिकाला । जपत मंत्र सरवर्न विशाला ॥

दो० मंत्रन पर सरवर्न सम गावत वेद पुरान ।
जेहिउर नितसो मनुलसै तिहिसमधन्यनश्रान ॥
सो० ब्रह्मा इंद्र मुरारि जपत जाहि नित इष्ट करि ।
वोरी कहत पुकारि जपौ याहि जो सुख चहौ ॥

यहिविधिगिरिजातपतसुखनमा । धरे ध्यान शिव शंकरमनमा ॥
अब मुनीश सुनियेपरगाथा । चरित कीन जोइ शंकर नाथा ॥
जबते सती कीन तनभंगा । तबते शिव मनभयो अचंगा ॥
जानिसती निजभक्त अनन्ना । विरहवंत निज मनकरि खिन्ना ॥
सतीविरह जगफिरतअकेले । कबहुं न जात देवमुनि मेले ॥
सुमिरतजाहिमिटतदुखसारो । तिहि दुख यह लीलाअनुसारो ॥
यहिबिधिफिरे शंभुसबदेशा । कीन्हे चरित बिकल को भेशा ॥
कबहुं जाबनहिं अबकैलासा । बिन सति लगिहै बहुतउदासा ॥
असकहिनिजमनमंत्रबिचारी । चाहत कीन चरित्र पुरारी ॥
गयो तुरंत शंभु हिमि शिष्टा । जो अति पावन ठौर वरिष्टा ॥
बटतर बैठि तहां त्रिपुरारी । निज स्वरूप को ध्यानसम्हारी ॥
लीन चढ़ाय श्वास ब्रह्मण्डा । लागि समाधि अनूप अखंडा ॥
तिहिअवसर तारकबलधारी । दीन निकारि देव मुनि झारी ॥
ह्वै निज इंद्र बैठि इंद्रासन । अपर सुरन पदलै दै दासन ॥

रहै तासुबध शिवसुत हाथा । दीन रहै वर तिहि विधिनाथा ॥
सुरसबविकलफिरतबनमाहीं । मखहु भाग पावत सुर नाहीं ॥
दो० तब सब सुर विधिपहँ गये कीन्ह्यों त्राहिपुकार ।
हाथ जोरि बिनती कियो राखु राखु करतार ॥
सो० तुम विधि देव सहाय किहि कारण अब भूलेहू ।
तारक असुर बनाय सुरन सितम बिच डारेहू ॥
रच्योतासुबध शिवसुतहाथा । सो लखि परत असम्भव नाथा ॥
सती दक्ष मखमें तनत्यागा । शिवमन तबसे भयो बिरागा ॥
पुनि अवतरी देव दुखजानी । जाय हिमंचल गेह भवानी ॥
सो सुर हेत जाय तप ठानी । बैठि समाधि शंभु निरवानी ॥
लखि तप मातु देवभे आसी । अब निराश सबके मनभासी ॥
शम्भुसमाधि अखण्डअमाई । किहि बिधि ह्वै है देव रिहाई ॥
तबविधिकह्यो धरौसुतधीरा । सब बिधिहरी शम्भु शिव पीरा ॥
यदपिसमाधि सदाशिव धारा । तदपि करी सब काज तुम्हारा ॥
शिवशिवजपौधरौशिवध्याना । करिहि सदाशिव सबकल्याना ॥
करहु पारथी पूजन तासू । तिहिते तुष्टहोय शिव आसू ॥
जाहु भवन नहिं बेरलगावहु । पठै काम शंकरहि जगावहु ॥
करै क्षोभ शंकर मनमारू । तब शिव करैं बिवाह बिचारू ॥
तब ह्वै बिदा गये सब देवा । लागे करन पारथी सेवा ॥
अस सुरेश तब कामबुलावा । बहुत भांति तिहि शीश नवावा ॥
कह्यो मित्र करुकाज हमारा । देखि परत नहिं पर हितकारा ॥
मित्र वही गावत श्रुतिचारी । जो आपदा में लेय सँभारी ॥
दो० कह्यो काम हर्षाय तब कारज कहौ सुनाय ।
करौं काहिको भ्रष्ट तप क्यहि वृषदेउँमिटाय ॥
सो० सुर नर नाग सुरारि इनकी है गनती कहा ।
ब्रह्मा विष्णु पुरारिइन्हैं जीतिनिजबश करौं ॥
कह्यो पुरंदर तब हरषाई । तारक असुर वृतान्त सुनाई ॥
तेहि बरदान दीन इमिधाता । शिव सुत हाथ होय तवघाता ॥
ताते भा अस मंजस भारी । तन तजि दीन्ह्यों दक्ष कुमारी ॥

पुनिहुं मातुकरि सुरपरनेहा। जन्मी आय हिमाचल गेहा॥
सो तप करत शंभुपति लागी। शिव समाधि बैठेसब त्यागी॥
को अस समरथ ताहि जगावै। अरु बुझाय तेहि ब्याहकरावै॥
तुमतजिअपरनहै यहिलायक। तेहिते करो काज सुखदायक॥
सुनिअसमनमथ कीनबिचारा। शिव बिरोध नहिंमोर उबारा॥
पुनि हरषान वारिचर केतू। निजकर जानि काज सुरहेतू॥
लै पुष्पायुध कर रतिकंता। सुमिरत आयो तुरत बसंता॥
अपर सैन मारू गन आई। देखि सैन अतिशय हर्षाई॥
रतिपतिऋतुपतिजबयकसाथा। करयो कोपलै धनुशर हाथा॥
सकलजगत तेहिके भे अनुचर। ज्ञान बिराग तक्यो गिरिकंदर॥
ज्ञानवान सबभे अज्ञानी। योगिन योगतजा तजि कानी॥
सुरनर नाग असुर मुनि माहीं। जोन कामबश असकोउनाहीं॥
काम कलामें सबजग रांचा। तजि शिव भक्तअपरनहिंबांचा॥

छन्द यकशंभुको जन छांड़ि मुनिवर कामके वश सब परे।
सब योगयोगिन छांड़ितप ब्रतसकलमनमनसिजहरे॥
कोकहै चित चैतन्य करनी मुयहु मनभे सब हरे।
जब तलक पहुंचेहु शंभुके ढिगबीच असकौतुक करे॥

दो० कामकला शिव भक्तपर लग्यो न मुनिवर एक।
जिमि शशिसाधारबिउपरसमुझिपरतनहिंनेक॥

सो० बसत न मुनिवरदीप जिमि अहिपति सन्मुखकबौं।
तिमि शिव दास समीप काम कलानहिं ब्यापई॥

पहुंचि तहां निज कलाअनंगा। लीन समेटि जक्तभा चंगा॥
शिव ढिगमें निज कलापसारी। ऋतु बसंत दीन्ह्यों बिस्तारी॥
फूलि उठे सब तरु यक साथा। त्रिविधबयारिबही मुनिनाथा॥
कोकिलादि बोलत शुभ बानी। बोली सुभग प्रेम रस सानी॥
अप्सरादि नाचैं बहु गावत। ज्यहिसुनिसिद्धयोगबिसरावत॥
नेकनशंभु तासु बश आवत। ऊंट न भागत सूप बजावत॥
परब्रह्म शिव अकल अभोगी। जासु नाम जपिजागत योगी॥
सोकिमि काम कलाबशआवै। दीप कला शठ रबिहिंदिखावै॥

देखोमुनि शठकी शठ ताई । चहत वारिपर भीति उठाई ॥
कउनिहुंयतननशिवकहँजीतत । फिरतछाजनिजमनमहँचीतत ॥
जब न जगे शिवतब करिक्रोधा । जो न लखतनिजपरपरयोधा ॥
सकल कला तबनिजकरिदूरी । निजमनमेंतब अधिकबिसूरी ॥
चढ़िरसाल तरुपर खिसियाई । पुष्पबाण कर लीन बनाई ॥
श्रवण प्रयंत खींचि धनु मारा । अति रिसाय शंकर पर डारा ॥
लगत बाण जाग्यो त्रिपुरारी । समुझि मारगति कोप पसारी ॥
करत कोप कांप्यो संसारा । खरभर सागर हल्यो पहारा ॥
दो० चहुंदिशिचितयो शंभुतब तरुपर देख्यो मार ।
तीसर नयन उघारि कै तुरतकिह्योतेहिछार ॥
सो० सुनुमुनीश असज्ञान अनलजानि जे कर धरहिं ।
जरैंनकाहि अयान पियत गरल मरिहै सही ॥
जब जरि काम छार ह्वै गयऊ । हाहाकार सकलदिशि भयऊ ॥
भोग मलीन योग भा चंगा । सुरन शोचलखि कारजभंगा ॥
रति सुधि पाय मरबपतिकेरा । रोवत जाय शम्भु कहँ घेरा ॥
छोरि केश सब भूषण त्यागी । रोवन लगी शम्भु पद लागी ॥
नाथ न मम पतिकर अपराधा । सुरन पठै निज कारज साधा ॥
तव बिरोध जसगतिश्रुतिगावा । सो बिधि भलीमोरपतिपावा ॥
है प्रत्यक्ष सब बेदन माहीं । शिव बिरोध सुखसपनेउनाहीं ॥
यद्यपि उचितभयो श्रुतिबानी । तदपिनाम तव औघड़ दानी ॥
सांसत करि पुनिलेहु उबारी । रीति बड़नकी वेद पुकारी ॥
त्यहितेम्वहिंअबजानिअनाथा । उचित होयसो करुशशिमाथा ॥
सुनि बिनती रतिकेरि मुनीशा । अति संतुष्ट भये गौरीशा ॥
ह्वै प्रसन्न बोल्यो रति ओरा । मम करुणा जोहै पति तोरा ॥
पर कछु काल धरो मन धीरा । जन्मो काम हरो तव पीरा ॥
युग द्वापर गोलोक बिहारी । मम शासन ह्वै है अवतारी ॥
कृष्ण नाम ह्वैहै तेहि केरा । तासु तनय ह्वै है पति तेरा ॥
तेहिसे ह्वै है तोर मिलापू । छूटि जाय तब तव परितापू ॥
दो० अबते तवपति तनबिना करिहै सब जग काज ।

तेहिते नाम अनंगहै कह्यो शम्भु महराज ॥
सो० सुनि वरदानमहेश अतिहि हरष रतिकोभयो।
छूटयोसुरन कलेशसुनि फिरिजियबरतीशको ॥
अस बरदै रति को त्रिपुरारी। निज गिरि गे कैलास विहारी ॥
रति बरलै अपने घर आई। देव सकलविधि पास सिधाई ॥
काम जरब रति कर बरदाना। सकलकथाविधि पासबखाना ॥
अबजेहिविधि होवैशिवव्याहा। सो उपाय करिये सुर नाहा ॥
तब विधिलै सुरकेरि समाजा। गये क्षीरनिधि जहँ महराजा ॥
रमासहित तहँ लखिबनवारी। सकलसुरन जयजयतिपुकारी ॥
हम ह्वै सब के अग्र मुनीशा। अस्तुति कीनि नाय पद शीशा ॥
जयजगदीश सकल जगपावन। जय गरीब कोकष्ट नशावन ॥
दीन दयाल कृपाल परेशा। जयसुर नायक जयति रमेशा ॥
देवन कष्ट पर्‌यो जब जबहीं। लिह्याउबारितुमहिंतसतबहीं ॥
सुनिविनती लखि देवदुखारी। अति कृपाल ह्वैकह्यो मुरारी ॥
हेविधि कौन कष्ट भा भारी। जो तुम ताक्यो शरण हमारी ॥
तब हम नाय शीश कर जोरी। कीन निवेदन बहुत निहोरी ॥
तारक असुर महा बलधारी। सो सब देवन दीन निकारी ॥
ताको बध शिव सुतके हाथा। सोलखिपरत असम्भवनाथा ॥
जबसे सती कीन तन त्यागा। तबसे शिवमन भयो विरागा ॥
दो० यदपिप्रकटिपुनिगिरिशघर तपतहेतत्रिपुरारि।
तदपिअरुचिशिवव्याहसोंजानिपरतबनवारि ॥
सो० कोउन अस समरस्त जो समुझाय महेशको।
बनवै पुनिहुं गृहस्त व्याह करैसुरदुखनशै ॥
सुनि अस कष्ट सुरन को भारी। अतिशयदुखितभयोबनवारी ॥
करि विचार दीन्हों मनठीका। शरणागत रक्षक शिवलीका ॥
मोहिं हवै अतिशय दृढ़ताई। शरण गये शिवकरी सहाई ॥
राखत मोर दुलार अतीवा। परब्रह्म शिवहै सुख सीवा ॥
शरण गहे पुरवत मम इच्छा। बहुत वार लैदीख परिच्छा ॥
असकहि मगन भये बनवारी। तनपुलक्यो लोचनबहैवारी ॥

शिव शिवकहिपुनिधीरजकीन्हा । अभय दानसबदेवन दीन्हा ॥
लैविधि सुरन साथ मधु नाशी । गे कैलास, जहां कैलाशी ॥
पृथक पृथक सब माथ नवाई । जयजयशम्भु शम्भु गिरासुनाई ॥
तब सब के ह्वै अग्र मुरारी । लागे अस्तुति करन सम्हारी ॥
जय अद्वैत अखण्ड गिरीशा । जयमनोजहर जयतिमतीशा ॥
जयअनादि जयजय अविनाशी । जय सुजान जयघटघटवासी ॥
माया तव अतिशय बलवानू । घटघट करत ज्ञान अज्ञानू ॥
हरि मतिदेव काममति घाली । जाग्यो ताहि, वेद पथ पाली ॥
तुम्हैं विरोध कौन सुख पावा । दक्ष कथा सब बेदन गावा ॥
कामहिं लखै करै नहिं चेतू । तिहि खल लखो मूढ़केतू ॥

छन्दतोटक

जय कामारी । जक्त बिहारी ॥ जय मखहारी । जन दुखदारी ॥
जयअविनाशी । दयाप्रकाशी ॥ जय त्रिपुरारी । जन सुखकारी ॥
जय कैलासी । घटघटवासी ॥ जय परमेशा । आदि परेशा ॥
जयजय शंभू । सुर अवलंभू ॥ मानिले सेवा । राखिले देवा ॥

दो० सुनिविनती हरिनाथ की बोल्यो औघड़दानि ।
मांगुमांगुमनरुचितबर मोहिंप्रसन्नअतिजानि ॥

सो० बोल्यो रमा निवास यद्दपिसकल तुमजानहूं ।
तदपिजानिमोहिंदास ममरुचिकोपूछाचहत ॥

प्रथम भक्ति दीजे निज चरणा । ज्यहितेसुखदनपरश्रुतिवरणा ॥
पुनि सब सुरकोत्रास मिटावो । करिनिज परिणयसुरहरषावो ॥
सबके मन अभिलाष महेशा । देखैं तोर विवाह परेशा ॥
यद्यपि तारक कीन दुखारी । होहिंसुखित तवव्याहनिहारी ॥
परम शक्ति जो सती भवानी । जोतन तज्यो दक्ष जड़ ज्ञानी ॥
सो औतरी हिमंचल गेहा । करि करुणा देवन पर नेहा ॥
सोतप करत तोहिंपति लागी । पितुगृहसकलभोगसुखत्यागी ॥
कीन महातप बरणि नजाई । मनो धर्यो तनतप छबिदाई ॥
अस तपकोउन कीन कृपाला । सुरमुनिअसुरमनुजखगव्याला ॥
तिहिदेबर गिरिभवन पठावो । व्याहि ताहि सब सुरहरषावो ॥

असवर देव मनोजविनाशी। जो प्रसन्न मोपर सुखराशी॥
एव मस्तु तव शंकर भाषा। पूर भई सब सुर अभिलाषा॥
कहि जय शंभु फूल सब वर्षे। सुनि वरदान सकल सुर हरषे॥
बारम्बार शीश सब नाई। गये सुलोकन बिदा कराई॥
तब शिव सुमिरयो सप्तऋषीशा। आय सकलनायो पद शीशा॥
गौरवरण शिर जटा बनाये। माथे भस्म त्रिपुंड्र लगाये॥
दो० करमाला रुद्राक्षको शिव शिव जपत सुजान।
शिखाभीजि जल गंगसों तेज पुंज जनु भान॥
सो० नाय शीश कर जोरि शिव आगे ठाढ़े भये।
बड़ोभाग्य प्रभु मोरि दासजानि जो सुमिरेहू॥
उचित होय सो देव रजाई। कारज करौं सकल हरषाई॥
कह्यो शंभु सब सुनो सभागी। गिरिजा तपत ब्याहममलागी॥
तिहिं ढिगजाहु ताहि भटकावहु। लेहु परीक्षा पुनि फिरिआवहु॥
सुनिअसविदा सप्तऋषिभयऊ। जहांतपत गिरिजा तहँ गयऊ॥
गिरिजा देखि सप्तऋषिकाहीं। कीन दण्डवत तिनपद माहीं॥
तिनहुं मनहिं मनकीनप्रणामा। जानि जगत जननी भव भामा॥
ऊपर आशिर दीन्ह विशेषी। जायनिकट तिहिकी तपदेखी॥
पूछ्यो किहिकारण तपकरहू। किहि अवराधहु का उरधरहू॥
गिरिजा कह्यो सुनौ मुनिराई। हँसिहौ मोरि सुनत जड़ताई॥
भूमिपरी करकहौं अकासा। चहत उड़ा बिनपंख बतासा॥
चहत असम्भव सम्भव कीन्हा। वारिपभीत्ति करनचितदीन्हा॥
जो परब्रह्म अनीश अभेदा। जासु चरित नहिंजानत वेदा॥
सो शिवभा कैलास विहारी। रमासहित ज्यहिजपतमुरारी॥
तासुसंग हम चहत बिवाहा। यह प्रणहै हमरो मुनि नाहा॥
सुनत हँसे बहु सप्त ऋषीशा। हौ आखिर तौ सुता गिरीशा॥
कोदौ डारन धान विशेषी। जड़के होत जड़े हम देखी॥
दो० यदपि पिता तव बुद्धिघर तदपि अहै पषान।
तासु सुता किमि नहिं चहै संगति भूतसमान॥
सो० जो विधि तुम्हैं बनाय लह्यो बड़ाई जक्तमें।

सो किमिगयो भुलाय बुद्धि बनावत रूपसभ ॥
योगी जटिल दिगम्बरठयाली । अगुण अरूप अगेह कपाली ॥
रहत प्रेत सँग भूत लगाये । मातु पिता त्यहि वेदन गाये ॥
दानदेत नहिं करत बिवेका । करत काम धरि निजमन टेका ॥
नहिं काहूकी लेत सलाहा । चिंतत नहीं रंक अरु नाहा ॥
जो कोउ ताली गाल बजावै । ताको संग बहुत त्यहि भावै ॥
खात भांग अरु जहर धतूरा । निशिदिन बनये रहत सरूरा ॥
असबरपाय कौनसुखकरिहौ । घोटत भांग जन्मभरि मरिहौ ॥
अस तुम रूप अनूपम पाई । वृथा करन हितको बौराई ॥
जानिपरत नारद मुनि आये । तेहिसिखउबमोहिंपरतजनाये ॥
जो मानत नारद उपदेशा । तासु भवन छूटत अरु देशा ॥
लखि यहतुम्हरोरूपअनुपम । अरुअसबुधिलखियतशोचतहम ॥
तुम्हैं योगहैं रमा निवासा । पुर वैकुंठ करत जो बासा ॥
जाके कंचन महल सोहाई । रूप अनूपम जात न गाई ॥
ताको रूप सकल मन भावन । जलजबदनशशिकामलजावन ॥
मणियुत भूषण बसन विराजै । माथे मुकुट देखि रवि लाजै ॥
कौस्तुभादिमणि ज्यहिकेमाला । सुरन शीशमणि अरुजगपाला ॥

दो० तेहिहितकरतिउ तपसरम तबजानित बुधिमान ।
अजहु खैर लखु सांझ जो आवै भोर भुलान ॥

सो० जो मानहु ममबैन तौ हमसाथैं गवन सब ।
करौ सकल सुख चैन ब्याहि विष्णु वैकुण्ठमें ॥

सुनत महा रिस कीन भवानी । लखितुममुनिहमबहुतभुलानी॥
तनसज्जनमन कपटन चीन्हा । वृथाबात तुमसन हमकीन्हा ॥
जो द्विज शिवनिन्दकमुनिराई । तेहितेश्रुतिकह भलो कमाई ॥
तुम्हैं लखतभा पाप अतीवा । तुम शिवनिन्दकहौ जड़जीवा ॥
भयो तपस्या अबमम खंडित । करितिश्चयभाषतश्रुतिपंडित ॥
संचित पुण्य रहत नहिं रोकी । शिवनिन्दककरबदनबिलोकी ॥
पुनि निस्तार कीन श्रुतिचारी । निन्दक रसना लेय उखारी ॥
द्विजौ होय शिव निन्दक जोई । तेहिके हते पाप नहिं होई ॥

जो नहिं पौरुष आपन सरई। कात मूंदि तेहि ढिगते टरई ॥
तेहितेतुममोहिं बहुदुखदीन्हा। तपमें आय विघ्नतुम कीन्हा ॥
अस रिसहोय देउँ तोहिं जारी। आपानल निज तेज प्रचारी ॥
पुनिलखिद्विजननकोनक्षमापन। भयोविलंब धरोमग आपन ॥
जो तुम शिवमें दोष गनावा। सो गुणचोपहृदयममभावा ॥
तुम इयहि अर्थ न जानत मूढ़ा। वाणीनिगमअगम अतिगूढ़ा ॥
दो० घट घट जाको बासहै ताहि अगेही नाम।
पट भूषण मणि सोनमयसजब रूपनरकाम॥
सो० निरगुण ब्रह्म अभेद निज इच्छित सरगुण भयो।
ज्यहि गुणगावतवेद निरगुण अकलअनीह कहि ॥
निजहिभयोपुनि निज रहिजाई। तेहिके तातमात किमिगाई ॥
विधि हरि याहि बनायो जोई। तेहिके तातमात किमिहोई ॥
हरिगुण रूप बखान्यो जोई। सो सब सत्य झूंठनहिंहोई ॥
पर बुध कहत बिबेकहि साजी। नींब कीटनींबहि सों राजी ॥
यद्यपि बिष्णु सकल गुण धामा। शंकर अगुण अरूप अनामा ॥
तदपि जन्म हारिउं शिवसाथा। को गुण दोषलखै मुनिनाथा ॥
कोटि जन्मलगि असहठधरहूं। रहौं कुमारिकिशिवसनबरहूं ॥
अब तुम तुरत यहांसे जावो। पुनिनिजबचननमोहिंसुनावो।
सुनि अस हर्षित सप्तऋषीशा। बोलिउठे जय उमा गिरीशा ॥
तुम जग जननि शंभु जगताता। जयजयसकल जक्तपितुमाता ॥
काहेन अस प्रण करौभवानी। जन्म जन्म तुम शंकर रानी ॥
पराचीन तुम शंभु बिहारिनि। अर्बाचीनसकल सुख कारिनि ॥
अस कहि बिदा भये हरषाई। शंकर ढिग पहुंचे सब जाई ॥
कहि जयशंभु माथ सब नाई। विस्तर युत गिरिजा वृतगाई ॥
असतप कोउनकीन प्रभुआना। अबहै उचित देव बर दाना ॥
असकहि विदा शंभु सन पाई। कहि जय शंभुगये मुनि राई ॥
दो० तबमन हर्षितह्वैबहुत वृषपर चढ़ि वृषयान।
गिरिजा ढिग पहुंचे तुरत देन हेत बरदान॥
सो० तब करुणा करि भूरि कहु गिरिजे गिरिजा रमण।

भयो तोरितप पूरि मांगु मांगु मन रुचित बर ॥
सुनत शंभु बानी गिरि कन्या । आपनिभाग्यलखयोंअतिधन्या ॥
तपत भयो अति खिन्न शरीरा । सो भै रुष्ट पुष्ट गै पीरा ॥
सखिनसहितसोइ परतलखाई । मानहुं तुरत भवन ते आई ॥
हाथ जोरि महि माथ लचाई । शंकर रूप लखत हरषाई ॥
सो स्वरूप कछु कहौं सम्हारी । सकल कहतश्रुति मानतहारी ॥
पांच बदन शिर जटा बनाये । गंग धार तहँ अधिक सोहाये ॥
भरुन त्रिपुंड्र श्वेत शिव माथा । शोभित तहांबाल निशिनाथा ॥
तीन नेत्र अरविंद समाना । अरुणशशि भानुअग्निअनुमाना ॥
रचत सृष्टि ज्यहि दृष्टि पसारी । दाहिन रच्यो ब्रह्म रजधारी ॥
पालतजग ज्यहिते सोइवामा । तिहिते विष्णु सतोगुण धामा ॥
करत महा लय मध्य उघारी । तिहिते महा काल तमधारी ॥
सुभग कानअति सुन्दरसोहत । अहिकुंडल अतिशयमनमोहत ॥
गौर बदन करपूर लजावै । कुंद इंदु नहिं समता पावै ॥
भृकुटी कोश कामकी गाई । शुभनाशा तहँ अधिक सुहाई ॥
सुमद प्रबाल लाल लव हरई । बीज अनारहि रद रद करई ॥
सुभग कपोलशंख छबिहारी । चिबुकसोहावनिअतिसुखकारी ॥

दो० कम्बु कंठशुचि रेखतहँ वृषभ कंध दशबांह ।
भूषण मणियुत व्यालतहँ पहिरेगिरिजानाह ॥

सो० शूलादिक हथियार दश लीन्हे दश हाथमें ।
डारत दुष्टहि मार रक्षाकरि निज दासको ॥

नाग यज्ञ उपवीत सोहावा । तहँ रुद्राक्ष मालमन भावा ॥
उरू विशाल न सो कहिजाई । त्रिवलित उदर महासुखदाई ॥
नाभी गहिरि वरणिनहिं जाई । कटिकेहरि तहँ अतिसुखदाई ॥
चरमगजा सुर अधिक सुहाई । अरु शार्दूल चर्म सुखदाई ॥
दिशा वस्त्र तिहिको श्रुतिगावा । है अथाह तिहिकेर बनावा ॥
रम्भा खम्भा जांघ सुहाई । गुल्फ गोल नहिंजात बताई ॥
चरणजलजकहि जातनशोभा । मुनिमनमधुप रहतजहँ लोभा ॥
सुमिरतजाहि मिटत दुखभारी । धरतध्यानज्यहिविधिबनवारी ॥

शिवपद होय जाहिमन वासी । भुक्तिमुक्ति ज्यहिकी मुनिदासी ॥
रमाभागि तिहिकीबड़ि जगमा। धरत ध्यान जोइ शंकर पगमा ॥
असकहि मगन भयो बनवारी । मूंदिनयनशिव ध्यानसम्हारी ॥
पुनिशिवशिवकहिनयनउघारी । कहनलग्यो शिवकथा उदारी ॥
दम्भहुसहित जोशिवपदध्यावै । इतसुख भोगि मुक्तिउतपावै ॥
तरवा अरुण नजात बताई । कोटिबालरवि का छविछाई ॥
नखद्युतिजलजदलनजनुमोती । सुमिरत हृष्टिहृदय महँहोती ॥
इमि शिवरूप देखि जगमाई । करिप्रणाम पुनि अस्तुतिगाई ॥
जयजगपवन सकलसुहावन । जयति भक्त कोकष्ट नशावन ॥
जयविधिविष्णुसकलसुरस्वामी । जय परब्रह्म सकल घटगामी ॥

दो० इमि अस्तुतिकरि शैलजा परी भूमि जिमि दंड ।
सुधि न रही निज देहकी बाढ़ी प्रीति अखंड ॥

सो० तब शंकर हरषाय कह्यो मांगु वर हे प्रिया ।
निजरुचिकहौसुनाय देउसोई जो मांगिहौ ॥

तब गिरिजा हरषाय मुनीशा । बोलत भई नाय पद शीशा ॥
प्रथमहिं भक्ति देहुनिजपदकी । जो कुठार है माया मदकी ॥
पुनि दूसर मांगौं तजि लाजा । लाजकिहे कहुँ होत अकाजा ॥
लखोजो मोहिं चरणविश्वासी । ममपतिबनौजानिमोहिंदासी ॥
असकहि गिरिजा रहीचुपाई । सुनि शंकर अतिशय हरषाई ॥
एवमस्तु तब कह्यो कृपाला । नभ से झरी फूल की माला ॥
लगे बजावन देव नगारे । कहिशिवगिरिजा जयतिपुकारे ॥
गिरिजै कह्यो शंभु करिनेहू । अब तुम लौटि जाहु निजगेहू ॥
जबतुम्हरोपितुकरिजगरीती । वरकर खोजकरै करि प्रीती ॥
तब हम कछुलीला देखराई । व्याहि तुम्हैं आनब जगमाई ॥
तनकनमोहकिह्योमनअपने । तुमतजिमोहिं न परप्रियसपने ॥
तुम निर्द्वन्द अनादि भवानी । धरत सुतन लीला मनमानी ॥
अबयहतनतुम्हरोअविनाशी । मम सँग रहो सदा सुखराशी ॥
यह प्रसंग राखेहु तुम गोई । निजपितुमातहि कह्यो न सोई ॥
गगनगिराकछुकह्योबखानी । जेहितें वर खोजै सुख खानी ॥

मदयुतहै तुम्हरो पितुमाता। तिहिमदखोय करब हम नाता॥

दो० अस कहि अंतरधान भे शंकर तब जग माय।
सखिनसहित निजभवनको चलतभईहरषाय॥

सो० पहुंची तब जगमाय सखिन सहित पितु मातुघर।
सकल उठे हरषाय जिमिहिं रंक धन राशिलखि॥

मातहि कीन प्रणाम भवानी। हृदय लगाय लीन गिरिरानी॥
पुनि प्रणाम पितुकेपदकीन्हा। गिरिहुलगाय हृदयमहँलीन्हा॥
अति सुखभरे हिमंचलमैना। प्रेमभरे निकसत नहिं बैना॥
मनहु फणीश गई मणिपावा। रंक लह्यो धन चोर उठावा॥
जिमिहरषित यकतनयानारी। पाय पुत्र परदेश बिहारी॥
तृषित लहै जल शीतसोहाई। क्षुधावंत वर भोजन पाई॥
रोगी सुखित खोय तनरोगू। योगी सिद्धि भये वर योगू॥
लहि शिव भक्ति शंभुको दासा। जाको स्वतन है पर आसा॥
तिमि गिरि मैना गिरिजा पाई। भये सुखित नहिंजातबताई॥
बार बार उर लेत लगाई। द्विजनबोलि धनराशिलुटाई॥
बज वायो आनंद बधावा। उत्सव हरष न जात गनावा॥
तबगिरिजहिगिरिवरगिरिनारी। पूंछ्यो तप वृत्तान्त सुखारी॥
केहिबिधिजायकीनतप बनमा। लखिनपरतकिंचितुश्रमतनमा॥
केहिबिधिभयो सिद्धिमनभायौ। कहौ सविस्तर गोय न राखौ॥
कायरदान पाय फिरि आई। हरषित करो मोहिं सबगाई॥
तब गिरिजा महिमाथ नवाई। जस तप कीन सुदीन बताई॥
पुनिशिव आसन बात सुनाई। कह्यो गगन बानीभै माई॥
मुहिं सुनाय भै गिरा अकाशा। गिरिजाभयो तोर दुख नाशा॥

दो० मनिसिद्धि बरजाहु घर अब ह्वै है सुख भूरि।
यह सुनि हमघरकोचलीं मानिमनहिंतपपूरि॥

से० सुनि मैना हिमवान हरषित दीन्ह्योंदान बहु।
लखि गिरिजाकल्यान दम्पति हरषनजातकहि॥

अब सुनु मुनि शंकरकीलीला। जोकरिवबशसकलजगकीला॥
ज्ञानिहिं अज्ञ अज्ञ दै ज्ञाना। सकल नचावतनिजमनमाना॥

सकल खेलावत खेल मजेका । कोउनहिंसमरथ तेहिजनबेका ॥
लहत भेदहारत श्रुति चारी । शेष गनेश रमेश तमारी ॥
अब सुनिये मुनिकथारसाला । जसगिरि प्रेरनकीन म भाला ॥
कछु दिनगये हिमंचल रानी । बोलिगिरीशहि कह्योसोबानी ॥
ब्याहयोग भै सुता हमारी । उचितहोय जसकरहुबिचारी ॥
जसतुमहौ सब गिरिवरराजा । सुताहेत तस करहु समाजा ॥
घरवर सुंदर होय सुभागी । देहु सुता तिहिको अनुरागी ॥
रूपवानसब बिधि सुखखानी । तेहि वरसुता देहु अनु मानी ॥
करु बिवाहइमिशोचिगिरिंदा । जिमिनहोयगिरिजड़कहिनिंदा ॥
सुनि इमि प्रियाबात गिरिराई । निजमंत्रिन कहँलीन बुलाई ॥
करिमंत्रिनसनबिबिधसलाहा । खोजन वरपठयो गिरि नाहा ॥
इक द्विज सुभग जानि सज्ञाना । तेहि पठयोकरिबहुसनमाना ॥
नागलोक सुर लोक मझाई । लखि ममयोगखोजुवरजाई ॥
तब द्विज चल्यो महा हर्षाई । यक्षलोक पहुंच्यो तब जाई ॥
मणि ग्रीव से कीन प्रणामा । कहत भयो अपनो मनकामा ॥
जोगिरिराज हिमंचल नामा । तेहिके सुता भई सुख धामा ।

दो० सो पठयो तुमपास मुहिं सुताब्याह अनु मानि ।
करु प्रमाण जो मन रुचै हैबिवाह सुख खानि ॥

सो० यक्षप सूं द्योकान हेद्विजबर का कहत हौ ।
हैको पशु अज्ञान जोब्याहै जग मातु को ॥

तुम लखिपरत मोहिं अतिज्ञानी । परप्रभाव तेहिकोनहिं जानी ॥
गिरिजा सकल जक्त की माई । लीला हेत धर्यो तन आई ॥
तेहिबिवाह हितममढिगआयो । चाहत मो कहँ नर्क पठायो ॥
तबद्विजचल्यो त्यागिसोओका । गयो तुरत गंध्रब के लोका ॥
पूर्व उक्त तहँ पाय जवाबा । अग्निलोक को गयो सिताबा ॥
सोउ गिरिजा जगजननि बताई । धर्म्मराज पहँ गा द्विज राई ॥
सोउ गिरिजै भाष्यो जग माता । फिर्योविप्रलखिअचरजबाता ॥
नैऋत वरुण पवन के पासा । गयो विप्रलौट्योतजि आसा ॥
गिरजै सकल कहत जग माई । करत प्रणाम माथ महिनाई ॥

तब कुवेर पहँ गयो द्विजेशा । भाषत भयो गिरीश सँदेशा ॥
सुनि बिवाह गिरिजा धन राई । अनुचितकहिमहिमाथनवाई ॥
गिरिजा सकललोककी माता । हटकेहुद्विजहिनकहुअसबाता ॥
तब ईशान लोक द्विज गयऊ । तहौं मनोरथ नहिंकछुभयऊ ॥
इंद्र लोक तब गा द्विजराई । सुरपति देखि बहुत हरषाई ॥
सिंहासन परथित सुर राऊ । ज्यहि छबि देखिहोतमनचाऊ ॥
माथे मुकुट कनक मणि भ्राजै । भस्म त्रिपुंड्र महा छबि छाजै ॥
कानन सुभग बिराजत कुंडल । बैठे देव सकल करि मंडल ॥
दुहुंदिशि चँवर चलैअति भारी । गावत गीत अप्सरा सारी ॥

दो० तिहिक्षण द्विजतहँपहुंचिकै इंद्रहिकीनप्रणाम ।
हाथ जोरि ठाढ़ेभयो कह्यो सकल मनकाम ॥
सो० जोगिरिपति हिमवान बुद्धिधाम ऐश्वर्य्यधर ।
तिहिघरसुतासयान नामउमा छविकीभवन ॥

तुमसन चहत तासुको व्याहा । करो प्रमाण सहित उतसाहा ॥
तुम्हैं योग यह हवै विवाहू । तुम सुरेश वह गिरिवर नाहू ॥
सुनि सुरेश लीन्हों दबकाई । द्विजका करसि बहुतशठताई ॥
गिरिजा सकल जक्त महतारी । जोतुमकहतलगत मोहिंगारी ॥
को शठ असवृष विनावृषाना । गिरिजा व्याह करै अनुमाना ॥
तुरत जाहु हियँसे तुम भागी । बचन तोर सुनि पातक लागी ॥
भाग्यो द्विज तहँते तुरताई । निजमनमें बहु अनरज पाई ॥
सकल देव भाषत तिहिमाता । को तिहि करै पुरुषकर नाता ॥
विधि पहँगयोतुरत द्विजराई । तहौं तिही विधि उत्तर पाई ॥
विधिहुकह्योगिरिजहिनिजमाता । कीन प्रणाम बहुत हरषाता ॥
तहौंते लौट्यो द्विजतजिआसा । मनमें शोचत बहुत उदासा ॥
तब निज मन में कीनविचारा । पुर वैकुंठ हवैजग न्यारा ॥
गिरिजहिकहतसकलजगमाता । हैं भगवान सकल जगताता ॥
सोकरिहैं यह व्याह कबूला । जाउँ तहां नहिं भटकौं भूला ॥
अस कहि गयो जहां बनवारी । पुर वैकुंठ महा द्युति कारी ॥
पहुंचि दूरिते कीन प्रणामा । हर्षित भयो देखि घनश्यामा ॥

दो॰ ताकी छबि बरनों कछुक जस देखी द्विजराय ।
सकल कहत छबि जासु की वेदहु रहत चुपाय ॥
सो॰ सुंदर सुभग शरीर नीलनीरधर द्युति लसै ।
पाट पीत वर चीर ज्यों दामिनि कद परलसै ॥

शिखरिणीछन्द

शिर सुन्दर मुकुट विराजै । श्रुति मणि युत कुंडल छाजै ॥
लखि केश कस्तुरी लाजै । जनु बैठे भँवर समाजै ॥
बहु सोह त्रिपुंड लिलारे । करि वेद विधान सँवारे ॥
जेहि उपमा वेद न पावत । नहिं दूसर तिहि सम गावत ॥
बनि भौंह कमान मनोजा । अति शोभित नैन जलोजा ॥
बहु शोभित सुन्दर नासा । तहँ अधर प्रवाल प्रकासा ॥
रद करत दाड़िमहिं हांसी । अरु हसनि हवै दुख नासी ॥
तहँ ग्रीवा कम्बु बिराजै । अरु वृषभ कंध छबि छाजै ॥
तहँ सुभग माल रुद्राक्षा । बहु सोहत है कमलाक्षा ॥
अरु कौस्तुभादि मणि सोहै । सो धन्य ध्यान धरि जोहै ॥
भुज चारि अजान बिराजैं । तेहि देखि करी करि लाजैं ॥
तहँ अंगद बलै बिराजै । जनु दीप निशा से राजै ॥
तहँ नंदक कंज सुदर्शन । अरु शंख महा अरि मर्दन ॥
अरु हाथ सुभग सुखदाई । श्रीवत्स महाद्युति पाई ॥
अरु त्रिवलित उदर बिशाला । तहँ नाभि सजल कर लाला ॥
कटि केहरि को मद हारी । तहँ पीत बसन छबि न्यारी ॥
बहु हरत जांघ द्युति कोला । तहँ गुल्फ गोल अन मोला ॥
अरु चरण कमल द्युतिहारी । तहँ मुनि मन भँवर बिहारी ॥
तरवा रबिबाल समाना । अति सुभग न जात बखाना ॥
तेहि माथ नवावत शौरी । शिव भक्ति चहै अन थोरी ॥

दो॰ अस लखि रूप अनूप हरि द्विजवर बहु हर्षाय ।
करि प्रणाम ठाढ़े भयो बोल्यो अज्ञा पाय ॥
सो॰ सुनिये कृपा निधान नाम हिमंचल मेरु पति ।
ताघर सुता सयान रूप अनूपन जात कहि ॥

नाम उमा अंबिका भवानी । सर्व गुनागरि है छवि खानी ॥
तेहि बिवाह हितबरखोजनका । पठै मोहिंसब सुरलोकनका ॥
सकल सुरनपहँहम फिरिआये । सबसुरतेहि जगमातु बताये ॥
करि दंडवत मूंदि सब काना । तेहिव्याहनकहँ कोउनमाना ॥
यक्षादिक से ब्रह्म प्रयंता । असन समर्थ बनैतेहि कंता ॥
तब मनमें हम मंत्र बिचारी । सकल जक्त पितुहैं बनवारी ॥
अस बिचारकरिकै मन महँगद । आयन तात ध्यायतुम्हरोपद ॥
शिवा मातु जग तुम जग ताता । रुचे तो व्याह करो हर्षाता ॥
असकहि द्विजवर माथ नवाई । कानमूंदि हरिशिवशिवगाई ॥
हे द्विजवर तुम बड़े अनारी । कहि अधर्ममोहिं लावतगारी ॥
शिवा मातु जग पुनि मम माता ।क्यहि बिधिहोयपुरुषकरनाता॥
आदिशक्ति निज तंत्रबिहारिनि । भवभवबिभवपराभवकारिनि ॥
निज इच्छा करि धरत सरूपा । लीलाकरत अखंड अनूपा ॥
ताके पतिकर खोज न पावो । कोटिन जन्म चहै तुमधावो ॥
अबिनाशी सर्वोपरि भासी । सो निर्द्वंद निरीह करासी ॥
ज्यहिहमबिधिसुरमुनिधरिध्याना । खोजतलहतनतासुठिकाना ॥

दो० यहि मद युत खोजा चहत गिरिपति दूत पठाय ।
हवै असम्भव बात यह गिरि बुधि गई बिलाय ॥

सो० घटघट रहा समाय सकलपास सबते अलग ।
प्रेमकिहे मिलिजायभक्तबश्य अचरजनहीं ॥

तेहिते तुम द्विजवर अब जावो । मोर सँदेश गिरीश सुनावो ॥
गिरिजा वर गिरिजा सन यांचै । करै बिवाह सुयश जगमाचै ॥
अस सुनि द्विजपतिमाथनवाई । चल्यो तुरत गिरिवरपहँआई ॥
कहत भयो सब कथा द्विजेशा । ज्यहिबिधिघूमिफिर्य्योसुरदेशा ॥
सब सुरकह्यो शिवै जग माता । मोहिं मूढ़ बनयोअति ताता ॥
तब मैं जगपितहरिहिबिचारी । हरिपहँ गयों काज निजधारी ॥
तिनसों कीन निबेदन जाई । उमा व्याह हितमाथ नवाई ॥
सुनत तुरत तिनमूंद्यो काना । महिं कहिमूढ़ हँस्योभगवाना ॥
हे द्विज मोहिं देत क्यों गारी । शिवा मोरि जननी सुखकारी ॥

ताको पति है अलख अनूपा । श्रुतिहु न जानत तासुसरूपा ॥
निज अनुमान कहतसबकोई । जिहि जस रुचै लखै तससोई ॥
सुनि असबिष्णुबचनठगिरहेऊं । निज मनमें अस संशयगहेऊं ॥
हरिहुकहत जेहिको निजमाता । तेहिसों कौन करै बरनाता ॥
तब मुहिंबिदा कीन हरिनाथा । अरुचिंतितलखिकीनसनाथा ॥
कह्यो सँदेश गिरीशहि जाई । पूंछ्यो वरनिज सुताबुलाई ॥
निज मुख शिवाकहै पतिजाही । ताहि बिवाहि होय उत्साही ॥

दो० असकहि मोहिं किह्यो बिदा जगपति हरिमहराज ।
सो सब तुम सों दीन कहि करोउचितलखिकाज ॥

सो० सुनि अस बिष्णु सँदेश बारबार गिरिपति मुदित ।
जगपति बिष्णु रमेश सो गावत गुण मम सुता ॥

अहोभाग्य ममसम नहिं दूसर । जाम्योकमलभाग्यबशऊसर ॥
जगमें अपर न मम सम भाई । जाको सुता भई जग माई ॥
कहँ मैं नीच बुद्धि को हीना । कहँ सर्बोपरि बिष्णु मतीना ॥
जो योगिनके ध्यान न आवत । सो मम सुता केरगुण गावत ॥
नेति नेति जेहि बेद न गावा । सुता हेत संदेश पठावा ॥
सुखमहँ मगनअतिहिगिरिराई । बहुत बार लगि रह्योचुपाई ॥
पुनि धरि धीरप्रियहिनिजबोली । बिष्णु सँदेश कह्योसबखोली ॥
पूंछौउमहिं कहै ज्यहि नाहू । तेहि बिवाहि करिये उत्साहू ॥
अस सुनि मैना बहु हरषाई । लीनउमा निजढिगहिबुलाई ॥
कीन प्रणाम गिरिशलखिमाता । बोलत भयो सहित हरषाता ॥
तब बिवाहहित सब सुरपाहीं । गयो बिप्र मान्योकोउ नाहीं ॥
हरिहु तुम्हैं भाष्यो निजमाता । तहँ पर सुरनकेरि कसबाता ॥
तबमुहिं विष्णु सँदेश पठाई । उमाकहै बर किहे भलाई ॥
तेहि कारण पूंछौं मैं तोहीं । स्वबर बताय देहु तुम मोहीं ॥
तासु संग मैं करों बिवाहा । होवै हरष सहित उत्साहा ॥
तब मसकानि उमा हरषाई । पुनि लज्जित ह्वै माथ नवाई ॥

दो० कह्यो उमातब मातुसन जो मोहिं पूंछत तात ।
सो मैं देव बताय बर परनहिं बदलै बात ॥

सो० जो तुम पितु अरु माय कीजै सत्र प्रमाण की ।
तो मैं देउँ बताय निजभर्ता द्विजसों अलग ॥
तब दम्पति करिवचन प्रमाना । कीन्ह्यो तुरत बिष्णुकोआना ॥
जाहि कह्यो तेहि किहे भलाई । अस कहि दम्पति रहेचुपाई ॥
तब गिरिजा लै विप्र यकंता । दिह्यो बतायतुरत निजकंता ॥
उत्तर दिशि जो गिरि कैलासू । रजत मयी अति सुंदर आसू ॥
तहँ मंदार विपिन अति सोहै । त्रिबिधिबयारिमदनमनमोहै ॥
तहँ एक योगी तपत अमाया । सुंदर सुखद बराकी छाया ॥
मंगल खानि अमंगल भेखी । भूलत सकलतासु गतिदेखी ॥
सर्बोपरि तेहि को श्रुति गावत । बहुत वृद्ध निजरूपलखावत ॥
बनत बाल निजरुचि ठहराई । होत जुवानिज इच्छा पाई ॥
दिशा बस्त्र निजको सो कीन्हो । दासन समनिपटम्बरदीन्हो ॥
रहत सदासो भस्म लगाये । तपत सदासोआपुहि ध्याये ॥
भूषण नाग कपाल क माला । ओढ़े रहत बाघको छाला ॥
डूंड़ बूढ़ वृष बाहन राखत । भांग धतूरसदा बिबचाखत ॥
रहत सकल जगसों सो न्यारा । न्यारी चाल धरे अबिकारा ॥
मणि पट सोन सजब नर काजू । तेहते गहत न सो महराजू ॥
दासन देत सकल बसु चीती । कौस्तुभादिमणिकरिबहुप्रीती ॥
दो० तुम्हैं लखैहै रूपनिज बहु मलीन अति दीन ।
अमेहुनतुमतेहिरूपलखिलोलासमुझिमहीन ॥
सो० सर्बोपरि तेहि जानि किह्यो तिलक तेहि भालतुम ।
निज मनमें अनुमानि बिष्णुकेर अरु मम बचन ॥
जो कछु तुम्हैं देय करि दाया । सो लै लिह्यो जानिबहुपाया ॥
मातु पिता सन तुम तेहिरूपा । कह्यो न आय सत्यद्विजभूपा ॥
सर्बोपरि तेहि केरि समाजा । बरन्यौ काम रूप तेहिब्याजा ॥
अस कहि बिदाकीन द्विज राई । द्विजवर चल्यो हर्षिशिरनाई ॥
शोधि सुसाइत भयो पयानी । नपितोचल्योमानिजजमानी ॥
अति मय मूढ़ रहै सो नाई । द्विजवरनहिंकछुताहिजनाई ॥
मगमहँ द्विजसों पूंछत नाई । केहि नृपपास चलततुमभाई ॥

चलो जहां बड़ होय नरेशा। जहँ वांमिलै बस्तु धन बेशा ॥
द्विजवर कहत चलो करि मशा। पहुंचवतहैं होय जहँ सृष्टा ॥
कछुक कालमें पहुंचे तहँवां। गिरि कैलासरहै मुनिजहँवां ॥
लखि गिरि द्विज बरकीनप्रणामा। समुझिमनहिंमनपूरणकामा॥
चढ़ि गिरिपर देख्यो मुनि जाई। अतिभीषननहिंमार्गलखाई ॥
केहरि गज बोलत रव भारी। रहत घोरनहिंव्यालनिहारी ॥
अति बड़ धीर चला द्विजजाई। भागतनापितअतिचिल्लाई ॥
बहु रिसाय द्विजको गरियावै। मरण ठानितू द्विजकहँ जावै ॥
तबद्विज कह्योन बकुजिमिकागा। चला आव मम पाछेलागा ॥

दो० यहि बिधिपहुंच्यो बिप्रबर बटतरजहँ शशिमाथ।
करवत कीन प्रणाम बहु निजकहँ मानि सनाथ ॥
सो० लख्यो तहां वृषकेत धरे समाधि अखंडमुनि।
कुंद इंदु समश्वेत गंगधार बहै शीश सों॥

धरे चौथपन खिन्न शरीरा। भस्म विभूषित भूषण कीरा ॥
दिशा वस्त्र पहिने शिरमाला। बिस्तर किये बाघको छाला ॥
शशिशिशुभाल सुभगसुचिनैना। सोहत सुभग व्यालउपनैना ॥
बांधा एक वृषभ तहँ बूढ़ा। असशिवरूप लख्यो द्विजगूढ़ा ॥
समुझि शिवाशाणी धरिधीरा। बैठ्यो विप्र त्यागि सब पीरा ॥
शम्भुरूप अति भीख नहेरी। बोलत नापित आंखि तरेरी ॥
सूझ्यो काह तुम्हैं द्विजराई। भागिचलो झटजीव बचाई ॥
विप्रमनहिं मन शिवहि बिसूरी। कहत जागिकरु मनसापूरी ॥
तबशिव निरखि विप्र दृढ़ताई। अरु अनुराग समुझिजगमाई ॥
आसन बदलि सुनैन उघारा। जाग्यो शम्भु द्विजेश निहारा ॥
हाथजोरि महिमाथ नवाई। आगे ठाढ़ भयो द्विजराई ॥
नाथ हिमंचल नाम गिरीशा। बहु ईश्वर्य्यमान धरणीशा ॥
तिहिघर सुताभई सुखकारी। रति लाजत जेहिरूप निहारी ॥
तिहिबिवाहहित हमसबदेशा। फिरिन बसैं जहँ सकलसुरेशा ॥
सकलसुरनतिहिकहिजगमाता। चह्योकीननहिं कोउवरनाता ॥
तब हमगयन जहां भगवाना। तेउतिहिको निजमातुबखाना ॥

दो० तब रमेश हम सों कह्यो गिरिजा तत्त्व लखाय।
पूंछि उमासों तासुवर करौ तिलकतिहि जाय॥
सो० तब हम तहँ सों आय सकल कथा गिरिसोंकही।
धरि शिर विष्णु रजाय उमा बोलि गिरि पूंछेहू॥
तब गिरिजा गिरवरसनभाषा। जो तुम सत्त करो तजि माषा॥
तब मैं निजपति रूप लखाऊं। द्वै रहस्य द्विजवरहि बताऊं॥
जिहिकरिआवै द्विजवर टीका। ताको फिर नहिं करो अलीका॥
सुनिअससुताबचनगिरिराजा। सत्त प्रमाण कीन महराजा॥
तब लै मोहिं यकांत भवानी। नाथ कथा सब कही बखानी॥
तिहि अनुशासनलहिहरषाता। देख्यों आय चरण जलजाता॥
देखि चरणअतिहरषिसोहावा। मिट्योसकलपुरकोपछितावा॥
अब मुहिंहरषिदेहुअनुशासन। करितवतिलककरौं दुखनाशन॥
हँस्योमहेश सुनत द्विजबानी। आखिर तौ गिरिसुता भवानी॥
कोउ सुरेशकरनाम बतावति। करिबिवाहगिरिपतिहुलसावति॥
गिरिसब गिरिन केर है राजा। हमरे हवै न एक समाजा॥
कहँ अतिदीन कहांअतिनाहू। समते होय बैर अरु ब्याहू॥
गिरिजा सुंदर रूप नवेली। जेहि सँग रहत अनेक सहेली॥
मैं अति बूढ़ भूत सँग लाये। का सुख लहै तासु ढिग आये॥
कह्योविप्रमोहिंनहिंभटकावो। तजौं नहीं जो लाख छिपावो॥
उमा कृपा पायों मैं ज्ञाना। ज्ञान पाय नहिं कोउ भटकाना॥
दो० अब आयसु मोहिँ देहु प्रभु करौं तिलक तव भाल।
उत्सव युत ब्याहो उमा सब जग होय निहाल॥
सो० सुनि सुनि द्विज के बैन बहु रिसात रोमारि है।
मन महँ करत न चैन यहि तपसी सों का लहब॥
जे शिवतत्त्व बहिर मुनिराई। तिनकी गति अस वेद बताई॥
सुधरत नहीं पाय सतसंगा। जिमि उलूक नहिं लखै पतंगा॥
तब मुसुकाय कह्योअसशंकर। जो मनरुचै करो सोइ द्विजवर॥
तबद्विजवरकरिहरषविशाला। कीन्ह्योतिलकमुदितशिवभाला॥
जबद्विजशिवकेतिलकचढ़ावा। देवन हरषि सुमन झरिलावा॥

बाजे बहु विधि गँगन नगारा । देव बधू नाचैं नभ द्वारा ॥
हरषित भयो सकल सुरकेतू । जानि तारका सुर बधहेतू ॥
तब द्विज विदा हेत शिरनाई । तनक भस्म शिव दीन बिदाई ॥
तिहि बहुमानि विप्रनिजपागा । लीन्ह्यो बांधि सहितअनुरागा ॥
तब छूरी निजमनहिं विसूरी । मिली राख ह्वै है का पूरी ॥
तब निज नेग सुनायो भारी । मूठी राख दीन त्रिपुरारी ॥
लिह्योबांधि बेमननिजजामा । चलत बेर नहिं कीन प्रणामा ॥
विप्रहि देत मनहिं मन गारी । यहै दुष्ट मम नेग बिगारी ॥
शिव माया अतिमुनिबलवानी । करहु न संशयअसजियजानी ॥
यदपि दृष्टि रविसम सबमाहीं । फूलहिंकंजकुमुदकुम्हिलाहीं ॥
चल्यो विप्र मग में चित चाऊ । अतिशयदुखितचलतमगनाऊ ॥

दो० तब नापित बहु क्रोधकरि छोरि भस्म झिकिदीन ।
जिमि गति मुकुर न भावई जो जड़ लोचनहीन ॥

सो० सो लै भस्म बयारि डारयो दक्षिण देश में ।
देखौ दृष्टि पसारि बसत तहां बहु लक्ष्मी ॥

पहुंचे उभय हिमंचल नगरी । कही हाल द्विज नृपसोंसगरी ॥
जस गिरिवर तुमहौमहराजा । मिल्यो तैसवर सहितसमाजा ॥
जस है रूप खानि जगमाई । रूप ज्ञान निधि तसवर पाई ॥
प्रथमजैस बुधि सिखयोमाई । तसद्विजवर गिरिपतिहिसुनाई ॥
ह्वै प्रसन्न गिरिद्विजसनमानी । मैनासन सब वृत्ति बखानी ॥
अतिहर्षित दम्पतितबभयऊ । द्विजकहँ दान मान बहु दयऊ ॥
ह्वै द्विज बिदा गयो निजगेहा । छोरयो भस्महि सहित सनेहा ॥
सबिधि पूजि भाजनमहँधरेहू । महाद्रव्य शिव तिहि घरभरेहू ॥
उमड्योद्रव्य भवन द्विजराई । नृपहुसे अधकी परत लखाई ॥
एक दिवस नाइनि तहँआई । द्विज धन देखत बहुत सिहाई ॥
द्विजतियसे पूछ्योअनखाता । कबसे तव घर अस धन राता ॥
द्विजतियबोली सहितहुलासा । शिव विभूति यहभूतिप्रकाशा ॥
तब नाइन निजपतिपहँ जाई । द्विजको वृत्त कही समुझाई ॥
तब नापित निज चितकरिचेतू । शिव ढिग चलेहुभस्मके हेतू ॥

निशिदिन चलाजात अतिधावत। अतिशयथकितनगिरिकोपावत॥
गिरि कैलास भयो अति दूरो। ज्यहिविधि श्रमलहैअतिकूरो॥
दो० गिरत परत पहुंच्यो तहां मांग्यो शिवसनजाय।
नाथ भस्म मम गिरिगई दीजै पुनि दुसराय॥
सो० तब शंकर हँसिदीन धूनीदीन लखाय तेहि।
बांध्यो मन दुइतीन चलत भयो शिर लादिके॥
विधिपति नीको ध्याय अतीवा। शंकर सुयशकहौं सुखसीवा॥
मम उर बैठि सहित करुणाई। मातु सुयश शिवदेहु बताई॥
बहुश्रमकरि नापित मगमाहीं। पहुंच्योआय सुघरतियपाहीं॥
छोरि गांठि निज घरमहँ धरेहू। बढ़्योराख तेहिघरभर भरेहू॥
बिनहुं प्रीति फल गावत वेदा। भस्मसेमिलतमिटतसबखेदा॥
पर जो प्रथमकरै तेहि निन्दा। ताकोफल नहिंमिलै मुनिन्दा॥
तिहिते नापितसुखित नभयऊ। प्रथमराखकहिकेझिकिदयऊ॥
तिहिघर राखबढ़्यो अधिकारी। ढोवत नाइनि रोवत भारी॥
ढोय ढोय सब बाहेर डावा। उप सुमेरु सो भयो सुहावा॥
कनक मयीअतिशय मनियारा। लखत ननापित ज्ञानविसारा॥
लख्यो जाय द्विजसन तबनाई। निजधन बांटिदेहु मोहिंभाई॥
वृत में दाय हवै मम तोरा। क्यों नहिं बांटि देतबरजोरा॥
तब द्विज दपटि दीन वहिनाई। नापित गयो जहां गिरिराई॥
चुगुली कीन जाय मनमारी। सुनहुनाथ कछुविनयहमारी॥
बहुत नाथ यह दुष्ट द्विजेशा। कछुनकानि तवकीन गिरेशा॥
उमातिलक यहजहँ करिआवा। रहत न धीर करतसुधिठावा॥
दो० तुमसमान तहँ साज नहिं वरण शिवा अनुरूप।
बहुत वृक्ष कंटक मयी घरको लख्यो न जूप॥
सो० हरिहरितहँ बहुखानिके हरिगज अतिरवकरहिं।
हरि लटके बहुकान हरिछाला तहँ बस्त्र है॥
अतिशयवृद्ध न सो कहिजाई। तेहि पुरको नहिंअपरलखाई॥
सकलकेश सिततन जज्जरसे। लकुट सहाय उठत दरपरसे॥
नगन सकल तनभस्म लगाये। रीझत निजहि सुडमरुबजाये॥

भांग धतूर गाशि नहिं लेखा । जाति अन्ननहिं किंचित देखा ॥
बहुतहि किंचित कहतबनैना । चलत बेर नहिं दीन चबैना ॥
बैल बूढ़ तहँपर यक रहई । मोरे जान यान तेहि अहई ॥
बहु हटक्यों द्विजको हठलाई । कछुक न सुन्योबातद्विजराई ॥
बरबश तिलक तासुशिरसारा । कछुडर तोरि न कीनविचारा ॥
असतब वृत्तकहा हम स्वामी । करो उचित तुमहौ बड़नामी ॥
असतुनिबहुतगिरिशमुसकाना । द्विजसों बेर समुझिनहिंमाना ॥
मैना सुनत भई विकलाता । सुनहु नाथ नापितकी बाता ॥
सर्वस झूंठि कहै नहिं नाऊ । द्विजहिबोलि सबबातमिलाऊ ॥
बरु गिरिजा ममरहहिं कुमारी । ऐसे बरहि न बरिहौं वारी ॥
असकहि विकलभईबहु मैना । कम्पिततन निकरै नहि बैना ॥
गिरि उठाय तब हृदयलगावा । जलमँगायतेहिबदनसिँचावा ॥
प्रेमविवश शोचहु नहिंभामिन । करबसोईजोरुचि तवनामिन ॥
दो० तबगिरि निज सबज्ञातजन भ्राताजे बुधिखानि ।
सकल बुलायो करि विनय मंत्र हेतु अनुमानि ॥
सो० सुर बपुधरि सब मेरु अस्तोदय विंध्याचलहु ।
मंदर आदि सुमेरु आये गिरिनामी सकल ॥
हिमि सबको सादर सनमानी । आसनउचितदीन सुखखानी ॥
सबसौं सकल वृत्ताँत बखानी । प्रथमहिजिमितपकीनभवानी ॥
सकलसुरनमहँजिमिद्विजगयऊ। जिमिनकोऊसुरसमरथभयऊ ॥
जिमिसब उमैकह्यो जगमाता । करिनसकेहुजिमितेहिबरनाता॥
पठयो जिमि संदेश रमेशा । विस्तरयुत सबकह्यो नगेशा ॥
पुनि जिमिउमा शपथकरवाई । जिमिप्रणकिह्योकह्योसबगाई ॥
जिमि द्विजबरलै उमा यकंता । दिह्योलखायद्विजहिनिजकंता ॥
द्विजनापितजिमिगे यकसाथा । करोतिलक जिमिशंकरमाथा ॥
लह्योभस्मजिमिउभयबिदाई । लोनविप्र जिमि शीश चढ़ाई ॥
नापितनिदरिजिमिहिंझिकिदीना। सोसबगिरिश निवेदनकीना ॥
द्विजबरलह्योजिमिहिफलभूरी । रंकते राज भयो लखि छूरी ॥
पुनिहु गयो तपसी पहँ दौरा । दीन दिखाय तपस्वी कौरा ॥

बांधि बोझ जिमि नापित धावा । करि श्रम बहुत भवन लै आवा ॥
धात राख जिमि भई तमासी । कहत मोहिं आवत बड़ि हांसी ॥
तेहि घर ठौर रह्यो अस नाहीं । नाउ निरहै बैठि उर्वाहि माहीं ॥
अति रोवत ढोवत तहँ नाइनि । बिना प्रीति नहिं कछु फल पाइनि ॥
दो० तासु द्वार जब ठेरभा उप सुमेरु सम भाय ।
सबके देखत कनकमय नपितहि राख लखाय ॥
सो० चलि सब देखहु सोय कनक मयो सो लखि परत ।
तेहि ते मम मन होय सबौं परि सोइ बर हवै ॥
प्रीति सहित धरि भस्म द्विजेशा । भयो धनी लखि लजत धनेशा ॥
सो लखि मम मन बर सुख खानी । पर नहिं चेत करत मन रानी ॥
तेहि ते तुम हौ सब बर लायक । निज निज मंत्र कहौ सुखदायक ॥
तब सब कह्यो सुमंत्र बिचारी । एक बात सुनि लेहु हमारी ॥
लगन हेत पठवहु सब सामा । पाती लिखो खोलि मन कामा ॥
करी आय द्विज अधिक बड़ाई । रूप राशि बय षोड़श गाई ॥
राज समाज सुरेश समाना । ममते अधिक सो कीन बखाना ॥
सो हम यहां लगन ठहरावा । फागुन असित भूत बनि आवा ॥
अर्द्ध निशा शशिबार मनोहर । तेहि दिन ब्याह रच्यो गिरिजा कर ॥
तेहि दिन आयेहु सहित बराता । पर जस रूप कह्यो द्विज ताता ॥
द्विज भाषित पर रूप न ऐहौ । कोटि यतन गिरिजा नहिं पैहौ ॥
अरु मम सरवर होय बराता । राज समाज सकल दिशिपाता ॥
गायक किन्नर अरु गंधर्वा । होहि नाट कीरति मद दर्पा ॥
अगिन धर्म सब होहि बराती । नैऋत बरुण पवन दिशि पाती ॥
धन दीशान पुरन्दर बिधि हरि । आवैं सकल देव शोभा करि ॥
तब गिरिजा कर होय बिवाहा । होय उभय दिशि अधिक उछाहा ॥
दो० यहि बिधि सामा लगन सँग जाय दास सत मान ।
तेऊ आवैं देखि जस तस तुम करहु प्रमान ॥
सो० जब अस कीन प्रमाण मैनहु मन में अति रच्यो ।
जोरच्यो लगन समान पूर्वउक्त पाती लिख्यो ॥
पाती दियो बिप्र के हाथा । नपितहु चलेहु लगन के साथा ॥

और दास सत मानस सामा। चलतभयहुकरिगिरिहिंप्रणामा॥
हर्षित बहुत होत मग नाईं। अबद्विजकपटसकलखुलिजाई॥
द्विजहिशोचजसभा तेहिकाला। सोनहिंबनतकहतमोहिंबाला॥
चोरी बस्तु धाम्यो जनु जहँवां। धनी चल्यो तस्करयुततहँवां॥
शिव माया नहिंकरत बिचारू। अथवन रबि नहिं पायनिहारू॥
जस जसद्विज कैलासनिहारत। तसतसदुखित होतमनमारत॥
मन महँ गह्यो शरण शिवकेरी। राखु आब गिरिजा पति मेरी॥
द्विज कलेश गिरिजापतिजाना। शिवा प्रीतिलखिके वृषजाना॥
डमरू दीन बजाय महेशा। सब सुर जान्यो शंभु सँदेशा॥
तुष्टा तनय आय शिर नावा। चित्र बिचित्र मकान बनावा॥
यदपि रह्यो शिवगेह सोहावा। तदपि नई बहु कृत्य बनावा॥
कनकमयी भुइँ भीति बनाई। मणिसों मीना अधिक रचाई॥
कच्छा सप्त महा द्युति कारी। सतमहला तेहि उपर अटारी॥
प्रति कच्छा फाटक अधिकारी। बज्रमयी सब टाटक कारी॥
चँदवा पीत तहां दर दोजी। लहतनउपमातेहिकबिखोजी॥

दो० मनमें कीन बिचार तब उपमा बुद्धि पसारि।
कोटिन रबि यकठेभये करत महा द्युति कारि॥

सो० आयो सहित दिगेश सुरपति सबसामा सहित।
सुरा सहित बिधिमेश लक्ष्मी युत आवतभयो॥

सनकादिक अस सप्त ऋषीशा। सकल प्रजापति गये मुनीशा॥
यक्षा दिक अप्सर गंधर्बा। सजि सजि रूपगयेतहँ सर्बा॥
अहि पति आयो साजसजाई। अपर नाग आयो सब धाई॥
यहिबिधिसकलदेव मुनिनागा। आय करनशिव सेवन लागा॥
सिंहासन पर शिव बैठाई। सेवा करन लगे सुर राई॥
दक्षिण दिशि बैठे बन वारी। हम दिशि बामहर्ष युत भारी॥
आगे युगकर जोरि सुरेशा। ठाढ़े परखत हुकुम महेशा॥
रबि शशि छत्र लिये करदोऊ। पवन डुलावत है सुर कोऊ॥
किन्नर गंधर्प गावत गीता। अप्सर गण नाचत करि प्रीता॥
गंगा यमुना चमर डुलावत। मनहुजड़नकोशिवहिचिन्हावत॥

सनकादिक सब बेद सुनावत। सकल प्रजापति अस्तुति गावत॥
शिव गणबने महा छबि धारे। बिस्तर भय नहिं बरणयों वारे॥
कोउ सुर लिहे हाथमें डब्बा। पान खवावत सहित अदब्बा॥
तेहि छिन जसशिवरूपबनाहै। बरणत थकत सहस रसनाहै॥
नेति नेति कहि वेद पुकारत। चुप साधत बानी मन हारत॥
पर निजगिरिहि सुपावनकारी। कछुबरनौ निजमतिअनुसारी॥
षोड़श बय शिशुकीअनुहारी। कुंद इंदु सम शोभा धारी॥
जटा जूट बांधे शिर भारी। गंग बुंद जनु मणि द्युतिकारी॥
दो० अहि मणि युत कुंडल करन मणि दिखात अहि नाहिं।
तीन नयन अंजन सहित खंजन लखि सकु चाहिं॥
सो० सुभग बाल शशि माथ श्वेतभस्म त्रयपुंड्र तहँ।
भौंह धनुक रति नाथ जनुखींचेहुशशिकेनिकट॥
गोल कपोल महा द्युति कारी। लज्जितशंखजिहिछबिहिनिहारी॥
नासा सुवा चोंच सम भासी। अधर प्रबाल केर मद नासी॥
हँसी मंद जनको दुख नाशै। द्विज जनु दाड़िम बीजप्रकाशै॥
ग्रीवा कंबु कला द्युति हारी। वृषभ कंध सब भूषण धारी॥
दशभुज भूषण अस्त्र समेतू। जासु छांह ओरी सुख हेतू॥
यहिविधिसकल अंग सुखधामा। सज्यो राज महराजकु सामा॥
बुद्धि छोटि शोभा लखिमोटी। करकी छांह पांव पर लोटी॥
जलजचरण शोभा अतिलसई। मुनिमनमुदितभवँरजहँबसई॥
धरतध्यानजयहिविधि बनवारी। वर्णत परगति होत ग्वारी॥
तरवालाल प्रबाल लजावै। कोटि बाल रवि शोभा पावै॥
यहिविधिबैठि शंभु सिंहासन। चहुंदिशिउत्सवकरतप्रकाशन॥
ताही समय हिमंचल दासा। लगनसहितपहुंचे गिरिपासा॥
उत्सवशाजन सहित द्विजेशा। हरषसहितगिरि चढ़योकपेशा॥
प्रथमद्वारकहिहिमगिरिनामा। द्वारपालकहि कीन प्रणामा॥
तेहि रजाय लै भीतर पैसे। दुसरे द्वार कीन पुनि तैसे॥
यहिविधि कच्छा सात नघाई। शंभ पास पहुंचे तब जाई॥
दो० भे सनाथ शिवनाथ लखि कीन्होनति करजोरि।

द्विज हर्षित यहिमिसु भयो तस्करलहे अखोरि ॥
सो० गिरछोभूमि जिमिदंडकहि द्विजजय आरतहरण।
मेटेहु पीर प्रचण्ड राखेहु मम पति जक्तमें ॥
पाती दीन विष्णु के हाथा। बहु मुसुकात पढ़त हरि नाथा ॥
मोरेहु कहे न भा भ्रम दूरी। अबहीं गिरि रोइहै भरि पूरी ॥
सामा सब रचि दीन सुरेशा। विसुकर्महि बुलवाय अशेषा ॥
कह्योरचौ गिरिजनहितबासा। जिमिनलह्योइनकबहुसुपासा ॥
प्रतिजन सुन्दर भवन रचाई। प्रीतिसहित गिरिजननटिकाई ॥
कनक मयीसब भूमि अटारी। मणि मीना मय मेलि सँवारी ॥
पाटमयी छत भूमि बिछौना। बन्यो जड़ाऊ कहत बनैना ॥
कनकमयीतहँ पलंग बिछाई। अहिगज मुक्ता जटित बनाई ॥
क्षीर फेनुसम बनी सुपेती। मंजुलविमल लखतसुखदेती ॥
तापर तकिया धरीं सोहाई। जर मणि मुक्ताखिचितबनाई ॥
लगे विजन त्रयपवन पसारा। मणिदीपकतहँ अतिउजियारा ॥
चौकी कनक मयी तहँ सोहै। झारी सजल देखि मन मोहै ॥
पानदान महँ पान भरा है। सहित मसालन चारि घरा है ॥
षटरस युत पकवान धरा है। विस्तर भयनहिं मानधरा है ॥
सोहै कल्पवृक्ष प्रति द्वारे। कामधेनु प्रतिघर सुख भारे ॥
सेवक दुइदुइ प्रति घर माहीं। कारज बस्तु लिहे कर माहीं ॥
दो० यहिविधि गिरिजन बासले करतचिंत मन माहिं।
जस संपति यकवास घर तससबनगपुर नाहिं ॥
सो० रहे सहर्ष अथाह तीन दिवस गिरिजन तहां।
नित नित अधिक उछाह दीख शम्भु दरबार में ॥
बिदाहेत तब द्विज शिरनाई। दान मानयुत भई बिदाई ॥
चले सकल शिवकहँ शिरनाई। अति हर्षित नहिं पंथसिराई ॥
हरिसों बोलि कह्यो त्रिपुरारी। करो बिदा सब देव मुरारी ॥
गिरि दम्पतिके अतिमद भारी। वेदकहत मोहिं गर्ब अहारी ॥
गिरि मद प्रथम करब हमदूरी। तब तेहिदेब हर्ष भरि पूरी ॥
जस मदसहितलिखाउनपाती। तसरोवहिशिरधुनिधुनिछाती ॥

जब मदृश्यागि शरण ममआई । तब हम तुमको लेब बुलाई ॥
तब तुमसुरन सहित तहँआई । किह्यो बरात सबहि हर्षाई ॥
तब हरि बिदा भये शिरनाई । सकल देवगे बिदा कराई ॥
जिमि बाजीगर डंक सकेला । रहिगा आपुहि आपु अकेला ॥
द्विजकेसाथ सकल गिरिदासा । पहुंचे जाय हिमंचल पासा ॥
कहि जय जीव नवायो माथा । कहनलग्यो शंकर गुण गाथा ॥
जस बरनाथ रूप गुण खानी । नहिं दूसरि तसउपमाआनी ॥
बयकिशोर सब भांति अनूपा । गौर वरण महराज स्वरूपा ॥
सोपुरभवन बरणि किमि गाऊं । इन्द्रभवनतस नहिंलखिपाऊं ॥
हमैं मिल्यो जस बासकखानी । नहिंतस आपकेरि रजधानी ॥

दो० जिन जिन सुरन बरातको पाती तुमलिखिदीन ।
तिन तिनको सेवाकरत तहँपर हम लखिलीन ॥
सो० पाती हरिकर दीन बहुत हँसे हरि बांचि तिहि ।
नापित अतिमतिहीन ऐस उपद्रव कीन ज्यहि ॥

हरिविधि इन्द्रकरहिंज्यहिसेवा । कहै कौन मूरख परभेवा ॥
जोधन तहँवां मिल्यो बिदाई । सोलखिधनपतिरहहिलजाई ॥
सुनिसुनिनिज दासनकी बानी । गिरि हरषे हरषी बहु रानी ॥
मैना हरष न जात बताई । करैं चार सब इत उत धाई ॥
गुणिन बोलि गिरिपुर रचवावा । गंधादिक से गली सिँचावा ॥
बहुविधि सकल बजार बनाई । तोरण केतु पताक लगाई ॥
नई कृत्य सब पुर महँ कीन्हा । सब पुरानिबाहेर करिदीन्हा ॥
प्रतिघर कलश लगाय नवीने । झाड़ैं मुकुर लाय सब दीन्हे ॥
छतैं सकल लाये जरतारी । होतजहां रविसम उजियारी ॥
न्यौते सकल भाय गिरिराजा । आयो मन्दर सहित समाजा ॥
अरु सुमेरु विन्ध्याचल आयो । अस्तोदय गिरियुत दलआयो ॥
चित्रकूट मणिकूट सुवेला । अरु त्रिकूट आयो युत मेला ॥
धरि धरि देवरूप सब आये । विस्तरभय नहिं सकलगनाये ॥
सागर सकल रूप धरि आयो । आय नदी सब शोभा छायो ॥
विपिन सकल आयो धरिरूपा । बदरी कजरी आदि अनूपा ॥

सबको बास दीन गिरिराऊ । कारज सकल करत चितचाऊ ॥

दो० संचय कीन्ह्यो अन्न सब करी राशि गिरिमान ।
पूपादिक पकवान सब रचवायो हिमवान ॥

सो० व्यंजन सब रचवाय षटरस भोजन राशिको ।
दीन्ह्यो राशि लगाय बनै बनै मिष्ठान सब ॥

भोजन जहँ लगि लोक बतावा । सो गिरीश बहुभांति रचावा ॥
बनवायो गिरि सकल मिठाई । बिस्तरभयनहिं नामगिनाई ॥
यहि मिस गिरिपकवान बनाई । बहुसंचय कचवान कराई ॥
चूरनादि गोधूम सुहावा । तंदुलादि की राशि लगावा ॥
उरद मूंग बेसन बहु भांती । संचय कीन अन्नबहु जाती ॥
घृत कुप्पा कोटिन भर वावा । तेल कुप्प नहिं जात बतावा ॥
दधि अरु दूध धरे बहु कूपा । स्वाद जासु बहु भांतिअनूपा ॥
पानी मिष्ठ कूप मँगवाई । वासित करि भरि कुंडरखाई ॥
यहिबिधि संचयकरिगिरिनाथा । निज मन कह्यो गर्बके साथा ॥
जसमैं जोरयों बस्तु अनेका । पर समरथ नहिं यह खैबेका ॥
कितनो होय बरात अथोरा । तेहिते चुकै अन्न नहिं मोरा ॥
यहिबिधिकरिसंचयसबसामा । परखन लग्योलगन सुखधामा ॥
वहां शंभु गिरिमद सबजानी । गिरि मद हरौं बुद्धिअसठानी ॥
एक दिवस रह लगन महेशा । सुमिरयो कबिसनकाहिमहेशा ॥
पहुंचितुरत तेहि माथनवाई । जयजयकहिमुनि अस्तुतिगाई ॥
कौन हेत मुहिं सुमिरेहुस्वामी । शासन देहुजानि अनु गामी ॥

दो० करहि बिघ्नकिहि काजकोजारिदेहि किहिकाहि ।
को असहै संसारमें भजन करत तव नाहिं ॥

सो० तब शिव कह मुसकाय काल्हि लग्नहैव्याहकी ।
चलो चलो तहँ धाय शिवा ब्याहिसब दुखहरौं ॥

सुनि हरषित भे कबिरबि ताता । भये तयारसहित हरषाता ॥
आपनहु भे तयार वृष गामी । वृषहितयारकीनशिवस्वामी॥
प्रथम रूप जोइ नापित देखा । धरयोमहाप्रभुतसोइबेषा ॥
महा वृद्ध जर्जर तन भूता । लसत मनहु योगी अवधूता ॥

केश श्वेत नहिं रूप स्वहावा । खिन्नकबौंजनु अन्न न खावा ॥
बैसिन वृद्ध बैल अति डागर । जीवन बस्त्र केर तहँ पाखर ॥
भांग धतूर लादि तेहि ऊपर । थैली जीर्ण गिरै बहु भूपर ॥
अलख अलखकहि चलेपुरारी । चलेहुकबिहुशनिशिशुतनधारी ॥
पहुंच्यो जाय हिमंचल बागा । बैठ्यो डासि चर्म्म बर नागा ॥
हिमिजन रहे बरात निहारत । अरुनिजओरसमाजसम्हारत ॥
बीत्यो जब वासर त्रय जामा । आयोन कछु बरात क सामा ॥
तबअतिबिकलगिरीश्वरभयऊ । खबरि हेत बहु लोगपठयऊ ॥
मैना कादिक पुत्र सुहाये । खबरि हेत चढ़ि अश्वन धाये ॥
फिर्यो घूमिके कोश हजारन । कतहुंनखबरिलह्योगिरिवारन॥
उमा सखीधरिचंचल गतिही । जोइ पियारि उमाके अतिही ॥
मिलिदशपांच कह्योअस बाता । चलो लखी पुर बाहर ब्राता ॥

दो० निकरि गई तेहि बागमें जहँ शंकर आसीन ।
लखि तपसी करि दंडवतबोली गिरा रसीन ॥
सो० हे वर तपसी तात किहि मग आयो तुम यहां ।
देख्यो कतहुं बरात आवत पुर कैलास से ॥

आज सखी मम राज दुलारी । तेहिउदवाह लगनसुखकारी ॥
नहिं आयो वर नाहिं बराता । तेहितेहै सबपुर विकलाता ॥
जो तुम दीख होय मगमाहीं । तौ बतलाय देहु हम काहीं ॥
तुम्हरे चेलन भात खवाउब । बुस दाना बरु बैल दिवाउब ॥
बोल्यो शंभु बहुत मुस काता । हमहीं हैं वर यहै बराता ॥
जायकहो तुम गिरिवर पाहीं । टिकी बरात बगैचा माहीं ॥
लै अगवानी करो बिवाहा । करो खेदनहिं कछु गिरिनाहा ॥
सुनत सखी कीन्ह्यो रिसभारी । दुष्ट न बोलसि बात सम्हारी ॥
अतिशयशिशुमम राजदुलारी । तिहि तुम मूढ़ देत है गारी ॥
कह्यो शंभु नहिं मानहु गारी । समुझहु सत्य सुबात हमारी ॥
हमरेनगिर द्विज तिलकचढ़ाई । चीन्हत मोहिं हवै भलनाई ॥
यहसुनिसखिनबहुत रिसवाई । धरिधरि टांग भूमि घिसलाई ॥
एकहि दौरि बैलको मारैं । शिशुनपकरि तिनकोझझकारैं ॥

कविसनि ताड़ित भयेश्रतीवा । बैलहु कर टूटेहु अतिग्रीवा ॥
फिरीं सखी दै दै बहुगारी । कवि सनिगे जहँ बैठि पुरारी ॥
रोवन लगे बहुत चिल्लाई । वृषहु आय बहु रोय सुनाई ॥
दो० धरयो न नेकहु धीर तिन बहुधीरज शिव दीन ।
चहत दिखावा कर सखिन जान्यो शंभुमतीन ॥
सो० शिव इच्छा प्रकटानि बर्रैं लाली पियरि बहु ।
सखिन अंग लपटानि अंग अंग काटन लगीं ॥
शिर अरु श्रवणन और ललाटा । ग्रीवा नयन बदनमहँ काटा ॥
भुजकर उदररु अस्थन माहीं । पृष्ठ उरू पद धरिधरि खाहीं ॥
अंग अंग जस काटत सोई । कूदि कूदि सखि भागतरोई ॥
जबबहुबिकलसखिनकहँजाना । फेरयो बर्रैं शंभु सुजाना ॥
सखी भागि गिरिजा घरआईं । भूत सदृश भे अंग सुवाई ॥
बोलिनआवत अतिहिविहाला । हँस्योतिन्हैंलखिगिरिवरबाला ॥
परसखि बहुत ठठोली लावा । अद्भुत रूप कहां तुम पावा ॥
विकलदेखिगिरिजानिजदासिन । अमीदृष्टिचितयो अविनाशिन ॥
पुरवत भईं गई सब पीरा । मिटयोवरणभे सुचितशरीरा ॥
तबपूंछयो गिरिजा करि धीरा । मिल्योकहां तुमको असपीरा ॥
तब कर जोरि माथ महिनाई । बोलत भईं सखी मुसुकाई ॥
तपसी एक बागमहँ आवा । सो अतिवृद्ध न जात बतावा ॥
पराचीन बहु खिन्न शरीरा । धूलित भस्म लपेटे कीरा ॥
दिशा बस्त्र नहिं बस्त्र पुराना । दुइ शिशु साथ बूढ़वृषजाना ॥
लादे वृषपर बहु बिष झोरी । माया जानत हवै अथोरी ॥
दो० दैव विवश तहँ जाय हम तिहिसों पूछा जाय ।
देख्यो होय बरात कहुं हमसों देहु बताय ॥
सो० तबसोकह मुसु काय हम वर यहै बरात है ।
गिर बर सों कहुजायलै अगवानी जायमम ॥
अस सुनि क्रोध कीनहमभारी । बहुत भांति तेहिको धिक्कारी ॥
अब न कह्यो असबात भुलाई । नाहिं तो लेहौं जीभ कढ़ाई ॥
नहिंमान्योपुनिपुनि सोइभाषा । तनक अदबनहिंतुम्हरोराखा ॥

तब हम टांगखींचि घिसियाई। बहुत कलेश दीन जगमाई ॥
अरु दुहुँ शिशुन बहुतहमभारा। वृषहिकीनताड़ित अधिकारा ॥
निजकलेश नहिंसो मनआनी। तनक कोप नहिं कीनभवानी ॥
जब वृषशिशु रोये परिचरना। तबकीन्ह्यो अतिकोपअपरना ॥
सुनुमुनीश शिवकर असवानै। निजसों चूक न उर में आनै ॥
सेवक पीर सहत नहिं नेका। देत सजाय शंभु धरि टेका ॥
शिवहिसतायसकतनहिंपीरा। दास पीर से होत अधीरा ॥
जबलगहनतनदास कसाला। तबलग दुखितरहतशशिभाला ॥
अस प्रभु छांड़िभजैपरकाहीं। लखो ताहि खरतन नर माहीं ॥
इमिहिकहतभेमगनविधाता। अश्रु बहे गदगद भइ गाता ॥
क्षणकधीरधरिशिवशिवभाषा। देखि अधिक नारद अभिलाषा ॥
लाग्यो कहन शंभु गुणगाथा। कहत रमासन सोइ हरिनाथा ॥
दो० कोप करी तपसी तबै बरै दीन उड़ाय।
सकलअंगकाटनलगीं सो गतिबंरणिनजाय ॥
सो० गिरिजै इमिहि सुनाय कहत सखी थर थर हिये।
भूषण बसन गिराय हाय करत पीटत शिरहि ॥
सखिनवृत्ति व्याप्यो सबनगरी। गिरिवरसुन्योतासुवृतसगरी ॥
थरथर कांपि उठ्यो गिरिराजा। शोचनलाग्यो सकलसमाजा ॥
नापित कहा सो आवा आगे। द्विजवर कह्यो झूठकेहिलागे ॥
द्विजवर बसत सदा मम संगा। कबहुनकिह्यो तासु मनभंगा ॥
किहिकारण मोसों छलकीन्हा। जो मुहिंआजु शत्रुफलदीन्हा ॥
पुनि तिहिदेउँ कौनबिधिखोरी। सब अनुचरनकीनमतिभोरी ॥
जिनको करत बहुत बिश्वासू। लगन संग पठयो बरपासू ॥
सो सब आयकह्या जसबानो। सो सगरी बिपरीति दिखानो ॥
तजिनिजभागिदोषकिहिलाऊं। भा अनुकूल ईश कहँ जाऊं ॥
मैनहुबहिबिधि दुखमहँजरई। उर ताड़ना बहुत बिधि करई ॥
सुतालाय गिरिगिरिते गिरऊं। जीवत व्याह न यहिसँगकरऊं ॥
कहँ यह तुरिया वैधूत धोरी। कहँ मम तनया नवलकिशोरी ॥
सोन सदृश ममसुताअनूपा। कहँ यह जटिल फटिकके रूपा ॥

कहँनरधीश मालमृगछाला । कहँ पट पाट कनक मणिमाला ॥
अंगराग मम सुता लगावै । चिता भस्म देखत भय पावै ॥
सुतासुभगबर कुअरलखाता । नरकी होय तुरत पितु माता ॥
दो० यहि विधि असमंजस बढ़ो सो गति कही न जाय ।
नपितहि बहु आनँद बढ़ो द्विजवर बहुखिसियाय ॥
सो० द्विज मन दुखी बिचारि बहुत दुखी जग मातु भै ।
शिव सों प्रेम सम्हारि मनहीं मन बिनवत भई ॥

छन्द

अरु गिरिजा निजपानि पातीलिखत बिनती साज हे ।
जय जयति स्वस्तिश्रीय मन् महराज राज धिराज हे ॥
शिव शंभु शंकर ईश जगपति त्रिसुरवर शिरताज हे ।
सुनि विनय ममलखि मोहिं दासीबनौ सममहराज हे ॥
नहिं आदि है नहिं अंत तुम्हरो बाल वृद्ध न ज्वान हौ ।
जब चहत तब तसबनततुम बिनुतंत्र निजअनुमानहौ ॥
अब त्यागि यह अवधूत बाना वृद्ध दीन अमान हौ ।
बनिलसहु सुंदर काम तन शिशु सदल है गय जानहौ ॥
दो० परब्रह्म भगवान शिव तुम्हैं कमी है काह ।
जाते किंचिन रूपधरि आयो करन बिवाह ॥
सो० हरि यादिक जगदीश इंद्रादिक जगपति सकल ।
जिहिसेवतनयधीश सो किमिभिखियारीबन्यो ॥
जो ममपितु करिके अभिमाना । नापित कहे तुम्हैं लघु जाना ॥
निजहिमानि बड़ भेज्यो पाती । आवहिंजिमि महराजबराती ॥
सो सब चूक क्षमापन कीजे । जानि सुआपन आपन कीजे ॥
बहु संताप सहत द्विजताता । मुहिंधिककहतजननिपितुभ्राता ॥
सुता नहीं यह हवै तमासा । यहिबिधिकरत मोर उपहासा ॥
लखतभागि ममसबपरधोरी । अरुमुहिंकहत सकलकुलबोरी ॥
चारिउ वेद करत इमिगाना । जन प्रण राखब है तव बाना ॥
जो मैं सत्य सेवकिन तोरी । तौ पति राखु सदाशिव मोरी ॥
मनबचक्रमजो दृढ़मतिमेरी । तव तजि होय न गति परकेरी ॥

तब ममलाजलाज द्विजवारा। राखु राखु पति राखन हारा॥
अलकहि विजयासखीबुलाई। तिहि दीन्ह्यो बहुमान बड़ाई॥
लै पाती तपसी पहँ जाहू। जाहु अभय पर लखै न काहू॥
करि दंडवत दिह्यो यह पाती। विनयकिह्योचितचेतिसोहाती॥
जो कछु सकरुण देवै उत्तर। सोसुनि ममढिग आयोहरबर॥
दो० लै पाती विजया चली सुख महँ मगन अचेत।
उपज्यो ब्रह्मज्ञान तिहि शिव सन्मुख चितदेत॥
सो० अहो भाग्य मम आज शिवपद लखब प्रत्यक्षही।
ज्यहि देखन के काज बहुतयतन हरिविधिकरत॥
जोपदधरत शिवानिजमनमा। जिहिपदलागिरसतमुनिबनमा॥
सोपदहमनिरखबभरिनयना। मम सम भाग्यवती कोउहैना॥
जो पद सेय धात जगकारी। जिहि सेये जगपाल मुरारी॥
सिद्धिद भे गणपति जिहिध्याई। तपत सूर्य्यजिहि सेयअमाई॥
होत निरख जिहि सेवतलाखी। अहो भाग्य सोदेखब आखी॥
यहि विधिमगनहोत मगबीचा। पहुंचो विजयागिरिशबगीचा॥
जहँ आसीन रह्यो अविनाशी। पहुंचि तहांगै गिरिजा दासी॥
लखि शिव पद भै पूरण कामा। कीन प्रणामभाखि निजनामा॥
दै पाती दूनो कर जोरी। ठाढ़ि भई करि प्रीति अथोरी॥
पढ़ि पातीलखि गिरिजाप्रीती। तिहिउत्तरलिखि कीनअभीती॥
सो विजया कर दीन महेशा। विदाकीनसब काटि कलेशा॥
आय शिवा कर दीन्ह्यो सोई। बांचिशिवातिहिप्रमुदितहोई॥
लिखा रहै युत नेह घनेरा। सकल मनोरथ पूरब तेरा॥
बहुत मगन भै शैल कुमारी। जानि कृपा करिहैं त्रिपुरारी॥
दो० अबसुनमैना गिरिचरित भयोजयसजिहिकाल।
सूझतनहिं कछुयुक्तिपर क्षणक्षण होत विहाल॥
सो० अस लखि विंध्य सुमेरु मंदरादि जे बुद्धिवर।
तेकरि सुमति घनेर आये मैना गिरिश ढिग॥
सुर गिरिकह्यो ससम्मत बाता। मैना सहित सुनो गिरि ताता॥
रोय रोय नहिं होय निवाहा। करोकाजकछु सहित सलाहा॥

प्रथम जबैसब सुर ढिग ताता । बर खोजन पठयो हुलसाता ॥
तब सब सुरतव कन्या काहीं । मानिमातु जग मान्यो नाहीं ॥
विधिहु विष्णुजिहिमातुपुकारा । अपर कथा तहँ कौन पसारा ॥
पुनि द्विज मुख बैकुंठ निवासी । तुम्हरे ढिग संदेश प्रकाशी ॥
जाहि शिवा बर देय बताई । ताहि बरो संदेह मिटाई ॥
लखोताहि सबजग करस्वामी । हमहूं तिहिपद करत नमामी ॥
तब द्विज बर लै सुता रजाई । करी जाय तिहि साथ सगाई ॥
जिहि सेवत श्रीपति बनवारी । ताहि कहत कम होय गवारी ॥
मम मतिसे सोहैसब लायक । लीला करतअबहिंगिरिनायक ॥
पुनि परिणाम सहित हरषाई । अस हमरे उरमांझ समाई ॥
तिहि बूझब हैज्ञान बिसारी । जानिबूझि नहिं बनौअनारी ॥
एकसँग अरु नापित द्विज भूपा । गयौ लखो कसपरपर रूपा ॥
परम अकिंचिनि नापित देखा । महाराज समद्विज वर पेखा ॥
निजनिजभावसरिस फलपावा । सोसबआंखिन दीखसोहावा ॥

दो० लगन साथपुनि जेगये तेसब देख्यो जाय ।
शेष सुरेश रमेश विधि सेवत प्रीति लगाय ॥

सो० अबबनि आयो बूढ़बहु कुरूप अरु दीनबर ।
है स्वतंत्र आरूढ़ रुचै जोई सोइ सो करत ॥

पुनिजसकीन्ह्योसखिन विहाला । सोसबदेख्यो नयनहिमाला ॥
अब तजि खेद सुनो मतएकू । गिरिजा सनपूंछो कछटेकू ॥
और सुनो एक बात हमारी । सकलबुद्धिबल लेहुविचारी ॥
कन्या सदा मातु पितु के वश । तासु लाजबश होयचहैजस ॥
पर तिय कैस्यो होय कुबेसा । निजमुखचहतनकवरनगेशा ॥
गिरिजा तो गुण रूप निधाना । तिहिउपमानहिंवेद बखाना ॥
सोनिजमुख किमिकुपतिबतैहै । द्वैहर्षित किमिद्विजहि पठैहै ॥
यहि में है कछु कारण आना । लीला करतजानि अभिमाना ॥
गिरिजा कहा किहे हैबरु भल । और बात जानौसबनिरफल ॥
अससलाह सुनिगिरिवर मैना । गिरिजहिबोलिकह्योशुभबैना ॥
हेमम प्राण प्रिया शर्वानी । सकलशोच हरसबसुखदानी ॥

सदा मातु पितु की तुम भक्ता। किहिकारण अबकरत अभक्ता॥
सबसुर तुम्हैं कह्यो निजमाता। कह्योमात निजहरिहुविधाता॥
तिहिते हमैं जानि शरणाई। सत्य सत्य सब देहु बताई॥
क्यहिबरहितबनमैंतपसाध्यो। क्यहिद्विजसोंनिजमुखआराध्यो॥
कौन रूप द्विज आय बतावा। कौन वेश अब परत लखावा॥
दो० कहोसकल विस्तारे युतकरहु न नेकहु लाज।
समयहोन में बदतबुध लाजसे होतअकाज॥
सो० आयो सकल महान उत्सव को दुखमहँ परे।
तिहितेकहुतिमिज्ञानजिनिदुखकटिउत्सवठनै॥
अस कहि सब जनगयो चुपाई। गिरिजहुसुनिबहुगई लजाई॥
अधो चितै महि खोदन लागी। सुमरयो शंकर चरण अदागी॥
सबहि सुनाय कह्यो तब बैना। माता ओर अधो करि नैना॥
जोतपसो ठहरयो आरामा। सो सर्वज्ञ सकल गुण धामा॥
लखिअभिमान होत नहिंराजी। शरणगये सबभांति निवाजी॥
सर्वोपरि सब कला विभासी। सदाहार तिहिको श्रुतिभासी॥
जोपाती भेज्यो मदमाती। तिहिते असबर बन्योबराती॥
ज्यहि तुम लखो सर्व बरपाता। आवैं विष्णु विरंचि बराता॥
तेविधि हरि सेवत शिवहेरी। जे लै गये लगन तव प्रेरी॥
औरहु सुरन दीख पद सेवत। उत्सवसहित जन्मफललेवत॥
बरहु देखि महराज समाना। आय तात ढिगकीन बखाना॥
सोअब बन्यो बूढ़ करभिक्षा। तुम्हरे मदकी लेत परिक्षा॥
तिहितेमदतजितिहि ढिग जाहू। लेहु सोई जोमन अवगाहू॥
अस कहिरहि जगमातुचुपाई। सकल गिरीशन केमन भाई॥
तबसबमिलिअसकीनबिचारा। चलो चली तहँ सबएकबारा॥
मदतजिआहि आहिसबबोलो। करिविनतीतिहि मनगतिखोलो॥
दो० असकहिमंदरविंदुअरुसुरगिरिहिमगिरितात।
चलेसकल आरामको जहँ तपसी विलसात॥
सो० आगे करि हिमवान शिवपहँ गे करि दंडवत।
हमहैं बहुतअयान असकहियितभे जोरिकर॥

तिहि अवसर बहुलीला धारी । हराचह्यो तिनमद मदनारी ॥
कविशनिजोदोउशिशुसुखशीला । जानिशंभु मनकीन्ह्योलीला ॥
खेलब छांडि शंभु ढिग आये । भूंखभूंख कहि रोय सुनाये ॥
तबशिव कह्योयहांसे डोलो । मुहिं विषचढ़ो जात नहिं बोलो ॥
खेल्यो नेर न जायो दूरो । कछुक बेरमें पैहौ पूरो ॥
जब गिरि द्वारचार ह्वै जाई । तुरत कलेवा गिरिश पठाई ॥
पुनिपुनिकविशनिरोयसुनाई । भूंख लागि बहुरह्यो नजाई ॥
जबलगि हमें देहु कछु देवा । जबलगि भेजै गिरिश कलेवा ॥
देर करत अगवानो माहीं । जानिपरत गिरिघर कछुनाहीं ॥
अससुनिगिरिजनकहगिरिपाहीं । शिशुन खवायदीनकछुचाही ॥
तब गिरि शिवसों कहकरजोरी । बिनतो एक सुनहु प्रभुमोरी ॥
आयसु दीजे शिशुन खवाऊं । निज सेवकसँग स्वघरपठाऊं ॥
तब तपसी कह भले नगेशा । शिशुन खवाउब है फलवेशा ॥
ये शिशुहैं मम प्राण समाना । तजिपितुमातुसाथममठाना ॥
तबशनि कविकह युत चतुराई । गये दास सँगकवनि भलाई ॥
भूंख सहब नहिं पर घरजावै । बिन स्वामीनहिं पेटअघावै ॥

दो० तब शिवकहा गिरीश सन जाहुशिशुन सँगतात ।
इन्हैं खवावो आय पुनि कहौ स्वमन की बात ॥

सो० तब गिरीश हरषाय आयो घर दोउ साथ लै ।
बेदी निज छिपवाय बैठायो आदर सहित ॥

पीढ़ा कनक रतन मणि यारे । तेहिपर बैठ्यो कबिरबिवारे ॥
परसन लाग्यो चतुर सुआरे । षटरस परस्यो चतुर बिधारे ॥
दालि भात रोटी घृत बोरी । बरा फरा अरु सेव फुलोरी ॥
अँबवा भटवा पान रसाजा । बचकाधोंघिलासदधिबिराजा ॥
खरका बरी तरी मसरंगी । चर फर नमकी रंग बिरंगी ॥
रिंकवछ और बरी व मगौरी । कमीकहाजहँ निजथितगौरी ॥
क्षीर खीर मेवा बहु डारी । करिकपूर बासितसुखकारी ॥
कोमल पूरी पूप पिकोरी । सुभग पिराक पराठकचोरी ॥
तहां बहुत परसी तरकारी । कछुक नामतेहिकरों शुमारी ॥

रम्भा पनस परोरा लाऊ । सूरन कुम्हड़ा शाक बिँवाऊ ॥
तेहि पाछे बहु दई मिठाई । अतिबरमिष्ठ मधुरबिमलाई ॥
पेड़ा लड्डू सेव बतासा । मिसिरी कन्द अनर्सस बासा ॥
बरफी अपर अमिरती गाई । अरु बताश फेनी सुख दाई ॥
गट्टा चँदिया आदि मिठाई । बिस्तरभय सब नाम न गाई ॥
यहि बिधिबहुव्यंजन परसावा । एक कौरमें कबिशनि खावा ॥
पुनि बहु परस्यो चतुर सुआरा । एककौरमें पुनि चखि डारा ॥

दो० परसत देखत सकल जन खातनतिन्हैं लखात ।
तब गिरिसों स्वरतारकरि बोल्यो कबिरवितात ॥

सो० सुनौ तात हिमवान तव सेवक अति दुष्ट हैं ।
परसतकरि बहुमान देतन भोजन बिधिभले ॥

अससुनि हिमगिरिबहुतरिसाई । गयो आप जहँ रहै रसोई ॥
परसायो भोजन बहु न्यारे । एक कौरमहँ तिनचखिडारे ॥
भोजन घर भोजन नहिं रहेहू ।तबगिरिपतिसोंकबिशनिकहेहू ॥
जौ अस करतब रहै तुम्हारे । तौ कत भोजन देन सिधारे ॥
तब गिरिश मैना कहँ कारी । कह्यो पुत्र मम आज्ञा कारी ॥
जो पकवान महा गिरि ढेरी । इन्हैं देखाय देहु अनबेरी ॥
खांय पेट भरि कहगिरि नाथा । तब मैनाक गयो लै साथा ॥
अन्न महा गिरि दीन देखाई । एक कौरमहँ कबिशनि खाई ॥
तब कबिशनि बोल्योपरबोली । देतन भोजन करत ठठोली ॥
हवैं बहुत गिरिलोग खराबा । भले बरात न लायो बाबा ॥
दुइ शिशुआयनगिरिश बराता । भोजन मिलत न पेटअघाता ॥
जो औते सुर मुनि बहु जाती । तौ केवल गिरिकी पति जाती ॥
पुनि बोल्यो कबिशनि बहुरोई । भूखलागि नहिंजात रहोई ॥
पक्व अपक्व मोट कृश नाजा । जौ कछु होय देहु महराजा ॥
तब गिरिजो सीधादिक काजा । जोरयो रहै सुअन्न समाजा ॥
कबिहिशनिहिसबदीनदिखाई । देखत सकललीन तिनखाई ॥
अरु जल कुंड सकल पीडारी । पुनिपुनि मांग्योभोजनवारी ॥
अरु असकहि गुरुपाससिधाई । भूंखे जाइत कौनि भलाई ॥

दो० शिवढिग पहुंचि प्रणाम करि रोवन लगे पुकारि ।
झूंठहि कहि गिरिलैगये दियो न भोजन बारि ॥
सो० तब शंकर हँसिदीन भे प्रसन्न तेहि चरित लखि ।
भूख सकल हरि लीन करि करुणा उर लायहू ॥
तबगिरि को छूट्यो अभिमाना । सर्वोपरि तपसी कहँ जाना ॥
लै सँग सुतन और सब भाई । परे सकल तपसी पद जाई ॥
त्राहि त्राहि कहि पाहि पुकारी । करो कृपा तुमहौ मद हारी ॥
हौं जड़ तोर प्रभाव न जाना । पातीलिख्योंसहितअभिमाना ॥
कीनकानिनहिंबिष्णु सिखावा । सो फल भली भांति मैं पावा ॥
तुम सर्वोपरि हौ सर्वेशा । जेहि ध्यावत युतरमा रमेशा ॥
भे मुहिसे प्रभु बहुत गवारी । क्षमा करो सब चूक हमारी ॥
करि शासन पुनिकरै क्षमापन । वेद कहत सोइ हवै बड़ापन ॥
अब तजिके यह खिन्नस्वरूपा । पूरहु साध मोर सुर भूपा ॥
जस मोरेमन होय उछाहा । भूप रूप धरि करो बिवाहा ॥
अस सुनिबिनय हिमाचलकेरी । भयो प्रसन्न शंभु सुख ढेरी ॥
तथा अस्तु बोल्यो सुख रासी । बरषत फूल भये नभवासी ॥
हिमि गिरिसों बोल्योपुनिशंभू । अबसुखसजोत्यागिसबदम्भू ॥
आवहु साज सहित अगवानो । तब बरात देखो मन मानो ॥
यहिमिसिबिदाकीन गिरकाहीं । गिरसुखकहतबनतकछुनाहीं ॥
कुटुम सहित बूड़त कधिनावा । बचेहोतसुख तिमिगिरपावा ॥
दो० छूटि राज अरि हांथते जिमिसुख मिलै बहोरि ।
तेहिते दश गुण गिरि समन बाढ्यो हर्ष अथोरि ॥
सो० शंकर मनहि बिचारि डमरू दीन बजाय तब ।
सुनत सुरा सुर झारि चले हरषि शंकर जपत ॥
सकल जानि शिव केरबिवाहा । सजिबजिचलेसहितउत्साहा ॥
गरुड़ चढ़े हर्षित बनवारी । बहुत सजे पट भूषण धारी ॥
भूषण सकल नबीन बनाये । अहत बसन सुमहोनसोहाये ॥
पट जरकसीजड़ी मणिमोती । जेहिद्युतिसहसभानुद्युतिखोती ॥
माथे मुकुट नवीन स्वहावा । कनकजटितमणिरबिसमभावा ॥

कानन कुंडल जर मनि यारे । तेहि पर परी छट घुघुवारे ॥
इमि सब अंग अंग बहु भूषण । बरणिन जात अनूप अदूषण ॥
माथे शुभग त्रिपुंड सवारे । उपमा जासु खोजि कबिहारे ॥
इमि सरबांग सुशोभा धारी । होत छकितमनध्यानसम्हारी ॥
जरमय मणियुतशुभगउपाना । ध्यावतजाहि मिलत निर्बाना ॥
अरु नइ साज खगेश बनाये । आय शंभु पदमें शिर नाये ॥
हाथ जोरि महि माथ नवाई । बिनती करन लगे सुरसाई ॥
जय महेश जय शंभु कृपाला । जै आरत हरजय शशिभाला ॥
ईश अनीश अनादि अनंता । बेद कहत यश नेति भनंता ॥
जय गुणरहितसकल गुणकारी । त्रिगुण परे शिवसून्यबिहारी ॥
निज इच्छित तुमधरतस्वरूपा । हरिविधिबिष्णुसकलदिगभूपा ॥

छन्द

मम रूप धरि तुम त्रिजग पालहु ब्रह्महै जग शिरजहू ।
लय करहु शंकर रूप धारी सर्व पर शिव बरज हू ॥
धरि भानु रूप तमारि हौ तुम शीत करि निश करबनौ ।
ह्वै इंद्र सुर पुर राज भोगो अग्नि ह्वै ज्वाला ठनौ ॥
जम धाम दुइ बनि रूप शंकर सकल जगको निस्तरो ।
अरु निरित पतिको रूप धरि पुनि मानि जन पीड़ाहरो ॥
धरि वरुण रूप महेश शंकर सकल त्रिजग जलेश हौ ।
धरि इमिहि तन जग काज साधत काटिसर्व कलेश हौ ॥
पुनि पवनं रूप स्वरूप नवकधि बनत जगके प्रानहूं ।
तेहि त्यागि परको मूढ़ खोजत मंद बुद्धि अज्ञान हूं ॥

छन्द वनि दर्बेसा करु सुख बेसा वनि ईशाना देनिर्बाना ।
होतधरणिधर वनिकेमन्दर वनिअहिरावा धरणिउठावा ॥
इमिबहुरूपा धरतअनूपा इमितवलीला सुखदरशीला ॥
बेदनजानत नेतिबखानत लहितवदाया मूर्खहुगाया ॥

दो० इमिहम शिव नुति करिरमा परम प्रफुल्लित गात ।
देखन लाग्यो रूप शिव जो नहि बरनि सिरात ॥

सो० देख्यो नयन हमारि तहँ रसना नहिं को कहै ।

रसना कहै पुकारि सोउ नयन बिन सोचही ॥
पर निजमतिसम कहउँ बखानी । होन पवित्र हेत निजवानी ॥
महा राज सम साज बनाये । गोर बरनशुचिकनकलजाये ॥
माथे मुकुट कनक मनियारा । मानहुकोटि भानु द्युतिधारा ॥
कानन कुण्डल जर मणि सोहै । तेहिपरअलकश्याममनमोहै ॥
चन्द्र बदन खोड़श वय धारे । सेत भस्म त्रयपुंड्र लिलारे ॥
तीन नेत्र रवि अग्निशुचि नाना । बन्यो भौंहँजनुशुभगकमाना ॥
गोल कपोल जातनहिं गाई । लेत सोलजनु शंखगोलाई ॥
नासा शुभग सुवा मद हारी । अधर अरुण बिम्बागतिटारी ॥
बीज अनारहि रदकररदहर । हँसी मंद सेवक निज दुखहर ॥
ग्रीवा कम्बु कला द्युतिहारी । वृषभ कंध सोहत भुज चारी ॥
बहु सोहत शिवबाहुअजाना । कनक रतन मय भूषण नाना ॥
मणिकंठागलमध्य बिराजत । ध्यानकरत जनको दुखभाजत ॥
बिषश्यामताम जातबखानी । लहतमहासुखजेहिलखिध्यानी ॥
उदरबिशाल तहांमणिमाला । पीत बसन छबिहर रविबाला ॥
नाभी गहिर महा छबिदाई । हरि कटियुत किंकिणी सुहाई ॥
धोती जरद बर्क छबिखोती । तेहिढिग उभय गुहीमणिमोती ॥

दो० रम्भा खम्भा जानु युग गुल्फ गोल सुख खान ।
ज्यहिकोध्यानी ध्यानकरि लहतपरमनिरबान ॥
सो० चरण अरुण अरविंद जहँ मुनिमन मधुकरनिते ।
पियत सुखद मकरंद भुक्ति मुक्ति जो इच्छहीं ॥

पद जावक पावक छवि हारी । नखा अरुण महा सुखकारी ॥
मणि जर रचित विमानबनाई । तेहिपर शम्भु बैठि हरषाई ॥
यहिविधि लखि अच्युतहरषाई । नतिनुति करतगयो निकटाई ॥
देखि शम्भु अच्युतकर साजा । महा प्रसन्न भयो महराजा ॥
उठि आसन दहिनेपर दीन्हा । धरिकरहृदयलाय शिवलीन्हा ॥
सबगिरीश ब्रतहरिहि सुनावा । सुनिहरि बारबार शिरनावा ॥
जो चाहौ सो करौ पुरारी । त्राहित्राहि तुमहौ मदहारी ॥
जो तुमसे कोउ करै गवारी । सोजनुनिजकर बातबिगारी ॥

बड़ेन केरि है यह प्रभताई । सांतनिकरितुरतहि करुणाई ॥
अतिभलकीन कृपा प्रभुकीन्हा । जन्मलाभ सबकाहुन दीन्हा ॥
रहो लालसा जत सुर मनमा । सो तुम पूरकीन यहिक्षणमा ॥
यहिविधि छकितहोत बनवारी । बार बार शिवरूप निहारी ॥
तेहिअवसर पहुंचे हममुनिवर । हंस चढ़े सुन्दर भूषणधर ॥
संग लिये सब वेद पुराना । धरे रूप सब शैव सुजाना ॥
कश्यपादि मुनि सँग सब मेरे । पहुंचे सकल शम्भुके नेरे ॥
तुम्हैं आदि मुनि लै सँगताता । गये शम्भु ढिगयुत हुलसाता ॥

दो० कीन्ह्योहम नुति नतिबहुत लखि शिवशोभासीव ।
बाम भाग आसन दियो करि शिव कृपा अतीव ॥

सो० पुनि आये सनकादि धूलित भस्म त्रिपुंड्र धर ।
तासु जन्ममुनिवादि जासुभाल बिनभस्मको ॥

कर रुद्राक्ष सुमिरनी लीन्हे । शिवशिव जपत ब्रह्मरसभीने ॥
आय शम्भुपद नायो माथा । ठाढ़े भयो जोरि युग हाथा ॥
देखि शम्भु सनकादिक प्रीती । उठि आसनदीन्ह्यो जगरीती ॥
छकित भये शिवरूप निहारी । जयजय शब्दकह्योमुनिझारी ॥
तब आयो इन्द्रादि दिगेशा । अनल समन नैऋतपतिकेशा ॥
पवन कुबेर दिगप ईशाना । सजे साज पट भूषण नाना ॥
निजनिज बाहन संग बनाई । आय शम्भुपद सब शिरनाई ॥
सबकर आदर कीन पुरारी । आसन उचितदीन मदनारी ॥
लखि शिव रूप छकितह्वै देवा । लागे करन शम्भुकी सेवा ॥
सविता आदि सकल ग्रहआये । आय शम्भुपद माथ नवाये ॥
किन्नर गन्धर्प अप्सर आदी । आये सकल सुमंगल वादी ॥
नाय शंभुपद शिर बहुबारा । नाच गवनई कीन पसारा ॥
नाचत गावत ताल अदम्भू । देखन लगे देव युत शम्भू ॥
शेषादिक आये वर नागा । मानिभाग्य निजयुतअनुरागा ॥
दानव दैत्य निशाचर आये । विस्तरभय सबनाहिं गनाये ॥
भूत पिशाच प्रेत बहु भांती । उत्सव युत आये बहु जाती ॥

दो० आये गण कैलास ते भैरव नंदि मखारि ।

क्षेत्रपाल आदिक सकल जो शंकरहि पियारि ॥
सो० बिस्तरभय सब नाम नाहिं गनायो गणनके।
शिवपदकरतप्रणाम होतछकित शिवरूपलखि ॥
संख्या शंभु गणनकी भारी। को अब करि तेहि बनै अनारी ॥
जाहि गनाय सकैं नहिं वेदा। किमिकहिसकैअपरतेहिभेदा ॥
जब सब यकठे भई बराता। सकल सजाये साज अघाता ॥
देखि शंभु अतिशय मुसकाई। हरिसोंकहतगिरिशजड़ताई ॥
बाजा सकल बराती बाजत। बर्षाकाल मेघजनु गाजत ॥
तासा ढोल झांझ रव भारी। सुननदेत नहिं शब्द परारी ॥
वीण मृदंग पखावज भेरी। सरँगी तवलतितारन फेरी ॥
शंख मँजीर घंट घरियारा। ऊंट अश्व गज उपर नगारा ॥
गज घंटारव अधिक सुहाई। रथ किंकिणी महा रवदाई ॥
यहिविधि शम्भु बरात बखाना। अब सुनियेगिरिकेर समाना ॥
जब गिरि शिवसों बिदा कराई। आयो निजघरसुखमनलाई ॥
देख्यो भवन भरा पकवाना। ठौर ठौर सब भरा समाना ॥
जेतिक कवि शनिलीन्ह्यो खाई। तासुदून सब परत लखाई ॥
भयो मगन गिरिकथि सुखचैना। सकल प्रसंग सुनायो मैना ॥
मैनहु सुनत महा सुख कीन्हा। सर्वोपरि तबशिव कहँ चीन्हा ॥
बहुत दानदै बिप्रन रानी। करतवारमिलिसखीसयानी ॥
दो० तेहिअवसर गिरिचर चतुर गिरिपुरपहुँचे आय।
लागे कहन बरात गति अरु बरको बपुगाय ॥
सो० सुनत गिरिश हर्षाय बजवायो बाजा हरषि।
बिप्रन बहुत बुलाय दीन दान नहिं जातगनि ॥
तब मैनाक बोलि गिरिराई। और सकल सुत लीन बलाई ॥
हरष सहित बोले गिरिबानी। लेहु जाय शंकर अगवानी ॥
सुनि मैनाक साजि बहु साजा। कह्यो बजावो सुखकर बाजा ॥
हयगजस्यन्दन अधिक सँवारी। चले लेन अगवानि पुरारी ॥
अगवानी सुर आवत जाना। भूषण वसन सजे विधिनाना ॥
निज निज बाहन चढ़े बराती। तुरँग नचावत भे बहु भांती ॥

दुहु दिशितुरँगनचावतचातुर। लखिनहिंपरतिकलाअतिआतुर॥
छूटेदुहु दिशिअनलखिलोना। तिहिलखिहोतिप्रलयशुचिमौना॥
मिलत परस्पर गिरिहु सुरेशा। सोसुखनहिंकहिसकतअहेशा॥
तब मैनाक स्वपूरण कामा। जाय विष्णु ढिग कीन प्रणामा॥
शिवहिनिरखि भामगनविशेषी। निजसमान नहिंपरकहुँदेखी॥
तब करजोरि विष्णु सोंभाषा। नाथ कृपा पूरेहु अभिलाषा॥
अबकरि कृपा चलो मम द्वारे। पूरब करो मनोरथ सारे॥
तथा अस्तु तबकहि भगवाना। बिदा कीनतिहि देसुख नाना॥
तिहि करिविदा विष्णु हरषाई। शिवहि प्रणाम कीन शिरनाई॥
नाथ चलो चलिये गिरि द्वारे। द्वार चार होवै सुख सारे॥

दो० तब शिव कह्यो रमेशसों सबही आयसु देहु।
भिन्नभिन्ननिज दलसहितचलत जायसबदेव॥
सो० कौतुकहोयअनेक सकल लखावहिंनिजमहत।
क्रमसों सहित विवेक सकलचलैंगिरिद्वारको॥

लखि शिव मानसहसि सुरराई। भलेहि नाथ कहिशीशनवाई॥
सबसुरबोलिसु आयसु दीन्हा। शिवइच्छाकहि हर्षित कीन्हा॥
निज दल बाहन साजि सवारे। पृथकपृथक चलिये गिरिद्वारे॥
भलेहि नाथ कहिसब सुरराई। निजनिजदलकरिभिन्नबनाई॥
हर्षित चले सकल गिरि द्वारे। सब पाछेशिव स्वदल सवाँरे॥
गह गहाय बाजे सब बाजा। आगे चल्यौ सुकिन्नर राजा॥
अब सुनिये पुनि शंकर माया। मैनहि मोह भयो मुनिराया॥
मैना निज मन कीन विषादा। जिहिनितभाद्विजनापितबादा॥
द्विज मुख सेबहु सुन्यौंबखाना। पुनि नापित तिहिनिंद्यौनाना॥
लगन साथगे जेगिरि दासा। तिनसबआय कह्योसुखभासा॥
पुनि आयो सोइबनि अवधूता। योगी जटिल मलीन अपूता॥
महा वृद्ध बहु खाक लगाये। दुइ शिशुसँग वृषयानबनाये॥
तिहिलखिभैजसव्याकुलनगरी। सोगतिकहतबनतनहिंसगरी॥
अब सब कहत ताहि महराजा। बनत नबर्णतभूरि समाजा॥
यह अचरचनहिं जात बखानी। तिहितेमोहिंअबअसमनमानी॥

प्रथम लखौं बररूप स्वनैना । द्वार चार तब करों सुचैना ॥
दो० लखब सुनैनन ठीकहै परसों सुनबो फीक ।
नारद तुम्हैं बुलायहू असनिज मनदे ठीक ॥
सो० तवपद मेंशिर नाय बैठि धौरहर जालढिग ।
मोहिंशिवदेहु लखाय तुमसों बहुबिनतीकरी ॥
तेहि अवसर किन्नर गंधर्बा । अप्सर गणयुत भूषण सर्बा ॥
आये सकल बजावत बाजा । शिवगुणगावतविमलसमाजा ॥
तिहिपतिनिरखिनिजहिलखिधन्या । तुमसोंकह्योपित्रकीकन्या ॥
हे नारद ये शिव अवि नाशो । कहौसत्यमोहिंलगिनिजदासी ॥
तबतुमकह्योविहँसिमुनिनायक । येशिव नाटक बाजकगायक ॥
सुनि तबबचन बहुत हरषाई । बार बार तव पद शिर नाई ॥
जाके अस बाजक नृत धारी । सो कब देखब नयन पसारी ॥
पुनि आयो शुचि दल बहु भारी । अजवाहन अतिशयद्युतिकारी ॥
ताहि निरखि मैना शिवजानी । नारद सों पूंछी तब बानी ॥
हे नारद येहैं शिव साईं । तब तुम कह्यो मंदमुसकाई ॥
येशुचिशुचिशुचि तनशिवदासा । महा तेजस्वी परम प्रकाशा ॥
अससुनि मुदित भईगिरिरानी । बार बार निजभाग्य बखानी ॥
जेहि दासन करहै अस रूपा । सो बर होइहि रूप अनूपा ॥
तिहि अवसर आयो यम राजा । महिष चढ़े तनतेज बिराजा ॥
तिन्हैं जानिशिव तुमसोंयांची । तबतुम कह्योतासुगति सांची ॥
येहैं यम दक्षिण दिशि पाता । जोन भजेशिवतिहिकर दाता ॥
दो० तब आयो नैऋत दिगपप्रेत चढ़े छबि खानि ।
तिहि लखि तुमसों पूंछेहू मैनाशंकर जानि ॥
सो० तबसुनिकह विहँसातनैऋत पतिशिवदासये ।
शिवहि जपतदिनरात पुण्यमान जनसाथले ॥
पुनि दल वरुण देखिगिरि रानी । वाहनमकर महाछबिखानी ॥
तिन्हैं जानि शिव बहु हर्षानी । मुनिसों कहतभईमृदुबानी ॥
जानि परत मोहिंये शिव साईं । तबमुनिबोल्योबहुमुसकाईं ॥
पश्चिम दिगप बड़ा शिव दासा । वरुण नामबहुतेज प्रकाशा ॥

तिहि अवसर आयो जग प्राना। बाहन हरिणसुश्वेत बाना॥
भूषण बसन नवीन बनाये। महा तेजस्वी छबिअधिकाये॥
तिहिलखिजानिशिवापतिमैना। ह्वै हर्षित मुनि सों कहबैना॥
ये गिरिजा पति परत लखाई। बोल्योनारद अति मुसुकाई॥
शम्भु दास यह नाम समीरा। शिव निंदकन देत बहु पीरा॥
तब कुबेर आयो छबिखानी। ताहि शिवापति जान्यो रानी॥
पूंछो नारद कह मुसकाई। यह शिव भक्त दिगप धनराई॥
इन्हैंशंभु बहुबिधि अपनावा। दै वर आपन मित्र बनावा॥
सुनत मगन भै गिरिवररानी। सर्वोपरि निज भाग्य बखानी॥
हे नारद जेहिके अस पायक। सो कस ह्वैहै सर्व सुहायक॥
तिहिअवसर आयो गृहधीशा। साथ सकल गृहयुत रजनीशा॥
तेजपुंजसुठि रविहिबिलोकी। बढ़ो प्रीति उर रहत न रोकी॥

दो० पूंछ्यो तुम्हैं प्रणाम करि यह मुनि शंभु मतीन।
तिहि तुम शंकर दास कहि मैंनहिं उत्तर दीन॥

सो० करि शिवभक्ति अनंत तिहि बल टारत जंक्तम।
यहि गुण वेद भनंत साक्षी कर्म्म अकर्म्म को॥

तब आयो अष्टम दिगपाला। साजे भूषण बसन बिशाला॥
बैल चढ़े गण साथ लगाये। कोटि मिहरसम द्युतिअधिकाये॥
तिहिलखिमैनाछकितबिशेषी। ताहि सहय गिरिजापति लेषी॥
पूंछतही तुम कह मुसकाता। ये ईशान नाम दिगपाता॥
इंद्र सहायक शिव अवतारा। पालत जगहि करत सुखसारा॥
तिहिअवसरदलसुरपतिआवा। छबिनिधान द्युतिखानसुहावा॥
भूषण बसन नवीन बनाये। गजपर चढ़े महाछबि छाये॥
चंवरढुरत दुहुंदिशिसुखकारी। छत्र लसै शिर ऊपर भारी॥
तिहिलखि मैनाकहहरषाता। यह गिरिजापति मंगल दाता॥
सो सुनि नारद कहमसकाई। नाम पुरंदर है सुरराई॥
सेयशिवहियहसबसुखजीता। सकल सुरनपति भयो अभीता॥
सुनि मैना बहु हरषभरोई। जिहिसेवक अस सो कसहोई॥
तब आयो विधिशाजसजाये। हंस चढ़े मुनि गण सँगलाये॥

अरुण बरण तन तेजबिराजै। चारिबदन अतिशय छबिछाजै॥
सनकादिक सोहतरबिमाना। रूप धरे सब वेद पुराना॥
तिहिलखि बहु मैनाहर्षानी। नारदसों पूंछा मृदु बानी॥
दो० यहु गिरिजा पति शंभु है नारद कह मुसकाय।
यह विधि जग करतार है इनके शंभु सहाय॥
सो० करत सदा जग सृष्टिधारि रजो सत लोकमें।
करि शिवकी इन इष्ट लही बहुत अधिकारको॥
तब आयो चढ़ि गरुड़मुरारी। शोभा जासु न जात पुकारी॥
सुमिरिजाहि छबि कहँछबिहोई। तिहिछबिककसकहैकविकोई॥
शोभा धाम श्याम घनरूपा। कौस्तुभादि मणि सजे अनूपा॥
निरखि ताहि मैना हर्षाई। पूंछा मुनिसों शीश नवाई॥
समझिपरत यहशिव शिवदाता। तबतुंमबोल्यो बहुमुसकाता॥
हैं ये रमानाथ जग पालक। अमरसहायकअसुरन घालक॥
सेय शिवहि भे त्रिजग विहारी। सृष्टि अवनलयके अधिकारी॥
शिव समान सबकाम प्रकाशी। गनिहु देत जपि शंकरकाशी॥
कहँलगि इनकर कहौं विहारा। इनसेपरनहिं शिवहिपियारा॥
सुनि मैना अतिशय हरषानी। विधिहिहरिहिशिवसेवकजानी॥
बढ़ी लालसा वर देखिबेका। परअनक्तिजग सुखमनबेका॥
बिना शंभु जगजाल तथाहै। बिना वारिको ताल यथा है॥
है परन्तु शिव ध्याउब नीका। भक्ति अभक्तिहोय यश टीका॥
मैना मनगति जानि महेशा। कीनक्रोध बहु स्वमन परेशा॥
चाहत व्याह रूप मम देखी। सो देखाय टारौं सब शेखी॥
धरौं रूप अवधूत समाना। जेहिविधिनापितआयबखाना॥
दो० जेहि विधि आयौं बागमें वृद्ध खिन्न धरिरूप।
सो दिखाय सब मदहरौं लीला होय अनूप॥
सो० रोयलेय भरि पेट जिमि न करै अस्रमद कबौं।
मायामोरि अमेट जो बरवश तेहि मतिहँस्यो॥
शिवमन क्रोध लखा बनवारी। सकल रंगमें भंग विचारी॥
हाथ जोरि शिव शरण गयो है। उभय हाथ शिवचरण दयोहै॥

अबहिं क्रोधकर अवसर नाहीं। नाथ विचारि लेहु मनमाहीं॥
करहु न रंगमें भंग गोसांई। खींचब उचित न चंगचढ़ाई॥
बुद्धिमान जड़की जड़ताई। उलटिकुरतबहुविधिकरुणाई॥
यक तौ नारि सहज अज्ञाती। दूजे पाहन तिय जड़ जाती॥
करहु क्षमा सब चूक मिटाई। तुम करुणा सागर सुरराई॥
करहु क्षमा मम मानि निहोरा। मैं सेवक तुमहौ प्रभु मोरा॥
मैं नहिं रूप अनूप लखावो। उत्सव ठनै जक्त हर्षावो॥
सुनिहरिविनय शम्भु मुसकाई। तथा अस्तु कहि माथ नवाई॥
तुम मम प्राणप्रीय हरिनाथा। विनयतुम्हारिसकलममगाथा॥
सुनु मुनीश शिवकी यहबानी। निजप्रणतजत दासकी कानी॥
अस प्रभु त्यागि भजै जोआना। सो पामर खरश्वान समाना॥
कहतइमिहिंभे मगन विधाता। पुलकितरोम शिथिलभे गाता॥
धरयोधीरकहि शिवशिवकधिमुखाकहनलग्योपरकथासहितसुख॥
सुनिहरिविनयक्षमापनरिसकरि। आगेचलयोमहाप्रभुहँसिकरि॥

दो० धारे छबिवत रूपजस तेहि शतगुण छबिधारि।
कोटिभानु समभा लसै शोभन जातिनिहारि॥
सो० सब निज गणन महेश दीनरूप निजरूप सम।
वरणिसकतनहिंशेश सहसलपनसोंगणनछबि॥

यदपि शंभुगण सदा सुहावन। तदपिसमयतेहिअकथबनावन॥
तब नारद मैनकहि बुझाई। देखु शंभुदल युत हर्षाई॥
रथपर मध्य शंभु कह जानो। निरखिरूप सबसंशय भानो॥
तब मैना चितयो तेहि ओरा। चितै न जात महा छबि जोरा॥
तिलमिल दृष्टअधोमुख भयऊ। तबह्वै बिनद शरणशिवगयऊ॥
दृष्टि शक्ति दीन्ह्यो तेहिशंकर। करुणाकरि सबहरयो भयंकर॥
सुनहु प्रिया असहै शिव बानी। अपराधिहु पर क्रोध न तानी॥
मदवश यदपि करै अपराधू। मद हरि शंभु बनावत साधू॥
असको पर मुनि दीन दयाला। सुमिरततुरतहिकरतनिहाला॥
असप्रभुतजि जोरहत भुलाना। किहिविधिहोय तासुकल्याना॥
भजै परहि शिवकाहिं भुलावै। जमनसरिसतेहिकोश्रुतिगावै॥

परहि भजै तजिकै वृषकेतू । नरक बन्यो मुनि तेहिके हेतू ॥
लखि मैना शिवको बहु भांती । मुदितभई करिशीतल छाती ॥
बार बार लखि पद अरविन्दा । पियतमधुपइवछबि मकरन्दा ॥
हरष पयोध मगन भै रानी । तनसुधिगई न निकरतबानी ॥
तब तुरत नारद ताहि जगावा । द्वार चारकी सुरति करावा ॥

दो० ह्वै चतन्य तब पदपरी धन्य धन्य मुनि राज ।
मानि महा उपदेश तव सुता कीन तपसाज ॥

सो० तेहिफलमिल्यो महेश जिहिसवैंपरिश्रुतिकहै ।
अबसब छूट कलेश प्रथम मोहवश अनखेहू ॥

असकहि तुरत उठी गिरिरानी । द्वारचारको अवसर जानी ॥
भूषणवसनस्वतनसजिनाना । बिप्रन बोलि दियो बहुदाना ॥
वदी द्वार सुगन्ध लिपाई । गजमुक्ता सों चौक पुराई ॥
कनककलश तहँ शुभग रचाई । बहुविधि गौरि गणेश पुजाई ॥
बाती सहसकमानिक दीपा । सकुचतजिहिछबिनिरखिप्रदीपा॥
कनक थारपर तेहि धरवाई । परखन लाग्यो शंभु अवाई ॥
दम्पति गांठि जोरि भे ठाढ़े । शिवपद प्रीति बढ़ी उरगाढ़े ॥
तबलगि पहुंचिगयो शिवद्वारे । बाजत दुहुंदिशि अनँदनगारे ॥
गावत बहु तिय चढ़ी अटारी । मारत तंदुल प्रेम सम्हारी ॥
तब रथते उतराय पुरारी । बसन विचित्र पांवड़े डारी ॥
अरघदेत मधुपर्क करावा । मुनिगण सबस्वस्त्ययनसुनावा ॥
तब दम्पति मैना गिरि राई । कीन आरती प्रेम बढ़ाई ॥
भयेमगन छबि शंभु बिलोकी । दम्पतिप्रीति रहतनहिंरोकी ॥
दायज दीन न जात बखानी । कमीकहां जहँ बसतभवानी ॥
लीन्ह्योसुरपति सकल सिहारी । दियो दान बहु बिप्रहँकारी ॥
याचक सकल अयाचक करिकै । गा जनवासे बहुत उघरिकै ॥

छन्द ॥

भयो द्वारचार अपार उतसव कहत नहिं कुतुहल बनै ।
सब देव हरषैं फूल बरषैं जय शिवा शिव सब भनै ॥
रस प्रेम पागे नेग मांगे याचकादिक सुख भरे ।

सब करि अयांची जाचि जांची काम परि पूरण करे ॥
दो० द्वारचारविधिचार करि शंकर सहित बरात ।
जनवासे गवनत भये उत्सव बरणि न जात ॥
सो० अबसुनु चरित अपार मनिवरजोगिरिजाकरी ।
कीन्हो स्वमनविचार धौंतासम पूं जाउचित ॥
ऋद्धि सिद्धि सब लीन बुलाई । आय तुरत सबमाथ नवाई ॥
शासन उचित देहु जगमाता । करैं काज सबहर्षित गाता ॥
तब गिरिजा कह कछुमुसकाई । जाय बरात करो पहुनाई ॥
रचहु सकल पाहुनहित सामा । जो जेहिलायकतेहितसधामा॥
यहिमालखो उभय विधिकामा । शिवसेवनअरुममपितुनामा ॥
सुनि अस शासन माथ नवाई । मुदित तुरत जनवासे आई ॥
लखि शिव सेवन बहु हर्षाई । रचनारच्यो न जाति बताई ॥
जितनी रहै निपुणतातिनमा । कीन्ह्योप्रकटसकलतेहिछिनमा॥
जसरचनातिन प्रकटि देखाई । शेषसहसमुख सकत न गाई ॥
निजमतिसमकछुकहौं रखानो । सुनहुमुनीश्वर बहु सुखमानो॥
ऋद्धि सिद्धि पहुंची जनवासा । प्रतिजनरच्यो बरातिनिवासा ॥
चटा पटी मणि सेत असेता । भूमि बनायो बहु छबि देता ॥
कनक मयी सब भीति अटारी । रच्यो मणिन सों बूटा कारी ॥
शतमहला जनुछुवत अकाशा । कोटिमिहरसम होत प्रकाशा ॥
खंभा गजरद अपर प्रवाला । मनमोहनतेहिछविलखिबाला ॥
बज्रमयी सब लागि किवारे । तिनपर वेलिबनी मणि यारे ॥
दो० मणिगंछित जरतार पट तेहि छतरची बनाय ।
गजमुक्ता गुच्छावली झालरि तहां लगाय ॥
सो० तेहिसमभूमिबिछायचिकैं डारिप्रतिदरतिमिहिं ।
शोभावरणिनजाय मनहुंउदयरविशशि विपुल ॥
कनकमई बहु खाट बनाई । प्रतिघर यकयक सेजबिछाई ॥
तेहिपर सुन्दर रची सुपेती । बहुमंजुलशशिसमछविदेती ॥
बसन सुकोमल क्षीर फुहोसी । खोड़स खोड़सधरचोउसीसी ॥
जरमणिखिचितबिजनलटकाई । त्रिविधिबयारि देतसुखदाई ॥

चौकी धरी कनक मणि केरी। चित्र विचित्र जातनहिं हेरी॥
तेहिपर बसन विचित्रसझब्बा। तहवां पान धरे भरि डब्बा॥
मेवा युत चौघड़ा सुहाई। अरु सुगन्ध भाजन सुखदाई॥
शुभग पूतरीसी मतिलाई। हाथ लिहे मणिदीप सुहाई॥
तासु प्रभा अतिशय सुखदाई। दिवारैन नहिं परत जनाई॥
भाजन कनक भरे पकवाना। षटरस चारिप्रकार बखाना॥
भरि भाजन दधि दूध मलाई। वरणि न जात अनेकमिठाई॥
करिकपूर बासित बहु शीतल। भरेकनक भाजन निर्मलजल॥
दुइ दुइ सेवक बहु सज्ञानी। खड़े सदन प्रति जोरे पानी॥
रम्भादिक बहु रूप सँवारे। रसिकहेत सोहत प्रतिद्वारे॥
कामधेनु बांधी प्रति घरघर। कल्पवृक्ष प्रतिद्वार सुखदतर॥
द्वार द्वार अप्सर गण नाचत। कलाकरैं नट गण सुख साजत॥

दो० मृदु मंजुल तंदुल मलय बिल्व पत्र कंजादि।
पूजा हित जर थारमें भरी धरी गंधादि॥

सो० बिछी आसनी स्वेत धरे माल रुद्राक्ष के।
थपे लिंग वृषकेत द्वार द्वार पर दृषद के॥

असलखिसकलबरातिनथाना। उतरतभे लखिउचितठिकाना॥
शिवा भक्ति जानी वृषजाना। सकलगिरिशकर करतबखाना॥
ज्योतिषशास्त्रधरेमुनिसूरति। गिरिहि बतावत सकलमहूरति॥
जानिसमयशुभ साइतनेका। गिरिसों कह्यो चढ़ाव चढ़ेका॥
गिरिशासनगिरिसुतसज्ञानी। जाय विष्णु पद जोरयो पानी॥
करिबिनती बहुअस्तुतिगाई। पुनि चढ़ाव हित विनय सुनाई॥
सुनि चढ़ाव साइतभगवाना। भे हर्षित नहिं जात बखाना॥
लीन बुलाय सुरेस मुरारी। कह चढ़ाव हित करहु तयारी॥
तब चढ़ावकर सुनतबलावा। बहु बिधि बजकन बाज बजावा॥
साजि बसन भूषणबिधिनाना। चढ़ि खगेश हरिकीन पयाना॥
रंक होत नृप जिहि करुणाई। तासु सजब जगगेति बताई॥
चढ़िगज चलतभयो अमरेशा। भूषण बसन साजि बिधिवेशा॥
भूषण बसन साथ लै भारी। तजत धनद मद जाहिनिहारी॥

पहुंचे गिरिश द्वार सुखधामा । आगे ह्वै गिरि कीन प्रणामा ॥
करनलग्यो निज भाग्य बड़ाई । हाथजोरि बहु विनय सुनाई ॥
योगी धरत ध्यान बहु ध्याई । ध्यानहु में नहिं होत लखाई ॥
दो० जिहिलगिबनबसितपकरततजिनिजराजनरेश ।
सो प्रत्यक्ष मम द्वार पर ठाढ़े चढ़े खगेश ॥
सो० सुनिगिरि विनय रमेशउतरि गरुड़सेभूमिपर ।
बोधेहु गिरि शहि वेशभाग्य वंततुम समनपर ॥
तुम्हरी सुता भई जग माई । जिहि अवलम्ब सकलसुरराई ॥
भाग्य तारि कोसके बखानी । जाकी सुता भई सर्वानी ॥
जिहिलगिशम्भुसकलजगताता । तुम सोंआय करी सुत नाता ॥
जहुँ शंकर निज कीननिवासा । तहंपर कीगति कहततमाशा ॥
सर्वा परि सब को सुख देवक । हम सब जासुचरण केसेवक ॥
कीन जुई शंकर पद प्रीती । सोसबसुरन लयोजनु जीती ॥
अस गिरिवर समुझाय मुरारी । लगे जपन निज इष्ट पुरारी ॥
सुनि हरिबचन हर्षि गिरि राई । हरिकहँ भीतर गयो लिवाई ॥
कनक सिंहासन दुइ धर वाई । हरि हरि माड़व तर बैठाई ॥
होन लग्यो तब कृत हर षाई । उमहिं गर्गमुनिलीन बुलाई ॥
करि सिंगार सखी लैआई । आसन उचित उपर बैठाई ॥
उमा चरण लखि इंद्र मुरारी । कीन प्रणाम जानि महतारी ॥
पूजा उचित सकल करवाई । भूषण वसन चढ़ाव चढ़ाई ॥
देखि चढ़ाव धनद मद छूटा । नेगी बहुत बहुत धन लूटा ॥
बाजन बाजत विविधि प्रकारा । सो सुख कहत बनतनहिंबारा ॥
छूट खारतब शहित हुलासा । सकल बराती गे जनवासा ॥
दो० तबयोतिष मुनिब्याह कीकह्यो महूरतिआय ।
सुनि गिरिवर मैंनाक कोहर्षित लीनबुलाय ॥
सो० सुतसों कह हर्षात जाहु बुलावन शंभुको ।
गासो तुरत बरात जायविष्णु ढ़िग नुतिकरी ॥
महाराज अब करि करुणाई । चलहुविवाह लगनशुभआई ॥
चलिये वरयुत हेत विवाहा । होय विवाह सहित उत्साहा ॥

अस सुनि विष्णु बहुत हर्षाई। जाय शंभु पद माथ नवाई॥
लखिप्रसन्न शिवविनय सुनावा। प्रभुहिबुलावनगिर सुतआवा॥
जानि विवाह लगन शुभनाथा। चलहुगिरिशघरसबसुरसाथा॥
तथा अस्तु कहि शंभु मुनेशा। लग्यो तयारी करन महेशा॥
बाजन सकल लगे तब बाजन। निजनिजसाजलगेसुरसाजन॥
कोऊ बसन सजत ह्वै सानिक। कोउभूषणपहिरतमणिमाणिक॥
कोउ लैअंगरागतन लावत। चढ़ितुरंगकोउअधिकनचावत॥
निज निजवाहन चढ़िदिग्पाला। चलत भयेसब ओरहिमाला॥
ऐरावत पर चढ़ि सुर राई। चलत भये बहुरूप बनाई॥
साजि हंस चढ़ि चले विधाता। तिहिसंगमुनिगणबहुहुलसाता॥
चढ़ि खगेश बहु रूप संवारी। हर्षित चलत भये बनवारी॥
कौस्तुभादि बहु भूषण धारी। पीतवसन नहिजात निहारी॥
श्याम काम घनश्याम लजावै। हँसी मंद जनु दुःख नसावै॥
शंख चक्र नंदक कँज धारी। ध्यान करत कोटिनजनतारी॥

दो० यहिमिसरमानिवास प्रभुजासुसंगजिमिदास।
तहिमोहबससूढ़मति तजतह्यागिविस्वास॥

सो० भजत जाहिवनवारि तहंनर गतिकोजड़कहै।
बोरीहृदयसम्हारिभजशिवर्गिवजोसुखचहसि॥

शिवहु तयार भये चलिवेका। मिलतिनउपमाछबिकहिवेका॥
कुन्द इन्दु सम रूप विराजै। सकल कलामह भूप विराजै॥
गोर रंग षोडश वय धारी। अलक असेत बनीघुंघुवारी॥
अमर नदी तहं करत कलोला। कनकमोरमणिजटितअमोला॥
भाल विशाल बाल शशि सोहै। भस्म त्रिपुंड सेत मन मोहै॥
तीन नेत्ररविशशि शुचिभावा। भौंह कौशजनु काम बनावा॥
निरखि नैन मृग मीन लजाई। नाकम सुवा नाक रिपु जाई॥
अंजन निरखितजयमदखंजन। चितवनिसुभगदासदुखभंजन॥
माथे मलय विन्दु युत रोरी। धर्योकुजहिजनुशशिबरजोरी॥
जरमणि युतश्रुति कुंडललोला। अधर लेतविद्रुमगति मोला॥
नासहि शंख कपोल गुलाई। निरखिदशनदाड़िमदुखपाई॥

ग्रीवा चारु कंबु मद हारी। वृषभ कंध सोहत भुजचारी ॥
कोउबरनत दशवाह अजाना। कोजानेजिहिवेद न जाना ॥
यदपि वेद वरणत सुखपाई। तदपि नेति कहि रहत चुपाई ॥
शेषादिक यदि सुमति बखानत।तदपिअजानतकहिचुपठानत ॥
गावतयश नितब्रह्म मुरारी। तदपि न जानत भेद पुरारी ॥
निस दिनभनै शंभु जस बानी। कहि अथाह पर बनै अयानी ॥
शिवकर भेदलहा कोउनाहीं। छौनयंत्रिकाजिमि कधि माहीं॥

दो० तिहि तेमैंवरन्यो उभय वेदमान दिग्मान।
चित्रिततहिंकछुलखुसुमुखि स्वच्छितशंभुसुजान ॥

सो० तहं भूषण बहुसोह वलयशिजायठनव रतन।
जिहिलखि कुंजरकोहशेशादिकमोहैं सकल ॥

प्रति अंगुरी मुदरी छविदा है। चमकदे खिलज्जितसविताहै ॥
शूला दिक आयुध सब धारे। जन रक्षक दुष्टन क्षय कारे ॥
गले माल रुद्राक्ष सोहाई। मणि कंठातहं अतिछविदाई ॥
हृदय विशालमहा छविसोहत। त्रिबलितउदरदेखिमनमोहत ॥
असित रोमतहं अतिछविदाई। शशिपरमनहुं श्यामघनछाई ॥
तासु मध्य सोहत नाभी बर। उठतभवँरजनु रवितनयापर ॥
कटिकेहरितह पीतपटम्बर। सदुतिलसतिजनुविजुलछटाबर॥
तिहि तरशुभग पीतपट धोती। उभयढिगनलाग्योमणिमोती ॥
नारद यह शिवकी सबलीला। जासु अजाबश सबजगकीला ॥
कबहुं न शंभु गहतपटभूषन। है परंतु जनको मन पूषन ॥
लखतनकोउशिवकोशिवकसहै। मुनिपरंतुशिवजन रुचिबशहै ॥
जो जसशिवहि ध्यानधरिध्यावै। तिहिकहँ तसप्रभु रूपलखावै ॥
योगीलखत शिवहिजिमियोगी। भोगीलखतशिवहिमुनिभोगी॥
महाकाल दुष्टनन देखावत। अतिकृपालनिजजननलखावत॥
अघिनहृदयप्राकृत पूरुषसम। शंभुलखावत जिमिन भजैमम ॥
बिन शिवभजे न पापेसिराई। तिहिते अघी न शिवपदध्याई ॥

दो० सकल बरातिन गिरिजनन तिहिक्षण रुचिमहराज।
तिहिते शिव महराज बनि धार्यो रुचिको साज ॥

सो० रम्भा खम्भा जानु गुलुफ गोल अनमोलहै ।
पदसरोज अनुमानु जहँ मुनिमन मधुकरबसैं ॥
तहँ जावक पावक छवि हारी । मनहुं बालरवि किरणपसारी ॥
तरवा अरुण प्रवाल समाना । धरतध्यान जिहिविधिभगवाना ॥
कौस्तुभादिमणिजटितउपाना । जिहिधरिध्यानमिलतनिरबाना ॥
साज्यो वृष अवलंब मुनीशा । वृषभ रूप जनु धर्यो रतीशा ॥
स्वेतबरण अवयव बिलसाई । हृष्ट पुष्ट सुंदर छबिदाई ॥
गुटमुटार दुइ श्रंग सुहाई । डोला बरनि न जात बताई ॥
जाकोसुमिरिमिलतबहुबाहन । हयगजरथ सिविकामुनिनाहन॥
बामपदज जिहि केर खगेशा । दक्षिण पदते हंस रिखेशा ॥
ताकीछवि किमिबरणिसिराई । जापर चरण धरत शिवसाई ॥
मुहरी पाट गुही जर तारी । जगमगजोतिउठतिअधिकारी ॥
मणिमय जीन पीठ पर धारी । अद्भुत गति उपमाते न्यारी ॥
चंचलता नहिं जात बताई । रसा उपर खुर नाहिं लखाई ॥
तिहि चढ़िचले शंभु त्रिपुरारी । बाजन बजन लगे अधिकारी ॥
कोउसिविकापरशिवहिबतावत । वृष कोतल अवलंबनचावत ॥
सब गण सजतभये शंकरसम । चहुंदिशचलतभयेकरिबमबम॥
चलीं अप्सरानाचत छमछम । गावत किन्नर गीत परम रस ॥
दो० कनक दंड लै दंडधर चलत भये जस गाय ।
महाराज सुरराज शिव दौलत उमर बढ़ाय ॥
सो० यहि मिसि चले पुरारि व्याह अर्थ गिरि भवनको ।
चलत भये सुर झारि पुर पाछे सब साजि सजि ॥
दक्षिण चलत भये बनवारी । सजे साज खगपति पर भारी ॥
बांये चढ़े हंस हम मुनिवर । बरणिनजातशान तिहि अवसर ॥
गिरिश द्वार पहुंचे सबलोगा । देखि गिरिश मेट्योसबसोगा ॥
आगे ह्वै गिरि कीन प्रणामा । शिवहि उतारि चल्योलैधामा ॥
बसन बिचित्रपरत तहँपांवर । पग पग होत शंभु न्योछावर ॥
दुहुंदिशचँवर बिजनशिवकेरे । सेवत चले जात बहु चेरे ॥
पुनिबनवारि चरणधरि शीशा । भीतर चल्यो लेवाय गिरीशा ॥

तिमिहिभांतिममचरणमनाई। भीतर चल्यो गिरीश लिवाई॥
नमिनमि इंद्रादिक सबदेवन। भीतरचल्योलिवायगिरिशजन॥
सबकोकरि आदर गिरिनाहू। आसन उचित दीन सबकाहू॥
कनक सिंहासन दुइधरवाई। हरिहि हमै तिहि पर बैठाई॥
मणिमयएकसिंहासनजरको। धरेउ चौकि पर आसन हरको॥
करिलौकिकवेदिक व्योहारा। शांति पढ़त मुनि नाथ अपारा॥
अरघ सहित मधुपर्क्ककराई। तिहि ऊपर शिव कहँ बैठाई॥
पूजा उचित कराय मुनीशा। शिर बसन दुइ दीन गिरीशा॥
धोती यक पहिरी त्रिपुरारी। गावत गीत सकल वर नारी॥
पर गिरिजा हित दीनपठाई। मुनिवर गिरिजहि लीनबुलाई॥
सखी सिंगार सहित लैआईं। माड़व तर जहँ हैं शिव सांई॥
दो० गिरिजा पदलखि सकलसुर जक्त जननि अनुमानि।
लागे करन प्रणाम सब अहो भाग्य निज जानि॥
सो० आसन उचित धराय शिव पूरुब पश्चिम मुखहि।
गिरिवर जा बैठाय तिहि पाछे बैठीं सखी॥
तब मुनिवर मैनहिं बुलवाई। करि श्रृंगार सखी लैआई॥
तासु सिंगार सकै को गाई। शिवामातु जग सो तिहि माई॥
उत्तर मुख बैठ्यो गिरिराई। सव्य भाग मैना बैठाई॥
शाखोचार करन के हेतू। पूछ्यो शिवहि गोत्र गिरिकेतू॥
शिव मायाबश रह्योनचेता। यदि पुरलख्यो मरम वृषकेता॥
मायावशसबसुमतिबिलाई। पूंछत शिवहि गोत्र जड़ताई॥
कह्योगिरिशबिनगोत्रबताये। करब न कन्या दान सुहाये॥
तबशिवविधिहितातनिजभासी। पुनिपरतात कह्यो मधुनासी॥
पुनिपरपितामहाशिवनिजकह। दीन बताय हिमंचलको यह॥
सुनिगिरिवरहि मोहभाभारी। समुझ्यो नहिं शिवतत्वअनारी॥
तब नारद निज बीनबजाई। मतिकरु मतिकरुगिरिजड़ताई॥
जाकर भेद वेद नहिं पाई। तिहिपूंछत तुम करिजड़ताई॥
अकुल अनीह अनामअरूपा। निराकार निरवद्य अनूपा॥
जब न रह्यो यहजक्तपसारा। तबहिं करत शिव शून्यबिहारा॥

है अनादि नहिं आदिबिचारा । है अनंत नहिं अंत बिकारा ॥
लीला करन हेत त्रिपुरारी । धरयो रूप निज इच्छा चारी ॥
दो० निज इच्छा सों प्रगट है वाके तात न मात ।
हरि विधि जाके अंशते प्रगट भये जग पात ॥
सो० जब निज इच्छा धारि भयो सकार अकार ते ।
तब लीला अनुसारि विष्णुरच्यो निजबामसे ॥
तब हरिनाभी कमलजमाई । निज सबरज विधि रूप बनाई ॥
कमल नालसे प्रकट लखावा । तेहिते हरिबिधि बाप कहावा ॥
बिधिहि जक्ककर सर्ग सिखावा । बिष्णुहि सबजगपाल बनावा ॥
बहु बरदानउभय कहदीन्हा । तब हरिबिधिवहुअस्तुतिकीन्हा ॥
होहु नाथ तुमहूं औतारी । तवहि त्रिसुर काज जग सारी ॥
तहौं विबेक रहै यह स्वामी । हम सेवक तुम प्रभुवृषगामी ॥
तेहि तन रहौ सुरन के मेले । पर ब्रह्म यहि रूप अकेले ॥
येव मस्तु तव शंकर भासी । अंतर ध्यान भयो अबि नासी ॥
तेहिबरबसबिधिभृकुटिजरूपा । धरयो शंभुयह रूप अनूपा ॥
तेहितेबिधिहितात निजभाषी । जग लीलाशिवमनअभिलाषी ॥
पर अस मानव बड़िजड़ ताई । सब परलखो शंभु गिरि राई ॥
परब्रह्म शिव परम परेशा । जासु अंशते बिधिहु रमेशा ॥
जेहिध्यावतनित बिधिबनवारी । तेहिगति पछब बनबअनारी ॥
बरखो जे जब बिप्र पठायो । तब सब शिवामातु सरगायो ॥
तबन लख्योकस तत्वसुताका । बन्यो आजु तुमअज्ञ पताका ॥
जेहिहरिबिधिहु मातुनिज गावै । तापति आन बाब कहं पावै ॥
सुनि असनारद बचनबिशाला । सत्य सत्यसब कहसुरमाला ॥
सुनिअसगिरवरबहुखिशियाई । शंकर चरन शीशतब नाई ॥
मेटु मेटु मम चूक महेशा । मैजड़ लख्यों न तोहिंपरेशा ॥
नारद करी सहाय हमारी । अब जान्यो सबतत्व तुम्हारी ॥
दो० तब शिवके दम्पतिहरषि पावँ पखारन लागि ।
सुरसिहाय बरषै सुमन धन्य धन्य गिरि भागि ॥
पद पखारि जलशीश धरि कीन्हो कन्या दान ।

बेद मंत्र भूषण सहित उत्सव बहु उमड़ान ॥
सो० धरि कन्याको हाथ सौंपि दीन त्रिपुरारि को।
ग्रहण कीन शशिमाथ कीनकामनुतिबेदमत ॥
कीन पौपुँजी भाय तब गिरीश के बंधु जन।
पद जल शीशचढ़ाय देहिंदाननहिं जातकहि ॥

छन्दसवैया

जो पद बारिज बारिज नंदन बारिज नाभि निहारत हैं ॥
सो पदको बशभाग्य गिरीशन भीतर भौन पखारत हैं ॥
जो पदको सनकादिक ध्यावत ध्यानहुमें नहिं पावत हैं॥
सो पदको प्रत्यक्ष गिरीश न हाथ धरे शिर लावत हैं ॥
दो० जेहि पद लगि नृपराज तजि करत विपिनतपघोर।
करत करत तपतन तजत तबहूं मिलब कठोर ॥
सो० जेहि पद लागि मुरारि बसि बद्री बन तप करत।
सो पद गिरिवर झारि पूजत हैं बिन योग तप ॥
सुर सराहि सब बर्षैं फूला। नहिंपर भाग्यगिरीश न तूला ॥
कान लागि बिधिके बनवारी। कह गिरिभागि सकलतेन्यारी ॥
हे बिधि तपसी वाते भिन्ना। गिरिवरबिधिलखिपरतअछिन्ना ॥
कोटि कोटि मुनियतन बनावैं। तबहुं न निरखि शंभु पदपावैं ॥
सो प्रत्यक्ष गिरि भवन मझारी। पूजत चरण शंभुगिरि झारी ॥
अस कहि मगन भयेबनवारी। शिवशिवकहिपुनिज्ञानसम्हारी ॥
तासु भाग्य नहिंलखोबिधाता। जाकी सुता भई जग माता ॥
अस कहि बोधित ह्वै बनवारी। लगे जपन निज इष्ट पुरारी ॥
कन्या दान पौपुँजी पाछे। मंगन नेग लह्यो बहु आछे ॥
तब मुनि आयसु शंभु भवानी। यक आसन बैठे मुनि ज्ञानी ॥
तब अभिषेक भयो श्रुति रीती। आशिष अक्षत छूट सप्रीती ॥
हृदया लंभन आदिक चारा। मुनिन करायो सब व्योहारा ॥
पुनि सिंदूर दान बिधि कीन्हा। उमा शीश शिव सेंदुरदीन्हा ॥
लीन बहोरि हिमंचल भगनी। लह्यो नेगसो जातन बरनी ॥
बरषे फूल हरषि सुर झारी। बाजन बाजत सबसुखकारी ॥

गांठि जोरि तब शंभु भवानी । भावँर परन लगे मुनि ज्ञानी ॥
दो० लागे जब भावँरि फिरन मुनिवर शिवा महेश ।
मणि मय खंभ न लखि परत सुंदरदंपतिभेश ॥
सो० मनहु धरे बहु वेषरति पतिरतियुत हर्ष युत ।
देखन शिवा महेश बौरेसे दौरे फिरत ॥
तब मैनाक शिवाको भ्राता । लाजा परछत बहु हुलसाता ॥
पायो बसन बिचित्र पटोरे । सब तन पहिर्‍यो मोदअथोरे ॥
सातबार फेर्‍यो तब भावँर । नेगिन सकल लह्योन्यौछावर ॥
जसकछु ब्याहरीति श्रुतिगाई । महा मुनीशन सकल कराई ॥
दायज बिबिध देत गिरि राई । सुरपति सकल सिहारतजाई ॥
मड़ये तर बहु बस्त्र लुटावा । उबरा सो जनवास पठावा ॥
शिवगिरिजा करभयहु बिवाहू । लह्यो लोग सब लोचन लाहू ॥
हरि आदिक तबगे जनवासे । कुहवर गे शिव उमा हुलासे ॥
शची शारदा रमा सयानी । गिरिवरपुर तिय सबगिरि रानी ॥
कुहवर को सबचार करावत । हँसिहँसि शिवको बहुतरिझावत ॥
नेग पाय बाती शिव टारी । करत ठठोली सबमिलि नारी ॥
कनक थार मणिमाल धराई । शिव गौरी कहँ द्योत खिलाई ॥
लक्ष्मी धरे गौरि को करवर । द्यूतखिलावत हँसिहँसि हरवर ॥
शिवको हस्त धरे तबशारद । द्यूत बतावत हँसि हँसि नारद ॥
चंचलता दुहुं दिशि फैलाई । भई परस्पर जीत हराई ॥
भा लहकौर चार मुनि गाई । शिवहि गौरि शिवगौरि खवाई ॥
दो० मोद भरी पुर सुरतिया करत सकल रसबात ।
लखत न गौरी शंकरहिं सकलजक्त पितुमात ॥
सो० माया बश सब नारि करत ठठोली शंभु सन ।
औसर उचित बिचारि ह्वैप्रसन्न मुसक्यातशिव ॥
तब शिवगौरि गये जन वासे । देखि लोग सब भये हुलासे ॥
लखि निज काम सुपूरण देवा । लागे करण गौरि शिव सेवा ॥
बर्षि सुमन दुन्दुभी बजावैं । बमबमकरिसबशिवहिंरिझावैं ॥
ह्वै सब सुरके अग्र रमेशा । लाग्यो अस्तुतिकरण ऋषेशा ॥

जै जै गौरि उमा शर्बानी । जै शिव शंकर औवड़ दानी ॥
हौ अनादि तुम अंत बिहीना । निजइच्छितबिचरतपुरलीना ॥
सबते भिन्न सकल उर बासी । नाशहीन तुमहौ अबिनाशी ॥
मृत्युंजय तुम मृत्यु बिहीना । परा चीन तुम अर्बा चीना ॥
महा काल तुम काल बिदारी । सब के घट घट होत बिहारी ॥
प्रथम रहौ तुम शून्य समाई । फिर निजइच्छित रूपबनाई ॥
रचत सृष्टिधरि ब्रह्म स्वरूपा । पुनि ह्वै बिष्णु रहत जगभूपा ॥
तम टारन हित बनत तमारी । शीतलताहित हौ निशिकारी ॥
ह्वै इंद्रादिक सब दिक् पाला । करतकाज जगको शशिभाला ॥
पुनि जगमें बनि रूप नरेशा । करतकाज जग सकलमहेशा ॥
करि बिचार मनमें सुर हेतू । बालक बन्यो आज वृषकेतू ॥
करहु कृपा पालहु सब देवा । करहु सुफल शंकर निजसेवा ॥

त्रिभंगी छन्द

हे मद हारी जै मधु धारी बम् मख दारी शंभु हरे ।
मद् अकबाली अदम्ज़वाली फ़ारिग़वाली माहसरे ॥
सब सुखखानी औघड़दानी शिव शर्बानी ब्रह्म परे ।
खिश्मत ओरी कुनमंज़ूरी देहमज़दूरी अदल गरे ॥

द्वितीय त्रिभंगी छन्द

सब जगपाली अरिगणघाली पोस्त गिज़ाली शाहजहां ।
खालिकराजिक सादिक वाहिद बेद बखानत कहतअहां ॥
हौ निर्बाणी औघड़ दानी हर गह दानी राज निहां ।
विदेह तसद्दुक कदमतवर्रुक तुमतजिओरी जायकहां ॥

टीका पहिले छन्दको फ़ारसी शब्दका

मदअक़बाली नाम महाप्रतापी अदमजवाली
नाम अविनाशी—फ़ारिगवाली नाम
सच्चिदानंद माहसरे नाम चंद्रभाल
खिश्मत ओरी नाम——ओरीलाल स्तुति
कर्त्ताकीसेवा ——कुनमंज़ूरी नाम शंगी

कार करो—— देहमज़ूरी नाम मज़दूरीदो-
अदलगरे नाम तुमकैसेहो समदर्शीहो

इति

टीका दूसरे छंद फारसी शब्दों का॥

पोस्तगिज़ाली नाम मृगछालाके धारणकर्त्ता-
शाहजहां नाम संसारपति
ख़ालिक नाम सृष्टिकर्त्ता—राज़िक नाम
पालनकर्त्ता सादिक नाम सत्य
वाहिद नाम निर्द्वन्द्व हरगहदानी नाम
प्रतिसमय ज्ञानांतर विदेहतसद्दुक़
नाम देहुन्यौछावर क़दमतवरुक
नाम पदपावन

इति

दो० सुनविनती अस विष्णु की शंकर कह्यो पुकार।
मांगुमांगु मन रुचितबर देवै विनहिं तिहार॥
सो० कह रमेश शिर नाय जो पूरहु प्रभु खातिरम्।
अनपावनी अथाय देहु भक्ति निज शातिरम्॥

पुनि दूसर बर देहु कृपाला। सकलसुरनलखिभक्तिविशाला॥
तारक बधन नाथ जिमि होई। करहु कृपा करि शंकर सोई॥
अस कहि मौन भये हरि नाथा। एवमस्तु बोल्यो शशि माथा॥
तब गिरिजानिजपितु घरगयऊ। फिर जनवाससुउत्सवठयऊ॥
शिव पर सुरन फूल झर लाई। बाजन बाजत अति गहगाई॥
अप्सर गण नाचत करि प्रीती। किन्नर गंध्रब गावत गीती॥
हरि हर आयसु सकल बराती। मज्जनकरत भये सुख मांती॥
भस्म त्रिपुंड्र लगावत अंगन। षटदशविधिपूजत शिवलिंगन॥
तिहि पाछे गंधादि लगाई। भूषण वसनसजत अधिकाई॥

* अर्थात् मान हमारा अर्थात् दृढ़ भक्ति

निज निज सभामान युत बैठे। पेखनादि देखत सब ऐंठे॥
प्रथम पहर बीतत गिरि राई। शर्वत बहु घट दीन पठाई॥
तिहि पाछे पकवान अनेका। भरिभरि कांवरि सहित विवेका॥
पठवत भयो सकल सुर बासा। देखिभावगिरि सकलहुलासा॥
भोजन करत सकल हुलसाई। अरपि शंभु नैवेद्य लगाई॥
यहि विधि बीतिगयो जब बासर। भा ज्योनार तयार गिरिशघर॥
सुरन बुलावन हेत हुलासे। पठयोगिरिनिजसुतजनवासे॥

दो० तबनग सुतचढ़ि नागपर भूषण बसनबनाय।
मंत्री युत जनवास में पहुंचत भो हरषाय॥

सो० गहि रमेश केपायँ भोजन हित विनती करी।
चलिये करुणा छाय पावन कीजै भवनमम॥

यदपि न भोजनप्रभुतुम लायक। तदपिकरो करुणा सुरनायक॥
यदपि नतव लायक जिवनारा। दासमानि प्रभु राखु दुलारा॥
षटरसनितहिमिलतजिहिदासन। तासुयोग ममघरकहँ आसन॥
जुरेहुनतुम लायक कछुभोजन। श्रमकरावत विनहिं प्रयोजन॥
ढांख पात महँ साग अलोना। जोरच्यों करिबहुयतन बनोना॥
पर सुमि शवरी बिदुरकहानी। करत ढिठापन त्यागिगलानी॥
अरु पुनि सुन्यो वेदकी गाथा। बिलुदलमहँरीझतशशिमाथा॥
पुनि रीझत चाउर दुइ पाई। रंक सेराव करत शिव साई॥
पुनिशिव मगन होतजलधारा। देत इतहु उत हरष अपारा॥
यहै समुझि शंका मन त्यागी। पठयो गिरिश बलावनलागी॥
सुनि विनती मैनाक रमेशा। भयो प्रसन्न कृपा करि वेशा॥
पुनिमुसकयाय कह्योलक्ष्मीशा। धन्य धन्य तुम धन्य गिरीशा॥
सब सुख बस्तु भरो तवगेहा। जिहि पर शंकर कीन सनेहा॥
सब जगमातु जासु घर कन्या। ऋद्धिसिद्धि जिहि सेवतधन्या॥
तिहिघर कौनिबस्तुकी कमती। ऋद्धिसिद्धिजिहि केपदनमती॥
किमिबरणौं गिरिभाग्य बड़ाई। जिहि घर शंकर भयौ जमाई॥

दो० सनकादिक जिहिध्यानमें निरखतहोयँनिहाल।
सोप्रत्यक्ष गिरिभवनमें भयो शक्तियुत बाल॥

सो० करतगिरीशबखान मगनभयो मधुरिपुबहुत।
पुनिधरिशंकरध्यान धीरजधरिशिवशिवजप्यौ॥
करि गिरिसुतहि बिदा बनवारी। आपु शंभुके निकट सिधारी॥
हाथ जोरि महि माथ नवाई। बोलत भे शिव आयसु पाई॥
नाथ हिमंचल भवन मझारो। होत भई ज्यवनार तयारी॥
गिरि सुत जो मैनाक सुहावा। हेतु बुलावन मम ढिग आवा॥
बहुत कीन विनती मम पाहीं। भक्ति समेत नेक मद नाहीं॥
करि प्रणाम तिहिविनयपुरारी। विदा कीन करु जाय तयारी॥
तिहिते सकल सुरन कहँनाथा। देहु रजाय चलैं तव साथा॥
भले नाथ कहि कह्यो महेशा। सब कहँ देहु निदेश रमेशा॥
होय तयार न लावहिं बारा। चलैं गिरिशघरहितजिवनारा॥
तब सब सुरन बोलाय रमेशा। दीन सुनाय महेश निदेशा॥
सुनिसुर हरषि फूलझरि लाई। बाजनबाजक अधिक बजाई॥
भूषण बसन पहिरि सब देवा। आय करत शंकर पद सेवा॥
सजि बाहन रथनाग तुरंगा। चले सकलछबि धारिअनंगा॥
नाचैं तुरँग जायँ नभ काहीं। नभ छुइ कूदि परैंमहिमाहीं॥
बाजक बाजा विविध बजावैं। ताल थकिन सुरतुरँगनचावैं॥
यहिविधिसकलबरातीसजिसजिचलेगिरिशघरशिवशिवभजिभजि
दो० किन्नर गंधर्प अप्सरा प्रथम चले मुनिराय।
तिहिपाछे बाजक सकलबाजाविविधबजाय॥
सो० तासा ढोल मृदंग बीण पखावज शहनई।
सारंगी मुरचंग झांझ मँजीरा तबल मुख॥
हय गयंद पर होत नगारा। यहिविधि बाजन बजत अपारा॥
बनी बरात बरणि नहिंजाई। बर्णत शारद रहत चुपाई॥
बिमलसाजसजिशुचिझलकाई। अजचढ़िचलत भयोहुलसाई॥
साथलियेबहु सुभ समाजा। भूषण बसन नवीन बिराजा॥
सुभगबनावसाजि यमराजा। चल्योमहिषचढ़ि सहितसमाजा॥
संग महादल बरणि न जाई। मणियुत भूषण बसन सुहाई॥
प्रेत चढ़े नैऋत पति जाई। सहित समाज सुसाज बनाई॥

पुण्यमान जन लै बहु साथा। किहे बनाव जपत शशि माथा॥
बाहन मकर बरुण छबिधारी। सहित समाज जपतत्रिपुरारी॥
बहुबिधि भूषण बसन बनाई। जसछबि बन्यो न जातबताई॥
चल्योपवन बहु साज बनाई। भूषण बसन समनि अधिकाई॥
संग महादल सुछबि सुहाई। मृगचढ़ि चलतभयो बिलसाई॥
चल्यो कुबेर महाछबि छाई। चढ़ि पुष्पक शंकर पद ध्याई॥
बरणिसकै को तासु समाजा। शंभु मित्र सब धन को राजा॥
वृषभ चढ़े ईशान सिधारा। रूप अनूप शंभु अवतारा॥
शशि शशिरूप धरेशशिभाला। गौर बदन त्रय नेत्र बिशाला॥

दो० कनक तार मणि पट जटित तासु झूल झलकाय।
गज पर चढ़ि सुरपति चल्यो मनमहँशंभुमनाय॥

से० सुर दल संग अतीव भूषण बसन नवीन युत।
पुर शिविकापर जीव शोभाबनत न कहतसब॥

तबद्विजराज चल्योद्विजराजा। उडुगण युत भूषण सलमाजा॥
भूषण युत मृग रथ महँ साजे। सुभग किंकिणी घंट बिराजे॥
चल्यो भानु रथ अश्व जुताई। शोभा तासु सकै को गाई॥
शिवशिव जपत महातमहारी। जरतरोग जेहि ध्यानसम्हारी॥
तब हम चले अधिक हर्षाई। हंस साज बहु भांति बनाई॥
अरुणबरण सबबसनसुछाला। भूषण मणियुत कनकप्रवाला॥
वेदशास्त्र सब धरे शरीरा। सनकादिक सब मुनिगण धीरा॥
सकल प्रजापति रूपसवाँरे। मम सँग चले जपत शिवप्यारे॥
पुनिबनावकरिसबबिधिभारी। गरुड़ साज सजि चले मुरारी॥
बन्यो शरीर सुभगघनश्यामा। पहिरे रहत पीत पट जामा॥
असित केश घुघुवार सत्रेरे। श्याम कंज पर भवँर बसेरे॥
तिहिपरकनकमुकुटरविशाला। हलकत कुंडल कान बिशाला॥
भस्म त्रिपुण्ड्र ललाट सुहाई। तिहिपर मलय बिंदु छबिदाई॥
बन्यो भौंह जनु कौश अनंगा। धरत ध्यान सब पातक भंगा॥
अरुणकमलसम दृगयुतअंजन।सुछबिनिरखिलज्जितमृगखंजन॥
चितवनि सुभगहरतिदुखश्रोरी। सुवा मदन मद नासा छोरी॥

लजितपंचजन देखि कपोला । अधर लेत विद्रुम मद मोला ॥
मुक्तावलिजिमिद्विजसुखकारी । बीज अनारहिं करत अनारी ॥
दो० कंबु कंठ त्रय रेख तहँ कंठा समनि प्रवाल ।
कौस्तुभादि रुद्राक्ष युत बैजंती बनमाल ॥
सो० वृषभ कंध भुज चार करि करसम भूषणसहित ।
शोभित तहँ हथियार शंख चक्र पंकज गदा ॥
हृदयबिशाल उदरसुखमूला । नाभि गहिरि तहँ पंकज फूला ॥
कटि केहरिमहँ पीतपिछौरी । मुक्ता मणि गांछी चहुँ कोरी ॥
धोती पीत लाल ढिग भारी । ध्यान करत दुख देत बिदारी ॥
केदलीलजितजानुछबिदेखी । गुलुफ गोल अनमोल बिशेषी ॥
पदजलजात न जात बताई । मुनिमन भवँर रहत जहँछाई ॥
जाको ध्यान करत नितओरी । होत सुखित दुख बंधन छोरी ॥
तरवा लाल मनोरवि वाला । धरत ध्यान सुखकरत कमाला ॥
जटितनीलमणिकनकखराऊं । शोभा देत अधिक हरि पाऊं ॥
चलतभये इमि सगण रमेशा । करि बनाव बहु चढ़े खगेशा ॥
शिवहुसगणनिजकीनपयाना । भूषण बसन सजे बर नाना ॥
माथेमौर कनकमणि सोहत । तिहिभा कोटि भानुमनमोहत ॥
कुन्द इन्दुसम रूप बखानत । पुनि सकुचत कविउपमाठानत॥
कोटि कुंद कोटिन निशिकारी । जिहिबपुनिरखिजातबलिहारी ॥
कोटि काम जुरि बनै मयंका । शिवसमरूप कहत मन शंका ॥
हवै अदर्शित बाल पतंगा । कंबु कीर खंजन मुख खंगा ॥
मृगवृषपोल सिंह पशुजानी । कमलसकंटक पुनि बस प्रानी ॥
दाड़िम कदली कुंद प्रवाला । जम्बु बिम्ब ए जड़तरु माला ॥
निशिकरबढ़ै घटै प्रतिदिनदिन । पुनिसकलंक सतावतविरहिन ॥
दो० तिहिते उपमा सहित मैं कह्यों न शंकर काम ।
शंकर रूप अनूप है उपमा को नहिं काम ॥
सो० जिहि को रूप अनूप तिहि उपमा कहँ मिलिसकै ।
बर्णत श्रुति शिव रूप नेति नेति कहि चुपरहत ॥
गौर बदन षोड़श बय धारे । भाल बिशाल त्रिपुण्ड्र सवाँरे ॥

जटाबीच सुरसरित कलोला । मुसकी मंद लेत मन मोला ॥
तीन नेत्र सोहत युत अंजन । चितवनिकरत दास दुखभंजन ॥
माथे पर शशि बाल सुहाई । नीलकंठ छवि बरणि न जाई ॥
पहिरे सुभग पीत पट धोती । उभय ढिगन गांछी मणिमोती ॥
अरुण चरण सेवक दुखहारी । ध्यावतजाहि मिलतसुखभारी ॥
जिहिध्यावतहरिविधिसुरराई । पर गति कहब हवै जड़ताई ॥
पहिरे शंभु मनोहर पाऊं । मणि मय सुंदर कनक खराऊं ॥
वृषभ चढ़े शिव कीन पयाना । सहित स्वगण दल सुंदरबाना ॥
बिस्तर भय गण रूप न भाखा । शिव सम रूपसाजसबराखा ॥
चलत जानि शिवको सबदेवा । लागे करन सकल सुर सेवा ॥
बायें बिधि दहिने बनवारी । चले जात रुचि शंभु निहारी ॥
गज पर लिहे इंद्र कर छाता । करत शंभु पर आतप बाता ॥
कोउ लीन्हे कर चवर डुलावत । कोउ शंकर को पानखवावत ॥
कोउ लै छरीबिरद यश भाषत । कोउसुनियशहिप्रेमरसचाखत॥
कोउ करलिहे पीलको भाजन । शिवसेवत सोइहोतमहाजन ॥

दो० यहिविधि शंकर सुरन युत पहुंचे गिरिश दुवार ।
आगे ह्वै गिरि राज नमि बिनती कीन अपार ॥

सो० चौकी कनक धराय धोयो शिवके चरण गिरि ।
पाग शीश ते नाय गिरिपोंछ्यो शंकर चरण ॥

जेहि ध्यावत मुनिध्यानलगाई । सो प्रत्यक्ष धोवत गिरि राई ॥
गिरि समभाग्यवान मुनि कोहै । जो परेश सनबंध करी है ॥
ताही मिस हरि चरण मुनीशा । धोयो पोंछ्यो आपु गिरीशा ॥
तैसेन धात चरण गिरि राई । धोय पोंछिकै शीश चढ़ाई ॥
सकल सुरन पद गिरिसुत धोये । प्रीति समेत शम्भुसम जोये ॥
कनक सिंहासन मणियुततीने । बेदी मध्य धराय नबीने ॥
तेहिपर शिवहि प्रथम बैठारी । तेहि दक्षिण बैठे बनवारी ॥
बैठ्यो बायें धात सुआसन । निरखतजात शंभुको शासन ॥
तेहि गिरदा बैठे सुर झारी । यथा योग्य आसन अनुसारी ॥
सबको मान बहुतगिरि कीन्हा । बिनय दान सबहीको दीन्हा ॥

चतुर सुआर लगे जब परसन । सब रस मेघलगे जनुबरसन ॥
जल भाजन प्रथमहिं परसावा । तेहि पाछे पनवार धरावा ॥
कनक थार अरु कनककटोरन । परस्योव्यंजनगिरिशकिशोरन ॥
षट रस भोजन चतुर प्रकारा । परस्यो सबकहँगिरिशसुआरा ॥
व्यंजन बैदिक लौकिक जेते । चतुर सुआरन परस्यो तेते ॥
अगणित व्यंजन जाति सुहावा । बिस्तर भय कछुजातनगावा ॥

दो० उचित समय लखि मांगेहू भोजन नेग ममाथ ।
बहु धनदीन गिरीशतब निजकहँ मानिसनाथ ॥

सो० धनपति कोटि हजार जाकी इच्छा सों बनैं ।
ताको खेल बिचार मांगत धन गिरिराज सों ॥

तब सब शिवकी पाय रजाई । भोजन करन लगे सुर राई ॥
पंच कौल शिव अरपन करके । जेवन लगे आचमन करके ॥
गिरिपुर तिय सुर जेंवत जानी । लागीं गावन गारि सुबानी ॥
सुनि गारी सब हँसत सुरेशा । खात बिलम्बिहरष युतबेशा ॥
चितै हरिहि मुसकात महेशा । हँसत चितै बिधिओर रमेशा ॥
यहि बिधिहँसतपरस्परसुरमुनि । व्यंगवचनकोउकहतसुमनगुनि॥
कोउसुर गिरिवरभागिसिहाई । यहि सम भयोनकोउसुरराई ॥
सब सुर बिष्णुबिरंचि समेता । भोगत शंकर जासु निकेता ॥
बिधिसोंकहतबिष्णुमतमाहीं । आजु हिमंचल समकोउनाहीं ॥
जेहि घर शंकर पदको पानी । परयो ताहि को सकै बखानी ॥
जेहि अरपतमुनिभोग लगाई । सो प्रत्यक्ष गिरिघर महँ खाई ॥
जाको रूप वेद नहिं जानत । नेतिनेति कहि सदा बखानत ॥
सो प्रत्यक्षगिरिघर जिमिबारा । लीला करि जेंवत ज्यवनारा ॥
असकहि मगन भये बनवारी । सुनत मगनभे बिधिजगकारी ॥
पुलकित गातरोम भये ठाढ़े । नयनन मध्य प्रेम जल बाढ़े ॥
पुनि शिवशिवकहिधीरजलाई । भोजन करन लगे मुसकाई ॥

बिष्णु पद भजन गारी ।

गारी गावत सकल सुनारी । सुनहुमहेशरमेशसकलसुर गारी अधिकपियारी ॥ शंकर घर यकनारिसुंदरी सकल जक्तसेन्यारी ।

भक्ति नाम तेहिको श्रुति बरणै है सबको अधिकारी ॥ जो मांगै तेहि ताहिदेत शिव दूषण सकल बिसारी । जो रति करै ताहि सँग ताको करत महावृषधारी ॥ करि बिरंचि तेहिमहँ रतिसुख लहि भयो सकल जगकारी । अरु गहि ताहि सहित आदर भो जगपालकवनवारी ॥ इंद्रादिकसबदिग्पति तेहिगहि भयोसकल अधिकारी । रावण बाण ताहि गहिलहेऊ उभयलोकसुखभारी ॥ तेही नारिको आदर भारीकरै सुशिव हितकारी । भक्तिहीनतेहि को पशुमानौं नरमहँ नाहिं शुमारी ॥ निज पुरुषन हित हम तेहि मांगत देहु सदा त्रिपुरारी । शैवी सुनिबहु रीझिमनहिंमन शम्भु तथास्तु पुकारी ॥

दो० भोजन करि तब सकल सुर अँचयो पायो पान ।
जनवासे गवनत भये हृदय जपत वृषयान ॥

सो० शिवहु गये जनवास गणन सहित बहुसुखितमन ।
होनलग्यो सुहुलास नाचपेखना बिबिध बिधि ॥

कछुक बेरमहँ सब सुर जाती । करत भये बिश्राम बराती ॥
जागे सकल निशा अवसाना । लागे जपन नाम वृषयाना ॥
शौचक्रिया करिकरि असनाना । भस्मादिक धारे शिव बाना ॥
बिधिवत युत पूजी शिवलिंगा । पूजत जिहि सब पातकभंगा ॥
शिव पूजा करि मुनिनरनारी । करतल लहत पदारथ चारी ॥
लिंग पूजि शिवको सब देवा । पुनि उठि करत शम्भुपदसेवा ॥
कहत आजु पूजा फल पावा । जो प्रत्यक्ष शिवपद शिरनावा ॥
मुनितपकरतध्यान धरिदेखत । तहू प्रत्यक्ष न शिवपद पेखत ॥
यहिबिधि शिवपदमाथ नवाई । कीन प्रणाम बिष्णु पद जाई ॥
पुनि प्रणाम ब्रह्माके करि करि । कीनशृँगारहरष मनभरिभरि ॥
पुनि करिमज्जनबिधिहुरमेशा । पूज्यो सुख युत लिंगमहेशा ॥
पुनि प्रणाम शंकर पद कीन्हा । बिबिध भांतिवरआशिषलीन्हा ॥
गंधादिक सब अंग लगाई । भूषण बसन साजि सुर राई ॥
नाच करावत निजनिजथाना । बाजत बाजा अपर निशाना ॥
पुनि मज्जनकरि मैन अराती । भूषण बसन सज्यो बहुभांती ॥

सिंहासन मणि जटित सुहावा । तेहिपर बैठिहुकुम अस्लावा ॥
दो० सब सुर विष्णु बिरंचि युत ह्वै यकठे मम पास ।
करैं सभा बहु हरष युत होय चटक जनवास ॥
सो० करैं अप्सरा नाच गावैं गंध्रब हरष युत ।
उत्सव होवै सांच होय सुखित सब देवगण ॥
तब गिरिवर सुरजानि नहाई । रसघट बहु जनवास पठाई ॥
मोदमयी पकवान अनेका । मेवा युत बहु मिष्ठ मजेका ॥
प्रति सुरथानन दीन पठाई । लीन सुरन अतिशय हरषाई ॥
यदपिऋद्धि सिधिसकलभरैहै । तदपि दासता गिरिश करैहै ॥
करत हरषि रसपान कलेवा । करिकरि गिरिश बड़ाई देवा ॥
पुनिसजिसजि शिवसभामजाई । बैठतसकल शिवहिशिरनाई ॥
भये बिष्णु शिव सव्य बिहारी । बायें बैठत भे जगकारी ॥
पाछे इंद्र बैठि हरषाई । शिवहि खवावतपान सुहाई ॥
कोउ सुर लिहे चवर दुहुंओरा । कोउ छत्र युत हरष अथोरा ॥
कोउ सुर बदत बिरदहरषाई । कोउ कर लीन्हेंव्यजनडुलाई ॥
अप्सर गण लागींसब नाचन । बाजन सकल लगेतबबाजन ॥
गावत किन्नर गंध्रब हरषी । शिवहि रिझावतबहुगुलवरषी ॥
बहु बिधिउत्सव होत सुहावा । सुर मुनिहरष जातनहिंगावा ॥
तेहि अवसर मैनाक सुनामी । आय बिष्णु पद भयो प्रणामी ॥
हाथ जोरि बहुबिनय सुनावा । जयजयबम् बम् कहिहरषावा ॥
पाय रजाय माथ महि नाई । बोलत भयो प्रीति दिखराई ॥
नाथ साथ शिवके सब देवा । चलिये मम घर खान कलेवा ॥
यहौ चार होवै उत्सव युत । असकहिरह्योचुपायगिरिशसुत ॥
दो० सुनिमधुरिपु हरष्यो बहुत अद्भुत उत्सवजानि ।
ताहि बिदाकरि शंभुपद जाय धर्यो युग पानि ॥
सो० नाथ कलेवा हेत बोलन आवा गिरि तनय ।
चलौ चली वृषकेत गिरिघरमें उत्सव ठनै ॥
सुनि बोल्यो मुसकाय महेशा । सुरयुत होहु तयार रमेशा ॥
तब सब देवन बोलि मुरारी । कह्यो वेगि सब करहु तयारी ॥

शिवसँग चलहु कलेवा हेतू। सुनिसब अमरन हरषित चेतू॥
भूषण बसन साजि विधिनाना। चढ़िचढ़िवाहन कीन पयाना॥
बाजक सकल बजावत बाजा। अग्र चल्यो गन्धर्व समाजा॥
विधिहरिहर निजकीन तयारी। सजो सुभग महराज सवारी॥
गिरिश द्वार पहुंचे सुखधामा। आगे ह्वै गिरि कीन प्रणामा॥
चौकी कनक अनेक धराई। तेहि पर उतरे सब सुरराई॥
लै परात गिरि निजकर झारी। प्रथम शम्भुके पांय पखारी॥
पुनिहरिविधिके पद गिरिराई। धोय पोंछि निजमाथ चढ़ाई॥
गिरिवर भाग्य सिहायसराही। बरषैं फूल देव उरसाही॥
पुनि पर देवन पद गिरिवारन। धोयो करि बहु प्रेम पसारन॥
मड़ये तर धरि त्रय सिंहासन। मध्यभाग बैठ्यो वृषभासन॥
बायें विधि दहिने बनवारी। बैठत भे बहु रूप सवांरी॥
पीढ़ा कनक अनेक धराई। तिनपर बैठत भे सुरराई॥
परसन लाग्यो चतुर सुआरा। षटरस भोजन चतुर विधारा॥
जेवत नेग सदा शिव मांगो। दीन हिमंचल बहु अनुरागी॥
रंकहोत नृप जिहि करुणाई। तिहिधन मांगब चार बताई॥

दो० जेवत लखि तब सकल सुर पुरतिय गावतगारि।
अति विलम्बि सुरजेवहीं गारी लगति पियारि॥
करत ठठोली परस्पर सुरन कहत गिरिवार।
कृपासार बुधसार सुर धर्मसार जगसार॥

सो० कूटकाव्य बहु बोलि सुरन हँसावत गिरिशसुत।
सुरहु कहत बहुबोलि गिरिन तुसारतुसारकहि॥
भोजन सुख युत पाय अँचैपान पाये सकल।
गिरिसों पाय रजाय जनवासे गवनत भये॥

जनवासे पहुंचे सब देवा। करत जात शिवशंकर सेवा॥
शंकर कहा रमेश बुलाई। करहु सभा सबसुर यकठाई॥
शिवरजाय सुनिसकल सुरेशा। करि बनाव बहु उत्सव भेशा॥
आय सभा बैठे हरषाई। भूषण बसन विचित्र बनाई॥
मध्यसभा सिंहासन सोहत। जिहिभादेखिकोटिरबिमोहत॥

तेहिपर शिव बैठे हरषाई । महाराज सम रूप सुहाई ॥
दक्षिण हरि बायें जगकारी । पाछे इन्द्र महा छबि धारी ॥
अपरदेव सबनिजनिज आसन । बैठतभये सुमिरि वृषभासन ॥
कोउसुर शिवपर चवरडुलावत । कोउसुरशिवकहँपानखवावत ॥
कोउ सुरछिहे क्षत्रकर भारी । कोउशिवरुचिकोरहतनिहारी ॥
अप्सरगण नाचत करि केला । शिवहिंरिझावत करिबहुखेला ॥
तिहिअवसर गिरि भाटपठाई । सृष्टाचारक चार जनाई ॥
सुनि आगमन गिरीशन केरा । देवन मनभा हरष घनेरा ॥
बाजक अधिक बजायो बाजा । सुरनबनायो बिविधसमाजा ॥

दो० हिमगिरि सुरगिरिकनकगिरि मंदरादि गिरिराय ।
सृष्टाचारे को चल्यो भूषण बसन बनाय ॥

सो० हयगय बिविध बनाय शिविका रथ बाहनसजे ।
तिनपर चढ़ि गिरिराय चलतभयो जनवासको ॥

तुरँग नचावत छैल छबीले । साजे भूषण बसन नबीले ॥
बाजक वाजा बिविध बजावैं । नटी नागरी नाचत जावैं ॥
छरीदार बर बोलत आगे । भाषन बिरद भाट वर लागे ॥
यहिविधिहरषसहित गिरिराई । पहुंचि गये जनवास सुहाई ॥
बाहन त्यागि भये भुइगामी । मिले परस्पर गिरि सुरनामी ॥
उठि आसन दीन्ह्यो सबकाहू । विष्णुचरण परस्यो गिरिनाहू ॥
पुनि शंकरपद माथ नवाई । बैठत भयो रजायसु पाई ॥
होत परस्पर जग व्योहारा । गन्धादिक के चलत फुहारा ॥
बांट्यो पान हरष मेवायुत । लाग्यो होन परस्पर अस्तुत ॥
अप्सर गण नाचत छबि छाये । वरणत यश बहु भाट सुहाये ॥
गिरि कुँवरन सुरकरत ठठोली । देतगारि बहु गोलिन खोली ॥
तबहिं गर्ग गिरिराज पुरोहित । लाग्योपढ़नविनयअतिसोहित ॥

सवैयाछन्द ॥

नाथ कहैं बुधलोगन यद्यपि होत महासुख पुत्रके जाये ।
तद्यपिसोयहिअवसरमें लखिमोमतसों विपरीतसुहाये ॥
जोनहिंहोत सुतागिरिगेहमें क्योंबनती अ्रसबातबनाये ।

योगीकेध्यानमेंआवैं नहींतेहिहेत प्रत्यक्ष हरिउहरआये ॥
नाथ गिरीश गरै बहुलाजमें नेकन भै तुम्हरी पहुनाई ।
झूंठहिपांवपखारिकै भोजनदीन्हीन ढांखकेपातदेखाई ॥
आयेसबै सुरशम्भुकेसाथ बनीनतनी तिनकी सिवकाई ।
सोअपराध क्षमोक्षमकाथ भरोगिरिसाथ कृपा अधिकाई ॥
बोलिउठ्योविधिताप्रतिउत्तर है गिरिकीसबभांतिबड़ाई ।
जोसुखदेवलह्यो गिरिगेहमें सोनलह्यो कतहूं तनपाई ॥
भोजनस्वादकहे नसिरात न व्यंजनजाति गनेगनिजाई ।
सेवनभांतिकहांलौं कहौं जेहिकी बशह्वै सुरधाम भुलाई ॥
दो० यहिविधिविनतीपरस्पर भयो उभयदिशितात ।
नेगलह्यो नेगिन सकल बरणे नाहिं सिरात ॥
सो० तबह्वै बिदा गिरीश जात भये निज भवनको ।
सुखभा बिस्वाबीश सोसुखजात न तातकहि ॥
राति भये गिरि जेवनहेतू । लीन बुलाय सकल सुरकेतू ॥
पुनिहुं गिरिश ज्यवनारकरावा । प्रथमदिवस से द्विगुणितभावा ॥
पुनिबीत्योयहिविधिदिनतीनी । नितनित भै पहुनई नवीनी ॥
चौथेदिवस चतुरथी करमा । मुनिन करायो सकलअशरमा ॥
सोउदिनभा ज्यवनारअतीवा । दिनदिन बढ़त मोदको सीवा ॥
तेहिपरदिवस बिदा सुरमांगी । राख्यो गिरिवर बहुअनुरागी ॥
नितनितकरतअधिकसिवकाई । सुरनविदानहिंगिरिहि सुहाई ॥
तबगिरीशनिज निकटहँकारी । बहुबोधित करि कह्यो मुरारी ॥
शिव चाहत कैलास सिधावा । कहतनसकुचितोरलखिभावा ॥
सेवक सेवा बश त्रिपुरारी । दास सकुच राखत उरभारी ॥
निजरुचि तजत दासरुचिराखी । वेदपुराण संत सब साखी ॥
तेहिते शिवहि बिदा अबकरहू । मूरति तासु सदा उर धरहू ॥
भलेहिनाथकहि गिरि शिरनावा । बहुत उदासभयोगिरिरावा ॥
तबगिरिवर निजभवन सिधाई । मैना सों सबबात जनाई ॥
शिवकी अबतुम करहु बिदाई । बहुतभांतिम्वहिंविष्णुबुझाई ॥
तेहिते करब बिदा अब नीका । शिवरजाय सब धर्मकलीका ॥

दो० मैना सुनत उदास भै प्रेमवारि भरि नैन ।
तन पुलक्यो सूख्यो अधर मुखसोंउठतनबैन ॥
सो० बोधितकीनगिरेश उचितसमयनहिं दुखलखो ।
जानो शिवहि परेश तामूरति उरमें रखो ॥
तब मैना धरि धीर अपारा । लागी करन बिदा कर चारा ॥
तिहि अवसर शंकर सुरकेतू । बिदा हेत गे गिरिश निकेतू ॥
सजे रूप महराज समाना । थकत शेष जिहि करतबखाना ॥
मैना निरखि शंभु सुखकारी । गिरी चरण पर प्रेम सम्हारी ॥
पुलकिगात लोचनजलबहई । गदगद बचन शंभुसन कहई ॥
नारि सहजजड़ अज्ञकृपाला । तिहिपर पाहन पुनि नृपबाला ॥
प्रथम तुम्हार भेदनहिंजानी । नापित मुख सुनि निंदा ठानी ॥
लख्यों न तुम्हैं चराचर नाथा । सो अपराध क्षमौ शशि माथा ॥
लघुको चूक रूप श्रुति गावै । क्षमा रूप बड़ वेद बतावै ॥
करौ क्षमा मम चूक कृपाला । त्राहि त्राहि शरणागत पाला ॥
पुनि दूसर वर देहु गुसाईं । अब नहिं होउँ प्रथमकी नाईं ॥
माया तोरि महा बलवानी । अबन करैम्बहिंकबहुं दिवानी ॥
पुनि तीसर वर देहु दयाला । बहु शिशु अज्ञ हवै मम बाला ॥
जानत नहिं गृहकाज गुसाईं । सखिन मध्य खेलत अबताईं ॥
जो कछु चूक करै अज्ञाता । सो क्षमियो करि कृपा अघाता ॥
नारद सों सुनि सतीहवाला । रहत न मम चित चेत कृपाला ॥
नाथ क्षमब अपराध पुराका । तुम सर्वज्ञ सुधर्म पताका ॥
जो अब चूक करै बशमाया । तो क्षमियो प्रभु करि बहु दाया ॥
दो० नाथ उमा मम प्राण प्रिय क्षमब चूक यदि होय ।
असकहि शिव चरणनपरी दीनदीन जिमिरोय ॥
एवमस्तु शंकर कह्यो कीन्ह्यो बोध अनेक ।
अविनाशिनि तव कन्यका डरपौ अबनहिं नेक ॥
सो० तब मुनिवरन बुलाय मैना कीन्ह्यो चार सब ।
परछन चार कराय बिदाभयो शिव सासु सों ॥
स्वजन भजनकेहथात शंभुकरत लीलास्वमुनि ।

शिव के नात न ज्ञात भक्तिनात यक शिवरखै ॥
असकहि मगनभयोजगकारी। गदगद कंठ नयन बह्यो बारी ॥
पुनि धीरज धरि शंभु मनाई। लाग्यो कहन कथा सुखदाई ॥
बिदामांगि मुनिगे जब शंभू। मैना उर दुख भयो अदम्भू ॥
सूख्यो अधर जरयोसबगाता। धरनी उपर परी बिलखाता ॥
देखिहिमंचल प्रियहिउठावा। कहि पुराण इतिहास बुझावा ॥
अबहिं शोचकर अवसरनाहीं। धीरज धरहु समझि उर माहीं ॥
सुता बिदाकर साजहु साजू। अवसर उचित करहु सबकाजू ॥
सुनि मैना धीरज उरकीन्हा। अवसर उचित काज चितदीन्हा॥
बोलिलीन तब गिरिवररानी। विप्र बधू कुल बधू सयानी ॥
सबसों कह मैना शिरनाई। उमहिं पतिब्रत देहु सिखाई ॥
सुनिअसजरठ विप्रकुलनारी। बैठीं लै यकांत गिरिवारी ॥
सुनहुउमाहम असुसुनिपावा। तुम्हैं सकल सुर मातु बतावा ॥
शिव जगतात मात्तुममाता। विधि बश भयो सुताकर नाता ॥
तिहितेतुम्हैं सुमिरिजगनारी। होयँ पतिब्रत माहिं सुखारी ॥
तुम्हैंसिखाउबअनुचितमानी। जक्त हेतु कछु कहैं बखानी ॥
पुरुष हेतु बहु धर्म बिधाता। रच्यो देव अरु पित्र सुहाता ॥
तीरथ ब्रत मख होमसराधा। करत जाहि उपजत बहु बाधा ॥
नारिनपर करि दया बहूता। रच्यो तासु वृष सहज सुपूता ॥
पतिब्रतजो हठकरितियगहही। लहै पदारथ जो मन चहही ॥
देव पित्र पतिही को जानै। ईश्वर रूप पतिहि को मानै ॥
लखै सकल तीरथ पति चरणा। पतिसेवनसबब्रतश्रुतिबरणा ॥
पति निंदक बहु तपवृषधारिनि। होय सदा खरवा बिहारिनि ॥

दो० जगमें पतिब्रत चारि हैं तिन्हैं कहौं बिस्तारि।
तुम्हैंसुमिरि गति प्रथमकी लहैं सकलजगनारि ॥

सो० उत्तम मध्यम नीच लघु निकृष्ट ये श्रुति कहैं।
हैं सब जग के बीच प्रथम द्विती तव किंकरी ॥

उत्तम सदा रखैं मनमाहीं। आन पुरुष विधि बनयो नाहीं ॥
मध्यम परपतिकह असजाना। तात भ्रात अरु पुत्र समाना ॥

ये दुइ कलिमहँ होइहैं थोरी । जिन पर कृपा करो बरजोरी ॥
नीचस्वपतितजिम्राननगहही । कुलकीकानि समुझिमनरहही ॥
लघुबिन अवसर पतिब्रतधारैं । अरु निकृष्ट भयते मन मारैं ॥
इनहूं केर होय कल्याना । जो पतिकर नहिं करैं अमाना ॥
प्रथम दुतीया जो हम भाषा । मुक्तिखानितिनकोअभिलाषा ॥
पतिब्रत धारिण बहु वृषहीना । बर तपस्वि से लखो बलीना ॥
अब वरणौंकछु जग व्योहारा । जिहिविधिपतिब्रतकरतअचारा ॥
पति से ऊंचन बैठै कबहूं । यदपि कहैपति सकुचै तबहूं ॥
पति बाहेरसे जब गृह आवै । तुरत नारि गृह काज मिटावै ॥
माथ मूंदि पति आज्ञा धारै । अनुचितउचित न नेकसिहारै ॥
पतिआगे निज शीश न खोलैं । बोलकठोर नृपतिसों बोलैं ॥
पति जेंवाय पुनि जेंवैं आपू । करि सुख बात हरैं संतापू ॥
करैंसिंगार विविध निज तनमा । जेहिलखिहरषहोयपतिमनमा ॥
पति हरषन हित यतन सुठानै । कबहूं सकुच न पतिउरआनै ॥

दो० कहौं चतुर गुण नारिके जोहैं सुभग कुलीन ।
दुर्लभ हैं संसार में भाषत संत मतीन ॥

छंद सवैया ॥

कोप करैपति दासिबनै अरु सेजविषे गनिकामिस भावै ।
भोजन बेर बनै जननी बहु व्यंजन दैयुत मान खवावै ॥
जोपै कदाचि परै अपदाबनिकै मतिया शुभ मंत्र बतावै ।
श्रोरी कहै असनारि जहां सुख थानतहां बदिकैश्रुति गावै ॥

सो० जिहि घरमें असनारि तिहिघरकी शोभा कहत ।
लहत शेष श्रुति हारि नेतिनेतिकहि चुपरहत ॥

छन्द सवैया ॥

मूढ़ समूढ़ छली अकुली मति मंद गवाँर कुरूप कठोरा ।
दीन मलीन दयावृष हीन महातनक्षीन अधीन अजोरा ॥
रोग भरे पर नारि धरे बर क्रोध करे बकवाद अथोरा ॥
श्रोरी कहै इमहूंपति निंदि लहैतिय नरक विषेदुखघोरा ।

दो० निज पसुष को त्यागि के परसों राखैं हेत ।

जन्म कोटि बसि रवरवा दुखसों रहैं अचेत ॥
सो० पति वंचक जोनारि ताहि बादि ब्रह्मारची।
ओरीकहत पुकारि तिमिशिव निंदक पुरषको॥
नृप द्वारे मधु पान अथाई। जाय न नारि सुकारज पाई ॥
अरु उद्यान विषे रस रंगा। जायन नारि बिनापति संगा ॥
पति निंदक सुन्दर तिय कैसे। बहु फल विषे इंदोरन जैसे ॥
पति निंदक तिय जन्मै जहवां। विधवा होय युवा तन तहवां ॥
ऐसहि पुरुष शंभु अपमानी। होय रव रवा को अस्थानी ॥
पतिको दुष्ट कहै मन माहीं। गूंगी होय अपर तन माहीं ॥
पति जेंवाय पुनि जेंवै आपू। पति सुख लागि सहै संतापू ॥
असतियको श्रुतिसंत बखानत। लहैसकलसुखनिजमनमानत ॥
महा दुष्ट वै नारि भवानी। निजपतिबंचिपरहिरतिठानी ॥
वंचक पति जन्मै जहां जाई। चिह्न रहै तिहिके तन छाई ॥
होय कुरूप अंग कछु भंगा। विधवा होय लहतपति संगा ॥
जो कदाचि बैधव बचि जावै। तौ बांझिन ह्वैजन्म गवाँवै ॥
यहितन विधिवश जोपति सेवी। मिटै सोअघ पर तनमें देवी ॥
तदपि रहैतन चिह्न विशाला। एक दांत मुख भीतर काला ॥
दो० इमिहि सुनारि कुनारिके धर्म कहा समुझाय।
लखवन देवी ओरनिज जगहित कहा बनाय ॥
सो० सुमिरित नाम तुम्हार जो तिय पतिब्रतधारहीं।
तिन्हैं नहोय विकार सदा प्रीति पति पद रहै ॥
सुन गौरी मनमें मुसकाई। लज्जित ह्वैपुनि माथ नवाई ॥
तब सजाय शिविका गिरिराऊ। विदा करन हितकीनबनाऊ ॥
रवि भूषण षोड़श सिंगारू। सखिनसज्योसबकरिचितचारू ॥
शिविका बनति बरणि नहिं जाई। कोटिभानु समभा अधिकाई ॥
लागी मिलन उमा महतारी। मैना लाय लीन उर बारी ॥
छोंड़त पुनिहु लगावत छाती। बिरहबढ़ीनहिंबरनिसिराती ॥
मातु विरह बरनव बड़ि हानी। तिहिते मैं संक्षेप बखानी ॥
भामिनि अरु भ्रातन मिलि देवी। पितुपदलागिमिलीजगसेवी ॥

पुनि पुरनारिन मिलिहु भवानी । पुनि जननी उरमें लपटानी ॥
पुरनरनारिन बरबस छुटवाई । शिविका ऊपर दीन चढ़ाई ॥
शिविका अपर बने बहु भारी । तिहिचढ़िचलत भईबहुदासी ॥
बड़ी भाग्य तिन केरि रमाहै । जिन्हैं लीननिज साथ उमाहै ॥
शिविका उठत लुटायो जस धन । बरणिसकतनहिंतससहसानन॥
लखि बकसीससमय कहैओरी । लीजै मातु नेक सुधिमोरी ॥
उठी पालकी गइ जनवासे । निरखि बराती भयो हुलासे ॥
विश्वादिक सब कीन प्रनामा । प्रथक प्रथकलैलै निजनामा ॥
तब हरि सब नेगिन बुलवाई । कीन अयाचक द्रव्य लुटाई ॥
कीन बरात पयान सुहाई । बाजक बाजा विविध बजाई ॥

दो० ऐरावत सजि हरि चल्यो साजिहंस जगकार ।
गरुड़साजिश्रीपतिचल्योसुमिरिमनहित्रिपुरार ॥

सो० शिवहुस्वकीन पयानसाजिवृषभ निजगणयुत ।
चले संग हिमवान पहुंचावन सत सुतन युत ॥

तब निज गरुड़ रोंकि बनवारी । गिरिवरसनबोल्योसुखकारी॥
जाहु लौटि बहु दूरिहि आयो । नहिंलौटवगिरिपतिकोभायो ॥
लौटत नहीं कह्यो बहु बारी । देखि प्रेम हरषाय मुरारी ॥
शिवसों कहा दोऊ कर जोरी । सुनहुनाथ विनती यक मोरी ॥
प्रभु पहुंचावन गिरिवर आवत । प्रेमविवश लौटबनहिंभावत ॥
बार बार निरखत पद बारिज । निजमुखविदा करहुप्रभुआरिज
सुनिहरि वच मुसकयाय पुरारी । गिरिपतिसोंमृदुबचनउचारी ॥
आयहु दूरि जाहु अवगेहू । भूलव हमैं न राखव नेहू ॥
उचित समय नहिं कीजै मोहू । बालक जानि तजबजनिछोहू ॥
हँसे मनहिं मन हरिहु विधाता । बालकबनत सकलजगताता ॥
सुनि गिरि वर शंकर की बानी । ठाढ़ भयो जोरि युगपानी ॥
परयो दंड इव वृषके चरणा । बोलत त्राहि त्राहिहौंशरणा ॥
प्रथम चूक कीन्हों अनजानी । तव मायाबशसुमति भुलानी ॥
अब जान्यों प्रभुकी प्रभुताई । हरि विधिकरतजासुशिवकाई ॥
तुमनिरगुण सरगुण तन धारा । तुमसे प्रकट सकल संसारा ॥

हरि विधितव अंशजश्रुतिगावत । तवगुणकहि श्रुतिपारनपावत ॥
माया तोरि बहुत बलवानी । जो सबकी बुधिकरत अयानी ॥
ज्यहि परतव करुणा मदनारी । तेहि माया नहिं करतअनारी ॥

छन्द ॥

अबनाथ हमवर मांगहीं करि करुण दृष्टिहि देखहू ।
अपराध चूक क्षमापना करि आपनो करि लेखहू ॥
जब तक रहैं जग बीच पुनिपर जन्म जहँजहँऔतरैं ।
तहँ शंभु तवपद भक्तितजि परकामना नहिं चितधरैं ॥
दो० एव मस्तु शंकर कह्यो करि गिरिवरहि हुलास ।
बिदा कीन तेहि भवन को आपु चल्यो कैलास ॥
सो० तबगिरि दोउ करजोरि चरण कमल हरिके छुयो ।
बिधिसों बहुत निहारि कीन प्रणाम सुदासवत ॥

सुरपति युत सब सुरन प्रणामा । करिद्वैबिदाचल्योनिजधामा ॥
आय भवन सब करिकुल चारू । कीनबिदा सबसरितपहारू ॥
इहां शंभु पहुंचे कैलासा । सुरनसहितबहुकरतहुलासा ॥
बाजक अधिक बजायो बाजा ।पहुंचबजानिस्वगिरिमहराजा ॥
परछन चार मुनीश करावा । दान मान सब याचकपावा ॥
तब ज्योंनार भयो बहुभांती । जेंवत भे हरषाय बराती ॥
तब सब सुरन परे हरि चरणा । निजअभिलाषकह्यो द्विशरणा ॥
नाथ कृपा लखि शंभु बिवाहा । पायो सकल जन्मको लाहा ॥
पर अभिलाष सुनो परमेशा । तव सेवा बश हवै महेशा ॥
करहु शंभु अभिषेक मुरारी । शिव गौरी यक थल बैठारी ॥
जो रीझै शंकर लखि भरणा । तव मागैं वर तारक मरणा ॥
यहौ सुसुख भरि नयन निहारी । तव निज घरनचलैंबनवारी ॥
सुनि अस बिनय सुरनकी रंगा । निजहुकरी अभिलाषअभंगा ॥
हाथ जोरि महि माथ नवाई । शिव सन कह्योरजायसुपाई ॥
अस अभिलाष सुरन मनआई । करैं नाथ अभिषेक सुहाई ॥
शिव गौरी बैठैं यक आसन । सकल देव पूजैं वृषभासन ॥
दो० कह्यो शंभ मुसक्यायतव जस रुचि होय तुम्हारि ।

कीजे निजमनरुचित सब मुहिंसुचितोरिपियारि ॥

सो० सुनि अस शंकर बैन रमानाथ सब सुरन युत।
करि मनमें बहु चैन जोरन लाग्यो वस्तु सब ॥

तीरथ जल सब लीन मंगाई। मंगल वस्तु करी यक ठाई ॥
लेपादिक गंधादिक नाना। जोरेउ बहुत न जातबखाना ॥
कंजकनक करवीर सुहावा। मंदा रादिक पुहुप मँगावा ॥
बेल पत्र तुलसी दल पाना। दधि अरु दुर्ब अनेकबिधाना ॥
रोम पाट पट बसन बिचित्रा। अरु मिष्ठान्न अनेक पवित्रा ॥
भूषण सकल कनक मणि केरे। जोर्‍यो सुरन बिष्णु के प्रेरे ॥
तब शिवको असनान कराई। मणि सिंहासन पर बैठाई ॥
मज्जन करि जग मातु भवानी। वाम भाग बैठी शिव रानी ॥
प्रथम रमा युत नाथ रमेशा। पूज्यो गौरी सहित महेशा ॥
रमानाथ निज पीत पिछौरी। पोंछत भयो चरण शिवगौरी ॥
पंचा मृत चर्णन पर नाई। बार बार बहु भक्ति दिखाई ॥
पुनिलेपादि सुगंध लगावा। पुष्प माल उरमें पहिरावा ॥
भक्ति सहित मिष्टान्न जेंवाई। पुनि अचमन करिपानखवाई ॥
धूप दीप कीन्हों बहु बारी। चौदह बिधि आरती उतारी ॥
करि जप पंचाक्षर त्रय माला। पाठ किह्यो श्रुतिसारबिशाला ॥
पुनिकरजोरिशुभास्तुति ठानी। जय महेश जय औघड़ दानी ॥

छन्द ॥

श्रुति संत सरोजहिभानुतुम्हीं। कुमुदीजनको शशिमानतुम्हीं ॥
खल बन हेत कृशान तुम्हीं। जनचात्रिकको नयसानतुम्हीं ॥
तव भक्ति विना सुखना सपने। हम दीख बिचारिहृदय अपने ॥
जेहि ऊपर नेक कृपा तुम्हरी। तेहिकी बिगरी सगरी सुधरी ॥
कपि कुक्कुट तारि दई तुमहीं। गति सोमिनि नारिदईतुमहीं ॥
सुत दीक्षित पाप न जात कहे। तेहिको क्षणमें सब पाप दहे ॥
तेहिते तव शरणहि आय परे। अब राखिले राखिले शंभुहरे ॥
सब देव सतावत तार कहै। तजिके तुमताहिन मार कहै ॥
सबरै अतहै सुलतान तुम्हीं। सब याचक है यजमानतुम्हीं ॥

सबसेवक सेव्य प्रमाणतुम्हीं। निजबोरिहिकोसुखखानतुम्हीं॥
दो० अस सुनि बिनती विष्णकी ह्वै प्रसन्न मद नारि।
कह्यो मांगु बर मन रुचित देवै बिनहिसिहारि॥
सो० तुम सम परम पियार मोहिं बदतइमिवेद हरि।
तेहि पर परउपकार बसत हृदयतवममरुचित॥
सुनि अस शंभु बचन बनवारी। मांग्यो प्रथमभक्ति अविकारी॥
माया रहित भक्ति दुखदावनि। प्रथमदेहुमोहिंसो अनपावनि॥
विन शिव भक्ति महानृप कैसे। बिधवा तिय भूषणयुत जैसे॥
तेहिते तव पद पदुम सनेहू। घटै कबहुं नहिं अस बर देहू॥
बर दूसर दीजै महराजा। मारु तारुका सुर सुर काजा॥
तब सुत हाथ बधन तेहिहोई। करि सुत हनौ वेगिप्रभुसोई॥
अस सुनि बिनयरमापतिकेरी। एव मस्तु बोल्यो सुख ढेरी॥
तव पूज्यो करि भक्तिबिधाता। सुरा समेत परम हरषाता॥
षोड़श बिधि पज्योकरि भक्ती। बहुत रिझावतभे शिव शक्ती॥
आयसु लै मांग्यो बरदाना। प्रथमभक्तिमोहिं देहु सुजाना॥
बिनशिव भक्तिहवै कसपंडित। बहु सुंदर तन नासा खंडित॥
तेहिते प्रथम भक्ति निज दीजै। पुनि दूसर बध असुर करीजै॥
एव मस्तु तब शंकर भाषा। पूरकीन बिधिकी अभिलाषा॥
पुनि पूज्यो मेघवा करि प्रीती। शची समेत सुसेवक रीती॥
उक्ति भांति बहु भक्ति जनाई। पूजनकरि बहु अस्तुति गाई॥
लीन उभय बरपाय रजाई। प्रथम भक्ति पुनि देव रिहाई॥
बिनशिवभक्ति धनीकस लेखो। बिनाशुंड़िकरजिमिगजदेखो॥
एवमस्तु भाष्यो तब शंकर। कीन्ह्यों दूरि सुरेश भयंकर॥
दो० पुनि सबदिक्पति पूजिहू प्रथकप्रथक सुखराशि।
मांगेहु प्रथमहि भक्तिबर दूसर तारक नाशि॥
सो० पुनिपूज्योदिननाथ पुनिनिशिकर युवतिनसहित।
लै बरभयो सनाथ भक्ति अपर तारुक बधन॥
पुनि पूज्यो अप्सर गन्धर्वा। किन्नरादि यक्षादिक सर्वा॥
पुनि शेषादिक नाग अनेका। पूजा कीन्ह्यों सहित बिवेका॥

देवजाति जहँ लग तहँ रहेऊ । प्रीति सहित सबपूजत भयऊ ॥
सकल भक्तिबर पाय अघाई । भूमि अकाश बम्म रव छाई ॥
नाचत गावत प्रफुल्लित देवा । बर्षत फूल जनावत सेवा ॥
तब सबको करि बिदा पुरारी । सबहीं सों मृदुगिरा उचारी ॥
जाव सुषेण रहौ घरजाई । हमहैं तुम्हरे सदा सहाई ॥
राखेहु सदा चरण ममध्याना । करब सदा तुम्हरो कल्याना ॥
असमुनि सकलदेव मुनिझारी । चलतभये जयजयति पुकारी ॥
पहुंचे निज निज घर सबदेवा । लागे करन सदा शिव सेवा ॥
सुनु मुनीश शिवकी यह बानी । दीन हेत प्रभु औघड़दानी ॥
सब पाछे मुहिं हरिहि बुलाई । उभय पीठपर स्वकरफिराई ॥
कीन्ह्यों बहुत दयालखि दासा । कह्योजाहुअबनिजनिजबासा ॥
तुमसे अपर न प्रिय ममकोऊ । हरिविधिमम अंशजतुमदोऊ ॥
तुम अरु ममसे नेक न भेदा । वाक्य अर्थसम गावत वेदा ॥
जाहु सदा सुमिरत मुहिंरहेऊ । लिह्योसोईफलजो मनचहेऊ ॥
सुनहुरमा शिव समको स्वामी । जेहिपर कृपाकरै सोइनामी ॥
करि अस्तुति बहुप्रेम प्रणामा । ह्वै ह्वै बिदा चले निज धामा ॥

दो० शिव मूरति उर राखिकै ध्यान हेत कधिजात ।
तुम्हैं सहित बैकुण्ठहम पहुंचे बहु हरषात ॥
सो० सुरा सहितगे धात सत्यलोक आनंदमय ।
सुमिरत तहँ दिन रात गौरीशंकर के चरण ॥

कहत इमिहिभे मगन बिहारी । तनपुलकि तउरगदगदभारी ॥
कछुक बेर बीत्यो यहि ढैना । शिवशिवसुमिरिउघार्‌योनैना ॥
लखि अभिलाष रमा प्रभुभारी । कहनलगे शुभ सुयश पुरारी ॥
जबसे शंभु ब्याहि घरआयो । गिरिपरसबसुखसंपतिछायो ॥
सतीमरे कछु रहे उदासी । सोदलिकला नवीन प्रकाशी ॥
फूलत फलत भये सब तरुवर । अमल नीरभे सरितसरोवर ॥
गिरि ऊपर बहु मणि प्रकटानी । कामधेनु बहु प्रकटिदिखानी ॥
सहज बैर त्यागेहु पशु पच्छी । यकसंगचरत सिंहअरुवच्छी ॥
गननदशा नहिं जाति बताई । प्रफुल्लित फिरत महासुखपाई ॥

फूल्यो बहुत विपिन मंदारा । जहँ नित शंकर करतविहारा ॥
यहिविधिबहुतदिवसचलिगयऊ । नितनितहोत सुमंगलनयऊ ॥
प्रकटभयोतब षड़मुखशिवसुत । करत बहुतलीला सुखअद्भुत ॥
उत्सव भयो न जात बखानी । हर्षित भे शिवशंभु भवानी ॥
जन्मतहीं तरुकासुर मारेउ । सकल सुरनको कष्टनिवारेउ ॥
सुरन उपर करि बहु करुणाई । असुरमारि सुरविपतिनशाई ॥
बर्षिफूल सुर पदशिर राखी । निजनिजभवनबसेजयभाषी ॥

दो० षटमुख महिमा तेज यश बरणयो बहुत मुनीन ।
तेहिते मैं संक्षेप कहि निजमन पूरण कीन ॥
जो सुनि है संसारमा प्रेम सहित चितलाय ।
तेहिपर हरिहर करिकृपा देहैं विपति नशाय ॥
सो० अमी सरिस यह गाथ सुनि आनँद नारद भये ।
पिता चरण धरिमाथ कीन्ह्यो बहुविधि दण्डवत ॥
सुनि यहकथा रसाल बहु प्रसन्न जगमातु भै ।
पुनि पुनि भई निहाल बहुतनई भरता चरण ॥

कह्यो विष्णु सुनु सिंधुकुमारी । अपरनकोउ शिवसमहितकारी ॥
यद्यपि रही ब्याह रुचि नाहीं । लखिसुरबूड़त पकरयोबाहीं ॥
मोपर करत सनेह विशेषी । राखतमान मोर निजलेषी ॥
मोरे मन जसहै बिश्वासा । तसमम कहाकरतलखिदासा ॥
असकहि मगन भये बनवारी । देह गेहकी सुरति बिसारी ॥
कछुक बेरमहँ करि चितचेत । लागे जपन नाम वृषकेतू ॥
लखि असप्रेम विष्णु जगमाई । जोरि युगुलकर माथ नवाई ॥
नाथ एक शंका मनमोरे । सो छूटहि करुणा बश तोरे ॥
यश तव प्रेम शंभु पदमाहीं । देखत बनत कहत प्रभुनाहीं ॥
श्रुतिशारद वरणत थकिजाई । शेष सहस मुख सकैं नगाई ॥
असु तव जनन लखे संसारा । बसु कलिमें तिनकोअधिकारा ॥
निन्दत शिवहि किहे हठभारी । बनेदास तुम्हरे बनवारी ॥
माला तिलक पितम्बर धारी । पूजत शालिग्राम सम्हारी ॥
निन्दत शिवहि कौनमतलाई । ज्यहि तव इष्टकहै श्रुति गाई ॥

तिनकीहै यह कौन भलापन । निन्दतजेहि पूजत प्रभु आपन ॥
जक्तनाथ ममनाथ मुरारी । कहि यहि वृत्तहरो भूमभारी ॥
दो० सुनतरमाको प्रश्नइमि शिवशिव कहि हरिनाथ ।
कह्यो मोरजनहोय किमि जो निन्दत शशिमाथ ॥
सो० जैसि ढिठाई आज किह्योकिह्योनहिं कबहु प्रिय ।
दिह्योमोहिं बहुलाज शिवनिंदक कहि मोरजन ।
शिव निंदक मुख देखै जोई । गो वध सरिस पाप तिहिहोई ॥
करत जोई शंकर अपमाना । लखो ताहि मम शत्रु समाना ॥
सकुचि रमा दूनौं करजोरी । नाथ चूक मेटौ अब मोरी ॥
बिनजाने इमिकिह्योंढिठाई । तुम सर्वज्ञ करहु क्षमताई ॥
पर कलिमें जगमें बहु देखा । सुंदर धरे विष्णु जनु वेषा ॥
निंदत शिवहि महा हरषाई । सिखवत परहु सुज्ञान लखाई ॥
तिनकीवृत्त नाथ नहिं जानौ । किहि अनुचर किहिकिंकरमानौ ॥
नाथमोहिंलखि अज्ञस्वदासी । तिनकी वृत्त कहौ अविनासी ॥
रमहिमोहबशलखिबनवारी । कहनलग्यो शुभ कथा बिचारी ॥
यहैप्रश्न विधिसौं मुनिकीन्हा । लखि सुतमोह बोधविधिदीन्हा ॥
जोइमुनिसौं बरणत जगकारी । सोइ रमासन कहत मुरारी ॥
मुनिपुलस्त्यविधिकोसुतजोई । विश्वेश्रवा तासु सुत होई ॥
ता सुत भा रावण बलवाना । बीस बाहु दश माथ बखाना ॥
सो निश्चर पति भा लंकेशा । जाको चरित विदित सबदेशा ॥
जानतसकलदेश तिहिकरनी । तिहिते मैं संक्षेपहि बरनी ॥
तासु तनय सुरपतिकोजीता । जीति सकलसुर भयो अभीता ॥
दो० करत पाप संताप बहु गो द्विज सुर के साथ ।
जहँ सबपै तहँ एक गुण करतभक्ति शशिमाथ ॥
सो० जाके शंभु अधार तासु पाप का करि सकै ।
भजन शंभु अंगार पाप तूल के ढेर हित ॥
एक समय रावण बलवाना । देखन चह्यो सकल सुरथाना ॥
इंद्रपुरी प्रथमहिं सो गयऊ । ठौर ठौर सब देखत भयऊ ॥
पुनि यमराज पुरीमहँ आवा । शमन गणन सब सैर करावा ॥

नर्क कुण्ड तहँवाँ दश शीशा । निरखत भयो आठ अरु बीसा ॥
भगो नर्क घोरा तिहि माहीं । बज्र बजात कीरा तिहिमाहीं ॥
वहपापी तिहिमा चिग्घारत । कौवा टोंट शीश पर मारत ॥
सो लखि रावण बहुभयपाई । शमन गणन पूंछ्यो फुसलाई ॥
करनी कौनकिहे हियआवत । करहु न बैर वृत्त यहि गावत ॥
शमनगणन तबकहसमुझाई । सुनहु वृत्त यहि निश्चर राई ॥
करै पाप द्विज धेनु सतावै । पर अपकार बिषे मनलावै ॥
ह्वै कामी पर नारि हरैया । हरै विप्र धन करि चतुरैया ॥
तजिनिजनारिपरहिमनलावै । सो यहि कुंडबिषे खल आवै ॥
निंदहि सर सुरभाग छड़ावै । धेनु भाग सूकरहि खवावै ॥
निज स्वारथहित झूठबखानै । पर अकाजलगि सुजतन ठानै ॥
निजहिबलीलखिअबलनशावै । कारण रहित सुक्रोध बढ़ावै ॥
पित्र छियाह करै निजसूना । तिन्हिखलको यहिमादुखदूना ॥
श्रुति मारगतजि चलै कुपंथा । क्रोध करै साधै मन मंथा ॥
बेल काटि रूंधै फुलवाई । सो यहि मांझ सहै दुख आई ॥

दो० यहि मिस करणी जो करै सो यहि कुंडहिआय ।
करतभोग चिघरत सदा कागकिर्म तिहिखाय ॥

सो० यह सुनिकै दश शीश बहुत बिचारेहु निजमनहिं ।
लख्यो सुविस्वा बीस निज पुर में करणी यहै ॥

तबबिचारकीन्ह्यों मनमाहीं । लेउं पटाय सकल क्षण माहीं ॥
लीन्ह्यो निजसेवकन बुलाई । कह्यो बेगि यहि लेउ पटाई ॥
सुनिआयसुनिश्चरपतिनिश्चर । लागे पाटन खरव कंदर ॥
गिरितरुभरि डारयोबहुमाटी । लीन्ह्यो बीस कुंड तिन पाटी ॥
देखि उपद्रव यम भय पाई । पुर बैकुंठ जाय गुहराई ॥
त्राहित्राहिकहिअस्तुतिगाई । होहु रमापति बेगि सहाई ॥
नाथनिशाचरपति रिसवाई । लेत खरवा कुण्ड पटाई ॥
बीस कुंड सो लीन पटाई । रहे आठ सोउ रहन न पाई ॥
तजि प्रभुकोतिहिरोकनहारा । राखु मोहिं करि कृपा अपारा ॥
तबहँसिकह्योविष्णुमहराजा । महा प्रबल शिव अज्ञा बिराजा ॥

शिवशिवजपेकुशलजितहोई। जानित तुम तिहि दीन भुलोई॥
अबहमजतन कहैं सोकीजे। ह्वै अधीन शिव पर चित दीजे॥
निश्चरपतिअबहींनहिंमरिहै। हठ बश हमरो कहा न करिहै॥
एक तौ हवै महाबल धारे। दूजे शंभु तासु रखवारे॥
ब्रह्मा दीन ताहि वरदाना। नरके कर तिहि को बध ठाना॥
यहिते हम मानुषतन धरिबै। विपिनमांझ शिवकी तपकरिबै॥
शिवरिझाय तिहिपक्षकड़ाई। लै वर बाण हनब तिहि जाई॥
तिहिते लै तुमसोखहमारी। करहु काज निज जन बिचारी॥
दो० बिनय करो तेहि जोरि कर जानि कुशल यहिमाहिं।
तुम्हरे पुर परिवार के मम पुर ऐहैं नाहिं॥
सो० लखिके सबल अरात बिनय सहित तेहि टारिये।
पुनि तहँ झूंठिन बात शैव हेत नहिं यमपुरी॥
दनुज बिशेषि शैव बर होवैं। सपन्यों शैव न यमपुर जोवैं॥
बिष्णु बात सुनिके यम राई। आय रावणहिं बिनय सुनाई॥
नाथ रवरवा कुण्ड न पाटो। अघित हेत नहिं दंड उचाटो॥
उयहिकरणो यम कुण्डबिहारी। सो मम पुरमें है अधिकारी॥
तेहि कारण हमयाहि पटाइत। निजपुरवासिनदुःखमिटाइत॥
नाथ सुरासुरदोउ शिव दासा। शिवजन लेत न यमपुर बासा॥
कैस्यो शैव होय अघ कारी। शंभुनाम अघ बिपिन कुठारी॥
तेहिते यह हम करितकरारा। हियां न ऐहै तव परिवारा॥
यह सुनि रावणकीनक्षमापन। हरषि दीन सब सेवक आपन॥
यहिविधिआठकुण्डरहिगयऊ। बीस पटे नहिं पुनिसो भयऊ॥
तबतेबहुत काल चलि गयऊ। कोउन कबौं निरय थल गयऊ॥
कमिया सकल रव रवा केरे। कृमि कागादि क्षुधाके प्रेरे॥
यम राजहि बहु रोय सुनाई। अघी न आवत का हम खाई॥
तब यमराजदोख धरिध्याना। शंभु नाम अघ तूल कृशाना॥
तबनिजमनयमराजबिचारी। गे बैकुण्ठ जहां बनवारी॥
ठाढ़ भये दोनों कर जोरी। करवत कोन प्रणाम निहोरी॥
दो० पुनि लाग्यो अस्तुति करन कहि जय जय जगदीश।

जगपति रमानिवास प्रभु जयजय मुनि सुर शीश ॥

सवैयाछन्द ॥

जय अबिनाशी। घटघट बासी ॥ जय वृषसेतू। खगपति केतू ॥
लक्षिमी नायक। जगसुखदायक। सर्बसहायक। तुमसबलायक॥
ह्वै अवतारी। जक्त बिहारी ॥ करततमाशा। स्वमनप्रकाशा ॥
मच्छ तनधारी। बेद उबारी ॥ कच्छपरूपा। धरि सुर भूपा ॥
कधिमथिडारा। रत्ननिकारा ॥ किड़अवतारा। दिति सुतमारा॥
नरहरिभयऊ। जनसुखदयऊ ॥ धरितनबावन। सुरपतिआवन ॥
छलिबलिराजा। करिसुरकाजा ॥ ह्वै प्रसरामा। द्विजवर धामा ॥
अछलअदम्भू। करितप शम्भू ॥ शिवहि रिझाई। बलवरपाई ॥
खलनृपमारी। स्वजनउबारी ॥ क्षितिलैलीना। द्विजनकदीना ॥
ह्वै रघुनायक। लैधनुशायक ॥ मुनिमखराखी। सबजगसाखी ॥
बहुखलमारी। मुनितियतारी ॥ सिया बिवाही। ह्वै उत्साही ॥
तबमनभावा। बनहिसिधावा ॥ करितप शंकर। लैबर सरवर ॥
जतनसमेता। करिकधि सेता ॥ बनै शिवाला। थापिमभाला ॥
रावण मारी। देव उबारी ॥ तब सुरहरषे। बहुगुल बरषे ॥
ह्वै यदुवंशी। लै मुख वंशी ॥ करि बहुलीला। गोपिन मीला ॥
पुनिह्वै बोधा। यमनन बोधा ॥ करिश्रुतिनिंदा। यमननछिंदा ॥
ह्वै पुनि पापी। आपहिआपी ॥ श्रुतिमहँभाषा। गोयन राखा ॥
पुनिकलिअंता। तुमश्रीकंता ॥ कलकी रूपा। ह्वै द्विज भूपा ॥
खलगनमरिहौ। सुजनउबरिहौ॥ अबहमशरणा। करुप्रभुकरुणा ॥
तुमप्रभुस्वामी। मैंअनुगामी ॥ रखु मरयादू। सुनि फिरियादू ॥

दो० इमि विनती सुनि शमन की ह्वै प्रसन्न सुख सिंधु।
कह्यो माँगु यमराज बर लखिमुहिं आरत बंधु ॥

सो० कहौ वृत्त निज खोलि कौन कष्ट तुमको पर्यो।
राखहुकछुक न गोलि सकल बांछित देब हम ॥

तब करजोरि कह्यो यमराई। विनती मोरि सुनहु जग सांई ॥
निरय कुण्ड जोबसु अरुबीसा। बीस तहां खोयो दश शीसा ॥
रहे आठ सोउ जात सुखाई। बिना अघीरहि कौन भलाई ॥

कमियासकलमरततेहिभूखन। मम ढिग आय देत सबदूखन॥
सुरन जात तहँ प्रभु करुणाई। असुरन रावण लीन बचाई॥
नरहु पाप सब डारत जारी। एक बार शिव नाम पुकारी॥
एकहु बार कहत शिव जोई। देत जन्म शत पातक खोई॥
मम गणबांधतलखिअघजाको। शिव गण छीनिलेत झटताको॥
तासु पाप बहु मम गण भाषत। शिवगणनेकनसो उरराखत॥
कहत कहे शिव पाप कहाहै। शिव भाषो परताप कहाहै॥
ममगण फिरतबहुत खिसयाई। ममढिगआवत मुहँलटकाई॥
सुनि यम बचन हँस्यो बनवारी। कह्योइमिहि हैनाम पुरारी॥
शिवके कहत होत अघ छारा। दीपक यथा तूल अंबारा॥
भूल्यो कहत शंभुको नामा। दासी बनत मुक्तितिहिधामा॥
सोमिनि नारि कथा तुमजानी। व्याधि किरातभयेसुखखानी॥
गुणनिधि यथा लह्यो सुखसारा। सोतुम जानत सबव्योहारा॥

दो० शंभुनाम महिमा कहत सकुचत शारद शेश।
श्रुतिहुनेति कहिचुपरहत यमसों कह्योरमेश॥

सो० जाहु शमन निज धाम कहरमेश बहु बोधदै।
करब तुम्हारो काम जो सहाय शंकर करै॥

हमरे शंकर नाम अधारा। तिहि बलपालित सबसंसारा॥
तुमहूं जाय जपो शिव नामा। तिहिते होय सकलतवकामा॥
अस कहि बिदाकीन यमराजा। पुनिमनहमचिन्त्योयमकाजा॥
अस्मरि मुण्डी गणन बुलावा। त्रिपुरहेतुजिहि प्रथमबनावा॥
तुरतसोगणपहुंच्यो तिहिठामा। ममपद वारिज कीन प्रणामा॥
अस सुनि लक्ष्मी दुहुंकरजोरी। हरिसोंपूंछ्यो बहुतनिहोरी॥
विधि सों नारद माथ नवाई। निज शंकायुत विनयसुनाई॥
नाथ कहो मुण्डी गण कोहै। त्रिपुर कौन जिहिहेतबन्योहै॥
त्रिपुर कथा विस्तर युत भाखो। दास मानि कछु गोयनराखो॥
जानि परत शंकर तिहि मारी। तिहिते नाम पर्‌यो त्रिपुरारी॥
सुनि अस विनय पुत्रकी धाता। सरहेहुलखिशिवपदमनराता॥
तुम्हैं विदित सबकथा गिरीशा। बन्यो अज्ञ जग हेतु मुनीशा॥

लगे कहन विधि कथा सुहाई। बार बार शिव पद शिरनाई॥
रमहि मानदै बहुत मुरारी। लागे कहन कथा मदनारी॥

दो० कश्यपपतिय दिति वंशमें भयेतीनि अमरारि।
विधिउदेशितिनतपकियो बरअबद्ध चितधारि॥

सो० बहुतबिकट तपकीन लखिप्रसन्न बहुधातभो।
जाय तिन्हैं वचदीन मांगो बर जो मन रुचै॥

लखि मुहिं कीन प्रणाममुनीशा। अस्तुति कीननाय पदशीशा॥
मांग्यो बरमन रुचित सुरारी। देहु तीनि पुरमुहिं जगकारी॥
धात मई तीनिहु पुर स्वामी। पुनि होवे सो मारुत गामी॥
मन माना लैजाय उड़ाई। रसा अकाश पताल सुहाई॥
एक एक पुर तीनिहु भ्राता। राज करैं हमतहँ सुख राता॥
देहु अपर बर करि करुणाई। अवध होयँ हमतीनहु भाई॥
तबविधिकहकरि मनहिउदासो। अवधहोतनहिं कोउजगबासी॥
शिवतजिअपर अवध जगनाहीं। देखोकरि विचारि मनमाहीं॥
जो बर प्रथम तात तुम मांगा। सोहम ठीकमनहिं अनुरागा॥
दूसर बर पर लेहु बिचारी। सुनिमनसमुझिकह्योअमरारी॥
तीनिहु पुर छेदे यक बाना। तिहकरबध ममदेहु सुजाना॥
जाहिं मृत्यु नहिं होय बिधाता। सो पुर भेदि करै मम घाता॥
तब हम मुनि मन बहु हर्षाई। एवमस्तु भाष्यो तुरताई॥
तब हम मयकहँ लीन बुलाई। रचहु तीन पुरकह समुझाई॥
हाटक रजत ताम्र मय चारू। चलै पवन पथ असुरबिहारू॥
तबमयअसुरजानि ममशासन। तुरततीनिपुररच्योमुदितमन॥
पाय पुरन सो असुर गुमानी। एकएक में कीन्ह्यो रजधानी॥
देव जाति सब दीन निकारी। भये असुर सुर पदअधिकारी॥

दो० इंद्रहि लीन्ह्यो जीति तब छीन सुरन अधिकार।
भोगन लाग्यो राज सुर निर्भय सब अमरार॥

सो० करत राजयुत नेत पालत प्रजहि स्वप्राणसम।
पूजत सब वृषकेत गहे वेद मत लोक मम॥

पजत विष्णु परम हित लाई। हरि हर सेवक तीनिहुभाई॥

भूलेहु तजत न श्रुति को पंथा । त्यागत क्रोधलोभ मनमंथा ॥
तिहिमिस करततासु पुर बासी । पूजत हरि हर ज्ञान प्रकाशी ॥
चारिहु बरण गहे निज धर्मा । अघतजिकरतसकलशुभकर्मा ॥
एक नारि ब्रत पुरुष अमानी । त्रियहुपतिब्रतबहुबिधिठानी ॥
तजि सुरअपरन दुखमहँ आरी । असत्रिपुरा सुरनीतिसिहारी ॥
यहि विधि बीतिगये बहु काला । सकलदेवजग फिरतविहाला ॥
एक दिवस निज गुरु मत पाई । इंद्र सकल सुरलीन बुलाई ॥
जीव सहित सुरपति सुरसाथा । मम पुरगये जोरि युगहाथा ॥
त्राहि त्राहि विधिकह सब देवा । बहु विधिकीनजोरिकर सेवा ॥
देखि सुरन हमगे खिसियाई । निजबरबलतिनको दुखपाई ॥
बहस बहस कहि तिन्हैं बझाई । छूटी दुख घिव करुणा पाई ॥
सुरन साथ लैतबहम मुनिबर । गयेक्षीरनिधि जहँ जगदुखहर ॥
त्राहि त्राहि कहि कीन प्रणामा । हरो देव दुख तुमसुख धामा ॥
सुरहु सकल बहु त्राहि पुकारी । कीन प्रणाम जोरि युग तारी ॥
हम द्वै सबके अग्र मुनीशा । अस्तुति करन लगे नै शीशा ॥

छन्द॥

जयबनवारी सुरन गुहारी मधुमदहारी सिंधु मथं ।
जयकधिजाता कंत अघाता मुनिमनराता वेदकथं ॥
जनदुखदारीस्वरुचिविहारी सुरहितकारीदीनहितं ।
निजप्रणपारी असुरनमारी सुरनउबारी कोरचितं ॥

दो० सुरहुअसुर यदिभक्तितो तदपिसुरनकोकाम ।
करतसदा तुम श्रुतिवदत दीनबंधु तव नाम ॥

सो० सुनिबिनती बिधिकेरिकह्योरमाहमकरिकृपा ।
कौन विपति भैढेरि जो तुमआयो ममशरण ॥

सुरन क्रांति लखि परतमलीना । दीनकौनदुख असुरबलीना ॥
बेगि सुरहुनिज विनति सुनावो । लेव सोईबर जोमन भावो ॥
करत पक्ष तुम्हरो हम जैसा । शंभु सहाय करत मम तैसा ॥
तब त्रिपुरासुर को सब गाथा । कीननिवेदन हम मुनिनाथा ॥
सुनत कोन बहु क्रोध मुरारी । क्षणमहँ देउँ त्रिपुरको जारी ॥